विद्यया ऽमृतमश्नुते

एनसीईआरटी
NCERT

निष्ठा (ईसीसीई)

स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र प्रगति के लिए राष्ट्रीय पहल
(प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा)

कार्यक्रम समन्वयक
डॉ. रोमिला सोनी
डॉ. एंजेल रत्नाबाई

भूमिका

बच्चे के जीवन के पहले छह वर्ष सबसे महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि इस अवधि के दौरान विकास की गति तीव्र होती है। ये वे वर्ष हैं जिनमें बच्चे का मस्तिष्क तीव्र गति से विकसित होता है और उसके संचयी मस्तिष्क का लगभग 85% विकसित हो जाता है। स्वस्थ मस्तिष्क के विकास और वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए उचित देखभाल और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। इस क्षेत्र के कई शोधकर्ताओं ने यह प्रस्तुत किया है कि छोटे बच्चों की सफलता को बढ़ावा देने के लिए, हमें उन्हें समग्र देखभाल और उपयुक्त शैक्षिक अनुभव प्रदान करने की आवश्यकता है। इस आयु समूह को अधिगम वृद्धि के साथ अपनी पूरी क्षमता और प्रगति विकसित करने हेतु समृद्ध वातावरण में सावधानीपूर्वक पोषण एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है।

सतत् विकास हेतु वर्ष 2030 के एजेंडे के तहत परिकल्पित लक्ष्यों में से एक प्रारंभिक बचपन की शिक्षा प्रदान करना है। प्रत्येक बच्चे के लिए भावनात्मक रूप से सहायक और सक्षम खेल-आधारित वातावरण सुनिश्चित करके प्रारंभिक वर्षों में निवेश करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है, जो न केवल प्रत्येक बच्चे का अधिकार है, बल्कि उनके आजीवन सीखने के लिए ठोस नींव भी रखता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने सीखने के प्रारंभिक चरण में सुधार कर, 3-8 आयु वर्ग के बच्चों को “अधिगम एवं विकास का बुनियादी चरण” कहते हुए सम्मिलित किया है। यहां हम निष्ठा ईसीसीई हेतु 3 से 6 वर्ष के आयु वर्ग के छोटे बच्चों के बारे में बात कर रहे हैं। नई शैक्षणिक और पाठ्यचर्या संरचना का उद्देश्य बच्चे के व्यक्तित्व और प्रारंभिक साक्षरता एवं संख्यात्मकता के विकास के सभी क्षेत्रों में सर्वोत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करना है। इस प्रकार, 3-8 वर्ष की आयु के बच्चे हेतु, शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक और ईसीई कार्यक्रम/केंद्र बच्चों के लिए दूसरे घर के रूप में कार्य करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा में मूलभूत सुधार लाने हेतु शिक्षक को भी केंद्र में रखा है। यह इस बात पर जोर देती है कि देश के भविष्य को आकार देने में शिक्षक मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं, और इसीलिए बच्चों में स्वस्थ आदतों और अच्छे मूल्यों को विकसित करने के लिए शिक्षकों को सशक्त बनाने हेतु सभी संभव प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

प्राथमिक संकेन्द्रण के रूप में ‘बुनियादी स्तर हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा’ (NCF-FS), 2022 को शिक्षक के साथ डिजाइन किया गया है - इसका कारण यह है कि शिक्षक शिक्षा के अभ्यास के केंद्र में स्थित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और बुनियादी स्तर हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2022 का सपना तब साकार होगा जब शिक्षक और वे सभी जो छोटे बच्चों और उनकी शिक्षा से संबंधित है, वे बुनियादी स्तर पर गुणवत्ता लाने के लिए मिलकर काम करेंगे।

‘निष्ठा ईसीसीई’ नामक यह दस्तावेज़ विशेष रूप से एन.ई.पी. 2020 और ईसीसीई के क्षेत्र में काम करने वाले सभी लोगों की मांगों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लाया जा रहा है। हम आशा करते हैं कि शिक्षक, शिक्षक-प्रशिक्षु, शिक्षक-प्रशिक्षक, प्रमुख पदाधिकारी आदि इस संसाधन सामग्री को परस्पर संवादात्मक, उपयोगी और रुचिकर पाएंगे।

मैं निष्ठा (ईसीसीई) के समन्वय और अंतिम रूप देने में प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी के प्रयासों और कड़ी मेहनत की सराहना करता हूं। निष्ठा ईसीसीई को और बेहतर बनाने में सहायता करने हेतु हम उपयोगकर्ताओं से उपयोगी प्रतिक्रिया की आशा करते हैं।

निदेशक

एनसीईआरटी

नई दिल्ली

नवंबर 2022

प्रस्तावना

गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम छोटे बच्चों के शारीरिक, मनोप्रेरणा, संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं, जिसमें भाषाओं का अर्जन और प्रारंभिक साक्षरता शामिल है। इन प्रारंभिक वर्षों के दौरान सीखने के लिए मस्तिष्क सबसे अधिक लचीला और अनुकूल होता है। तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में हाल ही में हुए शोध के अनुसार, 5 वर्ष की आयु तक बच्चे के 90 प्रतिशत मस्तिष्क की वृद्धि हो जाती है। यह वृद्धि न केवल बच्चे के पोषण और स्वास्थ्य की स्थिति से प्रभावित होती है, बल्कि उन मनो-सामाजिक अनुभवों और वातावरण से भी प्रभावित होती है, जो इन प्रारंभिक वर्षों के दौरान उस बच्चे के सामने आता है। इसलिए, प्रारंभिक वर्षों में आंगनवाड़ी और पूर्व-प्राथमिक शिक्षा केन्द्रों में उचित प्रावधान और गुणवत्ता कार्यक्रम के रूप में निवेश करना अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन वर्षों को व्यवहार निर्माण वर्षों के रूप में भी जाना जाता है, इसलिए हमें शुरुआत से ही मूल्य आधारित कहानियों, तुकबंदी और माता-पिता और परिवारों के साथ संबंधों के माध्यम से अच्छी आदतों और आयु उपयुक्त मूल्यों को विकसित करने की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात पर बल देता है कि ईसीसीई तक सार्वभौमिक पहुंच के लिए, आंगनवाड़ी केंद्रों/प्रीस्कूलों को अच्छी तरह से प्रशिक्षित आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं/शिक्षकों के साथ मजबूत किया जाएगा। नीति यह भी सुझाव देती है कि कक्षा 1 से पहले, प्रत्येक बच्चा एक "प्रारंभिक कक्षा" या बालवाटिका में जाएगा, जिसमें एक ईसीसीई योग्य शिक्षक होगा। इसके कार्यान्वयन को सक्षम करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 की दृष्टि के आधार पर बुनियादी स्तर (एनसीएफ-एफएस) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा विकसित की गई है। यह एनसीएफ-एफएस शिक्षक के साथ प्राथमिक फोकस के रूप में तैयार किया गया है - इसका कारण यह है कि शिक्षक शिक्षा के अभ्यास के केंद्र में है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और एनसीएफ़-एफ़एस के इस सपने को पूरा करने की दिशा में निष्ठा ईसीसीई एक कदम है और इस संदर्भ में छह कोर्स मास्टर प्रशिक्षकों हेतु तैयार किए गए हैं जो प्री-स्कूली शिक्षकों और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को उनकी ईसीसीई सेटिंग्स को भावनात्मक रूप से सहायक, प्रेरक, विकसित और जीवंत करने के लिए प्रशिक्षित करेंगे। इन केन्द्रों में हमारे सभी छोटे बच्चे खेलेंगे, सीखेंगे, खोजेंगे, आनंद लेंगे और कक्षा -1 में खुशी-खुशी चले जाएंगे।

निष्ठा ईसीसीई के छह कोर्स आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं/प्री-स्कूली शिक्षकों को उनकी आंगनवाड़ी/स्कूलों में प्रारंभिक अधिगम के अवसरों को बढ़ाने में मदद करने हेतु मास्टर प्रशिक्षक प्रदान करते हैं। निष्ठा ईसीसीई के ये छह कोर्सों का प्रशिक्षण, स्कूल प्रमुखों/बाल विकास परियोजना अधिकारियों (सीडीपीओ) और जिला कार्यक्रम अधिकारियों (डीपीओ) का मार्गदर्शन करेगा कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को व्यवहारिक प्रक्रियाओं में गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए और आंगनवाड़ी/पूर्वस्कूली के प्रारंभिक बचपन शिक्षा कार्यक्रमों में गुणवत्ता लाने के लिए कैसे प्रशिक्षित और प्रशिक्षित किया जाए।

ईसीसीई पर निष्ठा छह (6) कोर्सों के माध्यम से निम्नलिखित महत्वपूर्ण पहलुओं पर केंद्रित है।

- **कोर्स 1: प्रारंभिक वर्षों का महत्व**
  कोर्स 1 शीर्षक "प्रारंभिक वर्षों का महत्व" इस बात पर प्रकाश डालता है कि बचपन की शिक्षा और पहले छः से आठ साल के बच्चे उनके विकास में कैसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण हैं। बच्चों के समग्र विकास के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि ईसीसीई की योजना बनाते समय संज्ञानात्मक, भाषा, शारीरिक और सामाजिक-भावनात्मक सहित विकास के सभी पहलुओं और क्षेत्रों का ध्यान रखा जाए।

- **कोर्स 2: खेल आधारित अधिगम पर्यावरण की योजना बनाना**
  कोर्स 2 आंगनवाड़ी बच्चों के लिए एक नाटक आधारित शारीरिक रूप से करके सीखने के माहौल की योजना बनाने के बारे में विवरण देता है। प्रत्येक बच्चे के लिए एक स्वच्छ, सुरक्षित और पर्याप्त भौतिक

स्थान आवश्यक है ताकि सभी बच्चे एक जीवंत और रोचक आंगनवाड़ी और प्री-स्कूल व्यवस्था में खेल सकें। अच्छी तरह से निर्मित किया गया भौतिक रूप से सीखने का माहौल और ईसीई कार्यक्रम आंगनवाड़ी को क्रियान्वयन की सुविधा प्रदान करता है और पाठ्यक्रम के लक्ष्यों और उद्देश्यों के कार्यान्वयन का समर्थन करता है। बच्चों के लिए एक सुनियोजित अध्यापन और इनडोर (आंतरिक) और आउटडोर (बाह्य) खेल का वातावरण होना प्रारंभिक शिक्षा का समर्थन करता है।

- **कोर्स 3: समग्र विकास के लिए खेल-आधारित गतिविधियां**
  यह कोर्स बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल आधारित गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताता है। इसमें बच्चे की विशेषताओं, उसके सीखने और विकास की आवश्यकताओं को शामिल किया गया है। खेल और गतिविधि-आधारित शिक्षण का उपयोग, खिलौनों की भूमिका और विकासात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सुझायी गई गतिविधियाँ इस मॉड्यूल के केंद्र बिंदु हैं। यह बच्चों के सर्वांगीण विकास का पता करने के लिए समग्र प्रगति कार्ड (HPC) सहित बच्चों की प्रगति के अवलोकन और मूल्यांकन के बारे में भी बात करता है।

- **कोर्स 4: अभिभावक और समुदायों के साथ साझेदारी**
  यह एक महत्वपूर्ण कोर्स है जो छोटे बच्चों के साथ और समग्र विकास के लिए घर पर प्रेरणादायक गतिविधियों की गुणवत्ता पर जोर देता है और यह तब संभव होगा जब बच्चों के घरों, प्री-स्कूल और आंगनवाड़ियों के मध्य घनिष्ठ संबंध हों। इस कोर्स में अभिभावक और समुदाय को सम्मिलित करने की आवश्यकता पर चर्चा की गई है कि कैसे आंगनवाड़ियों के बेहतर कामकाज के लिए अभिभावक/परिवारों और स्थानीय नेताओं/पंचायत जैसे समुदाय के सदस्यों को सम्मिलित किया जाए। इसी तरह औपचारिक और अनौपचारिक संचार की आवश्यकता और इसके क्रियान्वयन के तरीकों को भी कोर्स में उल्लेख किया गया है। कोर्स में कुछ उदाहरण लिखे गए हैं जिनमें अभिभावक को घर पर करने के सुझाव दिये गए हैं। साथ ही, यह अभिभावक और समुदाय द्वारा कम भागीदारी के कारणों और इन बाधाओं को दूर करने के सुझाव पर भी प्रकाश डालता है।

- **कोर्स 5: स्कूल की तैयारी**
  इस मॉड्यूल का उद्देश्य "स्कूल की तैयारी", सीखने के संकट और ईसीसीई के महत्व और स्कूल की तैयारी के विभिन्न आयामों की व्याख्या करना है। ये मॉड्यूल यह भी बताता है कि स्कूल के लिए बच्चों की तैयारी, बच्चों के लिए स्कूल की तैयारी और बच्चों के लिए अभिभावक की तैयारी की व्याख्या करता है। यह कोर्स बच्चों, अभिभावकों/परिवारों और समुदायों और स्कूलों के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालता है, जिन्हें बच्चों के सर्वांगीण विकास और आजीवन सीखने के लिए अनुभव प्रदान करने के लिए एक साथ कार्य करने की आवश्यकता होती है।

- **कोर्स 6: जन्म से तीन वर्ष की आयु तक - विशेष आवश्यकताओं के हस्तक्षेप के लिए प्रारंभिक पहचान**
  इस कोर्स का लक्ष्य दिवयांगताओं को पहचानने के महत्व के बारे में समान्यतः जागरूकता पैदा करना है। विकास के दृष्टिकोण से सभी बच्चे के पहले 1000 दिन सबसे महत्वपूर्ण हैं। यदि अभिभावक द्वारा आंगनवाड़ी कर्मिकों और प्री-स्कूल शिक्षकों द्वारा लक्षणों पहचानने और विकलांगता को पहचानने में बच्चों को संदर्भित करने के लिए सहायता दी जा सके, तो यह समस्या आसानी से हल हो सकती है। यह सहायता बच्चों की शीघ्र उत्तेजना के लिए प्राकृतिक घरेलू वातावरण में समय पर सेवाएं और विशेषज्ञों की सलाह प्राप्त करने में मदद करेगा। बच्चों के सीखने की एक मजबूत नींव बनाने और समावेशी शुरुआती बचपन की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ये छोटे प्रयास बहुत महत्वपूर्ण हैं।

निष्ठा ईसीसीई के छः कोर्स मास्टर प्रशिक्षकों के लिए हैं और ये मास्टर ट्रेनर होंगे - सीडीपीओ (बाल विकास परियोजना अधिकारी) और डीपीओ (जिला कार्यक्रम अधिकारी) जो आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को छोटे बच्चों के लिए उपयुक्त सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में मदद करने के लिए जिम्मेदार हैं। जो 3-6 वर्ष के बच्चों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने में अर्थात शारीरिक गति विकास, भाषा और साक्षरता, संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और रचनात्मक विकास में मदद करने के लिए उपयुक्त शिक्षण-अधिगम रणनीतियों का उपयोग करेंगे। निष्ठा ईसीसीई का लक्ष्य सभी प्रीस्कूल व्यवस्था में ईसीई कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार लाना है ताकि शुरुआती चरण में एक सुनियोजित और निरंतर सीखना-सिखाना संभव हो सके। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन छह कोर्सों में सुझाई गई शिक्षणविधि को समझें ताकि वे मनोरंजक एवं रुचिपूर्ण कक्षा शिक्षण की योजना बना सकें जहां हर बच्चा सीख सके और सीखने का आनंद ले सके।

निष्ठा ईसीसीई की सफलता काफी हद तक प्री-स्कूल सेटिंग्स में शिक्षकों पर निर्भर है जो इन कोर्सों का उपयोग करेंगे। हम उन्हें उनके तात्कालिक संदर्भ के अनुसार गतिविधियों को संशोधित और अनुकूलित करने तथा स्थानीय परिवेश में उपलब्ध ज्ञान को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

रोमिला सोनी

अकादमिक समन्वयक

नवंबर 2022

आभार

कार्यक्रम समन्वयक

डॉ. रोमिला सोनी, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

तकनीकी समन्वयक

डॉ. एंजेल रत्नाबाई, सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

कोर्स विकासक एवं समन्वयक

- कोर्स 01 : डॉ. रोमिला सोनी, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- कोर्स 02 : डॉ. रोमिला सोनी, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- कोर्स 03 : प्रोफ़ पद्मा यादव, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- कोर्स 04 : प्रोफ़ संध्या संगई, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- कोर्स 05 : प्रोफ़ सुनीति सनवाल, विभाग प्रमुख, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- कोर्स 06 : डॉ. भारती कौशिक, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

समीक्षक

डॉ. कल्पना वेणुगोपाल, प्रोफेसर, ईसीई, आरआईई-एनसीईआरटी, मैसूर, कर्नाटक

भाषा संपादक

सुश्री कुसुमलता अग्रवाल

तकनीकी टीम

डॉ. मेहराज अली, अकादमिक सलाहकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

सुश्री. अपराजिता, अकादमिक सलाहकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

सुश्री. कुनिका, अकादमिक सलाहकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

सुश्री. प्रीति प्रिया, तकनीकी सलाहकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

सुश्री. प्रीति दुबे, कंटेंट डेवलपर, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

सुश्री. महक मौर्या, कंटेंट डेवलपर (टेक्निकल), केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

श्री तन्मय कुलश्रेष्ठ, जूनियर प्रोजेक्ट फेलो, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

सुश्री. मनीषा, जूनियर प्रोजेक्ट फेलो, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

ग्राफिक्स टीम

श्री आशीष रावत, ग्राफिक कलाकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

श्री संजय यादव, ग्राफिक कलाकार, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

श्री फाज़िल, डीटीपी ऑपरेटर, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सीआईईटी), एनसीईआरटी, नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

कोर्स 01 : प्रारंभिक वर्षों का महत्व 01

मॉड्यूल 1. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) का परिचय

मॉड्यूल 2. पारिभाषिक शब्दावली और परिभाषाएँ – प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा

मॉड्यूल 3. विभिन्न आयु के बच्चों की विशिष्ट विशेषताएँ

मॉड्यूल 4. खेल और बच्चों का प्रारंभिक अधिगम

मॉड्यूल 5. प्री-स्कूल और उसकी देखभालकर्ता

कोर्स 02 : खेल-आधारित सीखने के परिवेश का नियोजन 51

मॉड्यूल 1. प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी और उसका परिवेश

मॉड्यूल 2. प्री-स्कूल की स्थापना और रखरखाव

मॉड्यूल 3. प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी के लिए ईसीसीई पाठ्यचर्या का नियोजन

मॉड्यूल 4. अंतर्निहित विकासात्मक उपयुक्त आकलन के लिए नियोजन

कोर्स 03 : समग्र विकास के लिए खेल-आधारित गतिविधियाँ 103

मॉड्यूल 1. समग्र विकास के लिए खेल-आधारित गतिविधियों का महत्व

मॉड्यूल 2. बच्चे को समझना

मॉड्यूल 3. खेल-आधारित गतिविधियाँ और अनुभवात्मक अधिगम

मॉड्यूल 4. विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियाँ

मॉड्यूल 5. सीखने के लिए आकलन

कोर्स 04 : अभिभावकों एवं समुदायों के साथ भागीदारी 144

मॉड्यूल 1. अभिभावकों एवं समुदायों के साथ भागीदारी का महत्व

मॉड्यूल 2. अभिभावकों, परिवारों एवं समुदायों की सहभागिता

मॉड्यूल 3. अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय के साथ सार्थक भागीदारी

मॉड्यूल 4. परिवारों, समुदायों और प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों के बीच संबंध का विकास

मॉड्यूल 5. बच्चों को खुशहाल और स्वस्थ बनाने के लिए समुदायों को संलग्न करना

मॉड्यूल 6. अभिभावकों, परिवारों एवं समुदायों को शामिल करने के लिए संप्रेषण रणनीतियाँ

मॉड्यूल 7. घर पर सीखने की गतिविधियां

कोर्स 05 : स्कूल के लिए तैयारी **199**

मॉड्यूल 1. स्कूल के लिए तैयारी का परिचय

मॉड्यूल 2. स्कूल के लिए तैयारी का महत्व और इसके आयाम

मॉड्यूल 3. स्कूल के लिए तैयारी के आयाम

कोर्स 06 : जन्म से तीन साल – विशेष आवश्यकताओं के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप **245**

मॉड्यूल 1. पहले 1000 दिनों के दौरान प्रारंभिक पहचान

मॉड्यूल 2. पहले 1000 दिनों का महत्व और ई.सी.सी.ई. पदाधिकारियों की भूमिका

मॉड्यूल 3. पहले 1000 दिनों के दौरान प्रारंभिक हस्तक्षेप

निष्ठा (ईसीसीई)

शिक्षा के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों और स्कूल प्रमुखों के लिए एक एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम

कोर्स 01

प्रारंभिक वर्षों का महत्व

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली - 110016

अनुक्रमणिका

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

मुख्य शब्द

उद्देश्य

कोर्स की रूपरेखा

1. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) का परिचय

1.1 प्रारंभिक वर्षों की शिक्षा का महत्व

1.2 गतिविधि 1 : स्वयं करें

2. पारिभाषिक शब्दावली और परिभाषाएँ – प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा

2.1 भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई)

2.2 विकासशील मस्तिष्क

2.3 प्रारंभिक बाल्यावस्था वर्षों का महत्व

2.4 गतिविधि 2 : विचार करें

2.5 बाल विकास और विकास के क्षेत्रों को समझना

2.6 गतिविधि 3 : खोजें

2.7 विकासात्मक लक्ष्य और सम्मिलित विकास के क्षेत्र

2.8 तीनों विकासात्मक लक्ष्य और विकास के पाँच क्षेत्र किस प्रकार आपस में संबंद्ध हैं

2.9 गतिविधि 4 : अपने विचार साझा करें

3. विभिन्न आयु के बच्चों की विशिष्ट विशेषताएँ

3.1 बच्चों की आयु विशिष्ट विशेषताएँ

3.2 गतिविधि 5 : स्वयं प्रयास करें

3.3 अपने छोटे बच्चों को जानना

3.4 गतिविधि 6 : अपनी समझ की जांच करें

4. खेल और बच्चों का प्रारंभिक अधिगम

4.1 बच्चे के सीखने के तरीके

4.2 बच्चे कैसे सीखते हैं?

4.3 चित्र पठन पोस्टरों और ओपन एंडेड प्रश्नों के माध्यम से सीखना

4.4 अतिरिक्त पठन : खेल की शक्ति

5. प्री-स्कूल और उसकी देखभालकर्ता
5.1 प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री को सशक्त बनाना

सारांश

पोर्टफोलियो गतिविधि
» असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन
» संदर्भ
» वेब लिंक

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

यह कोर्स प्रारंभिक वर्षों के महत्व का, विशेष रूप से आंगनवाड़ी/प्री-स्कूल या अन्य ईसीसीई व्यवस्थाएँ, जो प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल प्रोग्राम प्रदान करती हैं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है। यह शिक्षार्थियों को यह समझने में मदद करेगा कि गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई प्रोग्राम छोटे बच्चों को प्रदान करना क्यों आवश्यक है।

मुख्य शब्द

NISHTHAECCE, ANGANWADI, PRESCHOOL TEACHER, ECCE, EARLY LEARNING, DEVELOPMENTAL GOALS, ROLE

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पारिभाषिक शब्द को समझने में।
- प्रारंभिक वर्षों के महत्व को पहचानने में।
- प्रारंभिक वर्षों में मस्तिष्क विकास का वर्णन करने में।
- तीन विकासात्मक लक्ष्यों और पाँच क्षेत्रों को स्पष्ट बताने में।
- प्री-स्कूल आयु के बच्चों की विकासात्मक विशेषताओं की सूची बनाने में।
- बच्चे कैसे सीखते हैं और प्रारंभिक वर्षों में बच्चों के सीखने के विभिन्न तरीकों को समझने में।
- छोटे बच्चों के सीखने के लिए शिक्षण विधि के रूप में खेल के महत्व को पहचानने में।
- शिक्षक-प्रशिक्षक और आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री की भूमिका की रूपरेखा बनाने में।

कोर्स की रूपरेखा

- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा और इसके लाभ
- बाल विकास को प्रभावित करने वाले कारक
- विकासात्मक लक्ष्य और बाल विकास के क्षेत्र तथा बच्चों का सर्वांगीण/समग्र विकास
- प्री-स्कूल आयु के बच्चों की विकासात्मक विशेषताएँ
- बच्चों के सीखने का तरीका
- खेल का महत्व
- आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री और प्री-स्कूल शिक्षक की भूमिका

••• मॉड्यूल 1 •••

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) का परिचय

मॉड्यूल 1 : प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) का परिचय

1.1 प्रारंभिक वर्षों की शिक्षा का महत्व

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

या निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31360811981926400012892

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों, स्वागत है।

हम प्रारंभिक वर्षों के महत्व के बारे में सीखने जा रहे हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था को जन्म से आठ वर्ष तक की आयु तक की अवधि के रूप में परिभाषित किया जाता है। हाल के वर्षों में प्रारंभिक बाल्यावस्था एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभरा है। जन्म से लेकर आठ वर्ष तक की आयु के प्रारंभिक वर्ष बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत संवेदनशील अवधि होती है। जीवन के शुरुआती कुछ वर्षों में लाखों तंत्रिका संयोजन बनते हैं जो सीखने, व्यवहार, स्वास्थ्य और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि इस दौरान विकास के अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा विकास की दर अधिक तेज़ होती है। इन प्रारंभिक वर्षों में मस्तिष्क सीखने के लिए अधिक लचीला और अनुकूलित होता है। हाल ही में स्नायुविज्ञान के क्षेत्र में हुए शोधों के अनुसार बच्चा जब तक पाँच वर्ष का होता है, उसके मस्तिष्क की वृद्धि 90% तक हो चुकी होती है। यह वृद्धि बच्चे के न केवल पोषण और स्वास्थ्य के कारण प्रभावित होती है बल्कि मनोसामाजिक अनुभवों और परिवेश जो उसे इन वर्षों के दौरान मिलता है, से भी प्रभावित होती है, अत: प्रारंभिक वर्षों में आंगनवाड़ी और प्री-स्कूल व्यवस्था, प्रावधानों और कार्यक्रमों के रूप में निवेश करना बहुत आवश्यक है।

किसी भी व्यवस्था, जो 3-6 वर्ष की आयु के छोटे बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करती है और जिन्हें आंगनवाड़ी, बालवाड़ी, नर्सरी, प्री-स्कूल, प्रीप्रेटरी, प्रीप्राइमरी, एल के जी, यू के जी के नाम से जाना जाता है ईसीई केंद्र के रूप में परिभाषित किया जाता है। भारत में प्री-स्कूल शिक्षा तीनों क्षेत्र यानी सरकारी, निजी और स्वयं सेवी संस्था द्वारा प्रदान की जाती है। सरकारी क्षेत्र में यह मुख्य रूप से एकीकृत बाल विकास योजना जिन्हें आंगनवाड़ी नाम से जाना जाता है, दी जाती है।

हम सब जानते हैं कि बच्चे आगे चलकर जीवन में कितने सफल होंगे, यह आकार देने में प्रारंभिक अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं। अध्ययनों से ये ज्ञात होता है कि जिन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था अनुभव प्राप्त होते हैं उनमे गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था कार्यक्रमों में शामिल होना भी आता है, बाद में वे स्कूल में औपचारिक शिक्षा में अधिक सफल होने के साथ-साथ एक अधिक उत्पादक वयस्क जीवन जीते हैं। गुणवत्तापरक ईसीई कार्यक्रम परिवारों और छोटे बच्चों को बहुत अच्छी तरह से सहायता करते हैं। ईसीई कार्यक्रम विभिन्न प्रकार के ठोस खेल के अनुभव प्रदान करता है, उदाहरण के लिए, बच्चों को प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी की चारदीवारी से बाहर ले जाना और उन्हें अपने आस-पास के परिवेश के बारे में ढूंढना, खोजना तथा निरीक्षण करना और प्रकृति से जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करना। इन शुरूआती वर्षों को आदतों के निर्माण के वर्षों के रूप में भी जाना जाता है, इसीलिए शिक्षकों को बच्चों को शुरुआत से ही अच्छी आदतों का विकास करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है जैसे - बच्चों को आयु उपयुक्त व्यायाम के लिए प्रेरित करना, जैसे बाल-योग, स्वच्छता संबंधी आदतों को बनाए रखना, हाथ धोना, अपने खेलने की जगह को साफ-सुथरा रखना, स्वच्छ पानी पीने की आदत डालना न कि वतित पेय पीना, माता-पिता, दादा-दादी के साथ खेलना, भाई-बहनों के साथ मिलजुल कर साझा करना और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ समय बिताना, मूल्य-आधारित कहानियां सुनाना भी इसका एक अभिन्न अंग होता है जैसा कि आप जानते हैं, आप जितनी जल्दी बच्चों को अच्छी आदतों का परिचय देंगे, उतनी ही अधिक संभावना है कि ये आदतें आने वाले वर्षों में उनके व्यवहार में बनी रहेंगी। अत: गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शैक्षणिक कार्यक्रम सफल आजीवन सीखने की नींव डालता है क्योंकि प्री-स्कूल तथा आंगनवाड़ी में बुनियादी सीखने का केंद्र बच्चे के समग्र विकास पर होता है।

1.2 गतिविधि 1 : बचपन की यादें – स्वयं करें

अपने बचपन के दिनों के बारे में सोचें। जब आप पाँच-छह साल के थे, अपने बचपन से जुड़ी यादों, लोगों, घटनाओं और स्थानों को पुन: स्मरण करें। आपका बचपन कैसा था? आप किन खिलौनों से, कौन-कौन से खेल खेलते थे? आपको जो भी याद है, उसकी सूची बनाएँ।

सोच यह है कि आज के संदर्भ में छोटे बच्चों और उनके जीवन के बारें में सोचना आरंभ करना।

••• मॉड्यूल 2 •••

पारिभाषिक शब्दावली और परिभाषाएँ – प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा

मॉड्यूल 2 : पारिभाषिक शब्दावली और परिभाषाएँ – प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा

2.1 भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई)

बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा क्या है?

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) उन प्रक्रियाओं और तरीकों को संदर्भित करता है जो जीवन के प्रारंभिक वर्षों के दौरान विकास को बनाए रखते और समर्थन करते हैं। इसमें शिक्षा, शारीरिक, सामाजिक और भावात्मक देखभाल,बौद्धिक उत्प्रेरणा, स्वास्थ्य देखभाल और पोषण शामिल है। ईसीसीई कार्यक्रम शिक्षा के अतिरिक्त देखभाल के घटक पर भी केन्द्रित है। अधिकांश ईसीसीई कार्यक्रम अभिभावकों की शिक्षा और छोटे बच्चों के विकास और देखभाल में भागीदारी पर काफ़ी बल देते हैं। भारत में छोटे बच्चों के लिए कार्यक्रमों को संदर्भित करने के लिए आमतौर पर सबसे अधिक ईसीसीई शब्दावली का ही प्रयोग किया जाता है। (एनसीएफ पोज़ीशन पेपर 2005)। भारत में एकीकृत बाल विकास योजना (आईसीडीएस) स्कीम विश्व की सबसे बड़ी ईसीसीई स्कीम है जो 6 वर्ष की आयु से कम के बच्चों के खानपान की व्यवस्था करती है।

ईसीसीई के उस घटक को, जो बच्चों में शिक्षा और सीखने पर फ़ोकस करता है, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) या प्री-स्कूल शिक्षा के रूप में संदर्भित किया जाता है।

भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई)

जीवन के प्रथम आठ वर्षों में जिन्हें सीखने के बुनियादी वर्ष (फाउंडेशनल ईयर्स ऑफ़ लर्निंग - एफ़वाईएल) माना जाता है, विकास की विभिन्न अवधियाँ शामिल हैं, प्रत्येक अवधि के विशिष्ट विकासात्मक मील के पत्थर होते हैं।

प्रारंभिक वर्षों की इस अवधि की मुख्य विशेषता है तीव्र गति से समग्र विकास, जिसमें मस्तिष्क की वृद्धि और विकास भी शामिल है जिसे व्यावहारिक सीखने के अनुभवों से सरल और सुगम बनाया जाता है। ईसीई एक बड़े ईसीसीई प्रावधानों का एक सब-सेट (sub-set) है। हमारे देश में ईसीई कार्यक्रम, विशेष रूप से 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों पर केंद्रित करने वाले, तीनों क्षेत्रों – सरकारी, निजी और ऐच्छिक संगठनों द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

- सरकारी - यह मुख्य रूप से इंटीग्रेटेड चाइल्ड डेवलपमेंट सर्विसेज़ (आई सी डी एस) द्वारा प्रदान की जाती है और इसके केंद्र आमतौर से आंगनवाड़ी के नाम से जाने जाते हैं। कुछ राज्यों में पब्लिक और प्राइमरी स्कूल प्री प्राइमरी सेक्शन चलाते हैं।

- निजी - बड़ी संख्या में प्री-स्कूल निजी उद्यमों द्वारा चलाए जाते हैं और किंडरगार्टन/नर्सरी/प्ले स्कूल/मांटेसरी नाम से बुलाए जाते है।
- स्वयं सेवी संस्थाएं (NGOs) - स्वयं सेवी संस्थाएं (NGOs) द्वारा उपेक्षित व वंचित वर्गों से आए बच्चों के लिए प्री-स्कूल शिक्षा प्रदान की जाती है। अक्सर ये सरकार द्वारा चलाए जा रहे केंद्रों की सहायता करते हैं।

हमारे देश में अधिकतर सरकारी संस्थान और ऐच्छिक संगठन कुल मिलाकर ईसीसीई प्रावधानों का समर्थन करते हैं। निजी क्षेत्र मुख्य रूप से ईसीई पर फ़ोकस करता है। एनईपी 2020 शिक्षा की पाँच वर्षीय बुनियादी अवस्था पर विचार करती है ईसीसीई के तीन वर्ष और प्राइमरी स्कूल के दो वर्ष इस प्रकार ईसीई में अब 3-8 वर्ष तक की आयु के बच्चे शामिल होंगे।

आइए अब समझें कि एनईपी 2020 की फाउंडेशनल स्टेज पर ईसीसीई की पहुँच कहाँ स्थित है?

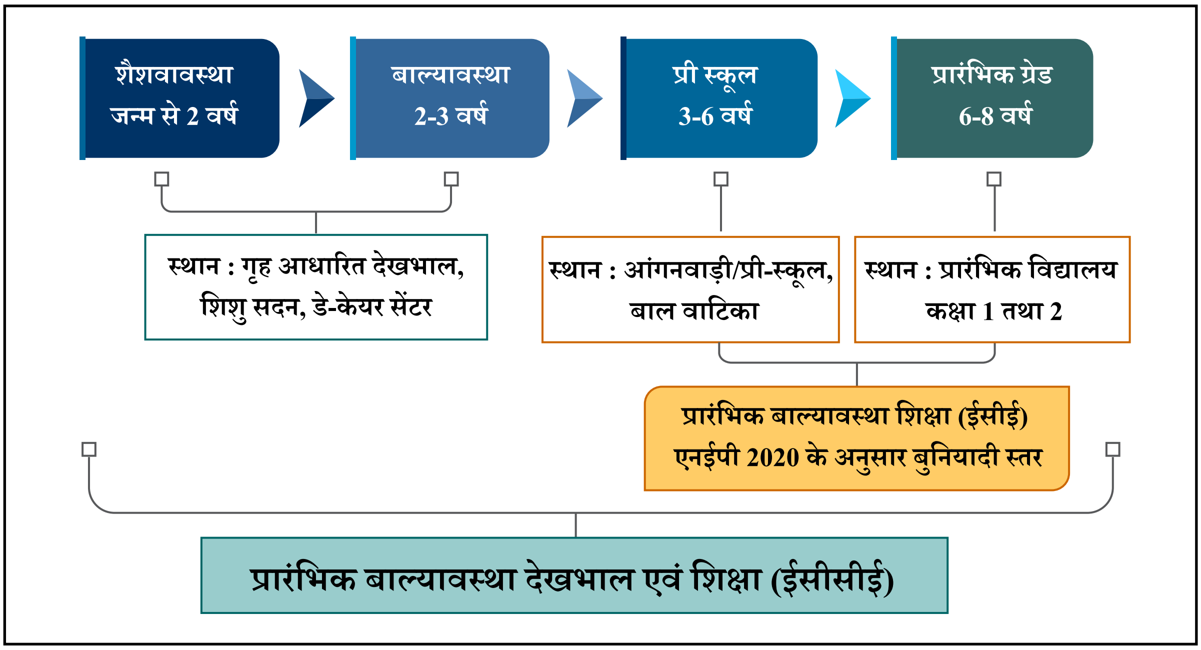

चित्र 1 : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार भारत में ईसीसीई परिप्रेक्ष्य

- प्रथम दो वर्षों की अवधि को शैशवावस्था की अवधि उद्धृत किया गया है। 2-3 वर्ष की आयु अवधि को जबकि बच्चा निर्भरता से स्वतंत्र क्रियाएँ करने और अपनी देखभाल करने की ओर कदम बढ़ाता है, उसे टाड्लर हुड कहा जाता है। अधिकांश बच्चे घर के परिवेश में ही परिवार के सदस्यों की देखभाल और देखरेख में बड़े होते हैं या यदि दोनों अभिभावक आर्थिक क्रियाओं में लिप्त हों तो शिशुगृह या डे-केयर सेंटर्स में रहते हैं। टाड्लर हुड में कई बच्चे थोड़े समय के लिए प्ले स्कूल भी जाते हैं।
- अगला चरण प्री-स्कूल या बालवाटिका (किंडरगार्टन) वर्षों का है यानी बच्चों के औपचारिक स्कूल में प्रवेश करने से पहले की अवस्था। यह आमतौर से 3-6 वर्ष की आयु का समय होता है। इस आयु तक अधिकांश बच्चे किसी न किसी औपचारिक या अनौपचारिक

कार्यक्रम-आंगनवाड़ी केंद्र, नर्सरी, स्कूलों के प्री-प्राइमरी खंड में भाग लेने लगते हैं। भारत में यह समय आज तक स्कूल प्रणाली की परिधि से बाहर ही रहा है। एनईपी, 2020 ने 3-6 वर्षों को औपचारिक स्कूल प्रणाली में शामिल करके स्कूली ढाँचे में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। भारत में यह एक उन्नतिशील कार्यक्षेत्र है जिसमें अनेक ऐसे सार्वजनिक, निजी और ऐच्छिक संगठन शामिल हैं जो प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा प्रदान करते हैं।

- चौथा चरण प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं (grades) का है यानी 6-8 वर्ष की आयु का। भारत में सामान्यत: यह चरण प्राइमरी कक्षाओं/स्कूल का हिस्सा रहा है, जहाँ गतिविधि आधारित सीखने की पद्धतियों को दूर-दूर तक सीखने की अधिमान्य पद्धति के रूप में मान्यता दी गई है। इसे अब प्री-स्कूल से कक्षा 2 तक एक निरंतरता के रूप में देखा जाता है।

चित्र 1 प्रारंभिक वर्षों के विभिन्न चरणों और स्थानों को दर्शाता है जहाँ प्रत्येक चरण पर देखभाल और शिक्षा प्रदान की जाती है। प्री-स्कूल और स्कूल स्थलों के माध्यम से 3-8 वर्ष की आयु वाले बच्चों के विकास के सभी क्षेत्रों में समग्र विकास पर फ़ोकस को प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कहा जाता है। शिक्षा नीति 2020 ने छोटे बच्चों की देखभाल एवं शिक्षा के लिए सभी प्रावधानों पर ज़ोर देते हुए इसे भारत में स्कूली प्रणाली के लिए बुनियादी अवस्था के रूप में लक्षित किया है।

ईसीसीई के व्यापक क्षेत्र और भारत में इसके ढाँचे को समझ लेने के बाद आइए अब प्रारंभिक वर्षों के महत्व, गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई कार्यक्रम को प्रभावित करने वाले कारकों और प्रत्येक शिक्षक के लिए आवश्यक भूमिका को समझें।

2.2 विकासशील मस्तिष्क

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31360812678677299212894

प्रतिलिपि

आइए, अब इस बात को समझें कि छोटे बच्चों का मस्तिष्क कैसे विकसित होता है और बच्चों को शुरू से ही उपयुक्त और उत्प्रेरक अनुभव प्रदान करना क्यों आवश्यक होता है? इसके लिए सर्वप्रथम आपको यह जानना है कि तंत्रिका विज्ञान के क्षेत्र में किए गए शोध यह दर्शाते हैं कि प्रारंभिक बाल्यावस्था वह समय है जब मस्तिष्क का ज़बर्दस्त विकास होता है। जन्म से 5 वर्ष की आयु तक मस्तिष्क का विकास जीवन के अन्य किसी भी समय से अधिक तेज़ गति से होता है।

जन्म से प्रारंभ होकर बच्चों में मस्तिष्क संयोजन प्रतिदिन के अनुभवों द्वारा विकसित होते हैं। तंत्रिका कोशिकाएँ अन्य तंत्रिका कोशिकाओं से जुड़ती हैं। इस जुड़ने को अंतर्ग्रथन या गुणसूत्रीय संयोजन कहते हैं और यह दो तंत्रिकाओं के बीच संधि स्थल होता है। बच्चा प्रत्येक बार जब अपनी किसी ज्ञान इंद्रिय का प्रयोग करता है तो एक संयोजन या मार्ग बन जाता है। पाँचों ज्ञानेंद्रियों के लिए जितने अधिक संवेदी अनुभव आप प्रदान करते हैं, तो मस्तिष्क में संवेदी मार्ग या संयोजन उतने ही मज़बूत बनते हैं। जिन ज्ञानेंद्रियों के लिए आप कोई भी अनुभव प्रदान नहीं करते, वे सुस्त पड़ जाती हैं और कुछ समय बाद मस्तिष्क इन संयोजनों से छुटकारा पा लेता है। इस प्रकार एक बच्चे के दैनिक अनुभव यह निश्चित करते हैं कि कौन-से मस्तिष्क संयोजन विकसित होंगे और आजीवन रहेंगे। इसके लिए हमें बच्चों के साथ संवाद करना होगा, अर्थपूर्ण ढंग से अंतर्क्रिया करनी होगी, उनके साथ खेलना, गाना होगा और एक अत्यंत भावनात्मक रूप से सहायक परिवेश में विकासात्मक उपयुक्त खिलौने उपलब्ध कराने होंगे।

वास्तव में, हम जो कुछ कहते या करते हैं, उससे बच्चे के सोचने, बात करने, अनुभव करने, खेलने, गति करने, सीखने के तरीकों के लिए मस्तिष्क के अंतर्ग्रथन में सहायता मिलती है। यह अवधि 'संवेदनशील अवधि' कहलाती है क्योंकि बच्चे का मस्तिष्क इस सीमित अवधि के दौरान ग्रहण करने तथा शीघ्र और कुशलता से सीखने के लिए तैयार होता है। शिक्षक तथा आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों, अभिभावकों और अन्य देखभालकर्ताओं को प्री-स्कूल, आंगनवाड़ी और घर पर संवेदनशील बनाने के लिए प्रोत्साहित करने के प्रयासों की आवश्यकता है।

बच्चे के जन्म से पहले ही संवेदी मार्ग विकसित होने प्रारंभ हो जाते है। जन्म के पश्चात संवेदी विकास के साथ-साथ भाषिक विकास आंरभ हो जाता है। 6 वर्ष की आयु के पहले ही संज्ञानात्मक व्यवहार अपने चरम पर होते हैं। यदि प्रारंभिक वर्षों को उत्प्रेरक, संवादात्मक और भावात्मक रूप से समृद्ध परिवेश का सहयोग न मिले तो बच्चे के मस्तिष्क के पूर्ण विकास के अवसर काफ़ी कम हो जाते हैं, जिसका परवर्ती प्रभाव पड़ सकता है। अत: यह अनिवार्य है कि 5 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों को औपचारिक स्कूली वर्षों से पहले ही चाहे घर के परिवेश में या प्रारंभिक सीखने के केंद्रो में प्रारंभिक सकारात्मक अनुभव प्रदान किए जाएँ।

2.3 प्रारंभिक बाल्यावस्था वर्षों का महत्व

प्रारंभिक वर्ष कई परिप्रेक्ष्य से महत्वपूर्ण हैं :

- इन्हीं वर्षों में मस्तिष्क का अधिकतम विकास होता है। प्रारंभिक वर्षों में तंत्रिका प्रणाली में तीव्र गति से परिवर्तन होता है। मस्तिष्क में तंत्रिका संयोजनों को मज़बूत बनाने के लिए सकारात्मक उत्प्रेरक और समृद्ध परिवेश प्रदान करना आवश्यक है।
- प्रारंभिक वर्ष विकास के सभी क्षेत्रों के लिए बुनियादी वर्ष हैं। भौतिक/शारीरिक गत्यात्मक, सामाजिक, भावात्मक, संज्ञानात्मक, सृजनात्मक और भाषायी कौशलों का विकास - सभी क्षेत्रों के विकास की संवेदनशील अवधि प्रारंभिक बाल्यावस्था वर्षों में ही होती है।
- प्रारंभिक वर्षों के अनुभवों का वयस्कता तक दीर्घकालीन प्रभाव होता है। सकारात्मक और नकारात्मक प्रारंभिक अनुभवों का विकास के सभी क्षेत्रों पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़ता है और ये बच्चों के कुल मिलाकर विकास और वृद्धि पर प्रभाव डालते हैं।
- इष्टतम वृद्धि और विकास प्रत्येक बच्चे का अधिकार है। यह प्रत्येक बच्चे का अधिकार है कि उसे समाज और अपने आस-पास के वयस्कों से स्वस्थ, सुरक्षित और पोषक परिवेश मिले।
- ये प्रवृत्तियों, आदतों, मूल्यों और अनुकूलन के लिए निर्माणात्मक वर्ष होते हैं। इस अवस्था में बनी छाप या प्रभाव आजीवन रहती है।

आइए, अब उन कारकों को जानें जो वृद्धि और विकास को विशेष रूप से मस्तिष्क के विकास को प्रभावित करते हैं।

कुछ प्रमुख कारक हैं :

- प्रसवपूर्व देखभाल और पोषण गर्भवती महिला का कुपोषण, मस्तिष्क की पूर्व प्रसव वृद्धि पर प्रभाव डालता है जिसका परिणाम होता है मस्तिष्क का छोटा आकार, तंत्रिका कोशिकाओं का कम बनना और कम मेलिन क्रिया।
- जन्म के पश्चात पोषण मस्तिष्क की मेलिन क्रिया और तंत्रिका संयोजनों को मज़बूत बनाने, बच्चे की शारीरिक और संज्ञानात्मक वृद्धि के लिए शरीर की औसत लंबाई और वज़न पर प्रभाव डालना जारी रखता है।
- स्वस्थ मस्तिष्क विकास हेतु बच्चे के शरीर और मस्तिष्क के लिए पोषण तथा उत्तरदायी देखभाल।
- अभिभावकों, परिवार के सदस्यों तथा अन्य वयस्कों के साथ अंत:क्रियाओं और अनुभवों के रूप में उत्प्रेरणा।
- सकारात्मक अनुभवों के साथ स्वस्थ बचपन बिताने के लिए संपूर्ण अच्छा स्वास्थ्य और स्वच्छता अत्यंत आवश्यक है।
- स्वस्थ मस्तिष्क विकास में सहायता करने के लिए बच्चे के शरीर और मन दोनों का पालन-पोषण एवं जिम्मेदार देखभाल।

- घर, प्री-स्कूल और आंगनवाड़ी में एक सकारात्मक तथा भावात्मक रूप से सहायक परिवेश।
- सुरक्षित परिवेश और बाल शोषण से सुरक्षा और बचाव।

2.4 गतिविधि 2 : संवेदी गतिविधियाँ - विचार करें

प्रत्येक इंद्रिय के लिए संवेदी गतिविधियाँ और अनुभवों के बारे में सोचें। साझा करें कि किस प्रकार ये संवेदी गतिविधियाँ आंगनवाड़ी के छोटे बच्चों के लिए लाभकारी हैं।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceHc1a2 टाइप करें।

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-ecce.blogspot.com/2022/08/01-2.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड** को स्कैन करें।

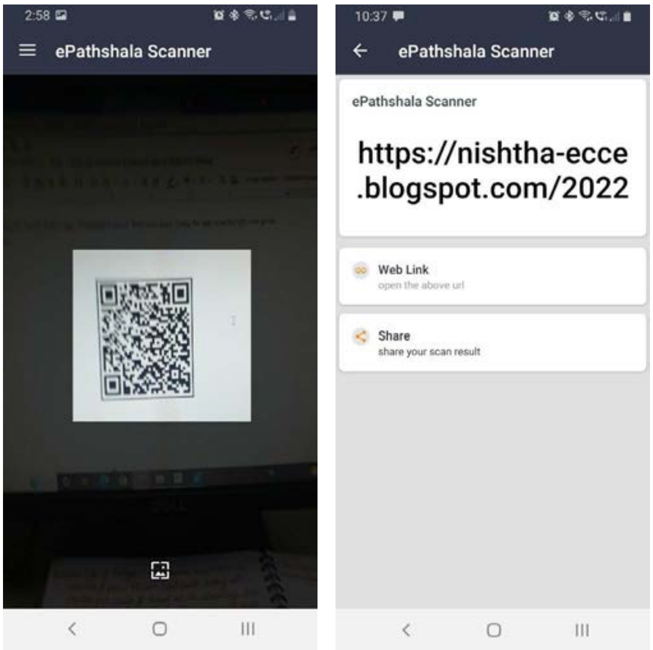

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है।

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- 'Enter your comment' पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

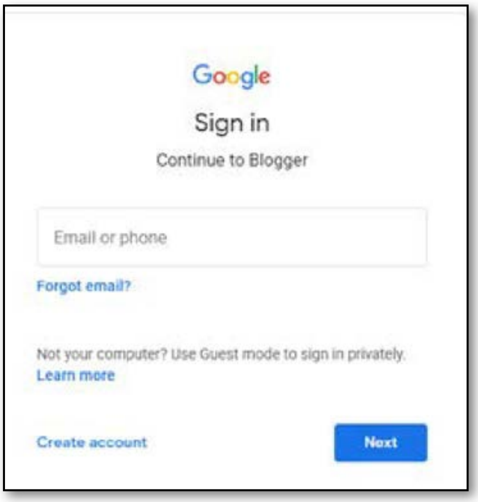

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

2.5 बाल विकास और विकास के क्षेत्रों को समझना

जैसा कि हम जानते हैं, विकास एक सतत प्रक्रिया है और छोटे बच्चों के विकास का अर्थ है एक समयावधि में बच्चों में आए परिवर्तन। इसका अर्थ है कि सभी मनुष्य एक जैसी अवस्थाओं से गुजरते हुए ही विकास करते हैं अर्थात एक शिशु पहले पेट के बल पलटना सीखता है, फिर बैठता है, फिर घुटनों के बल चलता है और तत्पश्चात खड़ा होता है और फिर चलता है। इसी प्रकार भाषिक विकास में, बच्चा पहले अस्पष्ट ध्वनियाँ बोलता है, फिर धीरे-धीरे पहले शब्द बोलता है, फिर दो शब्द और फिर वाक्य। ध्यान देने वाली बात यह है कि चाहे बच्चे अपनी गति से विकास करते हैं और अपने तरीके से करते हैं, फिर भी विकास की प्रक्रिया में कुछ समानताएँ होती हैं जो सार्वभौमिक हैं। उदाहरण के लिए :

- विकास, समय के साथ शारीरिक रचनाओं, मानसिक गुणों, व्यवहार और जीवन की माँगों के साथ अनुकूलित होने के तरीकों की व्यवस्थित उपस्थिति है।
- विकास काम करने के कौशल और क्षमताओं में प्रगति की ओर वृद्धि करने को उल्लिखित करता है।
- विकासात्मक परिवर्तन गुणात्मक और परिमाणात्मक दोनों होते हैं।

जन्म के समय से ही एक बच्चा निरंतर वृद्धि और विकास करता है। यद्यपि बच्चा समग्र रूप से विकास करता है, तथापि परिवर्तन भिन्न-भिन्न होते हैं। बच्चे की वृद्धि के साथ ये परिवर्तन विभिन्न दिशाओं में होते हैं। उदाहरण के लिए बच्चा बात करना, दौड़ना और मित्र बनाना प्रारंभ करता है, दुनिया का अर्थ और अवधारणाओं को समझना आदि प्रारंभ करता है। इन पहलुओं को विकास के क्षेत्र कहा जाता है।

मनुष्यों का विकास मुख्य रूप से पाँच क्षेत्रों में दिखाई देता है : शारीरिक गत्यात्मक, भाषिक, सामाजिक-भावात्मक, संज्ञानात्मक और सृजनात्मक एवं सौंदर्यानुभूति। ये सभी क्षेत्र आपस में जुड़े हुए हैं और एक सीमा तक एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। उदाहरण के लिए कुपोषण से शारीरिक विकास अवरूद्ध होता है, जिसका परिणाम शारीरिक गत्यात्मक क्षमताओं और संज्ञानात्मक क्षमताओं में देरी हो सकता है। आगे चलकर इसी का प्रभाव सामाजिक-भावात्मक विकास पर पड़ता है क्योंकि इससे अपनी आयु वर्ग के बच्चों के साथ बच्चे की भागीदारी और संवाद करने की योग्यता सीमित हो जाती है। आंगनवाड़ी की एक शिक्षिका जब बच्चे को समझती है और यह जानती है कि बच्चा कैसे विकास करता है तो उसके लिए विकास के प्रत्येक क्षेत्र के लिए कार्यक्रम नियोजित करना सरल हो जाता है और यह देखना भी कि बच्चा कैसे प्रगति कर रहा और सीख रहा है।

2.6 गतिविधि 3 : विकास के क्षेत्र - खोजें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31360402694397952011110

2.7 विकासात्मक लक्ष्य और सम्मिलित विकास के क्षेत्र

एक प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा पाठ्यचर्या को सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चों को विकास के प्रत्येक क्षेत्र में विकास के अवसर प्रदान हों। विकासात्मक लक्ष्यों में सम्मिलित विकास के सभी क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या के अनुभवों और गतिविधियों को बच्चों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना चाहिए। आंगनवाड़ी बच्चों के लिए एक गुणवत्तापूर्ण ईसीई कार्यक्रम को तीनों विकासात्मक लक्ष्यों के लिए अनुभव और गतिविधियाँ प्रदान करनी चाहिए।

विकासात्मक लक्ष्य विकास के मुख्य क्षेत्रों को परिभाषित करते हैं, जिन्हें प्रारंभिक वर्षों के कार्यक्रम को अवश्य पूरा करना चाहिए।

तीन विकासात्मक लक्ष्य (डी.जी.) इस प्रकार है :

- विकासात्मक लक्ष्य 1 - बच्चे अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण बनाए रखते हैं।
- विकासात्मक लक्ष्य 2 - बच्चे प्रभावशाली संप्रेषक बनते हैं।
- विकासात्मक लक्ष्य 3 - बच्चे जिज्ञासु शिक्षार्थी बनते हैं और अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ते हैं।

बाल विकास के पाँचों महत्वपूर्ण क्षेत्र : शारीरिक गत्यात्मक, सामाजिक-भावात्मक, संज्ञानात्मक, भाषा और साक्षरता तथा रचनात्मक कला और सौंदर्य प्रशंसा इन्हीं तीनों लक्ष्यों में विलयित और सम्मिलित हैं और ये स्कूल व्यवस्था में बच्चों की सफलता की योग्यता के अतिव्यापी और संबंद्ध संकेतक हैं। ये विकासात्मक लक्ष्य एक दूसरे से परस्पर संबंधित हैं और एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं।

2.8 तीनों विकासात्मक लक्ष्य और विकास के पाँच क्षेत्र किस प्रकार आपस में संबंद्ध हैं

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31360813290015948812896

प्रतिलिपि

आइए समझें कि बच्चों के विकासात्मक लक्ष्य 1 अर्थात् - "बच्चों का अच्छा स्वास्थ और खुशहाली बनाए रखना" को प्राप्त करने के लिए खेल-खेल में सीखने से जुड़ी गतिविधियों की योजना कैसे तैयार की जा सकती है। इन गतिविधियों पर एक दृष्टि डालिए और यह समझने की कोशिश कीजिए कि किस प्रकार एक गतिविधि जिसे लक्ष्य संख्या 1 के लिए तैयार किया गया है किस प्रकार वह लक्ष्य संख्या 2 एवं 3 को भी पूरा करती है। दूसरे शब्दों में, इससे आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि किस प्रकार ये

तीन लक्ष्य परस्पर आश्रित एवं अंतर्संबंधित हैं। इन बच्चों को देखिए और यह समझने का प्रयास करिए कि ये क्या कर रहे हैं और किस प्रकार सीख रहें हैं एवं किन विकासात्मक लक्ष्यों को ये गतिविधियां पूरा कर रही हैं।

अध्यापिका (प्रियंका) - विविध, अब मैं ये बड़ी गेंद फेंकने जा रही हूँ इसे पकड़ो।

विविध - मैं ये बड़ी गेंद आपको फेकने वाला हूँ।

अध्यापिका (प्रियंका) - हाँ, अब एक और बार, मैं ये छोटी गेंद फेंकने जा रही हूँ। पकड़ने की कोशिश करो।

विविध - ठीक है, अब आप ये छोटी गेंद पकड़ो।

अध्यापिका (प्रियंका) - विविध, अब यहाँ आओ। इनमे से सबसे बड़ी गेंद कौन-सी है ?

विविध - ये गेंद सबसे बड़ी है।

अध्यापिका (प्रियंका) - ठीक कहा, अब इनमे से सबसे छोटी गेंद कौन-सी है?

विविध - ये वाली सबसे छोटी है।

अध्यापिका (प्रियंका) - बहुत अच्छे, ये वाली बड़ी है और ये वाली

विविध - छोटी

अध्यापिका (प्रियंका) - बहुत अच्छे

इस प्रकार, आपने देखा कि किस तरह लक्ष्य संख्या 1 में निर्धारित संचालन कौशल को बच्चे गेंद के खेल के द्वारा मज़े-मज़े में सीख रहे हैं। हालांकि, इस गतिविधि की योजना लक्ष्य संख्या 1 के लिए तैयार की गई थी, परंतु बच्चों ने खेल-खेल में ही गणित की शब्दावली भी सीख ली। जब वह बड़ी गेंद, सबसे छोटी गेंद कह रही थी, जिससे उसे बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मकता तथा गणना के लक्ष्य भी स्वतः प्राप्त हो गए। इस प्रकार आप ने लक्ष्य संख्या 2 को भी प्राप्त कर लिया - यानी कि "बच्चे का प्रभावशाली संप्रेषक बनना।" बच्चे ने गणना सीखने से पहले सीखे जाने वाली अवधारणाओं को भी सहज रूप से खेल-खेल में ही सीख लिया। इस प्रकार आपने खेल आधारित गतिविधियों द्वारा मज़े-मज़े में लक्ष्य संख्या 3 को भी प्राप्त कर लिया – यानी कि "बच्चे तल्लीन होकर सीखते हैं और अपने आसपास के वातावरण से जुड़े होते हैं।" चूंकि गेंद (Ball) खेलने की गतिविधि के माध्यम से पूर्व-संख्या (pre number) अवधारणाओं को हम सीख चुके हैं। आइए इस बेहद मनोरंजक संगीतमय गतिविधि को देखें, जिसके माध्यम से तीनों विकासात्मक लक्ष्य प्राप्त हो जाते हैं।

हम आगे आगे आते हैं।

हम आगे आगे आते हैं।

हम पीछे पीछे जाते हैं।

हम पीछे पीछे जाते हैं।

और फिर हम घूम जाते हैं।

और फिर हम घूम जाते हैं।

हम ऊपर ऊपर जाते हैं।

हम ऊपर ऊपर जाते हैं।

हम नीचे नीचे आते हैं।

इस प्रकार से आप इससे मिलती-जुलती कहानी और गतिविधियों की योजना बना सकते हैं जिससे उक्त तीनों लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। उदाहरण के लिए, एक प्रचलित कहानी 'कबूतर और शिकारी' (The Pigeon and the Hunter) बच्चों को सुनाएं और बाद में इसी कहानी पर आधारित एक नृत्य नाटिका अथवा नाटक करें। जहां एक बच्चा शिकारी बन सकता है और शेष बच्चे कबूतर का अभिनय करते हुए संवाद बोल सकते हैं। इससे बच्चों को अपने मनोभावों को अभिनय के द्वारा प्रकट करने में बहुत मदद मिलेगी। बच्चे अभिनय के दौरान नए-नए शब्द भी सीखेंगे। नृत्य नाटिका, नाटक एवं अभिनय करते समय बच्चे स्थान संबंधी (Spatial sense) की जानकारी भी प्राप्त करते हैं। इस कहानी में दी गई शिक्षा पर बल दिए बिना बच्चे 'साथ रहने/एकता में बल' के मूल्य के बारे में अत्यंत सहज तरीके से सीखते हैं।

इस प्रकार आप पाएंगे कि बच्चे अपने शरीर को हिला-डुला रहे हैं। समूह में काम करके वे सामाजिकता के गुण के विषय के बारे में भी सीख रहे हैं, आपस में परस्पर संवाद कर रहे हैं और अपने मनोभावों को व्यक्त कर रहे हैं, स्थान संबंधी (Spatial sense) जानकारी प्राप्त कर रहे हैं, गिनती करना सीख रहे हैं, जब वो कबूतरों की संख्या को गिनते हैं। ऐसी अन्य गतिविधियों के बारे में आप सोचें। किस प्रकार आप ऐसी कहानियां गढ़ सकते हैं या ढूंढ सकते हैं जो तीनों विकासात्मक लक्ष्यों से जुड़ी हुई हो। 'स्वयं करें' यानी कि (DIY) से संबंधित खिलौने अथवा खेलने की चीज़ों का एक अन्य उदाहरण लेते हैं।

अध्यापिका (प्रियंका) - तो बच्चों, आज हम स्वयं ये गतिविधि करेंगे। इधर देखिये, ये क्या है?

बच्चे - जिराफ़

अध्यापिका (प्रियंका) - हाँ, ये जिराफ़ हम स्वयं बनायेंगे। तो क्या आप सब तैयार हैं इसके लिए?

बच्चे - हाँ जी

अध्यापिका (प्रियंका) - क्या आप उत्साहित हैं? आप दोनों भी उत्साहित हैं?

बच्चे - हाँ जी

अध्यापिका (प्रियंका) - तो चलो शुरू करते हैं। तो ये है एक जूते का डिब्बा और ये है अरे! ये क्या है? देखो और मुझे बताओ।

बच्चे - क्ले कैप्स

अध्यापिका (प्रियंका) - क्ले कैप्स, तो इन्हें हम पहियों के लिए प्रयोग कर सकते हैं और इन्हें सजाएं कैसे, तुम इन्हें सजा सकते हो?

बच्चे - कागज़ से

अध्यापिका (प्रियंका) - कागज़ से

बच्चे - रंग-बिरंगे कागज़ से

अध्यापिका (प्रियंका) - रंग-बिरंगे कागज़ से

बच्चे - हाँ मैं इसको यहाँ लगाऊंगी। फिर खींच लूँगा।

अध्यापिका (प्रियंका) - हाँ और ये बन गयी आपकी वैगन कार।

इस गतिविधि से आपने क्या देखा कि बच्चों ने क्या सीखा? बच्चों में गति संबंधी कौशल, कल्पना एवं सृजनात्मकता का विकास हुआ। बच्चों में भाषाई विकास हुआ। उन्होंने गणित एवं संबंधित शब्दावली सीखी। उन्होंने साथ मिलकर काम करना सीखा जो उनके कल्याण हेतु श्रेयस्कर है। इस प्रकार मैं यह आशा करती हूं कि आप यह समझ पाए होंगे कि किस प्रकार उक्त तीनों विकासात्मक लक्ष्य अंतर्संबंधित, अंतर्निर्भर एवं अंतराश्रित हैं।

2.9 गतिविधि 4 : बाल विकास के क्षेत्र - अपने विचार साझा करें

विकास के प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक खेल गतिविधि सोचें। आपने गतिविधि को कैसे नियोजित किया, इसके संबंध में अपने विचार साझा करें।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

***विकल्प 1* :** ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceHc1a4 टाइप करें

***विकल्प 2* :** इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-ecce.blogspot.com/2022/08/01-4.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड** को स्कैन करें।

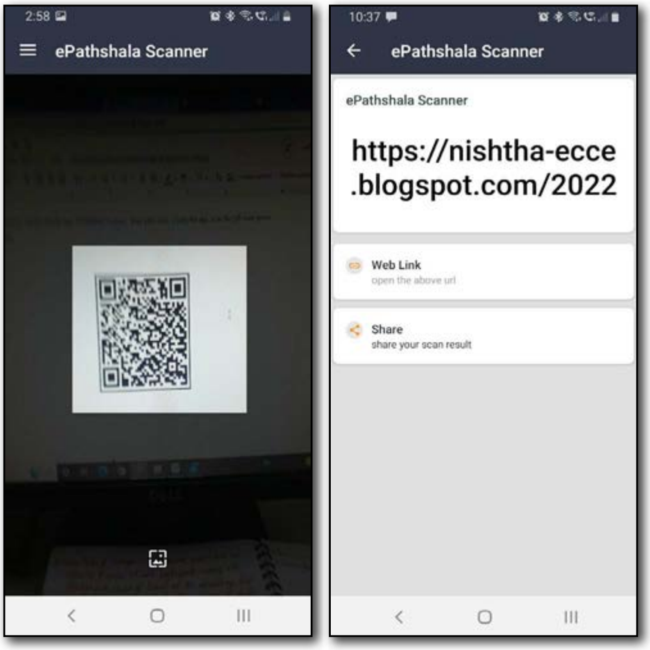

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है।

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

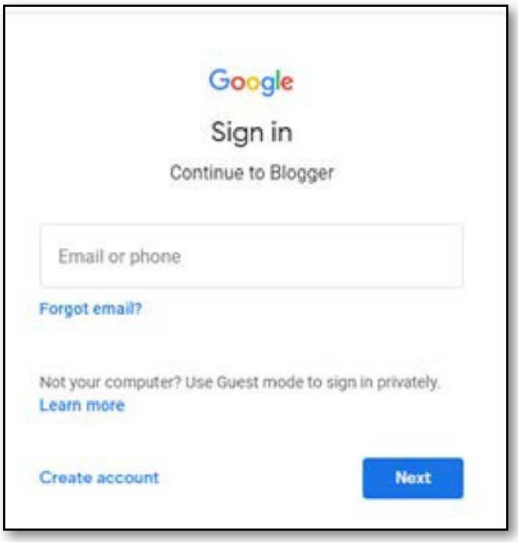

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 3

विभिन्न आयु के बच्चों की विशिष्ट विशेषताएँ

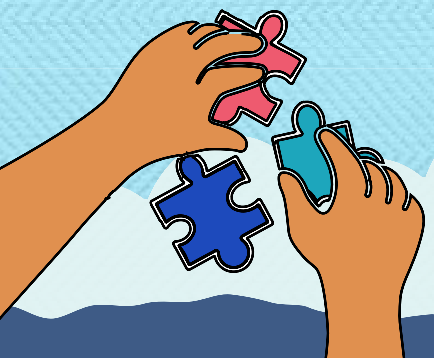

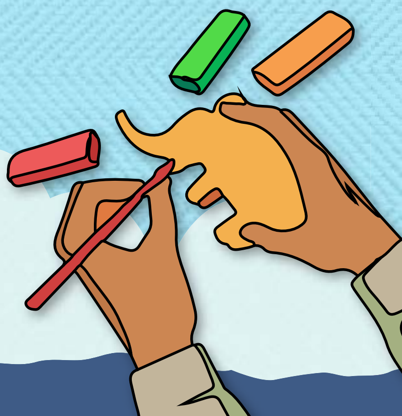

मॉड्यूल 3 : विभिन्न आयु के बच्चों की विशिष्ट विशेषताएँ

3.1 बच्चों की आयु विशिष्ट विशेषताएँ

सभी बच्चे अपनी गति से विकास करते हैं, किंतु मील के पत्थर आपको अपने बच्चे की वृद्धि के साथ होने वाले अपेक्षित परिवर्तनों की सामान्य जानकारी देते हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों/प्री-स्कूल शिक्षक और अभिभावकों तथा वे सभी जो छोटे बच्चों के लिए कार्य करते हैं, के लिए यह समझना आवश्यक है कि वास्तव में विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं में क्या होता है। इससे वे बच्चों की आवश्यकताओं को प्रभावशाली ढंग से पूरा कर पाते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि बच्चे सबसे अच्छे तरीके से जीवन में प्रारंभ करें। नीचे दिए गए कौशल स्वभाव में सार्वभौमिक हैं, जिनमें बच्चे के अनुसार विभिन्नता हो सकती है। इनमें से कुछ विकासात्मक परिवर्तन बच्चे के विकास के स्वाभाविक क्रम के माध्यम से बिना फ़ोकस्ड निवेश के हो सकते हैं उदाहरण के लिए एक बच्चा पंजों के बल चलता या फुदकता हुआ। इस बात पर ध्यान देना ज़रूरी है कि नीचे सूची में दिए गए सभी कौशल/मील के पत्थर ‘सीखने के प्रतिफल’ नहीं हैं जिन्हें पाठ्यचर्या निवेश और आकलन द्वारा जाँचा जाए। ये सांकेतिक विकासात्मक प्रगति है जिन्हें प्रारंभिक वर्षों के खेल और गतिविधि आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है और इन परिवर्तनों और प्रगति का एक समयाविधि में बच्चों में आकलन किया जा सकता है।

तीन वर्षीय बच्चों को बातें करना और सुनना बहुत अच्छा लगता है। लेकिन उन्हें गतिविधि और हिलने-डुलने तथा गति करने की भी आवश्यकता होती है, स्थूल पेशीय गतिविधि पर अधिक बल देना होता है। उन्हें नाटकीय क्षेत्र, पहिये वाले खिलौने और क्लाइंबर्स, पज़ल्स और ब्लॉक्स तथा सरल कहानियाँ सुनने, बातें करने में मज़ा आता है।

चार साल के बच्चों को और अधिक प्रकार के अनुभवों तथा सूक्ष्म पेशीय गतिविधियों जैसे कि कैंची का प्रयोग करना, चित्रकारी करना, हेर–फेर वाली वस्तुओं जैसे पज़ल्स के साथ खेलना और पकाना आदि को करने में आनंद आता है। वे अधिक ध्यान केंद्रित कर पाते हैं और वस्तुओं को उनके आकार, रंग या साइज़ के आधार पर याद रख पाते और पहचान पाते हैं।

चार साल के बच्चे मूलभूत गणितीय अवधारणाएँ और समस्या समाधान कौशल विकसित कर रहे होते हैं।

3+ के बच्चे पांच से आठ बच्चों के समूह में खुशी से गतिविधियों में भाग लेते और सहयोग करने लगते हैं और वे स्वतंत्र रूप से समूह खेल का प्रबंध करने और सँभालने के लिए तैयार होते हैं।

चार साल के कुछ बच्चे और 5 साल के अधिकांश बच्चे विचारों को अधिक जटिल संबंधों में जोड़ लेते हैं (उदाहरण के लिए, संख्या अवधारणाएँ जैसे - एक–एक की संगति) और उनकी बढ़ती स्मरण क्षमता तथा सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल होते हैं। *4 साल के कुछ तथा 5 साल के अधिकांश बच्चे* लिखित भाषा के व्यावहारिक पहलुओं में बढ़ती रुचि प्रदर्शित करते हैं, जैसे कि अर्थपूर्ण शब्दों को पहचानना और अपने-अपने नाम लिखने का प्रयास करना।

इस आयु वर्ग के लिए केवल वर्ण माला, ध्वनि और लेखन कला सिखाने के लिए बनाई गयी गतिविधियाँ एक मुद्रण समृद्ध परिवेश प्रदान करने जो अर्थपूर्ण संदर्भ में भाषा और साक्षरता कौशलों के विकास को उत्प्रेरित करता है, की अपेक्षा बहुत कम उपयुक्त होती हैं। *4 और 5 साल के अधिकांश बच्चे* अपने घर और परिवार के तत्काल अनुभव से आगे जा सकते हैं। *5 साल के बच्चे* अपने से बाहर समुदाय और बाहरी दुनिया में रुचि लेना विकसित कर रहे होते हैं और विशेष अवसरों तथा घूमने जाने का आनंद लेते हैं।

6 वर्ष के बच्चे सक्रिय होते हैं और पर्याप्त मौखिक योग्यता प्रदर्शित करते हैं और इन अनुभवों के आधार पर अवधारणाएँ तथा समस्या समाधान कौशल विकसित करते हैं। अब, बच्चे नियम समझने लगते हैं और नियमों के साथ जटिल खेल खेलते हैं। प्रतिस्पर्धात्मक और टीम खेल इस अवस्था पर पहुँचने के बाद ही आ सकते हैं। अत: इस आयु वर्ग के लिए थकाऊ मशीनी बैठे रहने वाले काम की अपेक्षा व्यावहारिक गतिविधियाँ और प्रायोगिक कार्य अधिक उपयुक्त होते हैं।

यहाँ यह बात दोहराने की आवश्यकता है कि उपरोक्त प्रत्येक आयु सीमा संकेतात्मक सार्वभौमिक आयु सीमा है। बच्चे के संदर्भ पर निर्भर करते हुए, इन मील के पत्थरों तक जल्दी या देर से पहुँचा जा सकता है। कुछ बच्चे अपने संदर्भ के अनुसार समान योग्यता प्राप्त कर सकते हैं न कि ऊपर लिखे यर्थाथमील के पत्थर।

प्रारंभिक शिक्षकों के लिए यह समझ लेना भी महत्वपूर्ण है कि यदि बच्चों के व्यवहार में ये मील के पत्थर दिखाई नहीं देते तो बच्चों को 'धीमा' शिक्षार्थी या 'देरी से विकास' से लेबल नहीं करना चाहिए। ये विशेषताएँ योग्यताओं की मोटे तौर पर प्रगति को दर्शाती है अत: यह शिक्षकों और अभिभावकों को संपूर्ण विकास पर निवेश दे सकती है। किसी विशेष कौशल जिसका लंबे समय से अवलोकन न किया गया हो और विकास में देरी दिखाई दे रही है, तब बच्चे को किसी प्रशिक्षित व्यवसायी जैसे कि बच्चों के चिकित्सक या अयोग्यता विशेषज्ञ के पास भेजना चाहिए।

3.2 गतिविधि 5 : खेल-आधारित गतिविधि - स्वयं प्रयास करें

प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी बच्चों के लिए खेल-आधारित दो गतिविधियों की सूची बनाएं।

3.3 अपने छोटे बच्चों को जानना

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31360813815327129612898

प्रतिलिपि

आइए जानें कि आपको अपने छोटे बच्चों को बेहतर समझने के लिए क्या जानने की आवश्यकता है?

आप जानते ही हैं कि प्रत्येक बच्चा अनूठा होता है। हर बच्चे के विकास का एक पैटर्न होता है। बच्चे के विकास पर उसकी आनुवंशिकता, परिवेश और पालन-पोषण का प्रभाव पड़ता है। बच्चे आमतौर पर अभ्यास और पुनरावृत्ति से सीखते हैं। बच्चे सभी चीज़ों को अपने नज़रिए से देखते हैं उनमें व्यक्तिगत विभिन्नताएँ भी होती हैं। हमें हर बच्चे के सीखने के तरीके और गति को स्वीकार करना चाहिए। आपने देखा होगा ज़्यादातर बच्चे नकल से सीखते हैं। बच्चे बहुत क्रियाशील और ऊर्जावान होते हैं। वे अधिक समय तक शांत भी नहीं बैठ सकते। अवसर और प्रोत्साहन दिए जाने से वे अक्सर प्रेरित होते हैं। बच्चों में सीखने के प्रति और नई-नई चीज़ों में रुचि लेने की जिज्ञासा होती है। शुरुवाती वर्षों तक बच्चों में अमूर्त चिंतन विकसित नहीं होता है, अत: वे मूर्त या ठोस अनुभवों से बेहतर सीखते हैं। अपने परिवेश की सक्रिय खोज करने और उसके साथ प्रयोग करने से बच्चों का विकास होता है और वे बेहतर सीखते हैं बजाए इसके कि वे रट कर सीखें। वे गतिविधियों और खेल के माध्यम से सबसे अच्छा सीखते हैं। बच्चों की ध्यान देने की अवधि यानी उनका अटेंशन स्पैम छोटा होता है। वे लंबे समय तक किसी एक गतिविधि पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते। बच्चों को बड़े समूहों में काम करने की आदत नहीं होती, इसलिए वे छोटे समूहों की गतिविधियों में अधिक रूचि लेते हैं और उनसे लाभ भी उठाते हैं। बच्चों को पुनरावृत्ति या किसी गतिविधि को दोहराना अच्छा लगता है, खासतौर से वही

कहानियाँ, किस्से या कविताएँ आदि सुनना। यदि आप इन विशेष बिंदुओं को ध्यान में रखेंगे तो आप प्रारंभिक वर्षों के महत्व को और आवश्यकता को समझेंगे और प्रभावपूर्ण ढंग से अपने ईसीई कार्यक्रम को क्रियान्वित कर सकेंगे।

3.4 गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31360391407749529611059

मॉड्यूल 4

खेल और बच्चों का प्रारंभिक अधिगम

मॉड्यूल 4 : खेल और बच्चों का प्रारंभिक अधिगम

4.1 बच्चे के सीखने के तरीके

अधिकांश शिक्षक जानते हैं कि छोटे बच्चे जब हाथों की प्रायोगिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं तो वे बेहतर सीखते हैं। इसी को कर के सीखना कहते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन सी एफ – 2005) स्पष्ट करता है *"बच्चे विविध तरीकों से सीखते हैं – अनुभव से, चीज़ें बनाने और करने से, प्रयोग द्वारा, पढ़ने, चर्चा करने, पूछने, सुनने, सोचने और विचारने तथा स्वयं को बोलकर, गति करके या लिखकर अभिव्यक्त करने से, व्यक्तिगत रूप से और दूसरों के साथ दोनों तरीके से। उन्हें अपने विकास के क्रम में इन सभी प्रकार के अवसरों की आवश्यकता होती है।"* यह सब तभी संभव है जब बच्चों को निम्नलिखित सुविधाएं प्रदान की जाएँ :

मज़ेदार सीखने के अनुभव : बच्चों को प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करने के लिए खेल सबसे अधिक प्रभावशाली तरीका है। बच्चे अपने विचार, शब्दावली, कल्पना, बोलने और सुनने के कौशलों को कल्पनात्मक खेल, चाहे वे वास्तविक स्थितियों को पुन: संरचित करना हो या काल्पनिक दुनिया का सृजन करना हो, के माध्यम से बेहतर बना सकते हैं। यह उन्हें दूसरों के साथ प्रभावशाली ढंग से संवाद करने और जुड़ने के लिए तैयार करता है। खेल, जो बच्चे को वास्तव में संलग्न रखता है खेल जिस पर बच्चा फ़ोकस करता है और समस्या आने पर भी उसके साथ जुड़ा रहता है। इस प्रकार के खेल बच्चों को सीखने की पद्धतियों के विकास और किस प्रकार वे सीखने की परिस्थितियों से अनुकूलन करें, में सहायता करते हैं। परिवेश के प्रति जिज्ञासा, पहल और समस्या समाधान, केंद्रित ध्यान और लगन कुछ ऐसी सीखने की पद्धतियाँ हैं जो बच्चे विकसित करते हैं। प्रारंभिक वर्षों में, अभिभावक, बच्चों के साथ ये खेलकर उन्हें कौशल विकसित करने में सहायता कर सकते हैं और सीखने में मदद कर सकते हैं।

संवादात्मक और सहायक अंत:क्रिया : बच्चे अपने अभिभावकों, परिवार, देखभालकर्ता, शिक्षकों और समुदायों के साथ संबंधों के माध्यम से सीखते हैं। इन पोषण करने वाले संबंधों के परिणाम स्वरूप वे सुरक्षित, आशावादी, जिज्ञासु और संप्रेषणकर्ता के रूप में बड़े होते हैं। ये अनुभव और संबंध बच्चों को सिखाते हैं कि किस प्रकार वे अपनी भावनाओं को सँभालें और अच्छी प्रकार दूसरों के साथ संवाद करें। संवादात्मक, प्रोत्साहित करने वाली और सकारात्मक प्रवृत्तियों के साथ बच्चे अच्छा सीखते है। अंत:क्रियाएँ तीन प्रकार की होती हैं 'साथी के साथ अंत:क्रिया', 'वयस्कों के साथ अंत:क्रिया' और 'सामग्री के साथ अंत:क्रिया' जिन्हें कक्षा में प्रदान किए जाने की आवश्यकता है। विभिन्न प्रकार की अंत:क्रियाओं के बारे में विस्तार से क्रमिक खंडों में बताया गया है।

अनुभवात्मक अधिगम के लिए रचनात्मक परिवेश : बच्चे अपने आसपास के परिवेश से सक्रिय और प्रत्यक्ष सामना करने से सीखते हैं जो उन्हें अपने साथियों और शिक्षकों की सहायता से ज्ञान का सृजन

करने में सक्षम बनाता है। प्रोत्साहित करने और दुनिया के बारे में बच्चे की जिज्ञासा जगाने के लिए, एक सफल प्रारंभिक अधिगम परिवेश में अनेक प्रकार की अंत:क्रियाएं शामिल होती हैं। याद रखिए, जब ज्ञान का निर्माण होता है, तो वह बना रहता है। बच्चे प्रारंभिक अवस्था में ज्ञान के अगले स्तर की जांच-पड़ताल शुरु कर देते हैं और सीखने में सर्पिल गति जारी रहती है। बच्चों को अपनी समझ स्वयं बनाने में सहायता करने के लिए उनका विकासात्मक उपयुक्त संसाधनों, अंत:क्रियाओं से लैस होना आवश्यक है।

बच्चे समग्र रूप से सीखते हैं : छोटे बच्चे समग्र रूप से सीखते हैं, जिसका अर्थ है कि वे एक समय में ही सभी स्रोतों से जानकारी ग्रहण कर लेते हैं। वे किसी एक अनुभव से कुछ सीखते हैं और उसे किसी और चीज़ के साथ जोड़ लेते हैं। देखने में जिसका कोई संबंध नहीं होता और इस प्रकार संदर्भ और अर्थ निकालने के लिए वे एक जुड़ाव बना लेते हैं।

बच्चे इंद्रियों के माध्यम से सीखते हैं : छोटे बच्चे बहुत कुछ अपनी इंद्रियों द्वारा सीखते हैं, जो उनकी भाषा और चिंतन कौशलों को सीखने से पहले ही अच्छी तरह समायोजित होती हैं। उन्हें अपनी सभी इंद्रियों का प्रयोग करने के अवसर मिलने आवश्यक हैं ताकि वे वस्तुओं और अपने चारों ओर की सामग्री की जांच-पड़ताल कर सकें। यह उन्हें खोजने, जांच करने, विचार सृजित करने व टेस्ट करने, विकल्प ढूँढ़ने, बाधाएं दूर करने, समानाभूति पैदा करने, बनाने और स्वयं समस्या समाधान करने, आत्मनिर्भर होने, आशावादी होने पर योग्य व्यक्ति बनने का रास्ता देता है।

बच्चे कलाओं द्वारा सीखते हैं : बच्चे समग्र रूप से खेल द्वारा, अपनी सभी इंद्रियों द्वारा और साथ ही कलाओं द्वारा सीख सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक अकेला शारीरिक गति सत्र शारीरिक आकृति की रचना से शारीरिक विकास कर सकता है जो कि अंगों को लचीला, स्थिर और समन्वित करता है ; विश्वासपूर्वक संबंधों द्वारा विकास-संतुलन या मसाज का अभ्यास करते समय ; संज्ञानात्मक विकास-कूदों की गिनती करके या ताल और गति के नमूने बनाकर ; भाषिक विकास-गति जैसे लड़खड़ाना, कूदना आदि की ध्वनियों को बोलकर कर सकता है।

4.2 बच्चे कैसे सीखते हैं?

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3136081419548426241290З

प्रतिलिपि

आइए समझें कि छोटे बच्चे अपने प्रारंभिक वर्षों में कैसे सीखते हैं? पहली स्थिति में बच्चों को खिलौने किताबें और खेल सामग्री देकर प्रेरित और सक्षम वातावरण प्रदान करना है, जहाँ वे वस्तुओं पर कार्य कर सकें और इस तरह के वातावरण को समृद्ध बनाने के लिए आपको चाहिए कि बच्चों को प्रिंट रिच यानी मुद्रण समृद्ध और बुनियादी संख्यात्मकता से संबंधित वस्तुओं और खिलौने से युक्त वातावरण प्रदान करें। बच्चे कैसे सीखते हैं? इसका सबसे अच्छा उदाहरण है - बच्चे व्यावहारिक तथा प्रत्यक्ष अनुभवों से सीखते हैं। इसका अर्थ है कि बच्चों के लिए खुद करके सीखना अधिक फ़ायदेमंद है। लेकिन वास्तव में खुद करके सीखने से हमारा क्या तात्पर्य है? खुद करके सीखने या सीखने का अर्थ जहाँ बच्चे केवल सुनने या शिक्षक निर्देशित गतिविधियों को करने के बजाए स्वयं से कुछ गतिविधि करने में व्यस्त हों। उदाहरण के लिए, खिलौनों के साथ खेलना, खेल सामग्री के साथ खेलना, वस्तुओं के साथ कुछ नमूने अथवा डिज़ाइन बनाना, दूसरों के साथ बातें करना और मिल जुलकर और साथ ही नए-नए शब्द सीखना।

एक और उदाहरण देखें और इन बच्चों को देखें, यह क्या कर रहे हैं और कैसे सीख रहे हैं?

हिमानी : सिलेंडर कहाँ है?

सारा : आपको सिलेंडर चाहिए? यहाँ आपको और सिलेंडर चाहिए तो ले लो।

हिमानी : नहीं मुझे पक्षी चाहिए।

सारा : ठीक है आप मेरा ले सकती हो। मैं यहाँ कुछ और रख सकती हूँ। मैं यह रख सकती हूँ।

हिमानी : लाल ब्लॉक

सारा : हिमानी ?

हिमानी : मुझे नीला सिलेंडर चाहिए।

सारा : ठीक है मैं यह ले सकती हूँ। हिमानी, क्या आप मेरी मदद कर सकती हो?

हिमानी : हाँ, क्यों नहीं।

डॉ. रोमिला सोनी : जब यह बच्चे जोड़ तोड़कर खेलते हैं तो वह समस्याओं को हल करने वस्तुओं को ढूंढने, तलाशने, प्रयोग करने और सृजन करके कुछ बनाने का प्रयत्न करते हैं।

सारा : मुझे इसकी ज़रूरत है। क्या मैं यह ले सकती हूँ?

हिमानी : हाँ

सारा : अब एक प्यारी सी चिड़िया। नहीं नहीं नहीं। मैं इसे हटाना चाहती हूँ। तोड़ो मत। आपको एक पक्षी चाहिए ना?

हिमानी : हाँ

सारा : आप मेरा ले सकती हो। हिमानी, क्या आप मुझे छोटी चिड़िया दे सकती हो? मेरे पास एक आइडिया है हिमानी! आप पक्षी को एक साथ रख सकते हो। हाँ, मैं छोटा ले सकती हूँ। आपके पास बड़ा पक्षी है और मेरे पास छोटा पक्षी है।

हिमानी : एक, दो, तीन, चार। मेरे पास चार सिलेंडर है और आपके पास तीन सिलेंडर है।

सारा : एक, दो, तीन। मेरे पास तीन सिलेंडर है। आपके पास चार सिलेंडर है।

डॉ. रोमिला सोनी : हिमानी, आपने क्या बनाया है?

हिमानी : मैंने पक्षी का घर बनाया है।

डॉ. रोमिला सोनी : ठीक है। यह एक पक्षी का घर है। क्या आप मुझे बता एक बात बता सकती हो? अगर आप इस ब्लॉग को अपने टावर पर रखेंगे, तो क्या होगा?

हिमानी : इसमें संतुलन नहीं होगा और यह टूट जाएगा।

डॉ. रोमिला सोनी : हाँ। काफी स्मार्ट जवाब है। ऐसा क्यों होगा?

हिमानी : क्योंकि यह बड़ा है और यह सभी छोटे हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : ठीक है। सारा, तुमने क्या बनाया है?

सारा : मैंने पक्षी का घर बनाया है।

डॉ. रोमिला सोनी : यह पक्षी का घोंसला है। ठीक है। बहुत अच्छा। किसका पक्षी बड़ा है और किसका छोटा?

सारा : वह एक बड़ा पक्षी है और यह एक छोटा पक्षी है।

डॉ. रोमिला सोनी : यह एक छोटा पक्षी है। ठीक। बहुत अच्छा। क्या आप मुझे बता सकती हो आपके पास कितने लाल रंग के चौकोर है?

सारा : तीन

डॉ. रोमिला सोनी : ठीक है, मुझे तीन दिखाओ।

सारा : एक, दो, तीन

डॉ. रोमिला सोनी : ठीक है और पीले ब्लाक कितने हैं?

सारा : एक

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा! आप दोनों ने बहुत अच्छा काम किया है, आप अपने लिए ताली बजाएं। तो आपने देखा कि कैसे बच्चे समस्या का समाधान करते हुए पहेली को हल करना सीखते हैं? इसी तरह वह कार्यपत्रक पर भूल-भुलैया को भी हल करते हैं और आपके स्वतंत्र प्रश्नों का उत्तर देते हैं। करके सीखने की गतिविधियां बच्चों को वस्तुओं में हेर-फेर करने, गतिविधियों में भाग लेने, नए विचारों को आज़माने, समस्याओं का समाधान खोजने, उनकी जिज्ञासा को संतुष्ट करने और नए आविष्कार करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस तरह के खेल समस्या-समाधान और समालोचनात्मक चिंतन में अनुभव प्रदान करते हैं, जो बच्चे की बुनियादी संख्यात्मकता और प्रारंभिक साक्षरता के लिए आधार प्रदान करते हैं। जब बच्चे किसी वस्तु या लक्ष्य पर कार्य करते हैं तो वे उसके विभिन्न भौतिक गुणों के बारे में भी सीखते हैं। उदाहरण के लिए जब वे क्ले मॉडलिंग यानी कि मिट्टी के खेल का आनंद लेते हैं तो वह इसे गीला करते हैं, थपथपाते हैं और इसमें चीज़ें बनाते हैं। जब वह गेंद से खेलते हैं तो उन्हें पता चलता है कि यह लुढ़क सकती है और उछल भी सकती है। बच्चे वस्तुओं की बनावट के बारे में भी सीखते हैं। फिर वह नरम, कठोर, खुरदुरी या चिकनी ही क्यों न हो। जब वह खिलौना वाहनों यानी कि टोय कार्स से खेलते हैं तो वे पहियों की संख्या, बड़े पहिये, छोटे पहिये, उनके रंग आदि के बारे में भी सीखते हैं। एक और बात जैसे-जैसे बच्चे वस्तुओं को छूते हैं, उनके बारे में जानते हैं तो बच्चे वस्तुओं के बीच संबंध बनाना सीखते हैं। उदाहरण के लिए बच्चा जब ब्लॉक बिल्डिंग क्षेत्र में टावर को ऊँचा बनाते समय बेलनाकार ब्लॉक को ढूंढता है तब वह उन ब्लॉक्स के बीच संबंध बनाता है जो बेलनाकार होते हैं और जो नहीं होते हैं। इस प्रकार बच्चे ब्लॉक्स के साथ खेलते हुए एक से एक का मिलान यानी कि वन-टू-वन कॉरेस्पोंडेंस करते हुए, ब्लॉक को गिनते हुए, उनका मिलान करते हुए, उन्हें छाँटते हुए और रिक्त स्थान के लिए ब्लॉक को फिट करते हैं। यहाँ तक कि जब वह प्रत्येक कपड़े पर एक-एक चिमटी लगाते हैं तब भी वह एक तरह से एक से एक का मिलान कर रहे होते हैं और बुनियादी संख्यात्मकता की ओर बढ़ रहे होते हैं। जब बच्चे अलग-अलग रंगों के मोतियों को एक तार में डालते हैं तो वो मुख्य और क्रमिक नंबरों के साथ-साथ, पैटर्न यानी कि नमूना और रंग में भिन्नता भी सीखते हैं। इसलिए एक शिक्षक के रूप में आपको बच्चों को विचारों और अवधारणाओं के बारे में सीखने में मदद करनी चाहिए। इसके लिए बच्चों को विभिन्न प्रकार के खिलौने, वस्तुएं और गतिविधियां प्रदान करनी चाहिए जो उन्हें हेर-फेर, मैनिपुलेशन, खोजने और नई शब्दावली सीखने के लिए प्रेरित करती है।

4.3 चित्र पठन पोस्टरों और ओपन एंडेड प्रश्नों द्वारा सीखना

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।
https://diksha.gov.in/play/content/do_31360814840444518412366

प्रतिलिपि

आइये, सारा से हम कुछ स्वतंत्र सवाल यानी कि ओपन-एंडेड प्रश्न पूछें।

डॉ. रोमिला सोनी : हिमानी और सारा मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ सवाल हैं। ठीक है। आपको ध्यान से सुनना है और तुम्हे उनके जवाब ध्यान से देने है। ठीक है। हिमानी पहले तुम्हारे लिए, अगर कभी दरवाज़ा बंद हो गया तो क्या करोगी?

हिमानी : हम चिल्लाएंगे और हम दरवाज़ा खटखटा सकते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : ठीक है, तुम चिल्लाओगी और दरवाजा खटखटाओगी और फिर भी कोई नहीं होगा, तो तुम क्या करोगी? चलो सारा से पूछते हैं। सारा तुम क्या करोगे?

सारा : मैं एक पेपर लूंगी उस पर लिखूंगी और पेपर को दरवाज़े से बाहर फेंक दूंगी। फिर कुछ समय तक इंतज़ार करुंगी।

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा। ठीक है, वह कागज़ पर एक नोट लिख देगी और उसे खिड़की या दरवाज़े से बाहर फेंक देगी। ताकि कोई भी इसे पढ़ सके और सारा और हिमानी की मदद कर सके। बहुत अच्छा, आपके लिए ताली। मेरे पास आपके लिए एक और सवाल है। मुझे बताइए कि आप किस तरह से एक गिलास दूध को ठंडा कर सकते हैं।

सारा : मैं बर्फबारी में एक गिलास को पानी में डुबा सकती हूँ।

डॉ. रोमिला सोनी : आप गिलास को पानी में रखेंगे और बर्फ के नीचे भी रखेंगे। यह एक अद्भुत

जवाब है और अगर बर्फबारी नहीं हुई तो?

सारा : फिर मैं रख सकती हूँ जहाँ बर्फ हो।

डॉ. रोमिला सोनी : ठीक है, आप इसे बर्फ के पास या बर्फ में रख सकते हैं। आप क्या करेंगे हिमानी?

हिमानी : मैं इसे फ्रिज में रखूंगी।

डॉ. रोमिला सोनी : ठीक है। आप कुछ और सोच सकते हो?

सारा : मैं बता सकती हूँ।

डॉ. रोमिला सोनी : पहले हिमानी से पूछते हैं, पहले हिमानी को जवाब देने देते हैं।

सारा : हम इसे हवा में भी रख सकते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : जहाँ ठंडी हवा होती है वहाँ रख सकते हैं। बढ़िया! हिमानी अब आप उत्तर दें।

हिमानी : हम एक गिलास से दूसरे गिलास में भी डाल सकते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : हाँ, आप एक गिलास से दूसरे गिलास में गर्म दूध डाल सकते हैं। कुछ और जो आपके दिमाग में आता हो? दोनों?

सारा : मैं इसे पंखे की सहायता से भी ठंडा कर सकती हूँ।

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा, वह कहना चाहती है कि उसे पंखे के नीचे रख सकती है। बहुत बढ़िया। आप और कुछ कहना चाहती हो हिमानी? ठीक है मुझे एक और रोचक प्रश्न पूछने दो। लेकिन आपको ध्यान से सुनना होगा और अब सारा पहले जवाब देगी और फिर हिमानी जवाब देगी। सारा मुझे तीन फलों के नाम बताओ? ध्यान से सुनो, तुम्हें ऐसे तीन फलों के नाम बताने हैं जिन्हें छीलकर खाया जा सकता है।

सारा : सेब, केला, संतरा।

प्रो. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा! बताओ हिमानी?

हिमानी : पपीता, अनार, संतरा।

सारा : इसके अलावा लीची।

डॉ. रोमिला सोनी : हाँ, लीची भी। बहुत अच्छा! एक और आखिरी सवाल। एक फल का नाम बताओ। अब हिमानी बताएगी जिसमें केवल एक बीज है?

हिमानी : आम

डॉ. रोमिला सोनी : आम! आपको आम पसंद है?

सारा : हाँ, मुझे बहुत पसंद है।

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा। मुझे भी बहुत पसंद है।

सारा : और यह फलों का राजा है।

डॉ. रोमिला सोनी : सारा, अब मुझे एक सब्जी का नाम बताओ जो लाल रंग की हो।

सारा : टमाटर

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत अच्छा। तो अपने लिए ताली बजाओ।

सारा : क्या मैं आपको बता सकती हूँ अपने पसंदीदा फल में क्या मिला है और इसमें पत्ते हैं?

डॉ. रोमिला सोनी : आपका पसंदीदा फल कौन सा है?

सारा : लीची

डॉ. रोमिला सोनी : बीटरूट

सारा : लीची

डॉ. रोमिला सोनी : मुझे भी लीची पसंद है। हिमानी आपको भी लीची पसंद है?

हिमानी : हाँ

डॉ. रोमिला सोनी : चलो अपने लिए ताली बजाएं।

एक और बहुत ही दिलचस्प बात यह है कि आप देखेंगे कि किस तरह दृश्यों यानी कि विजुअल्स को देखकर बच्चे कितना कुछ सीख पाते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : आइए करते हैं पिक्चर रीडिंग पोस्टर की गतिविधि। ठीक। क्या आप तैयार हो हिमानी और सारा?

सारा : हाँ

हिमानी : हाँ

डॉ. रोमिला सोनी : ठीक है। इसे देखो और मुझे बताओ की आप इस तस्वीर में क्या देखते हैं?

हिमानी : लड़का मुर्गी को खाना दे रहा है।

डॉ. रोमिला सोनी : हाँ

सारा : लड़की आम छीलकर लड़के को दे रही है।

डॉ. रोमिला सोनी : आप और क्या देख सकते हैं?

सारा : मैं देख सकती हूँ कि आदमी गाय का दूध निकाल रहा है।

डॉ. रोमिला सोनी : हिमानी, क्या आप मुझे बता सकते हो कि लड़का लड़की से क्या बात कर रहा है?

हिमानी : लड़का लड़की से बात कर रहा है,

डॉ. रोमिला सोनी : वह क्या कह रहा है?

हिमानी : वह कह रहा है कि कृपया आम दे दो।

डॉ. रोमिला सोनी : और लड़की क्या कह रही है?

हिमानी : वह आम दे रही है

डॉ. रोमिला सोनी : उसने लड़के को क्या जवाब दिया?

हिमानी : आम ले लो

डॉ. रोमिला सोनी : आम ले लो। वह कितने आम दे रही है?

हिमानी : एक

डॉ. रोमिला सोनी : सारा, मुझे बताओ कि यह दोनों महिलाएं क्या बात कर रही हैं?

सारा : क्या आप इसका मिश्रण बनाने में मदद कर सकती हैं?

डॉ. रोमिला सोनी : और दूसरी महिला ने क्या जवाब दिया होगा?

सारा : ठीक है। मैं तुम्हारी मदद करुँगी। लेकिन सिर्फ एक बार।

डॉ. रोमिला सोनी : ठीक है। तो उसने कहा ठीक है, मैं तुम्हारी मदद करूंगी लेकिन सिर्फ एक बार। अच्छा बताओ कितनी मुर्गियाँ हैं? स्पष्ट करो और दिखाओ।

हिमानी : एक, दो, तीन, चार, पाँच। पाँच।

डॉ. रोमिला सोनी : ठीक है, और मुर्गा भी है?

हिमानी : हाँ।

डॉ. रोमिला सोनी : कितने मुर्गे हैं?

हिमानी : एक।

डॉ. रोमिला सोनी : मुर्गा कहाँ है? हाँ। तो आपको तस्वीर देखकर अच्छा लगा?

सारा, हिमानी : हाँ।

डॉ. रोमिला सोनी : तो बस आनंद लो और देखो कि वह क्या कर रहे हैं और आपस में बात करिए। चित्र वाले पोस्टर का उपयोग करें और बच्चों से तरह-तरह के प्रश्न पूछें और बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। इस तरह के प्रश्न जिसमें हम क्या होगा जैसे बहुत सारे तरह-तरह के प्रश्न बच्चों से पूछे। बच्चें प्रश्न पूछकर और उनका जवाब देकर बहुत कुछ सीखते हैं। तो अब आप समझ ही गए होंगे कि बच्चे वस्तुओं का प्रबंधन और उनमें हेरफेर करके अधिक से अधिक और बेहतर सीख पाते हैं। जब वह वस्तुओं के साथ कार्य करते हैं तो वे तेज़ी से सीखते हैं, जब वे पुस्तकों को देखते हैं उनको उलटते-पलटते हैं और अपने परिवेश में लेखन और मुद्रण देखते हैं, तो वे प्रिंट जागरूकता यानी कि प्रिंट अवेयरनेस के बारे में भी सीखते हैं। जब बच्चे अपने बड़ों को किताबें, पत्रिकाएं, समाचार पत्र

आदि पढ़ते हुए देखते हैं, तो वे उनकी देखा-देखी उनका अनुकरण करके भी सीखते हैं और वे प्रिंट से प्रेरित भी होते हैं। आपने यह भी सीखा है कि बच्चे एक संरक्षित, सुरक्षित और सीखने के वातावरण में रचनात्मक और समालोचनात्मक रूप से चिंतन करते हैं। जब वह किसी वस्तु के साथ कार्य करते हैं, तो वे ज़्यादा बेहतर तरीके से चिंतन करते हैं। वे छोटे समूहों में अपने साथी बच्चों के साथ बातचीत करते हैं और विचार विमर्श करते हैं। बच्चे सामग्री, वस्तुओं के साथ काम करते हुए तेज़ी से सीखते हैं क्योंकि इससे उन्हें बौद्धिक और सामाजिक रूप से विकसित होने में मदद मिलती है।

4.4 अतिरिक्त पठन : खेल की शक्ति

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल के महत्व को कमतर नहीं आँका जा सकता क्योंकि बच्चे की वृद्धि और विकास के लिए खेल अनिवार्य है। खेल प्रारंभिक वर्षों में कई तरीकों से मस्तिष्क के विकास में वृद्धि करता है, क्योंकि यह बच्चे को अपने आसपास के परिवेश की बेहतर समझ प्रदान करता है और बाद में मस्तिष्क के विकास के लिए आधार तैयार करता है। खेल बच्चों के सर्वांगीय विकास (शारीरिक, गत्यात्मक, सामाजिक, भावात्मक, भाषा, संज्ञानात्मक और सृजनात्मक तथा सौंदर्यानुभूति विकास) का आवश्यक वाहन होने के साथ-साथ उनके विकास का प्रतिबिंब होता है। अत: प्री-स्कूल और आंगनवाड़ी ईसीसीई कार्यक्रम या पाठ्यचर्या खेल पर एक ऐसे माध्यम के रूप में बल देता है जो बच्चों को ज्ञान का सृजन करने के लिए परिवेश से तथा आपस में संवाद करने के अवसर प्रदान करता है। बच्चे खेल के माध्यम से अपने विचार और भावनाएँ अभिव्यक्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त वे अपने चारों ओर की दुनिया का अवलोकन कर सकते हैं, समझ सकते हैं। यह बच्चों में सामाजिक संबंध बनाने और स्वस्थ आदतों का निर्माण करने में सहायक होता है। खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने में बहुत उपयोगी होता है। खेल ईसीई प्रदान करने का प्रभावशाली माध्यम है। खेल के माध्यम से प्राप्त ज्ञान बच्चे के पास स्थायी रूप से रहता है। खेल, मुक्त खेल और निर्देशित खेल हो सकते हैं। मुक्त खेल में बच्चे पहल करते हैं और बड़ों का निरीक्षण बहुत कम होता है, जबकि निर्देशित खेल की पहल एक विशिष्ट सीखने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर शिक्षक द्वारा की जाती है। प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियाँ कुछ ऐसी खेल गतिविधि सोच सकती हैं जिन्हें छोटे समूहों में कराया जा सके और जिनमें बच्चे अपने खिलौनों, अन्य खेल-सामग्री को एक-दूसरे के साथ साझा करें और साथ ही वस्तुओं को खोजें और उनके बारे में सीखें। छोटे समूह की खेल गतिविधियां बच्चों की सीखने में प्रगति का अवलोकन करने और एक-दूसरे के साथ उनके व्यवहार पर नज़र रखने में शिक्षिका की सहायता करती हैं। इसे मुक्त खेल माना जाएगा। निर्देशित खेल वह है जहां प्री-स्कूल शिक्षिक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री के मस्तिष्क में कुछ उद्देश्य होते हैं और वह उन्हीं के अनुसार खेल गतिविधि कराती है, उदाहरण के लिए 'दिखाओ और बताओ' गतिविधि, जिसमें बच्चे को एक खिलौना दिया जाता है और उससे खिलौने का वर्णन अपने शब्दों में करने को कहा जाता है या 'नंबर डॉट डोमिनो' देकर उन्हें नंबर डोमिनो कार्ड से मिलाने को कहा जाता है।

खेल के लाभ

सीखने के सभी क्षेत्रों या विकास के सभी क्षेत्रों के लिए खेल गतिविधियाँ नियोजित की जानी चाहिए और सभी बच्चों को गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए विकासात्मक लक्ष्य-1 के लिए (जिसमें शारीरिक गत्यात्मक, सामाजिक-भावात्मक, सृजनात्मक विकास के क्षेत्र सम्मिलित हों) संरचना करना, बिल्डिंग ब्लॉक्स से स्टैकिंग करने से छोटे बच्चे गणित और विज्ञान की अवधारणाएं खोजते हैं जिसमें आकृतियां, संतुलन और गिनती शामिल होती है। इसी प्रकार मुक्त और निर्देशित खेल अवसर पांचों क्षेत्रों के लिए नियोजित किए जा सकते हैं, पर ध्यान देना होगा कि मुक्त और निर्देशित गतिविधियों में संतुलन बना रहे। प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों को चाहिए कि वे बच्चों को बेकार बची वस्तुओं और कम कीमत की सामग्री से खिलौने बनाने में शामिल करें क्योंकि इससे बच्चे आपसी सहयोग का कौशल सीखने के साथ अपनी चिंतन, संवाद, समस्या समाधान और भाषिक कौशलों को भी तेज़ी से सीखेंगे। इसके लिए एक सुरक्षित परिवेश के निर्माण की आवश्यकता होती है और बच्चों की पांचों इंद्रियों को उत्प्रेरित करने के लिए खिलौनों और खेल सामग्री को चुने जाने तथा प्रदान करने की ज़रुरत है। बच्चों को अपने आसपास के परिवेश से सामग्री एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जैसे - विभिन्न प्रकार की पत्तियाँ, बीज, पंख, कंकड, तिनके, विभिन्न माप की बोतलों के ढक्कन आदि और फिर उन्हें स्वयं कुछ निर्मित और डिज़ाइन करने देना चाहिए। उनके चिंतन और कल्पना को उत्प्रेरित करने के लिए खुली और खुले अंत वाली सामग्री स्वयं बनाने और विचारने के लिए दी जानी चाहिए। प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में गुणवत्तापूर्ण खेल के लिए चुनौतीपूर्ण, आयु और विकासात्मक उपयुक्त खिलौने, सामग्री और गतिविधियां दी जानी चाहिए।

खेल प्रत्येक क्षेत्र में विकास की बढ़ोत्तरी करते हैं : बच्चों के स्थूल मांसपेशीय कौशल विकसित करते हैं जब वे पहुंचना, पकड़ना, रेंगना, दौड़ना, चढ़ना और संतुलन सीखते हैं। जितना अधिक वे हस्तकौशलीय वस्तुओं और खिलौनों से खेलते हैं, उतनी ही उनके सूक्ष्म मांसपेशीय कौशल मज़बूत बनते हैं। बच्चे अवधारणाओं को अधिक तेज़ी से और बेहतर ढंग से ग्रहण करते हैं, जब वे खेल के माध्यम से समाधान करना सीखते हैं और समस्याओं से निपटते हैं जैसे कि जब वे पहेलियां पूरी करते हैं और खुले अंत वाले प्रश्नों के उत्तर देते हैं। वे अपने चारों ओर के आसपास के परिवेश का अवलोकन करते हैं, खोजते हैं और रंगों, आकृतियों, आकार आदि के बारे में सीखते हैं। जब वे प्रत्यक्ष और स्थूल तरीके से वस्तुओं और खिलौनों को संभालते हैं, तो इससे उनके स्मरण कौशल में वृद्धि होती है और उनके ध्यान देने की अवधि बढ़ जाती है। बच्चे अभिव्यक्त करना सीखते हैं उनका भाषा और साक्षरता कौशलों पर अधिकार होता जाता है जब वे दूसरों से बात करते हैं, कहानी के किसी पात्र की भूमिका पर अभिनय करते हुए चर्चा करते हैं और संवाद बोलने के समय अपनी बारी लेने का अभ्यास करते हैं। जब वे अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं, सहयोग करते हैं और सरल नियमों के अनुसार खेलते हैं तो वे अपेक्षित सामाजिक व्यवहार सीखते हैं। ये खेल अनुभव बच्चों को तेज़ी से और बेहतर सीखने में सहायता करते हैं।

••• मॉड्यूल 5 •••

प्री-स्कूल और उसकी देखभालकर्ता

मॉड्यूल 5 : प्री-स्कूल और उसकी देखभालकर्ता

5.1 प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री को सशक्त बनाना

आइए, एक मेंटर के रूप में आपकी भूमिका और प्री-स्कूल शिक्षक की भूमिका को समझें।

हम सब जानते हैं कि एक बच्चा उस परिवेश का परिणाम होता है जिसमें वह बढ़ता/बढ़ती है। घर की छोटी-सी व्यवस्था में बच्चा अपने माता-पिता और अन्य परिवार के सदस्यों के साथ अंत:क्रिया करता है और प्रभावित होता है। आपको अपने प्री-स्कूल केंद्र बच्चों के अभिभावकों का मार्ग निर्देशन करना होगा कि वे अपने बच्चों के साथ बात करें, अंत:क्रिया करें और खेलें। आपको उन्हें यह भी गाइड करना होगा कि कैसे खेलें, क्या बातें करें और बच्चों को अंत:क्रिया करने में कैसे मदद करें और आसपास के परिवेश को खोज़ें। अपने आसपास के लोगों से अंत:क्रिया तथा परिवेश की वस्तुओं और लोगों तथा वस्तुओं के साथ अुनभव ही बच्चे के विकास का मार्ग निश्चित करते हैं। जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होना शुरू होता है, उसका परिवेश विस्तृत होता जाता है। जिसमें अन्य सूक्ष्म निकाय जैसे पड़ोस और आंगनवाड़ी या एक प्री-स्कूल शामिल हो जाते हैं। अत: घर के अतिरिक्त आंगनवाड़ी या प्री-स्कूल ही बच्चे का सबसे महत्वपूर्ण सूक्ष्म निकाय है और शिक्षक की बच्चे की देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री एक उत्प्रेरक परिवेश प्रदान करती है और बच्चे की वृद्धि और विकास को इष्टतम स्तर तक पहुँचाने में सहायता करती है।

हम सब जानते हैं कि बड़े स्तर पर जो भी नियोजित किया जाता है, उसे प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों और प्रशिक्षकों के बिना पूरा नहीं किया जा सकता। आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री समाज, अभिभावक और बच्चों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी होती है और शिक्षक प्रशिक्षक इन आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों के साथ मिलकर काम करते हैं। यदि एनईपी 2020 के माध्यम से ईसीसीई को सार्वभौमिक बनाने के राष्ट्रीय लक्ष्य को पंख लगे हैं तो ऐसा केवल आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों और शिक्षक प्रशिक्षकों के सक्रिय योगदान से ही पूरा हो सकता है। आप और प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री उपलब्ध संसाधनों से नियोजन करने में और समुदाय के लोगों के बीच जाकर ईसीई की आवश्यकता बताने में सहायता कर सकते हैं। आप स्थानीय नेताओं और समुदाय के लोगों तक पहुँच कर उन्हें आगे आने और संसाधनों तथा समय प्रदान करके समुदाय के सभी बच्चों को ईसीसीई प्रदान करने में भागीदार बना सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात है आप का यह सुनिश्चित करना कि ईसीई कार्यक्रम खेल और गतिविधि आधारित हो और बच्चे बेहतर तथा तेज़ गति से सीखें। आप उन्हें यह सुनिश्चित करा सकते हैं कि ये क्रियाएँ आयु और विकासात्मक उपयुक्त हैं और बच्चों को कोई हानि नहीं पहुँचाएँगी।

आपको एक ईसीसीई प्रशिक्षक या प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री के रूप में शिक्षण और छोटे बच्चों के साथ अंत:क्रिया करने के लिए एक जुनून विकसित करना चाहिए। जो विषय सामग्री

आपको आंगनवाड़ी/प्री-स्कूल के बच्चों को देनी है, आपको उसके बारे में पता होना चाहिए और इसके साथ ही प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में बच्चों के साथ दिन-प्रतिदिन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। आप में सृजनात्मकता, अनुकूलता, धैर्य, उत्तरदायित्व, सूझ-बूझ और हँसमुख प्रवृत्ति होनी चाहिए। आपको अपने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का मार्ग दर्शन करने की आवश्यकता है कि वे सृजनात्मक और प्रदर्शन कलाओं जैसे गाना, नृत्य, कहानी, कठपुतली शो करना और कला, हस्तकला कार्य में कौशल विकसित करें। कंप्यूटर का ज्ञान आपके और प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों के लिए एक अतिरिक्त गुण है।

आपको अपनी प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों का खेल अनुभव नियोजित करने प्रारंभिक अधिगम के लिए संसाधनों की पहचान करने और उन्हें जुटाने, एक सहायक सामाजिक और भावात्मक परिवेश का सृजन करने जिसमें बच्चे खेल और सीख सकें, मार्गदर्शन करने की आवश्यकता है। कक्षा व्यवस्था द्वारा बच्चों के आपसी संवाद को बढ़ावा देना चाहिए क्योंकि यह सीखने का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। बच्चा शिक्षक, वस्तुओं और खेल सामग्री तथा अन्य बच्चों के साथ अंत:क्रिया करते हुए सीखता है। यह एक रोचक बात है कि स्वयं अपने साथ बच्चे की अंत:क्रिया करने के अतिरिक्त उसकी सामग्री और अन्य बच्चों के साथ अंत:क्रिया को भी शिक्षक निश्चित करते हैं। अत: प्रारंभिक बाल्यावास्था कक्षा में प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

बच्चे का समस्त पास्थितिक तंत्र जिसमें अभिभावक और अन्य देखभालकर्ता शामिल होते हैं, शिक्षिका के साथ छोटे बच्चों के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

स्वंय करें

अपने रजिस्टर कार्य के अतिरिक्त प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री के गुणवत्तापूर्ण ईसीसीई कार्यक्रम प्रदान करने में मूलभूत पाँच उत्तरदायित्वों के बारे में अपने विचार साझा करें।

सारांश

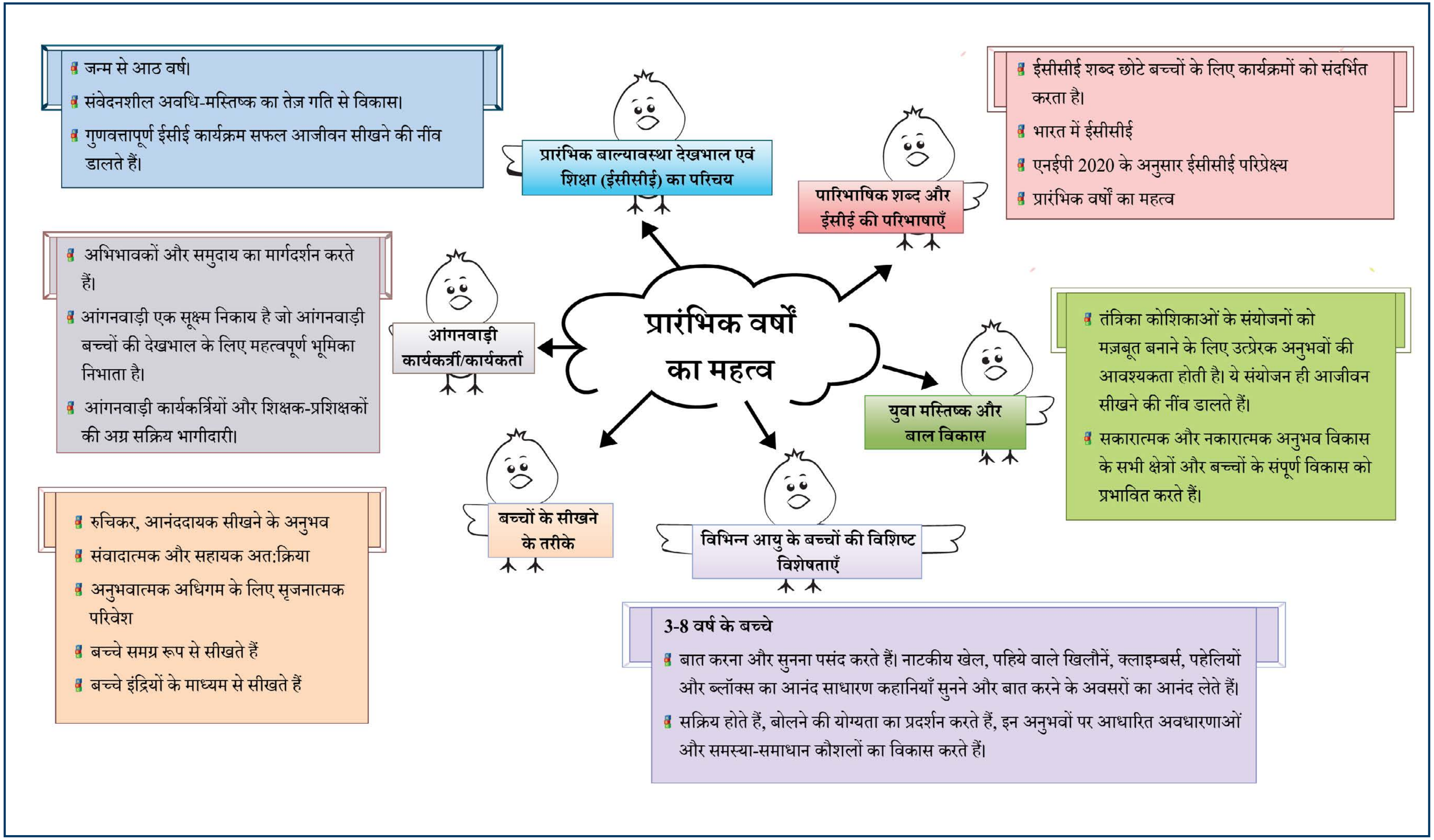
प्रारंभिक वर्षों का महत्व
प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) का परिचय
जन्म से आठ वर्ष।
संवेदनशील अवधि-मस्तिष्क का तेज़ गति से विकास।
गुणवत्तापूर्ण ईसीई कार्यक्रम सफल आजीवन सीखने की नींव डालते हैं।
पारिभाषिक शब्द और ईसीई की परिभाषाएँ
ईसीसीई शब्द छोटे बच्चों के लिए कार्यक्रमों को संदर्भित करता है।
भारत में ईसीसीई
एनईपी 2020 के अनुसार ईसीसीई परिप्रेक्ष्य
प्रारंभिक वर्षों का महत्व
आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री/कार्यकर्ता
अभिभावकों और समुदाय का मार्गदर्शन करते हैं।
आंगनवाड़ी एक सूक्ष्म निकाय है जो आंगनवाड़ी बच्चों की देखभाल के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों और शिक्षक-प्रशिक्षकों की अग्र सक्रिय भागीदारी।
युवा मस्तिष्क और बाल विकास
तंत्रिका कोशिकाओं के संयोजनों को मज़बूत बनाने के लिए उत्प्रेरक अनुभवों की आवश्यकता होती है। ये संयोजन ही आजीवन सीखने की नींव डालते हैं।
सकारात्मक और नकारात्मक अनुभव विकास के सभी क्षेत्रों और बच्चों के संपूर्ण विकास को प्रभावित करते हैं।
बच्चों के सीखने के तरीके
रुचिकर, आनंददायक सीखने के अनुभव
संवादात्मक और सहायक अत:क्रिया
अनुभवात्मक अधिगम के लिए सृजनात्मक परिवेश
बच्चे समग्र रूप से सीखते हैं
बच्चे इंद्रियों के माध्यम से सीखते हैं
विभिन्न आयु के बच्चों की विशिष्ट विशेषताएँ
3-8 वर्ष के बच्चे
बात करना और सुनना पसंद करते हैं। नाटकीय खेल, पहिये वाले खिलौनें, क्लाइम्बर्स, पहेलियों और ब्लॉक्स का आनंद साधारण कहानियाँ सुनने और बात करने के अवसरों का आनंद लेते हैं।
सक्रिय होते हैं, बोलने की योग्यता का प्रदर्शन करते हैं, इन अनुभवों पर आधारित अवधारणाओं और समस्या-समाधान कौशलों का विकास करते हैं।

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

अपने आंगनवाड़ी बच्चों के लिए खेल को प्रारंभिक सीखने का मुख्य साधन मानते हुए दो गतिविधियाँ निम्नलिखित प्रारूप में विकसित कीजिए :

- बच्चों का आयु वर्ग :
- उद्देश्य :
- खेल की सीखने की सामग्री और तैयारियाँ :
- गतिविधि का नाम और वर्णन :
- प्रमुख विचार/सामग्री कवरेज :
- पूर्व ज्ञान :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- पोज़ीशन पेपर नेशनल फ़ोकस ग्रुप ऑन अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन. 2006. नई दिल्ली
  https://ncert.nic.in/pdf/focus-group/executive-summary.pdf
- एनसीईआरटी. (2008). अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन : एन इंट्रोडक्शन. नई दिल्ली।
  https ://ncert.nic.in/dee/pdf/Earlychildhood.pdf
- सोनी, रोमिला एवं संगई, संध्या (2015). स्मूथ एंड सक्सेसफ़ुल ट्राज़िशन्स
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/smooth_successful.pdf
- सोनी, रोमिला एवं संगई, संध्या (2016). यंग चिल्ड्रेन इन मोशन
  https ://ncert.nic.in/dee/pdf/young_children.pdf
- सोनी, रोमिला (2005). लिटल स्टेप्स : ए मेनुअल फ़ॉर प्री-स्कूल टीचर्स
  https ://ncert.nic.in/pdf/publication/otherpublications/little-steps-pdf
- सोनी, रोमिला (2015). थीम बेस्ड अर्ली चाइल्डहुड केयर एवं एजूकेशन प्रोग्राम
  https ://ncert.nic.in/dee/pdf/deethemebased.pdf
- सोनी, रोमिला (2019). हाऊ कैन पेरेंट्स सपोर्ट देयर यंग चिल्ड्रेंस अर्ली लर्निंग एट होम
  https ://ncert.nic.in/dee/pdf/booklet.forparents.pdf
- सोनी, रोमिला एवं संगई, संध्या (2014). एवरी चाइल्ड मेटर्स ए हैंडबुक ऑन क्वालिटी
  https://ncert.nic.in/dee/every_child.php
- सोनी, रोमिला (2021 रीप्रिंटेड). ट्रेनर्स हैंडबुक इन अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजूकेशन, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/trainerhadnbook.pdf
- एनसीईआरटी, ईसीई-एन इंट्रोडक्शन (2021 रीप्रिंटेड)
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/Earlychildhood.pdf
- सोनी, रोमिला (2021 रीप्रिंटेड) रेडिनेस एक्टीविटीज़ फ़ॉर द बिगिनर्स (वाल्यूम 1 और 2)
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/readinessactivitiesvol1.pdf
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/readinessactvol2.pdf
- सिंह, सावित्री (2016) खेल-खेल में, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/khelhkel2016.pdf
- सोनी, रोमिला (2017). दर्पण एक्टीविटी बुक ऑन क्लीनलीनेस एंड गुड हेबिट्स
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/darpan_20.pdf

वेब लिंक

- प्री-स्कूल एज्यूकेशन - https://www.youtube.com/watch?v=0GPBUPua7wk

निष्ठा (ईसीसीई)

शिक्षा के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों और स्कूल प्रमुखों के लिए एक एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्करण # 1.01

कोर्स 02

खेल-आधारित सीखने के परिवेश का नियोजन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली - 110016

अनुक्रमणिका

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

मुख्य शब्द

उद्देश्य

कोर्स की रूपरेखा

1. प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी और उसका परिवेश

1.1 ईसीसीई सेटिंग्स के लिए भौतिक और खेल आधारित सीखने का परिवेश

1.2 गतिविधि 1 : प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी शिक्षकों की भूमिका - अपने विचार साझा करें

2. प्री-स्कूल की स्थापना और रखरखाव

2.1 परिवेश का नियोजन : आंतरिक और बाहरी

2.2 प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी : आंतरिक स्थान

2.3 गतिविधि 2 : फ्लोर प्लान के बारे में सोचें, योजना बनाएं और डिजाइन करें - स्वयं प्रयास करें

2.4 सरल और नवीन विचारों का उपयोग करके प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी कैसे डिजाइन करें?

2.5 प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी : बाहरी स्थान

2.6 गतिविधि 3 : रुचि क्षेत्रों को डिजाइन करना - अपने विचार साझा करें

2.7 दिव्यांग बच्चों के लिए अनुकूलन

2.8 गतिविधि 4 : रुचि के क्षेत्र - स्वयं करें

3. प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी के लिए ईसीसीई पाठ्यचर्या का नियोजन

3.1 खेल आधारित ईसीसीई पाठ्यचर्या

3.2 संतुलित ईसीसीई पाठ्यचर्या

3.3 ईसीसीई कार्यक्रम/दिनचर्या के नियोजन के सिद्धांत

3.4 एक दिन की दिनचर्या का नमूना

3.5 गतिविधि 5 : योजना कार्यक्रम - अपनी समझ की जाँच करें

3.6 प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में बच्चों के खेल और कार्य का अवलोकन

3.7 गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करें

4. अंतर्निहित विकासात्मक उपयुक्त आकलन के लिए नियोजन

4.1 खेल और गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को जानना और समझना

4.2 अतिरिक्त सामग्री : शिक्षक द्वारा बच्चों के अवलोकन और विचार

- **सारांश**
- **पोर्टफोलियो गतिविधि**
  - » असाइनमेंट
- **अतिरिक्त संसाधन**
  - » संदर्भ
  - » वेब लिंक

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

यह कोर्स प्री-स्कूल/आंगनवाड़ियों में सीखने के परिवेश और गुणवत्तापूर्ण ईसीई कार्यक्रम की योजना पर एक सिंहावलोकन प्रदान करता है। यह शिक्षार्थी को खेल-आधारित सीखने के परिवेश को डिज़ाइन करने में सहायता प्रदान करेगा और सभी छोटे बच्चों के लिए खेल आधारित अनुभव भी तैयार करेगा।

मुख्य शब्द

NISHTHAECCE, PLAY BASED, PLAY ACTIVITIES, PLANNING, PEDAGOGY, BALANCED CURRICULUM, LEARNING ENVIRONMENT

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- प्रारंभिक शिक्षा के लिए एक भौतिक खेल वातावरण बनाने में।
- गतिविधियों के लिए आंतरिक और बाहरी स्थानों की रचना करने में।
- ईसीसीई कार्यक्रम के लिए योजना बनाने के सिद्धांतों को समझने में।
- खेल और गतिविधि आधारित सीखने की योजना बनाने में।
- अन्तर्निहित मूल्यांकन के साथ आयु उपयुक्त शैक्षणिक प्रथाओं का चयन और उपयोग करने में।

कोर्स की रूपरेखा

- शारीरिक खेल और प्रारंभिक सीखने का परिवेश
- छोटे समूह के खेल के लिए रुचि क्षेत्रों का क्षेत्रीकरण
- खिलौनों और खेल सामग्री का उपयोग
- संतुलित ईसीसीई पाठ्यक्रम
- ईसीसीई कार्यक्रम/दिनचर्या के लिए योजना बनाने के सिद्धांत
- तीन विकासात्मक लक्ष्यों के बारे में पूर्व योजना बनाना
- थीम आधारित और गतिविधि आधारित योजना : वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक और दैनिक योजनाएं
- विकासात्मक रूप से उपयुक्त मूल्यांकन

••• मॉड्यूल 1 •••

प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी और उसका परिवेश

मॉड्यूल 1 : प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी और उसका परिवेश

1.1 ईसीसीई सेटिंग्स के लिए भौतिक और खेल आधारित सीखने का परिवेश

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्युआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31360880131742105612498?contentType=Resource

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों, स्वागत है,

हम प्री-स्कूल और आंगनवाड़ी के लिए भौतिक और खेल-आधारित सीखने के परिवेश और इसकी योजना बनाने के तरीकों के बारे में जानने जा रहे हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक इसका खेल और सीखने का परिवेश है यानी प्री-स्कूल शिक्षक या आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री कैसे स्थान की खोज व्यवस्था और उसकी साज-सज्जा करते हैं? एक अच्छी तरह से डिज़ाइन किया हुआ भावनात्मक रूप से सहायक परिवेश, दोनों आंतरिक और बाहरी परिवेश, बच्चों का अन्वेषण का समर्थन करता है, उन्हें अपनेपन की भावना देता है, केंद्रित और स्व-निर्देशित खेल और सीखने में संलग्न करने में सक्षम बनाता है। बच्चों के सीखने को सुविधाजनक बनाने के लिए आंतरिक और बाहरी खेल-क्षेत्र भौतिक परिवेश बनाते हैं। बच्चों के खेलने के लिए प्री-स्कूल के भौतिक परिवेश में कुछ सुविधाएं होनी चाहिए जैसे कि खेल गतिविधियों के लिए पर्याप्त जगह, प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी के अंदर और बाहर, छोटे और बड़े दोनों समूहों के लिए; छोटे समूह यानी कि रुचि क्षेत्रों में मुक्त खेल उदाहरणस्वरूप साक्षरता क्षेत्र, गणित या जोड़-तोड़ क्षेत्र, गुड़िया और नाटकीय खेल-क्षेत्र, खोज-क्षेत्र, कला-क्षेत्र; सभी बच्चों के लिए पर्याप्त स्वदेशी खिलौने और खेल सीखने की सामग्री उपलब्ध होना; और एक सावधानीपूर्वक नियोजित आनंदमय दैनिक कार्यक्रम। प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी के आंतरिक

स्थान को गतिविधि या रुचि-क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है जहां बच्चे छोटे समूहों में खिलौनों और सामग्रियों का अन्वेषण करते हुए उनके साथ मज़ेदार तरीकों से खेल भी सकते हैं। बच्चों को उनकी पसंदीदा समय देने के अलावा, इन क्षेत्रों में मुफ्त खेल सभी बच्चों के लिए छोटे समूहों में काम करने, वस्तुओं को छांटने, छोटी समस्याओं को सुलझाने, निर्णय लेने, दूसरों के साथ सहयोग करने, व्यक्त करने के लिए भाषा का उपयोग करने, किसी कार्य या खेल गतिविधि आदि को पूरा करने हेतु जैसे कौशल विकसित करने के अवसर प्रदान करता है। मुक्त और निर्देशित बाहरी खेल गतिविधियों के लिए प्रतिदिन लगभग 30 मिनट का समय अलग रखना चाहिए।

प्री-स्कूल शिक्षक को बच्चों को उपयुक्त खेल-उपकरण और गतिविधियाँ प्रदान करके बड़ी मांसपेशियों के कौशल विकसित करने में मदद करनी चाहिए और साथ ही साथ नए कौशल में महारत हासिल करने के लिए उनका बारीकी से निरीक्षण, मार्गदर्शन और आकलन करना चाहिए। अंत में, प्री-स्कूल शिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बाहरी स्थान सुरक्षित, खतरों से मुक्त है और एक ऐसा उत्तेजक वातावरण प्रदान करता है जिसमें बच्चे अपनी पांचों ज्ञानइंद्रियों के माध्यम से अपने आसपास के वातावरण, पक्षियों, पौधों, जानवरों और कीड़े-मकौड़ों के बारे में सीखते हैं। लेकिन कक्षा में जगह की कमी हो तो क्या करें? आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री या प्री-स्कूल शिक्षक बारी-बारी से दो या तीन रुचि क्षेत्र बना सकती हैं और इसे लगभग 15 दिन रख सकती हैं और फिर शेष दो या तीन रुचि क्षेत्र फिर से बना सकती हैं। किंतु ‘पठन-क्षेत्र’ और ‘गणित या जोड़-तोड़ क्षेत्र’ जैसे एक या दो क्षेत्रों को, बच्चों की मूलभूत साक्षरता और संख्याज्ञान के पर्याप्त अवसर प्रदान करने के लिए नियमित आधार पर स्थापित करना चाहिए। उदाहरण के लिए, शिक्षक ब्लॉक बिल्डिंग क्षेत्र, गुड़िया क्षेत्र और कला क्षेत्र बना सकती हैं और अगले पंद्रह दिनों में, वह अन्य रुचि क्षेत्रों को स्थापित कर सकती हैं। इसी तरह, यदि उसके पास बाहर खेलने की पर्याप्त जगह नहीं है तो वह पास के किसी पार्क, चौपाल, पास के प्राथमिक विद्यालय परिसर को खोज सकती हैं, जहाँ वह बच्चों को बाहरी खेलने के अवसर प्रदान कर सकती हैं। आप सीखेंगे कि प्री-स्कूल शिक्षक और आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री बच्चों के सीखने और विकास के लिए परिवेश को अधिक अनुकूल बनाने के लिए क्या कर सकते हैं?

1.2 गतिविधि 1 : प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी शिक्षकों की भूमिका - अपने विचार साझा करें

बच्चों के लिए सीखने के माहौल की योजना बनाने में प्री-स्कूल शिक्षकों/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों की भूमिका पर अपने विचार साझा करें?

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceHc2a1 टाइप करें

<u>विकल्प 2</u> : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-ecce.blogspot.com/2022/08/02-1.html

<u>विकल्प 3:</u> प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड** को **स्कैन** करें।

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है।

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- 'Enter your comment' पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- ‘**PUBLISH**’ पर क्लिक करें।

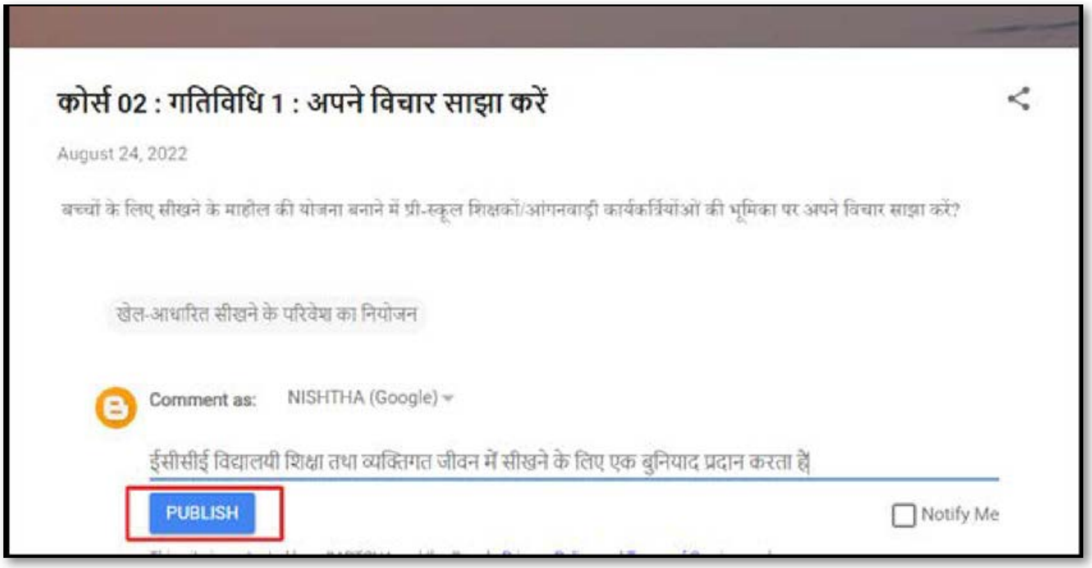

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

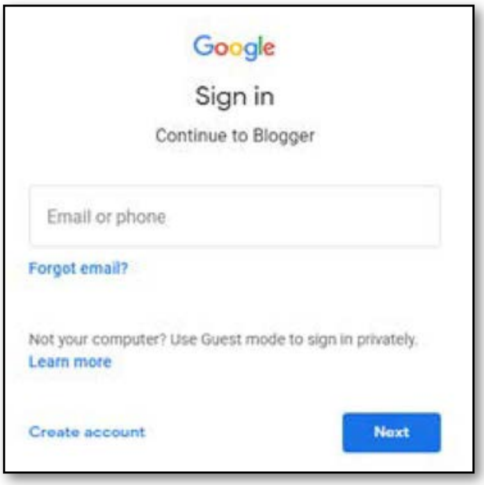

- लॉग इन करने के बाद ‘**Display Name**’ डालें और फिर ‘**Continue to Blogger**’ पर क्लिक करें।

‘PUBLISH’ पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

••• मॉड्यूल 2 •••

प्री-स्कूल की स्थापना और रखरखाव

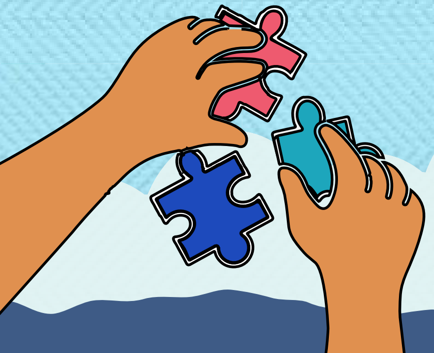

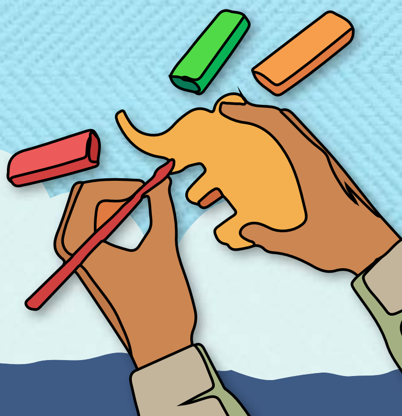

मॉड्यूल 2 : प्री-स्कूल की स्थापना और रखरखाव

2.1 परिवेश का नियोजन : आंतरिक और बाहरी

ईसीई सेटिंग्स के भौतिक परिवेश का अर्थ है कक्षा/आंगनवाड़ी का उपलब्ध स्थान, वातायन व्यवस्था, रोशनी, दीवारों के रंग, फर्श के प्रकार (दरी/गद्दे का इस्तेमाल), खिड़कियों की संख्या। यद्यपि कई विशेषताओं पर किसी का नियंत्रण नहीं हो सकता है, कोई भी, उचित प्रदर्शन के साथ, उपयुक्त स्वदेशी खेल सामग्री और खेल क्षेत्रों के साथ, घर के अंदर और बाहर दोनों जगह प्री-स्कूल की जगह को इस तरह से डिजाइन कर सकता है कि यह दिलचस्प और आकर्षक बन जाए और इसका उद्देश्यपूर्ण उपयोग किया जा सके। प्री-स्कूल की सेटिंग, सुरक्षित, स्वच्छ, आरामदायक, आकर्षक और अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई होनी चाहिए जो बच्चों को खेल आधारित गतिविधियों में शामिल होने और खुशी से सीखने में मदद करेगी। ऐसा वातावरण ईसीई कार्यक्रम के लिए नियोजित तीन विकासात्मक लक्ष्यों का समर्थन करेगा और शिक्षक के लिए खेल गतिविधियों की योजना बनाना और साथ ही उनके सीखने में बच्चों की प्रगति का निरीक्षण करना आसान हो जाता है।

भौतिक सेटिंग इतनी सार्थक रूप से सृजित होनी चाहिए कि यह बच्चों में अपने परिवेश को खोजने के लिए उत्साह और उत्सुकता पैदा करे और इसलिए हम कहते हैं कि प्रिंट समृद्ध और संख्यात्मक समृद्ध वातावरण होना चाहिए। इसके अलावा, शिक्षक के लिए (विषय चार्ट, दृष्टि शब्द, कहानी चार्ट, कविता चार्ट आदि प्रदर्शित करने के लिए) और बच्चों के लिए (बच्चों के काम के नमूने, उनके सामान आदि के लिए) दोनों के लिए अच्छा प्रदर्शन स्थान होना चाहिए।

शिक्षक को अपने प्री-स्कूल में जो भी जगह उपलब्ध है, उसमें इनडोर (आंतरिक) और आउटडोर (बाह्य) खेल क्षेत्रों की योजना बनाने और उन पर विचार करने की आवश्यकता है। सीखने का माहौल और खेल-आधारित ईसीई पाठ्यक्रम में सभी बच्चों के लिए खेलने की सुविधा, अनुभव और सामग्री होनी चाहिए। यह शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री की जिम्मेदारी है कि वह अपने बच्चों की ताकत और जरूरतों की पहचान करे और उसके अनुसार सेटिंग्स और पाठ्यक्रम की योजना बनाएं। प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी को एक आरामदायक, जीवंत और भावनात्मक रूप से सहायक सेटिंग प्रदान करनी चाहिए जहां सभी छोटे बच्चे खुशी से आते हैं और प्रारंभिक शिक्षा का आनंद लेते हैं।

2.2 प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी : आंतरिक स्थान

प्री-स्कूल स्थान को रुचि के क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है जो बच्चे द्वारा शुरू किए गए खेल और शिक्षक-निर्देशित खेल की योजना बनाने में मदद करेगा। गतिविधि या रुचि के क्षेत्रों को पांच से

छह बच्चों के समूहों के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिसमें विकास के लिए उपयुक्त खेल सामग्री होती है, जिसके साथ वे खेल सकते हैं। इन क्षेत्रों को प्री-स्कूल सेटिंग के भीतर इस बात पर विशेष बल के साथ स्थापित किया गया है जो बच्चों को उस क्षेत्र में खेलने और तलाशने के लिए प्रोत्साहित करता है। प्रत्येक रुचि क्षेत्र में उपलब्ध खिलौनों और सामग्रियों को समय-समय पर बदलने की आवश्यकता होती है ताकि बच्चे ऊब न जाएं और समय के साथ विभिन्न प्रकार की सामग्री तक पहुंच सकें। अक्सर, प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में किए जा रहे वर्तमान विषय/परियोजना/अवधारणाओं को दर्शाने के लिए सामग्रियों को बदल दिया जाता है। बच्चों के लिए आवश्यक स्वच्छता बनाए रखने के लिए किसी भी कीटाणु या बैक्टीरिया को मारने के लिए शिक्षकों को समय-समय पर खेल सामग्री को साफ़ और स्वच्छ करना याद रखना चाहिए। कमी या अपर्याप्त स्थान की स्थिति में, इन क्षेत्रों को रोटेशन के आधार पर और साथ ही अस्थायी आधार पर स्थापित किया जा सकता है, उदाहरण के 3 से 4 गतिविधि क्षेत्रों की योजना बनाई जा सकती है और दूसरे सप्ताह में, अन्य गतिविधि क्षेत्रों को स्थापित किया जा सकता है। कमरे को छोटी दरियों/चटाइयों का उपयोग करके या पुराने डिब्बों/जूते के बक्से, खुली अलमारियों और रैक आदि का उपयोग करके विभिन्न गतिविधियों के लिए छोटे वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। याद रखें, प्रत्येक ईसीई सेटिंग अलग है, इसलिए इन रुचि क्षेत्रों को व्यवस्थित करने का तरीका अलग होगा। प्रत्येक क्षेत्र का विवरण निम्नलिखित है :

- **घेरा समय क्षेत्र :** प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में एक खुली जगह तलाशने की जरूरत है जो बच्चों के बड़े समूह को एक दूसरे और शिक्षक के साथ निर्देशित गतिविधि और बातचीत में शामिल होने की अनुमति देता है। यह वह स्थान है जहां शिक्षक मुक्त बातचीत, गायन, संगीत और हिलने-डुलने वाली गतिविधियों, कहानी कहने, इनडोर (आंतरिक) खेलों जैसी गतिविधियों का संचालन करता है और कैलेंडर, सप्ताहांत गतिविधि, त्योहारों, मौसम आदि और मॉडल के बारे में भी बात करता है और साक्षरता, संख्यात्मकता और सामाजिक कौशल को बढ़ावा देता है।
- **पठन क्षेत्र (भाषा और साक्षरता क्षेत्र) :** बच्चों को किताबों को छूने, महसूस करने और संभालने का अवसर मिलना चाहिए। किताबों के संपर्क में आने पर, वे किताब के आगे और पीछे की पहचान करना शुरू कर देते हैं और पन्ने पलटना सीखते हैं। कक्षा में एक कहानी पढ़ने के बाद, शिक्षक/कार्यकर्त्री पुस्तक की एक प्रति पठन-क्षेत्र/टोकरी में छोड़ दें तो यह सहायक होता है। इस प्रकार, बच्चों के पास पुस्तक को फिर से देखने और पुस्तक के माध्यम से पन्ने पलटने में सक्रिय रुचि लेने का अवसर होता है क्योंकि वे यह समझने लगते हैं कि यह पुस्तक किस बारे में है। इनमें बड़ी बोर्ड की किताबें, चित्र पुस्तकें, स्थानीय भारतीय लोक कथाएँ, साधारण कहानी की किताबें, पॉप-अप किताबें, विषय से संबंधित किताबें, कॉमिक्स, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र आदि शामिल हो सकते हैं।
- **लेखन क्षेत्र (भाषा और साक्षरता क्षेत्र) :** इस क्षेत्र को छोटे बच्चों की आंखों के स्तर पर चलने वाले चॉक बोर्ड को जिसे प्रयोग किए हुए कागज़ के पिछले हिस्से को चिपकाकर बनाया जा

सकता है और लेखन उपकरण के एक बॉक्स को स्क्रिबलिंग और मार्क बनाने के लिए पास रखा जा सकता है। इस क्षेत्र में ऐसी सामग्री होनी चाहिए जो बच्चों को लेखन का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करे जैसे कि विभिन्न आकारों में कागज की विभिन्न किस्में, नोटबुक, नोट पैड, मोटी पेंसिल, स्टैम्प, स्टैम्प पैड, पंचर, लिफाफे, मोटे क्रेयॉन, पेंट, पेंट (बड़े और मोटे) ब्रश, स्केच पेन, चाक और स्लेट।

- **गणित/जोड़तोड़ क्षेत्र :** इस क्षेत्र (टोकरी/बड़े कार्टन बॉक्स का उपयोग करें) में अलग-अलग रंगों, आकृतियों और आकारों के छोटे ब्लॉक, विभिन्न आकारों के स्ट्रॉ और अलग-अलग आकार की छड़ें/टहनियाँ होनी चाहिए। पहेलियाँ, प्रकृति की सामग्री जैसे पत्ते, पंख, कंकड़, मैचिंग कार्ड, लेसिंग स्ट्रिंग्स/लेसिंग कार्ड, थ्रेडिंग स्ट्रिंग्स, शेप कट-आउट, अल्फाबेट, नंबर, छोटे इंटरलॉकिंग ब्लॉक, बीड्स आदि को भी शामिल किया जाना चाहिए। देशी खिलौने, कठपुतली रंगमंचीय सामान के रूप में बच्चों की रुचियों से जुड़े हों वर्तमान और पर्यावरण से संबंधित वस्तुओं को भी यहां रखा जा सकता है। मापने के लिए, अलग-अलग आकार के कप, चम्मच, एक वजन का पैमाना, मापने वाला टेप, ऊंचाई चार्ट आदि भी जोड़ा जा सकता है।
- **ब्लॉक बिल्डिंग एरिया :** जैसा कि पहले बताया गया है, बच्चों को रचनात्मक तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करने के लिए विभिन्न प्रकार के ब्लॉक रखने के लिए बड़े बक्से का उपयोग करें क्योंकि वे विभिन्न प्रकार की संरचनाएं बनाते हैं। इसके अलावा, कभी-कभी बच्चे सहकारी रूप से एक संरचना का निर्माण करते हैं, जिसके लिए उन्हें एक दूसरे के साथ संवाद करने और एक टीम के रूप में काम करने की आवश्यकता होती है।
- **डिस्कवरी/विज्ञान क्षेत्र :** इसे आंगनवाड़ी में स्थायी क्षेत्र के रूप में विकसित नहीं किया जा सकता है क्योंकि बच्चे कमरे के अन्य क्षेत्रों में भी वैज्ञानिक अवधारणाओं और कौशल सीखते हैं। यह क्षेत्र उन सामग्रियों से सुसज्जित हो सकता है जो एक समय में केवल एक विषय पर ध्यान केंद्रित करती हैं, उदाहरण के लिए एक पानी की बाल्टी, टब और मग, रैंप और पहिये, आवर्धक कांच, गोले, पौधे, बीज, रंगीन चुंबक और लोहे का बुरादा, फोम के टुकड़े, वजन तराजू और बाट, माप टेप या कोई अन्य स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री।
- **कला और संगीत क्षेत्र :** इस क्षेत्र की गतिविधियां उंगलियों और हाथों की सूक्ष्म मांसपेशियों को व्यायाम करने का अवसर प्रदान करती हैं, जो उन्हें लिखने के लिए भी तैयार करती हैं। इस क्षेत्र में सामग्री में विभिन्न प्रकार के कागज, मोटे क्रेयॉन, मोटे रंग की पेंसिल, धोने योग्य मार्कर, स्लेट, बच्चों की ऊंचाई पर दीवार पर पेंट किया गया रनर बोर्ड, विभिन्न रंग के चाक, कपड़े के टुकड़े, पेंट, ब्रश, टेप, प्ले आटा शामिल हो सकते हैं। या चिकनी मिट्टी (कुम्हार की चिकनी मिट्टी सबसे अच्छी होती है), रोलिंग पिन और बोर्ड, कोलाज के लिए पुराने अखबार और पत्रिकाएं, आइसक्रीम की छड़ें आदि।
- **गुड़िया/नाटकीय क्षेत्र :** यह क्षेत्र बच्चों को उनकी कल्पना का विस्तार करने में मदद करता है उदाहरण के लिए, बच्चे अक्सर शिक्षक, माता-पिता, पुलिस या डॉक्टर होने का नाटक करने का

आनंद लेते हैं। वे अपने परिवेश में जो देखते हैं, उसका अभिनय करके, वे अपनी याददाश्त को मजबूत करते हैं। यहां सामग्री में शामिल हो सकते हैं : विभिन्न प्रकार की गुड़िया, गुड़िया के आकार का फर्नीचर और कपड़े, गुड़िया के आकार के खाना पकाने के बर्तन (बर्तन, व्यंजन, चम्मच आदि), नकली भोजन (सब्जियां या चिकनी मिट्टी से बने फल), ड्रेस-अप कपड़े और एक दर्पण।

2.3 गतिविधि 2 : फ्लोर प्लान के बारे में सोचें, योजना बनाएं और डिजाइन करें - स्वयं प्रयास करें

बच्चों की आयु और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी के लिए इनडोर (आंतरिक) गतिविधि क्षेत्रों को डिजाइन करें।

2.4 सरल और नवीन विचारों का उपयोग करके प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी कैसे डिजाइन करें?

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31360880890151731212504?contentType=Resource

प्रतिलिपि

सावित्री सिंह : एक जीवंत प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी के बारे में सोचें। जहाँ सभी छोटे बच्चे खुश हैं, इसे सरल रखें, सुरक्षित रखें, साफ रखें और व्यवस्थित रखें। तो बस प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी के स्थान के बारे में सोचें और योजना बनाएं कि आप इसे किस तरह से व्यवस्थित और कैसे इसकी साज सज्जा कर सकते हैं? आइए सबसे पहले समझते हैं कि कम लागत और बिना लागत वाली सामग्री का उपयोग करके रुचि क्षेत्रों या गतिविधि क्षेत्रों को कैसे डिजाइन किया जाए? यदि आप बच्चों को सभी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी का परिवेश तैयार करते हैं, तो आपके बच्चों की सीखने की प्रगति का निरीक्षण करना बहुत आसान हो जाता है।

हमारे साथ दो शिक्षक मौजूद हैं पूनम और रीना। ये एनसीईआरटी के लैब स्कूल से हैं। आइए हम उनसे इस बारे में कुछ विचार साझा करते हैं। अब साझा करने के लिए कहें कि ये आमतौर पर अपने प्री-स्कूल के परिवेश को डिज़ाइन करते हैं, किस तरह से करते हैं? क्या करते हैं? मेरा मतलब है कि ये गतिविधि क्षेत्र कैसे बनाते हैं? रीना आप मुझे बताएं कि आप अपने गतिविधि क्षेत्र को कैसे बनाते हैं?

रीना : जी मैम, आमतौर पर हम कुछ बड़े गत्ते के डिब्बे इकट्ठे करते हैं, जैसे जूते के डिब्बे या कुछ और तरह के डिब्बे। फिर हम उन डिब्बों को एक्टिविटी डिब्बों के रूप में बदल देते हैं।

सावित्री सिंह : रीना आप इसको जरा विस्तार से बताएं प्लीज।

रीना : जी मैम, मैं इन डिब्बों को अलग-अलग नामों से लेबल कर देती हूँ जैसे, मेरा बिल्डिंग ब्लॉक बॉक्स या डिब्बा, मेरा गुड़ियों का डिब्बा, मेरा पढ़ने का डिब्बा और इसी तरह मेरा लिखने का डिब्बा, मेरी पज़ल्स का डब्बा, मेरा अंको का डिब्बा। इस तरह से मैं डिब्बों को लेबल कर के रख देती हूं। फिर उन डिब्बों के लिए सामग्री और खिलौने एकत्रित करती हूँ। इकट्ठा हो जाने के बाद मैं उन्हें बांटकर, छांटकर उन डिब्बों में भर देती हूँ और जब बच्चे उनसे खेलते हैं तो बच्चों को विशेष रूप से यह कहती हूँ कि लेबल किए हुए डिब्बों में सामान को वापस रखें।

सावित्री सिंह : बहुत अच्छे रीना! अच्छा पूनम आप बताएँ कि ये जो खेल सामग्री हैं इसका आप इस्तेमाल कैसे करती हैं?

पूनम : जी बिलकुल मैम, मैम हम बच्चों की जरूरतों के हिसाब से ये डिब्बे एवं टोकरियाँ कक्षा में निर्धारित स्थानों पर रखते हैं। फिर बच्चों को फ्री प्ले टाइम में ये सामग्रियाँ दी जाती हैं जिनसे बच्चे खेलते हैं और खेलने के बाद वे निश्चित रूप से जो डिब्बा जिस एक्टिविटी के लिए बना है वो सामान उसी में रखते हैं। इस प्रकार से हर एक एक्टिविटी बॉक्स के इर्द गिर्द 4 से 5 बच्चे बैठते हैं और इन सभी सामग्रियों से खेलते हैं।

सावित्री सिंह : यह वाक़ई बहुत दिलचस्प है। मैं कल्पना कर सकती हूँ कि किस तरीके से बच्चे एक्टिविटी बॉक्स में से खिलौने निकालकर खेलते होंगे। लेकिन मुझे बतायें कि इन गतिविधि बॉक्स में आप विविधता कैसे लाती हैं?

रीना : मैम इसके लिए जो मैंने अपने बॉक्स या डिब्बे बनाए हुए हैं, उनमें जो मैंने सामग्री और खिलौने रखे हैं उन्हें 10 दिनों के बाद बदलती रहती हूँ। यहाँ मैं एक उदाहरण देना चाहूँगी जैसे मेरी किताबों का बॉक्स है या कह लीजिये कि कहानी के किताबों का जो डिब्बा हैं उसमें रखी कुछ किताबों को में 10 दिन के बाद बदल देती हूँ।

पूनम : मैं यहाँ बस यही कहना चाहूँगी कि इस तरह से हम कम जगह का बहुत ही खूबसूरती से सदुपयोग कर सकते हैं और इस प्रकार से हम नए-नए एक्टिविटी बॉक्सों के बारे में सोच सकते है जिससे बच्चे अधिक से अधिक नए खेल खेलने का मौका मिलता है।

सावित्री सिंह : सच में इन डिब्बों में खोजने के लिए बहुत कुछ है, जाँच करने के लिए बहुत कुछ है,

सीखने के लिए बहुत कुछ है और बच्चों को व्यस्त और खुश रखने के लिए बहुत कुछ है। पूनम क्या आप कुछ उदाहरण मुझे देंगे, कुछ उदाहरण देकर जरा विस्तार से बताएं कि आप कम लागत में किस तरीके से अच्छे से अच्छे खिलौने या खेल सामग्री आप बना सकती हैं?

पूनम : जैसा कि रीना मैम ने पहले ही बहुत अच्छे उदाहरण दिए हैं लेकिन मैं आपको कुछ और ऐसी वस्तुओं के नाम बताउंगी जो कम लागत वाली हैं जैसे अंडे के कार्टन बॉक्स, फलों के बॉक्स, आइस ट्रे आदि कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हे हम गतिविधियों में इस्तेमाल कर सकते हैं। जैसे अंडे के बॉक्सों को हम विभिन्न प्रकार की चीज़ो जैसे कंकड़,पत्थर आदि इन सभी चीज़ो से भर सकते हैं। इन्हें बच्चे अलग-अलग छाँटने की प्रक्रियाएं करते हैं और इस प्रकार से हम जान पाते हैं कि बच्चे वर्गीकरण करना सीख रहे हैं।

सावित्री सिंह : पूनम इससे निरंतर आकलन में बहुत अच्छे तरह से हो जाता हैं क्योंकि आप देख पा रहे है कि बच्चे किस तरीके से सामग्री का उपयोग कैसे कर पा रहे हैं? और वे अपने अवधारणाओं और दक्षताओं में कैसे प्रगति कर रहे हैं और आपके लिए अपनी गतिविधि बास्केट या एक्टिविटी डिब्बों में संशोधन लाना बहुत आसान हो जाता हैं। जब कक्षा की दीवारों की सजावट की बात आती है तो आप मुझे बताएं कि कक्षा की दीवारों को आप कैसे सजाती हैं? उनको प्रिंट समृद्ध या संख्या समृद्ध आप किस तरीके से बनाते हैं?

पूनम : कक्षा की दीवारों पर चार्ट बच्चों के दृष्टि स्तर पर ही होनी चाहिए इससे बच्चो को पढ़ने में आसानी होती हैं। साथ ही बच्चों द्वारा की गयी कलाकृतियों के कार्य एवं उनके द्वारा कोई अन्य कार्य हैं उन्हें भी कक्षा में लगाना चाहिए। इससे बच्चों को अच्छा लगता हैं एवं वे गर्व महसूस करते हैं। बाकी रीना जी आप कुछ बताना चाहेंगी इस विषय में?

रीना : जी हाँ पूनम। मैम कई बार कक्षा में जगह की कमी होने के कारण हम साड़ी के बड़े टुकड़ों पर चित्रों को लटका देते हैं। इसके साथ ही कंसेप्ट या साप्ताहिक थीम के अनुसार हम चित्रों को लटकाने के लिए कपड़े टांगने वाले हैंगरों का भी प्रयोग करते हैं। जैसा कि पूनम मैम ने बताया कि बच्चों की कोई भी चित्र है या कुछ भी सामग्री है वो दृष्टि स्तर पर, उनके आई लेवल पर होना चाहिए तो उसके लिए हम बच्चों की दैनिक दिनचर्या का चार्ट भी लगा सकते हैं।

सावित्री सिंह : रीना ये तो आपने बहुत अच्छी बात बताई। यह अपने आप में एक बुनियादी साक्षरता गतिविधि हैं और इसे रोजाना पढ़ने का एक हिस्सा होना चाहिए। थोड़े से प्रयास और रचनात्मकता के साथ बच्चों के लिए एक बहुत ही आकर्षक प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी बन जाएगी तो एक्टिविटी डिब्बे बनाने के लिए खुले सामग्री, टोकरियाँ, डिब्बे आदि इकट्ठा करना शुरू करें।

रीना : पूनम मैम मैं यहां आपसे एक प्रश्न पूछना चाहूंगी कि कई बार ऐसा होता है कक्षा में मिश्रित बच्चों का समूह होता है और जगह की कमी होने के कारण मैं समझ नहीं पाती हूँ कि मैं अपनी गतिविधियां कैसे कराऊँ?

पूनम : आप अपनी कक्षा के अंदर सामान को इस तरह से व्यवस्थित कर सकती हैं ताकि अन्य वस्तुओं के लिए भी जगह पर्याप्त हो जाए और साथ ही कुछ बच्चों को बाहर की गतिविधियां भी करा सकती हैं। इससे सभी बच्चों को पर्याप्त स्थान प्राप्त होगा।

रीना : लेकिन मैम कई बार ऐसा होता हैं कि मुझे ऐसा महसूस होता है कि कक्षा में जो खेल सामग्री है या जो शिक्षण सामग्री है उसकी कमी का सामना भी करना पडता है। तो मैं समझ नहीं पाती हूं कि ऐसे समय में गतिविधियों का संचालन कैसे करुं?

पूनम : तो इसके लिए आप परिवेश में जो भी वस्तुएं उपलब्ध हैं जैसे कंकड़, पत्थर, फूल आदि। इन सभी चीज़ों का भी अधिगम सामग्री के रूप में प्रयोग कर सकती हैं और मैं इसके लिए आपको यहां एक एग्ज़ाम्पल देना चाहूंगी जैसे बच्चे जो भी कपड़े पहन कर आते हैं उनसे आप रंग मिलान की क्रिया करा सकते हैं, नमूना मिलान की क्रिया करा सकते हैं। और इसके अतिरिक्त मैं आपको यहां एक उदाहरण और देना चाहूंगी। जहां आप बच्चों को एक लाइन में खड़े होने के लिए कह सकती हैं और फिर बच्चों को लंबे और छोटे का कन्सेप्ट भी सिखा सकती हैं।

सावित्री सिंह : रीना जी मैं आपसे ये पूछना चाहूंगी कि आप ये बताएं कि कम लागत वाली जो सामग्री है उसका उपयोग आप कैसे करती हैं?

रीना : उसके लिए मैम जो हमारी कक्षा में बच्चे होते हैं जैसे आपको पता है खाली माचिस की जो डिब्बियां होती हैं उनसे कार बनाते हैं, इसी तरह जो टेल्कम पाउडर के बॉक्स होते हैं उनसे वो रेलगाड़ी बनाते हैं। हम ऐसा भी कर सकते हैं की टेल्कम पाउडर के डिब्बों को इस तरह से जोड़ें कि वो खीचने वाली कार का रूप ले ले। जिससे बच्चे बहुत मनोरंजक रूप से खेलते भी हैं। इसके साथ ही बोतलों के ढक्कनों के बीच में तार पिरो कर मैं उनसे संगीत वाद्ययंत्र भी बनाती हूँ। इसके साथ ही प्लास्टिक की बोतलों वगैरह से मैं कठपुतली भी बनाती हूँ।

सावित्री सिंह : बहुत अच्छे। बहुत अच्छी बात आपने कही। तो आप सब समझ गए होंगे कि प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी स्थान का रचनात्मक रूप से उपयोग कैसे किया जा सकता है और गतिविधि टोकरियां कैसे बना सकते हैं? जिनका उपयोग गतिविधि क्षेत्रों के लिए किया जा सकता है। इसलिए कम लागत वाली और बिना लागत वाली सामग्री एकत्र करना शुरू करें और बच्चों को सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

2.5 प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी : बाहरी स्थान

बाहरी खेल क्षेत्र सक्रिय खेलने के अवसर प्रदान करता है और सकल मोटर कौशल के विकास में मदद करता है जो कि घर के अंदर विकसित करना काफी हद तक असंभव है। इसलिए, यदि बाहर खेलने के लिए जगह की कमी है, तो पास के कुछ पार्क, पंचायत क्षेत्र आदि का पता लगाने की जरूरत है, जहां

बच्चों को सकल मोटर गतिविधियों में शामिल किया जा सकता है जैसे - कूदना, दौड़ना, चलना, लात मारना, फेंकना, संतुलन बनाना, कूदना, आदि। सकल मोटर कौशल के लिए पुराने सस्ते जल निकासी पाइप, ट्यूब, पानी के टब/ट्रे (पानी के खेल के लिए - आप उन्हें रेत के गड्ढे के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं) की तलाश करें। आउटडोर (बाह्य) खेल के अवसर बच्चों को उनकी तात्कालिक दुनिया/प्राकृतिक वातावरण को जानने और समझने में मदद करेंगे और व्यक्तिगत, सामाजिक और भावनात्मक विकास के अवसर भी प्रदान करेंगे। आउटडोर (बाह्य) खेल क्षेत्र की योजना बनाते समय सुरक्षा का मुद्दा एक बड़ी चिंता का विषय है और इसलिए यह देखने की जरूरत है कि बच्चे सभी प्रकार के हानिकारक खतरों और जोखिमों से सुरक्षित हैं। इसलिए, ऐसी बाहरी खेल सामग्री और उपकरणों को सूचीबद्ध करने का प्रयास करें जिनका उपयोग आंगनवाड़ी में किया जा सकता है और माता-पिता और समुदाय के सदस्यों द्वारा भी साझा किया जा सकता है उदाहरण के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री पर्यवेक्षकों और सीडीपीओ की मदद से संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं जैसे - छोटे हल्के टायर इकट्ठा करना लुढ़काने के लिए, झूले बनाने के लिए, बालू का गड्ढा बनाने आदि के लिए।

2.6 गतिविधि 3 : रुचि क्षेत्रों को डिजाइन करना - अपने विचार साझा करें

पांच कारण बताएं कि छोटे बच्चों के लिए रुचि क्षेत्रों के साथ एक सुनियोजित आंगनवाड़ी क्यों महत्वपूर्ण है? अपनी टिप्पणी दिए गए बॉक्स में लिखें।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceHc2a3 टाइप करें

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-ecce.blogspot.com/2022/08/02-3.html

विकल्प 3: प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड** को **स्कैन** करें।

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है।

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- 'Enter your comment' पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

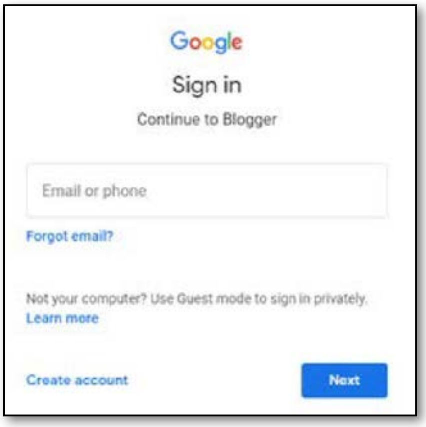

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

2.7 दिव्यांग बच्चों के लिए अनुकूलन

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31360884831019827212508?contentType=Resource

प्रतिलिपि

प्रो. संध्या संगई : बच्चों के लिए 5 साल की उम्र तक शुरुआती हस्तक्षेप महत्वपूर्ण है। 0 से 5 वर्ष को विकास की महत्वपूर्ण अवधि के रूप में संदर्भित किया जाता है बच्चों के जीवन में प्रारंभिक वर्षों में मस्तिष्क की क्षमता एक तीव्र गति से विकसित होती है। इसलिए छोटे बच्चों के लिए तंत्रिका संपर्क विकसित करने के लिए सार्थक गतिविधियों में संलग्न होना एक शानदार अवसर होता है। मेरे साथ श्रीमती सावित्री सिंह और पूनम हैं। आइए इनसे बातचीत करते हैं कि हमें दिव्यांग बच्चों के लिए क्या अनुकूलन करने चाहिए जिससे सभी बच्चे साथ में सीखें।

सावित्री सिंह : बिल्कुल ठीक कहा संध्या जी, यह विशेषकर उन बच्चों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है जिनके विकास में कुछ देरी है और ऐसे बच्चों के लिए मुख्यतः उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस तरह की गतिविधियां तैयार करें जो कि उनके लिए लाभकारी सिद्ध होती हैं।

प्रो. संध्या संगई : और हम इस संबंध में आज पूनम से पूछते हैं कि आप अपनी कक्षा में छोटे बच्चों की अलग-अलग आवश्यकताओं के लिए क्या-क्या अनुकूलन करती हैं।

पूनम : जी मैडम, मैं सबसे पहले अपने विचार आपसे साझा करना चाहूंगी। मैं कक्षा में सबसे पहले बड़े-बड़े चित्रों के चार्ट, वर्णमाला के चार्ट इन सभी को व्यवस्थित तरीके से प्रदर्शित करती हूं फिर उनके ऊपर उभरे हुए अक्षरों, संख्याओं के चित्रों को मैं चिपकाती हूँ इससे बच्चों को यह देखने में बहुत ही आसानी होती है और यह इनके लिए फायदेमंद भी होते हैं।

सावित्री सिंह : हाँ, मैंने कुछ कक्षाओं में देखा है कि बुनियादी साक्षरता और अंकगणित के लिए कुछ उभरे हुए उनके अक्षर और संख्याओं को रखा जाता है जिसमें बच्चे जो हैं उसको छू कर या उसके ऊपर उंगली फेरते हैं।

पूनम : जी मैडम और यह बच्चे बहुत ही मजे से करते हैं और इस प्रकार से करने से उन्हें बहुत ही आसानी भी महसूस होती है क्योंकि जब बच्चे उभरे हुए अक्षरों पर अपनी उंगलियां फेरते हैं तो इस प्रकार से उन्हें लिखने के लिए भी एक तैयारी का मौका मिलता है।

सावित्री सिंह : तो ये तो हमारे सभी बच्चों के लिए बहुत ही फायदेमंद है।

पूनम : जी मैडम

प्रो. संध्या संगई : ये तो बहुत बढ़िया तरीका है कृपया कुछ और दिलचस्प विचार साझा कीजिए।

पूनम : जी, जैसे कि मैं अपनी कक्षा में जितनी भी खेलने की सामग्रियां हैं या खिलौने हैं, उनको मैं बंद अलमारियों के स्थान पर, मैं खुली अलमारियों में रखती हूँ। ताकि बच्चे उन सभी सामग्रियों का उपयोग करने के बाद उन्हें अपने निश्चित स्थान पर रख सकें।

प्रो. संध्या संगई : यहां मैं यह भी सुझाव देना चाहती हूं कि आप इन खुली अलमारियों पर उभरे हुए चित्र और टैक्टाइल लेबल लगाएं। ताकि सभी बच्चे खिलौनों को अपनी जगह पर रख सकें और रखते हुए इसे महसूस भी कर सकें।

पूनम : जी मैडम, ये तो आपने बहुत ही बढ़िया सुझाव दिया है। मैं इसे कल ही अपनी कक्षा मैं लगाऊंगी।

प्रो. संध्या संगई : थैंक यू

सावित्री सिंह : यहां मैं एक बात और कहना चाहूँगी कि आप ज्यादा से ज्यादा जो आप शिक्षण सामग्री बनाती हैं। अपने हाथों से खुद बनाएं और इसके अतिरिक्त जो हमारे स्वदेशी और भारत के पारंपरिक जो खेल-खिलौने हैं, उनका अगर प्रयोग करें तो बहुत ही अच्छा होगा। अब आप पूछें कि पारंपरिक खेल-खिलौने कौन-से हैं तो पारंपरिक खेल-खिलौने में हमारे जैसे कपड़े की बनी हुई कठपुतलियां हैं या चक्के वाली लकड़ी के जो खिलौने हैं। बच्चे उससे खेलें और उससे बहुत कुछ सीख सकते हैं और ये अनुकूलन के लिए बहुत ही फायदेमंद हैं।

प्रो. संध्या संगई : हाँ, हमें अपने स्वदेशी खिलौनों को अनुकूलन के लिए कक्षा में ज़रूर लेकर आना चाहिए। एक्टिविटी डिब्बों और टोकरियों को लेबल करें और नंबर कोड करें। चित्र पहेली यानी कि पज़ल्स बनाते समय पुरानी सामग्री का इस्तेमाल करें। खिलौनों की नंबर कोडिंग करते समय टैक्टाइल सामग्री का उपयोग करें।

सावित्री सिंह : हाँ, ये बहुत अच्छा सुझाव है। जैसे कि पज़ल्स के नाम और जिस डिब्बे में पज़ल्स को रख रहे हैं, उसमें चित्र लगा कर अगर उस डिब्बे को तैयार करें तो ये बहुत अच्छा एक सुझाव है जिससे कि बच्चे बहुत आराम से उसमें रख सकते हैं। इसके अलावा उस डिब्बे में पज़ल्स कि कितने टुकड़े हैं?

टुकड़ों की संख्या भी उसमें लिखी जा सकती है और जब हम किसी भी खेल सामग्री का प्रयोग करें तो खेल सामग्री के नीचे अगर वेल्क्रो टेप लगा दें तो वो स्थिर रहेगा। हिलेगा-डुलेगा नहीं इससे बच्चे को खेलने में बहुत आसानी होगी। इसके अलावा संध्या जी एक और बात बताना चाहूंगी कि जब बच्चों को हम जब चित्रकारी करवाना चाहते हैं या चित्रों में रंग भरवाना चाहते हैं तो पेपर के नीचे कुछ टेप लगा के उसको इस तरह से चिपका दें ज़मीन से जिससे जब बच्चा उस पर ड्रॉइंग करे या कलर करे, रंग भरे, तो वो पेपर इधर-उधर हिले नहीं। तो इससे उनको बहुत सुविधा होगी।

प्रो. संध्या संगई : डेफिनेटली, उपयुक्त खिलौनों और सामग्रियों का चयन बच्चों के द्वारा अन्वेषण के लिए कक्षा के वातावरण को दिलचस्प भी बनाता है।

पूनम : सावित्री मैम, मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ। दरअसल मेरी कक्षा बहुत ही छोटी है। आप मुझे कुछ इस प्रकार के सुझाव दीजिए जो बच्चे चलने में कठिनाई महसूस करते हैं। मैं उनके लिए क्या कर सकती हूँ?

सावित्री सिंह : पूनम, आप ऐसा करें कि जो गतिविधि क्षेत्र हैं। ख्याल रखें कि उसमें अनायास कुछ ऐसी बाधक चीजें न रास्ते में पड़ी हों जिससे कि बच्चे को चलने-फिरने में मुश्किल हो। तो गतिविधि क्षेत्र बिल्कुल ही साफ हो और जो भी जितने खिलौनों की जरूरत हो वो ही निकाले जाएं और रास्ते में कोई भी ऐसी चीज़ें न रखें, टकरा सकता जिससे बच्चा। तो उसको अवॉइड करने के लिए बिल्कुल साफ जगह रखें। दूसरी पूनम मैं एक बात मैं यहां कहना चाहूंगी कि बच्चों को स्वयं चुनाव करने के लिए मौका दें कि वो अपनी गतिविधि या अपने खेल जो खेलना चाहते हैं वो खुद ही कोशिश करें, खुद ही चुनाव करें उसका और एक चीज़ और कि जो भी आप खिलौने दे रही हैं, गतिविधियां दे रही हैं, तो वो ज्यादातर अपने हाथ से बनाएं और बच्चों की आवश्यकता के अनुसार वो बने हुए हों जिससे कि उनकी विकासात्मक जो जरूरतें हैं उनको ध्यान में रखते हुए वो आपके खेल सामग्री बनाए, अपनी खेल सामग्री बनाएं, शिक्षण सामग्री बनाएं।

प्रो. संध्या संगई : हाँ सावित्री जी, मैं आपकी बात से सहमत हूँ। शिक्षकों को चाहिए कि वो पुनरावृत्ति और अभ्यास के लिए बच्चों को पर्याप्त अवसर प्रदान करें क्योंकि बच्चे अवलोकन और दोहराव से ही सीखते हैं।

पूनम : हाँ मैडम, मैं अपने बच्चों को अवसर प्रदान करने का भी प्रयास करती हूँ। जहां बच्चे अपने खिलौनों को साझा करते हैं वहां मैं उन्हें अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने का प्रयास करती हूँ और मैं कक्षा में कुछ इस प्रकार की सामग्रियों का भी उपयोग करती हूँ जो अपने परिवेश में उपलब्ध हों जैसे कंकड़, पत्थर, फूल आदि। ये सभी शिक्षण सामग्रियों के रूप में आसानी से उपलब्ध होती हैं।

प्रो. संध्या संगई : बहुत अच्छा। कहानी के दौरान बच्चे किस प्रकार की प्रतिक्रिया देते हैं? यह भी हमें देखना चाहिए और इसकी पहचान करने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए।

सावित्री सिंह : कुछ बच्चे बोलकर, कुछ बच्चे चित्रों की ओर इशारा करके, कुछ बच्चे कहानी

की किताब के पन्नों को पलट कर भी जवाब देते हैं और कुछ बच्चे जैसे कहानी में जिन वस्तुओं का उल्लेख किया गया है उन वस्तुओं को छूकर भी जवाब देते हैं। अपने बच्चों के लिए अनुकूलन के लिए योजना भी बना सकते हैं।

प्रो. संध्या संगई : बहुत अच्छा। धन्यवाद सावित्री जी, धन्यवाद पूनम। तो आपने सीखा कि खिलौनों और खेल सामग्री को कैसे संशोधित किया जाए जैसे कि एक उभरी हुई आकृति देना या एक बनावट को जोड़ना ताकि बच्चे उसे छू सकें, महसूस कर सकें और पहचान कर सकें। बच्चों को समझने के लिए सरल शब्दों, चेहरे के भाव और हाव-भाव का प्रयोग करें। पज़ल्स और इनसेट बोर्ड में बच्चों की पकड़ बनाने के लिए नॉब्स होने चाहिए। गतिविधि के आसान अवलोकन के लिए छोटे समूहो में खेल प्रदान करें। ओपन एंडेड गतिविधियां, कहानियां और खेल सामग्री प्रदान करें जो बच्चों की सोच को प्रोत्साहित करने में मदद करें। कक्षा में अनुकूलन के लिए शिक्षक कुछ संशोधन कर सकते हैं जैसे शिक्षण-अधिगम रणनीतियों में, कक्षा के भौतिक और सामाजिक वातावरण में और शिक्षण अधिगम सामग्री में। प्री-स्कूल और आंगनवाड़ी परिवेश में छोटे-छोटे बदलाव करें जो सभी बच्चों के अनुकूल हों। क्या आप हमारे छोटे बच्चों के लिए किसी अन्य अनुकूलन के बारे में सोच सकते हैं? जरूर सोचें।

2.8 गतिविधि 4 : रुचि के क्षेत्र - स्वयं करें

नीचे दी गई तस्वीरों को ध्यानपूर्वक देखें और समझें कि ये तस्वीरें किस बारे में हैं :

जोड़-तोड़ क्षेत्र

कला क्षेत्र

गुड़िया क्षेत्र

घेरा समय क्षेत्र

पठन क्षेत्र

इस बारे में सोचिए कि आप यहाँ किस तरह के खिलौने रखेंगे?

प्रतिबिंबित होना

1. रुचि के क्षेत्रों की पहचान करें और सोचें कि इसे प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी सेटिंग में कैसे डिजाइन किया जा सकता है?
2. प्रत्येक रुचि क्षेत्र के लिए उनके स्थानीय संदर्भ में आवश्यक खेल शिक्षण सामग्री की एक सूची साझा करें (भारतीय स्वदेशी खिलौनों को ध्यान में रखते हुए, स्थानीय रूप से उपलब्ध कम लागत/बिना लागत वाली पर्यावरण सामग्री)।
3. इनमें से कुछ क्षेत्रों में आपके द्वारा आयोजित की जाने वाली कम से कम पांच गतिविधियों की योजना बनाएं और उन्हें साझा करें। आप क्या ढूढ़ेंगें, आप क्या देखेंगे, आप बच्चों के खेल का मार्गदर्शन कैसे करेंगे और आप उनके सीखने को कैसे रिकॉर्ड करेंगे?
4. निम्नलिखित तालिका का उपयोग करके अपनी प्रतिक्रियाएँ रिकॉर्ड करें :

आयु समूह (4+ से 6+)				
खिलौना/ सीखने की सामग्री	**गतिविधि-क्षेत्र**	**प्रत्येक क्षेत्र के लिए विशिष्ट गतिविधियां**	**अवलोकन संकेतक**	**बच्चों के खेल को आगे निर्देशित करना**
टैंग्राम्स (Tangrams)	ब्लॉक बिल्डिंग (गणित)		**सूक्ष्म मोटर कौशल** 💡 हाथ आँख समन्वय 💡 संज्ञानात्मक कौशल 💡 स्थानिक समझ और स्थिति 💡 आकार और रंग 💡 पहचान 💡 समस्या समाधान 💡 सामाजिक-भावनात्मक कौशल 💡 आत्मसम्मान	
	पठन-क्षेत्र			
	खिलौना-क्षेत्र			
	लेखन-क्षेत्र			

मॉड्यूल 3

प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी के लिए ईसीसीई पाठ्यचर्या का नियोजन

मॉड्यूल 3 : प्री-स्कूल या आंगनवाड़ी के लिए ईसीसीई पाठ्यचर्या का नियोजन

3.1 खेल-आधारित ईसीसीई पाठ्यचर्या

ईसीसीई पाठ्यचर्या में, प्री-स्कूल में क्या होता है, शिक्षक विकास लक्ष्यों की ओर लक्षित बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जिस प्रकार गतिविधियां प्रदान करता है, वह शामिल होता है। बच्चों का सबसे अधिक सीखना तब होता है जब वे अपने परिवेश को खोजते हैं और शिक्षक को इसे पहचानने की आवश्यकता होती है। बच्चों द्वारा घर से लाए जाने वाली रुचियों और अनुभवों को महत्व दिया जाना चाहिए और यदि संभव हो तो, प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी सेटिंग में सीखने के विकास के लिए शुरुआती बिंदु के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए। ईसीई कार्यक्रम की योजना तीन विकासात्मक लक्ष्यों या इनमें छिपे पांच क्षेत्रों के आसपास बनाई जानी चाहिए। विकासात्मक लक्ष्यों को बच्चों के विकास के सभी पहलुओं को मजबूत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। शिक्षकों/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्रीओं को सभी बच्चों की तत्काल जरूरतों, रुचियों और क्षमताओं को समायोजित करने के लिए अपनी योजनाओं (दीर्घकालिक और अल्पकालिक) को लचीला रखने की आवश्यकता है।

लंबी अवधि/दीर्घकालिक योजना : लंबी अवधि की योजनाओं में एक वार्षिक शैक्षणिक कैलेंडर होता है जिसमें परियोजनाओं/विषयों की रूपरेखा, वार्षिक कार्यक्रम, उत्सव जो स्थानीय समुदाय के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, समय सीमा, स्थान और सीखने के लिए सामग्री शामिल होती है। लंबी अवधि की योजनाओं पर काम करने से आपको तीन विकासात्मक लक्ष्यों ('प्री-स्कूल पाठ्यचर्या' 2019) के बारे में और सुझावित शैक्षणिक पद्धतियों जो बच्चों के सीखने के प्रतिफलों को पूरा करने में सहायता करने वाली विकासात्मक उपयुक्त गतिविधियाँ कराती है, के बारे में सोचने का अवसर मिलेगा।

मध्यम अवधि की योजना : मध्यम अवधि की योजनाएं सीखने के प्रत्येक क्षेत्र में एक चरण से अगले चरण तक और एक सेटिंग या कक्षा से अगले तक निरंतरता और प्रगति को संबोधित करती हैं, दीर्घकालिक लक्ष्यों, पाठ्यक्रम सिद्धांतों और तरीकों को चित्रित करती है तथा उन सीखने के क्षेत्रों जो, एक विशिष्ट अवधि के भीतर बच्चों के लिए शुरू किये जायेंगे, की पहचान करती है। यही वह अवस्था है कि पाठ्यचर्या को विकासात्मक लक्ष्यों को विषयों, परियोजनाओं/जांच आधारित आदि के माध्यम से जोड़कर सबसे प्रभावी ढंग से व्यवस्थित रूप में देखा जा सकता है।

अल्पकालिक योजना: इस योजना के तहत दैनिक गतिविधियां/कार्यक्रम, साप्ताहिक और मासिक योजनाएँ शामिल होती हैं। यह गतिविधियों, अनुभवों, संसाधनों, समूहों और शिक्षण रणनीतियों के सभी विवरण प्रदान करती है जिन्हें छोटे बच्चों के सीखने के चल रहे अवलोकन और आकलन के माध्यम से पहचाना जाता है और शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री के उनके शिक्षण रणनीतियों पर

विचार भी प्रदान करता है। 'क्या' पढ़ाया जाना है, यह पहले से ही दीर्घकालिक और मध्यम अवधि के नियोजन में है, अब 'कैसे' के बारे में निर्णय लेने का समय है कि इन अवधारणाओं, कौशल और दृष्टिकोण से कैसे बच्चों को प्रासंगिक और सार्थक तरीके से परिचित कराया जाए और यह भी कि कैसे माता-पिता को ईसीई कार्यक्रम में शामिल किया जा सकता है।

ईसीई पाठ्यक्रम की सामग्री में निम्नलिखित शामिल होना चाहिए :

- विकासात्मक लक्ष्य (विकास के पांच क्षेत्र)
- बच्चों की रुचियां, जरूरतें, ताकत, विशेषताएं और संदर्भ
- शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री का अपने बच्चों और उनके विकास के बारे में ज्ञान
- प्रत्येक बच्चे का अवलोकन रिकॉर्ड

विकासात्मक लक्ष्यों के लिए सामग्री और गतिविधियों के सावधानीपूर्वक चयन के माध्यम से, अब शिक्षक को प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में निष्पादित करने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण पर निर्णय लेना होगा ताकि सभी बच्चे विभिन्न अनुभवों से अधिक लाभ उठा सकें।

3.2 संतुलित ईसीसीई पाठ्यचर्या

ईसीसीई कार्यक्रम एक समग्र दृष्टिकोण अपनाकर संचालित किया जाता है जो बच्चे के सीखने को केवल कक्षा की सेटिंग में शिक्षक द्वारा किए जाने वाले कार्यों तक ही सीमित नहीं देखता, बल्कि घर और समुदाय सहित उनके प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के संदर्भ में बच्चों द्वारा सह-निर्मित रूप से देखती है। पाठ्यचर्या के लिए विभिन्न दृष्टिकोण हैं जैसे विषय आधारित, गतिविधि आधारित, परियोजना/पूछताछ आधारित और एक एकीकृत दृष्टिकोण। आप विषय आधारित दृष्टिकोण अपना सकते हैं और विषय को बहुत नीरस बनाए बिना पूछताछ दृष्टिकोण और गतिविधि और खेल आधारित दृष्टिकोण को विषय के भीतर बुन सकते हैं। *उदाहरण के लिए, पौधे एक ऐसा विषय है जहां पूछताछ दृष्टिकोण लाया जा सकता है - "बगीचे/पार्क का दौरा करना, पत्तियों, फूलों आदि की खोज करना, अवलोकन करना और गिनना, प्री-स्कूल में वापस आना और पौधों/पत्तियों की विविधता के बारे में चर्चा करना, बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करता है, उन्हें शोध करने दें और पौधों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने दें और जो उन्होंने सीखा है उस पर चिंतन करें।"* इससे उन्हें नई शब्दावली सीखने में मदद मिलेगी और पर्यावरण के बारे में जागरूकता भी मिलेगी। एक ईसीसीई कार्यक्रम में आयु-उपयुक्त मूल्य शामिल होने चाहिए और इन्हें कहानियों/तुकबंदी/प्रकृति की सैर आदि के माध्यम से बुना जा सकता है। मूल्य जैसे, बगीचे से फूल नहीं तोड़ना, पौधों और पर्यावरण की देखभाल करना, कूड़े को कूड़ेदान में फेंकना, तत्काल परिवेश और प्री-स्कूल को स्वच्छ रखना इस अवस्था के कुछ उदाहरण हैं। पाठ्यक्रम के प्रति इस तरह के एक संतुलित दृष्टिकोण शुरुआती सीखने को बहुत स्वाभाविक तरीके से होने देता है, जिज्ञासा पैदा करता है और सीखने को मजेदार बनाने के लिए प्रत्येक बच्चे के पूर्व ज्ञान

और अनुभवों को वर्तमान अनुभव से जोड़ता है। इसका लाभ यह है कि इसमें शिक्षक-निर्देशित पद्धति और बच्चों द्वारा शुरू की गई शिक्षा दोनों हैं जिसमें प्रश्न पूछना और उत्तर देना, जानकारी प्राप्त करना, आलोचनात्मक सोच, खोज और अपना काम दिखाना शामिल है।

शिक्षक प्रत्येक पूछताछ के आधार पर मार्गदर्शन, सहायता, प्रोत्साहन, खिलौने/संसाधन/सामग्री और जानकारी प्रदान करता है। एक विषय से जुड़ाव, हासिल करने, प्रश्न पूछने, अज्ञात का पता लगाने, पिछले ज्ञान और अनुभवों को साझा करने और नई खोजों की दिशा में एक साथ काम करने के लिए एक अभिव्यक्ति मार्ग प्रदान करता है। शिक्षक स्वतंत्र रूप से अपने संदर्भ में एक या कई दृष्टिकोणों के संयोजन का चयन कर सकता है।

3.3 ईसीसीई कार्यक्रम/दिनचर्या के नियोजन के सिद्धांत

छोटे बच्चों के लिए योजना बनाते समय आप जिन सिद्धांतों और तरीकों पर विचार कर सकते हैं वे हैं :

सीखने के अनुभव

- सभी गतिविधियां/अनुभव विकासात्मक और आयु उपयुक्त होने चाहिए।
- अवधारणाओं/दक्षताओं की योजना बनाते समय, उन्हें विकासात्मक लक्ष्यों के साथ जोड़ने और साथ ही बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
- विकास के सभी क्षेत्रों (तीन विकास लक्ष्यों में विलय) को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों को उचित रूप से नियोजित किया जाना चाहिए।
- विषयवस्तु/परियोजना ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों में रुचि पैदा करे और उन्हें तलाशने और सीखने के लिए प्रेरित करे।
- अनुभव/गतिविधियों को आयु वर्ग के लिए निर्धारित सभी दक्षताओं के लिए नियोजित किया जाना चाहिए और सरल से जटिल, परिचित से अपरिचित और ठोस से अमूर्त तक प्रगति की जानी चाहिए।

संदर्भ

- प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों पर विचार किया जाना चाहिए, जिसमें दिव्यांग बच्चे/चुनौती वाले बच्चे या अन्य विशेष सीखने की जरूरतों वाले बच्चे शामिल हैं।
- कार्यक्रम में प्रत्येक बच्चे के परिवार, संस्कृति, भाषा, धर्म और लिंग को दर्शाया जाना चाहिए।
- स्थानीय विशिष्ट/पर्यावरण सामग्री का प्रावधान और बच्चों को उनके आसपास के वातावरण से जोड़ना।
- प्रासंगिक और विकासात्मक रूप से उपयुक्त शिक्षण सामग्री, खिलौनों का चयन और बच्चों के साथ उनका उपयोग करने के लिए नवीन तरीके।

प्रक्रियाएँ

- उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए योजना बनाएं लेकिन आवश्यकता-आधारित विविधताओं के लिए लचीलापन रखें।
- बाल पहल और आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री निर्देशित गतिविधियों; सक्रिय और शांत; आउटडोर (बाह्य) और इनडोर (आंतरिक); और व्यक्तिगत, छोटे समूह और बड़े समूह की गतिविधियों के बीच संतुलन।
- गतिविधियों और दैनिक/साप्ताहिक कार्यक्रम के लिए समय निर्धारण।
- तीन विकासात्मक लक्ष्यों को कक्षा प्रक्रियाओं और बच्चों के खेलने और सीखने के निरंतर अवलोकन और आकलन का मार्गदर्शन करना चाहिए।

ईसीई कार्यक्रम को परिवेश में लोगों और वस्तुओं के साथ सक्रिय जुड़ाव को बढ़ावा देने, अन्वेषण और अनुभवात्मक सीखने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करने चाहिए।

ईसीसीई कार्यक्रम का संचालन कैसे किया जाता है, यह समझने के लिए निम्नलिखित एक दिन के कार्यक्रम (परिवहन के विषय पर) का एक नमूना है। बच्चे की ध्यान अवधि को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक गतिविधि को 15-20 मिनट के लिए नियोजित किया जाता है। प्रारंभिक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सावधानीपूर्वक अवलोकन किए जाने की आवश्यकता है ताकि सही समय पर उचित हस्तक्षेप किया जा सके क्योंकि प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताएँ, रुचियाँ और सीखने की शैली भिन्न होती है। बच्चों को पहले अपनी घर की भाषा या मातृभाषा में दक्ष होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और फिर अनौपचारिक रूप से स्कूली भाषा (क्षेत्रीय भाषा/अंग्रेजी) से परिचित कराया जाता है। कभी-कभी, एक परिवार में एक से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं (मातृभाषा और स्थानीय बोली के रूप में) इसलिए बच्चों द्वारा कक्षा में कई भाषाएँ देखी जाती हैं।

3.4 एक दिन की दिनचर्या का नमूना

तालिका 1

विषय : परिवहन के साधन (एक नमूना) अवधि : 4 घंटे	
अवधि	**विवरण**
30 मिनट	बच्चों का स्वागत, स्फूर्तियुक्त गतिविधियाँ, स्वच्छता जाँच (शिक्षक निर्देशित बड़े समूह की गतिविधि)
30 मिनट	गतिविधि क्षेत्रों में मुक्त खेल (बच्चे द्वारा शुरू की गई और शिक्षक-निर्देशित) : बच्चे खेलने के लिए गतिविधि क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए ये गतिविधि क्षेत्र गुड़िया-क्षेत्र, पठन-क्षेत्र, ब्लॉक निर्माण-क्षेत्र, भाषा और साक्षरता-क्षेत्र हो सकते हैं। यदि प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में जगह कम है, तो

	शिक्षक बारी-बारी से एक/दो गतिविधि क्षेत्र प्रदान कर सकते हैं ताकि बच्चे छोटे समूहों में खेल की खोज का आनंद उठा सकें।
15 मिनट	गोल दायरे का समय : मुक्त बातचीत (शिक्षक द्वारा शुरू की गई बड़ी समूह गतिविधि) जहां बच्चों को अर्धवृत्त में बैठाया जाएगा और वे अपने अनुभव साझा करेंगे (उन्होंने क्या किया, वे कहां गए, कोई त्योहार/कार्यक्रम कैसे मनाया गया और कैलेंडर पर चर्चा, मौसम आदि)।
15 मिनट	निर्देशित बातचीत (शिक्षक द्वारा शुरु की गई बड़े समूह) : शिक्षक और बच्चे परिवहन पर एक कविता गाते हैं। शिक्षक तब बच्चों को उन वाहनों के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो उन्होंने स्कूल आते समय देखे हैं ; वे स्कूल कैसे आए हैं, उनके माता-पिता काम पर कैसे जाते हैं? फिर वह कुछ खिलौना वाहन या वाहनों की तस्वीरें दिखाती है और उनके बारे में बात करती है। वह बच्चों का ध्यान डिस्प्ले बोर्ड की ओर आकर्षित करती है और शब्दों के नीचे अपनी उंगली रखकर प्रत्येक वाहन के नीचे लिखे नामों को पढ़ती है।
30 मिनट	संख्यात्मक गतिविधि (शिक्षक-निर्देशित और बाल-आरंभ) : बच्चे एक अर्धवृत्त में बैठते हैं और शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री विभिन्न वाहनों या खिलौना वाहनों की तस्वीरों को एक क्षैतिज पंक्ति में रखता है। बच्चे खिलौनों के वाहनों की तस्वीरों को दिए गए मानदंडों के अनुसार क्रमबद्ध करते हैं जैसे - भूमि परिवहन, हवाई परिवहन या जल परिवहन। मानदंड पहियों या मोटर चालित/मैनुअल वाहनों की संख्या के अनुसार भी छांटे जा सकते हैं। यह गतिविधि बच्चों को श्रेणियों के अनुसार क्रमबद्ध/वर्गीकृत करना सीखने में मदद करेगी।
30 मिनट	लेखन तत्परता/प्रारंभिक साक्षरता/कला गतिविधियां (बच्चे की पहल) : बच्चों को अपनी पसंद के वाहन को खींचने और रंगने और उनके चित्रों का वर्णन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षक वही लिखता है जो बच्चे उसे बताते हैं और वह जो लिख रहा है उसकी ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करता है।
10 मिनट	हाथ धोने और नाश्ते का समय
10 मिनट	भोजन के बाद हाथ धोना
30 मिनट	बाहरी खेल क्षेत्र (बच्चे द्वारा शुरू किया गया और शिक्षक-निर्देशित) : शिक्षक बच्चों को कक्षा से बाहर एक बाहरी खेल क्षेत्र में ले जाता है। वह उन्हें दौड़ने, कूदने, झूलों पर खेलने, रेत आदि के साथ खेलने का अवसर देती है। इससे शारीरिक विकास में मदद मिलती है। वह बच्चों के साथ सरल नियमों के साथ कुछ खेल भी खेल सकती है जो बच्चों को अपनी बारी की प्रतीक्षा करने, निर्देशों का पालन करने और एक समूह में सहयोग करने में सीखने में मदद करता है।
30 मिनट	कहानी बनाना (बच्चे द्वारा पहल की गई, शिक्षक निर्देशित) शिक्षिका/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री विभिन्न वाहनों की आवाज़ निकालती है और बच्चों से उसे पहचानने तथा वाहन का नाम बताने के लिए कहती है। यह श्रवण कौशल विकास के अवसर प्रदान करता है। शिक्षिका फिर बच्चों को एक कहानी सुनाना शुरू करती है 'एक बार मैं रेलगाड़ी से यात्रा कर रही थी, रेलगाड़ी में एक बच्चा रो रहा था।' बच्चों

	से पूछती है कि सोचो ज़रा वह बच्चा क्यों रो रहा होगा। फिर बच्चों की बातों को दोहराते हुए और अपनी बात कहते हुए वह कहानी की घटनाओं को जोड़ती हुई बच्चों की रुचि बनाए रखती है। कक्षा फिर समूह में कविता गाती है। यदि शिक्षिका कहानी की पुस्तक का प्रयोग कर रही है। तो वह प्रत्येक शब्द के नीचे अपनी उँगली रखेगी और कहानी सुनाएगी। बुनियादी साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए वह कहानी सुनाने से पहले और बाद की गतिविधियों की योजना भी बना सकती है।
10 मिनट	गुडबाय घेरा (बड़े समूह की गतिविधि, शिक्षक-निर्देशित) बच्चे और शिक्षिका आपस में चर्चा करते हैं कि उन्होंने पूरे दिन में क्या-क्या किया। बच्चे सोचते और बताते हैं कि किन गतिविधियों में उन्हें सबसे अधिक आनंद आया। वे कहानी के क्रम पर चर्चा करते हैं। शिक्षिका उन्हें कहती है कि घर जाते समय वे आम यातायात के साधनों को ध्यान से देखें और अगले दिन अपनी जानकारी साझा करें। इससे बच्चों को जो उन्होंने स्कूल में सीखा उससे संबंध जोड़ने में सहायता मिलती है। घर पर उसी अवधारणा पर अभिभावकों द्वारा पुनर्बल दिया जा सकता है।

नोट : गतिविधियों के लिए समय कड़ा नहीं है। बच्चों की रुचि के आधार पर किसी भी गतिविधि को छोटा किया या बढ़ाया जा सकता है। समय में एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में पारगमन समय भी शामिल है।

3.5 गतिविधि 5 : योजना कार्यक्रम - अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31360892318996070412524

3.6 प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में बच्चों के खेल और कार्य का अवलोकन

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_313608859347705856110

प्रतिलिपि

आइए समझें कि हम बच्चों की गतिविधियों का अवलोकन और आकलन कैसे करते हैं? सबसे पहले बुनियादी साक्षरता के तहत मुद्रण जागरूकता तथा ध्वनि माध्यम जागरूकता यानी कि फोनोलॉजिकल अवेयरनेस (phonological awareness) आकलन के बारे में समझें।

बच्चे सामान्य रूप से मुद्रण की अवधारणाओं को सीखने लगते हैं, जब वे घर और स्कूल में उनका विकासात्मक उपयुक्त पुस्तकों जैसे कहानी की पुस्तकें सूचना आधारित पुस्तकें और अन्य क्रमिक चित्र पुस्तकों से अनावरण होता है। जब अभिभावक और शिक्षक कहानी को किताब से पढ़ कर सुनाते हैं तो बच्चे उन्हें सुनते हैं और कहानी की पुस्तकों को देखते हैं। सर्वप्रथम आपको यह समझने की आवश्यकता है कि मुद्रण की अवधारणाओं में यह समझ शामिल है कि मुद्रण का अर्थ होता है, पुस्तकों में वर्ण, शब्द और वाक्य होते हैं। साथ ही बच्चे यह भी समझने लगते हैं कि एक वाक्य में शब्दों के बीच कुछ जगह होती है। आप बच्चों के सामने जिस तरह से पुस्तकों और साक्षरता सामग्री का प्रयोग करते हैं तो वह समझने लगते हैं कि पुस्तकों का प्रयोग किसलिए किया जाता है। जब आप उपयुक्त तरीके से और शिक्षित व्यवहार से उनके लिए पढ़ते हैं तो बच्चे जान पाते हैं कि पुस्तकों के हिस्से होते हैं जैसे मैं आपको बताती हूं, सामने का कवर, पीछे का कवर आदि। बच्चे यह भी समझने लगते हैं कि हम बाएं से दाएं की ओर पढ़ना शुरू करते हैं। अब आपको यह जानना है कि इसका क्या अर्थ है? यदि एक बच्चा समझता है कि मुद्रित या मुद्रण का एक अर्थ होता है कि मुद्रण का प्रयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है कि वर्णों और शब्दों में अंतर होता है, कि शब्दों और वाक्यों में भी अंतर होता

है कि पुस्तकों का मुख आवरण पृष्ठ आवरण होता है कि कहानियां किसी एक पृष्ठ से आरंभ होती हैं कि कहानियां किसी एक पेज पर समाप्त होती हैं कि मुद्रित सामग्री को बाईं से दाईं की ओर पढ़ा जाता है। अब बच्चे का विकासात्मक उपयुक्त तरीके से कैसे आकलन किया जाए और उसे यह महसूस भी ना हो कि वास्तव में उसका आकलन किया जा रहा है? आपके पास आकलन से संबंधित कुछ प्रश्न होते हैं जिन्हें आप मौखिक रूप से पूछ सकते हैं जैसे बच्चे को एक कहानी की पुस्तक देकर पूछ सकते हैं, क्या तुम मुझे दिखा सकते हो?

डॉ. रोमिला सोनी : हिमानी, क्या तुम कहानी की किताब पढ़ रही हो?

हिमानी : जी हाँ

डॉ. रोमिला सोनी : क्या तुम्हें यह कहानी की किताब पसंद आयी?

हिमानी : जी हाँ

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा, क्या तुम मुझे कहानी की किताब का कवर दिखा सकती हो?

हिमानी : यह कहानी की किताब का कवर है।

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत बढ़िया। क्या तुम मुझे कहानी की किताब का पीछे का कवर दिखा सकती हो?

हिमानी : यह कहानी की किताब का पीछे का कवर है।

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत बढ़िया। क्या तुम मुझे अक्षर 'आर' (R) दिखा सकती हो?

हिमानी : यह अक्षर 'आर' (R) है।

डॉ. रोमिला सोनी : क्या तुम मुझे अक्षर 'टी' (T) दिखा सकती हो?

हिमानी : यह अक्षर 'टी' (T) है।

डॉ. रोमिला सोनी : क्या तुम मुझे दिखा सकती हो कि हमें कहानी कहाँ से पढ़नी शुरू करनी चाहिए?

हिमानी : यहाँ से

डॉ. रोमिला सोनी : हाँ, क्या तुम दिखा सकती हो कि कहानी समाप्त कहाँ होती है?

डॉ. रोमिला सोनी : यह क्या है?

विविध : 'मंकी'

डॉ. रोमिला सोनी : 'मंकी' क्या तुम 'म' ध्वनि से कोई एक शब्द बता सकते हो?

विविध : मंकी, मैंगो

डॉ. रोमिला सोनी : उदाहरण के लिए एक और गतिविधि देखें। बच्चों के नाम और उनके नाम वाले

कार्डों का प्रयोग उनके नाम की पहली और अंतिम ध्वनि बताने के लिए करें।

डॉ. रोमिला सोनी : मेरे पास कुछ 'नेम कार्ड' है। ओके, विविध, लावन्या अपना नेमकार्ड उठाओ, बहुत बढ़िया. विविध क्या तुम अपना पहचान सकते हो कि तुम्हारा नेम कार्ड कहाँ है?

विविध : यह मेरा नेम कार्ड

डॉ. रोमिला सोनी : बहुत बढ़िया. हिमानी, क्या तुम अपना नेम कार्ड उठा सकती हो? यह किसका नेम कार्ड है?

लावन्या : साराह

डॉ. रोमिला सोनी : साराह, हाँ, अच्छा विविध, तुम्हारे नाम में शुरू की ध्वनि क्या है?

विविध : 'व'

डॉ. रोमिला सोनी : 'व', बहुत बढ़िया। क्या तुम मुझे एक और शब्द बता सकते हो जो 'व' से शुरू होता है?

विविध : वैन

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा, हिमानी क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हारे नाम में शुरू की ध्वनि क्या है?

हिमानी : 'ह'

डॉ. रोमिला सोनी : तुम्हारे नाम की आखिरी ध्वनि क्या है?

हिमानी : 'ई'

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा, साराह क्या तुम बता सकती हो, तुम्हारे नाम की शुरू की ध्वनि क्या है?

साराह : 'स'

डॉ. रोमिला सोनी : बढ़िया। तुम्हारे नाम में आखिरी ध्वनि क्या आती है?

साराह : 'ह'

डॉ. रोमिला सोनी : क्या तुम मुझे किसी ऐसे जानवर का नाम बता सकती हो जो 'ह' ध्वनि से शुरू होता है।

साराह : हिप्पो

डॉ. रोमिला सोनी : हिप्पो, बहुत बढ़िया। और कोई एक नाम जो 'स' ध्वनि से शुरू होता है?

डॉ. रोमिला सोनी : अगर तुम्हारा नाम 'ल' ध्वनि से शुरू होता है तो ऊँचा कूदो, ऊँचा कूदो, दो बार कूदो। एक, दो।बहुत बढ़िया। जिसका नाम 'व' ध्वनि से शुरू होता है, मुझे एक कहानी की किताब दो।

बहुत बढ़िया विविध।

यह तो बुनियादी साक्षरता के तहत मुद्रण जागरूकता तथा ध्वनि माध्यम यानी कि फोनोलॉजिकल अवेयरनेस (phonological awareness) के आकलन के कुछ उदाहरण थे। आइए अब हम बुनियादी संख्या ज्ञान के आकलन के लिए कुछ गतिविधियां करें।

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा, आओ देखें कि मेरे पास क्या है?

लावन्या : पेपर

सभी : पेपर

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा! पेपर

सभी : पेन्सिल

डॉ. रोमिला सोनी : तुम्हें कैसे पता चला? ओ! मेरे स्मार्ट बच्चे। हाँ! मेरे पास 'प' पेन्सिल है।

सभी : और 'प' पेन

डॉ. रोमिला सोनी : हाँ, 'प' पेन।

लावन्या : रंग हल्का है इसलिए मैं देख सकती हूँ।

डॉ. रोमिला सोनी : अच्छा! लावन्या कह रही है कि रंग इतना हल्का है कि वह देख सकती है। हाँ, यहाँ एक पिंक ढक्कन है।

विविध : पिंक पेपर

साराह : और पेपर प्लेट्स, पेपर प्लेट

डॉ. रोमिला सोनी : और पेपर प्लेट, सबसे पहले तो बच्चों को ढेर सारी सामग्री उपलब्ध कराएं जैसे तिनके, पत्तियां, छोटे-छोटे पत्थर, बटन, बोतल के ढक्कन आदि और अवलोकन करें कि बच्चे किस प्रकार इस सामग्री का प्रयोग करते हैं? क्या बच्चे वस्तुओं को विभिन्न श्रेणी में छांटते हैं? क्या वे सामग्री के गुणों, विशेषताओं का वर्णन कर सकते हैं?

डॉ. रोमिला सोनी : मैं दो या तीन ध्वनियाँ बोलूंगी और आपको उन्हें आपस में मिलाकर बताना है, ठीक है? तुम्हें इन्हें मिलाना है इसीलिए ध्यान से सुनो – ह – ऐ – ट

सभी : 'हैट'

विविध : हम हैट सिर पर पहनते हैं।

डॉ. रोमिला सोनी : हाँ, हम हेट सिर पर पहनते हैं। बहुत बढ़िया। अच्छा चलो अब अन्य तीन ध्वनियों को मिलाते हैं।

सभी : ठीक है मैडम

डॉ. रोमिला सोनी : 'ब – ए – ड'

सभी : बेड

डॉ. रोमिला सोनी : क्या वे जानते हैं कि किस प्रकार यह खेल सामग्री सामान्य या भिन्न है? बच्चों को इस सामग्री से नमूने बनाने के लिए प्रोत्साहित करें और देखें वे किस प्रकार के नमूने बनाते हैं? क्या वे केवल एक ही नमूना यानी कि ए-बी, ए-बी, क-ख, क-ख बनाते हैं या उससे अलग और आगे भी बना पाते हैं? क्या बच्चे नमूने को स्वयं किसी भी सिरे से आगे बढ़ा पाते हैं या केवल एक ही दिशा में आगे बढ़ाते हैं? कुछ समय बाद ध्यान दीजिए कि बच्चे अपने डिज़ाइन या नमूने में किस प्रकार की जटिलता ला रहे हैं? क्या वे बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें गिनते भी हैं? क्या वे दो नमूनों की तुलना करते हैं? यानी नमूने किस प्रकार समान या भिन्न हैं? यदि बच्चों को नमूनों को आगे बढ़ाने या नमूने बनाने में कठिनाई हो रही हो तो उन्हें अलग-अलग प्रकार के नमूना यानी कि पैटर्न की गतिविधियां कक्षा में कराएं जैसे कि उन्हें नमूनों की खोज करना या पैटर्न हंटिंग के लिए प्रोत्साहित करें जैसे कि अपनी ड्रेस देखो, अपनी फ्रॉक, कमीज या स्कर्ट में तुम्हें कोई नमूना दिखाई देता है? क्या तुम नमूने का वर्णन कर सकते हो? तुम्हारी कमीज में कितने बटन हैं? यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप बच्चे के खेल का किस प्रकार अवलोकन करते हैं और आकलन की प्रक्रियाएं नियोजित करते हैं। आप किस प्रकार साक्षरता और गणित में बच्चों की रुचियों और शक्तियों को नोटिस करते हैं, पहचानते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं। यह बहुत अच्छा होगा यदि आप एफएलएन में बच्चों की स्थिति और प्रगति का आकलन करने के लिए कोई आकलन योजना निर्मित करें। इसके लिए मैं आपको एक सैंपल दिखाती हूं, जिसमें एक तालिका बना सकते हैं और लिखने के लिए रिक्त स्थान छोड़ दें जैसे क्या आकलन करना है? कब आकलन करना है? और रिकॉर्डिंग प्रक्रिया कैसे करनी है? आप इस प्रकार के फॉर्म का प्रयोग कर सकते हैं। इसी तरह एक और फॉर्म जैसे कि बच्चे की भागीदारी उसी बच्चे की रिपोर्टिंग द्वारा कैसे कर सकते हैं? उसके लिए आप यह सैंपल बना सकते हैं। यह एक सिर्फ सैंपल है। आप अपना कुछ और भी नया निर्मित कर सकते हैं। इसी प्रकार कॉन्सेप्ट ऑफ प्रिंट यानी कि मुद्रण अवधारणा के लिए आप इस तरह की असेसमेंट या आकलन शीट बना सकते हैं। इसी प्रकार नमूना रुब्रिक जो आप देख पा रहे हैं, इसकी भी आप एक सैंपल आकलन शीट तैयार कर सकते हैं। इस प्रकार आपने यह जाना कि बच्चों का आकलन करने से उनकी प्रगति के बारे में जानने में सहायता मिलती है। आपने यह भी समझा है कि कैसे समर्थकारी परिवेश और उपयुक्त संसाधन बच्चों की सीखने और विकास के अवलोकन तथा आकलन को सरल बना देते हैं। यह अनवरत अवलोकन, आकलन योजना के साथ समग्र आकलन की प्रक्रिया को आसान बना देता है।

3.7 गतिविधि 6 : ईसीसीई पाठ्यचर्या की योजना बनाना - अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3136089474494464001252 9

मॉड्यूल 4

अंतर्निहित विकासात्मक उपयुक्त आकलन के लिए नियोजन

मॉड्यूल 4 : अंतर्निहित विकासात्मक उपयुक्त आकलन के लिए नियोजन

4.1 खेल और गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को जानना और समझना

बच्चों के अवलोकन प्रक्रिया व्यवस्थित होनी चाहिए और बच्चे की गतिविधियों में संलग्न होने पर उसका अवलोकन करते समय, शिक्षक अधिकांश सीखने के प्रतिफल के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है उदाहरण के लिए,

- बच्चा किस सीखने के प्रतिफल के अनुसार प्रगति कर रहा है?
- खेल गतिविधि क्या इंगित कर रही है?
- क्या शिक्षण रणनीतियों का दक्षताओं या सीखने के प्रतिफल के साथ संरेखण योजना के अनुसार चल रहा है?

इसके लिए यह देखना होगा कि बच्चों के लिए किस तरह के अवसरों और अनुभवों की आवश्यकता है ताकि वे वांछित सीखने के प्रतिफल तक पहुंच सकें। तीन विकासात्मक लक्ष्यों और सीखने के प्रतिफलों का उपयोग करते हुए शिक्षक के पास एक परिप्रेक्ष्य होगा, *उदाहरण के लिए एक बच्चे को क्या दिया जाए, स्तर के अनुसार किस तरह के अनुभव दिए जाएँ, एक विशेष उम्र में एक बच्चा क्या कर सकता है, क्या कक्षा का परिवेश अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया है, कैसे एक बच्चा दूसरों के साथ काम कर रहा है और बच्चे की जिज्ञासा का स्तर क्या है?*

4.2 अतिरिक्त सामग्री : शिक्षक के अवलोकन और बच्चों के विचार

तालिका : शिक्षक के अवलोकन और बच्चों के विचार

बच्चों का अवलोकन	शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री द्वारा समीक्षा और चिंतन	शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री की प्रतिक्रिया और रणनीतियाँ
संगीत और गति का समय • सरला ताल या संगीत पर उछलने लगती है।	• सरला को पूरे समूह संगीत और हिलने-डुलने वाली गतिविधियों में भाग लेने में आनंद आता है और शिक्षक द्वारा दिए गए कार्यों/निर्देशों	• गति के निरंतर उत्साही प्रदर्शन को गौर से देखें; चलते समय बच्चा शरीर को कैसे नियंत्रित करता है; बाहरी स्थान की समझ

वह तुकबंदी की धुन को भी पहचान लेती है और शिक्षक द्वारा बुलाए जाने पर हिलने-डुलने की गतिविधियों के लिए कार्रवाई करती है। वह ताली बजाती है और एक ताल या संगीत पर सरपट आती है और साथ ही गाती है।	का पालन करती है। वह एक बड़े समूह में सक्रिय रूप से भाग लेती है। लक्ष्य 1 : *बच्चे अच्छे स्वास्थ्य और भलाई को बनाए रखते हैं* सीखने के प्रतिफल HW4-4 : *एक निश्चित समय में तीन से चार निर्देशों/नियमों का पालन करता है।* *(सीखने के प्रतिफल के लिए स्रोत : निपुण भारत मिशन दिशानिर्देश)*	अवधारणात्मक मोटर गतिविधियों की योजना बनाएं और सरला की दिशात्मक जागरूकता, देखने और सुनने के आधार पर चलने की क्षमता का निरीक्षण करें। जब वह अपने शरीर को गति करने के लिए ले जाती है तो उसकी स्थानिक भावना का निरीक्षण करें। सरला के लिए स्वतंत्र रूप से संगीत की खोज करने की योजना बनाएं।
बुनियादी संख्यात्मक गतिविधि (वर्गीकरण : वस्तुओं को क्रमबद्ध और समूहित करने की क्षमता) बच्चों का एक छोटा समूह फूलों के संग्रह को छांटने में लगा रहता है और काम करता है (जो उन्होंने बगीचे की यात्रा के दौरान एकत्र किया है।) अक्षय सभी पीले फूल लेता है और उन्हें छोटे से लेकर सबसे बड़े तक पंक्तिबद्ध करता है।	अक्षय आनंद लेता है और छोटे समूह की गतिविधियों में भाग लेता है। *लक्ष्य 2 : बच्चे प्रभावी संचारक बनें* सीखने के प्रतिफल - HW4-4 : *एक निश्चित समय में तीन से चार निर्देशों/नियमों का पालन करता है* *अक्षय दी गई गतिविधियों/कार्य को पूरा करता है* *लक्ष्य 1 : बच्चे अच्छे स्वास्थ्य और भलाई को बनाए रखते हैं* सीखने के प्रतिफल - *HW5.6 : बढ़ी हुए ध्यान अवधि और कार्यों में दृढ़ता को दर्शाता है।* वह फूलों को रंगों के अनुसार छांटता है।	अक्षय को गतिविधि क्षेत्रों में देखें। छाँटने और फिर से छाँटने की क्षमता पर ध्यान दें ; आंगनवाड़ी कार्यकर्त्री द्वारा/ या स्वयं के द्वारा दिए गुणों/ मानदंडों के साथ। गौर से देखें कि बच्चे ने कैसे वस्तुओं को ऑर्डर/ व्यवस्थित किया है और वह इसे कैसे समझा रहा है? उसकी आलोचनात्मक सोच का विस्तार करने के लिए खुले प्रश्न पूछें जैसे कि *आपने इस तरह फूलों की व्यवस्था क्यों की है? आपने सबसे बड़े फूल को आखिर में क्यों रखा है?*

	लक्ष्य 3 : बच्चे जिज्ञासु शिक्षार्थी होते हैं और अपने तत्काल परिवेश से जुड़ते हैं *सीखने के प्रतिफल - आईएल 5.5 कई कारकों के आधार पर वस्तुओं/चित्रों की तुलना और वर्गीकरण करता है और गुणों का उपयोग करके उनका वर्णन करता है। (सीखने के प्रतिफल हेतु स्रोत : निपुण भारत मिशन दिशानिर्देश)* - जब अक्षय फूलों को उनके आकार के अनुसार पंक्तिबद्ध करता हैं तो समस्या समाधान कौशल दिखाता हैं और उनका उपयोग करता हैं। *लक्ष्य 3 : बच्चे जिज्ञासु शिक्षार्थी होते हैं और अपने तत्काल परिवेश से जुड़ते हैं* सीखने के प्रतिफल - आईएल *4.6 विशेष मानदंड के आधार पर पांच से अधिक वस्तुओं को क्रमबद्ध/व्यवस्थित करता है।* *(सीखने के प्रतिफल के लिए स्रोत : निपुण भारत मिशन दिशानिर्देश)*	- खिलौनों, बीजों, चित्रों आदि को छांटने के अधिक अवसर प्रदान करें। - वस्तुओं को क्रम में व्यवस्थित करने के अवसर प्रदान करें।
बुनियादी साक्षरता गतिविधि (कहानी सुनाने, फिर से सुनाने या पूरा करने की क्षमता) कहानी सुनाना	- सविता गतिविधि क्षेत्र *(लघु पुस्तकालय/पठन क्षेत्र)* से एक कहानी की किताब चुनती है और कहानी सुनने का आनंद लेती है और कहानी कहने में सक्रिय रूप से भाग लेती है।	- याद की गयी घटनाओं की सूची देखें; बच्चा कहानी की संरचना को कैसे समझ रहा है (पात्र, क्रम, चरमोत्कर्ष)

सविता शिक्षक से "द लिटिल रेड हेन" कहानी सुनाने के लिए कहती है। कहानी के बीच में वह शिक्षक से पहले भी किसी अन्य जानवर या व्यक्ति का नाम बताती है।	लक्ष्य 2 : *बच्चे प्रभावी संचारक बनें* सीखने के प्रतिफल - *ECL1 5.5b अपनी प्रतिक्रिया, पसंद/नापसंद व्यक्त करता है और प्रश्न पूछता है* 💡 वह अगले पात्र की भविष्यवाणी करती है और यह पता लगाने की कोशिश करती है कि आगे क्या/कौन आता है। लक्ष्य 2 : *बच्चे प्रभावी संचारक बनें।* सीखने के प्रतिफल - *ECL1 5.6 पिक्चर स्टोरी/स्टोरी बोर्ड में घटनाओं और पात्रों को समझता है।* 💡 वह पात्र की आवाज़ का पहचानने की कोशिश करती है लक्ष्य 2 : बच्चे प्रभावी संचारक बनें सीखने के प्रतिफल - *ECL1 5.7 कहानियों/कविताओं और अन्य ग्रंथों पर आधारित पात्रों/घटनाओं के बारे में बात करता है* सीखने के प्रतिफल - *ECL1 4.2 पढ़ने के क्षेत्र से पुस्तकों का चयन करता है और चित्रों की सहायता से कहानी के बारे में बात करता है।* *(सीखने के प्रतिफल के लिए स्रोत : निपुण भारत मिशन दिशानिर्देश)*	💡 लघु पुस्तकालय/पठन क्षेत्र में सामग्री/खिलौने उपलब्ध कराएं ताकि वह स्वयं कहानी को फिर से सुना सके। 💡 ध्वन्यात्मक जागरूकता पर अधिक तुकबंदी, चार्ट और भाषा के खेल की योजना बनाएं। 💡 अधिक आयु-उपयुक्त पुस्तकें रखें जिनमें भाषा की ध्वनियों के साथ खेलना शामिल हो।

बुनियादी साक्षरता (एल-2) - दिनेश पठन क्षेत्र में एक कहानी की किताब के पन्ने पलटता है और पढ़ने का नाटक करता है और स्थानीय बोली में बड़बड़ाते हुए शब्दों के नीचे अपनी उंगली रखता है। वह अन्य पुस्तकें खोलता रहता है और वही करता है।	- दिनेश विशेष रूप से उन कहानियों की किताबों में प्रिंट में रुचि दिखाता है जिनमें आकर्षक चित्र होते हैं। किताबों की खोज करते समय दिनेश अपनी बोली का इस्तेमाल करता हैं ; उसे अपनी भाषा और प्रारंभिक साक्षरता बढ़ाने के लिए अपनी बोली में पुस्तकों और प्रिंट की आवश्यकता है। लक्ष्य 2 : *बच्चे प्रभावी संचारक बनें* सीखने के प्रतिफल - *ECL2 4.3 पठन-क्षेत्र से कहानी की किताब चुनता है और चित्रों को पढ़ने की कोशिश करता है* सीखने के प्रतिफल - *ECL2 5.3 कहानी की भविष्यवाणी करता है और पात्र के बारे में द्विभाषी रूप से बात करता है।* *(सीखने के प्रतिफल के लिए स्रोत : निपुण भारत मिशन दिशानिर्देश)*	- देखें कि बच्चा किताबों को कैसे देख रहा है, पन्ने पलट रहा है; बच्चा किस भाषा में सहज है; बच्चा कौन से विशिष्ट शब्द बोलता और समझता है। - विभिन्न भाषाओं में अधिक से अधिक बाल साहित्य प्रस्तुत करें। - स्थानीय भाषाओं में कहानी की किताबें बनाएं और दें। भाषाएँ जो स्थानीय संदर्भ को दर्शाती हैं। - मौखिक अभिव्यक्ति का अधिक समय/अवसर प्रदान करें।

सारांश

खेल-आधारित सीखने के परिवेश का नियोजन

प्री-स्कूल और उसका परिवेश

- अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया, भावनात्मक रुप से सहायक, आंतरिक और बाह्य परिवेश
- प्री-स्कूल भौतिक परिवेश के लिए कुछ सुविधाएं –
  - सभी बच्चों के लिए पर्याप्त खिलौने और खेल सीखने की सामग्री।

परिवेश का नियोजन : आंतरिक और बाहरी स्थान

- प्री-स्कूल की भौतिक सेटिंग सुरक्षित, स्वच्छ, आरामदायक, आकर्षक और अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई होनी चाहिए जो बच्चों को खेल-आधारित गतिविधियों में संलग्न होने और खुशी से सीखने में मदद करेगी।

रुचि के क्षेत्रों में खेल

- घेरा समय क्षेत्र
- पठन क्षेत्र (भाषा और साक्षरता क्षेत्र)
- लेखन क्षेत्र (भाषा और साक्षरता क्षेत्र)
- गणित/जोड़ तोड़ क्षेत्र
- ब्लॉक बिल्डिंग क्षेत्र
- डिस्कवरी/विज्ञान क्षेत्र
- कला और संगीत क्षेत्र
- गुड़िया/नाटकीय क्षेत्र

संतुलित ईसीसीई पाठ्यचर्या

- शिक्षक-निर्देशित पद्धति और बच्चों द्वारा शुरु की गई शिक्षा जिसमें प्रश्न पूछना और उनका उत्तर देना, जानकारी प्राप्त करना, आलोचनात्मक सोच, खोज और अपना काम दिखाना शामिल है।

खेल-आधारित ईसीसीई पाठ्यचर्या

- विकासात्मक लक्ष्य (विकास के पांच क्षेत्र)
- बच्चों की रुचियों, आवश्यकताओं, सामर्थ्य, विशेषताओं और संदर्भ की समझ
- शिक्षक का अपने बच्चों और उनके विकास के बारे में ज्ञान

ईसीसीई कार्यक्रम के लिए योजना के सिद्धांत

- अधिगम अनुभव
- संदर्भ
- प्रक्रियाएँ

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

बच्चों की रुचि जैसे जानवरों/पौधों आदि के किसी भी विषय पर एक संतुलित और विकासात्मक रूप से उपयुक्त दिन का कार्यक्रम विकसित करने का प्रयास करें। बच्चों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूछताछ आधारित दृष्टिकोण में बनाएँ, अपने चुने हुए विषय को पढ़ाने/सीखने के लिए खेल गतिविधियों और विचारों की पहचान करें और चयनित विषय के लिए अंतर्निहित मूल्यांकन तकनीकों का उपयोग करने के कुछ तरीकों के बारे में भी सोचें और फिर निम्नलिखित विवरण लिखें :

- अवधारणा/विषय :
- उपविषय, यदि कोई हो :
- बच्चों का आयु समूह :
- उद्देश्य :
- पूर्वापेक्षा ज्ञान/कौशल :
- खिलौने/सामग्री और तैयारी :
- मुख्य विचार/विषय वस्तु :
- सीखने के प्रतिफल :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- भारत सरकार. (2021). निपुण भारत मिशन दिशानिर्देश. नई दिल्ली. भारत सरकार
- भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, नई दिल्ली. भारत सरकार
- महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (MWCD). (2013). प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति. नई दिल्ली. भारत सरकार
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2008). पढ़ने की समझ. नई दिल्ली. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2013) लिखने की शुरुआत - एक संवाद. नई दिल्ली. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
- स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय. (2017). आपरेशनल गाइडलाइंस फ़ॉर इम्पलीमेंटिंग अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड डेवलपमेंट इन पब्लिक हेल्थ सिस्टम. नई दिल्ली. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय. भारत सरकार
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2019) प्री-स्कूल करिकुलम. नई दिल्ली. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2005). लिटिल स्टेप्स - रेडीनेस एक्टिविटीज़ फॉर रीडिंग, राइटिंग एंड नंबर रेडीनेस. नई दिल्ली. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्.
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2017). स्मूथ एंड सक्सेसफुल ट्रांजिशन. नई दिल्ली. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. (2015). एव्री चाइल्ड मेटर्स : ए हैंडबुक ऑन क्वालिटी अर्ली चाइल्डहुड एजूकेशन. न्यू दिल्ली. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

वेब लिंक

- पिक्चर रीडिंग प्री-स्कूल - https://youtu.be/3gav6BXih4M
- बुनियादी संख्यात्मकता के लिए समस्या समाधान कौशल - https://www.youtube.com/watch?v=aZJ4kiVhO3U
- बुनियादी संख्यात्मकता के लिए पैटर्न बनाना - https://www.youtube.com/watch?v=L4TMfJqi7Dk
- साइज़ एंड सीरिएशन फ़ॉर फंडामेंटल न्यूमेरेसी - https://youtu.be/mORwL-ZPJ6g
- वन टू वन कॉरसपंडेंस - https://youtu.be/JtLOlVWAhqI

निष्ठा (ईसीसीई)

शिक्षा के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों और स्कूल प्रमुखों के लिए एक एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम

कोर्स 03

समग्र विकास के लिए खेल-आधारित गतिविधियाँ

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली - 110016

अनुक्रमणिका

- **कोर्स की जानकारी**

  कोर्स का विवरण

  मुख्य शब्द

  उद्देश्य

  कोर्स की रूपरेखा

- **1. समग्र विकास के लिए खेल-आधारित गतिविधियों का महत्व**

  1.1 खेल-आधारित गतिविधियों का महत्व

  1.2 गतिविधि 1 : बच्चों की विशेषताएँ - अपने अनुभव साझा करें

- **2. बच्चे को समझना**

  2.1 व्यक्तिगत सामाजिक और भावनात्मक विकास

  2.2 गतिविधि 2 : आयु विशिष्ट विकास - स्वयं प्रयास करें

  2.3 बच्चे के रूप में ज्ञान का निर्माण

- **3. खेल-आधारित गतिविधियाँ और अनुभवात्मक अधिगम**

  3.1 खेल-आधारित गतिविधियों का उपयोग

  3.2 खेल और शिक्षण सामग्री

  3.3 गतिविधि 3 : कक्षा में खिलौनों का उपयोग - अपने विचार साझा करें

  3.4 खिलौना आधारित शिक्षा पद्धति और डू इट योरसेल्फ (DIY) खिलौने

- **4. विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियाँ**

  4.1 विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियाँ

  4.2 लक्ष्य 1 : बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखना

  4.3 अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण के लिए गतिविधियाँ

  4.4 लक्ष्य 2 : बच्चे प्रभावी संप्रेषक बनें

  4.5 भाषा और साक्षरता विकसित के करने हेतु गतिविधियां

  4.6 गतिविधि 4 : विकास के लक्ष्य और दक्षताएँ - अपनी समझ की जांच करें

  4.7 विकास लक्ष्य 3 : बच्चे सक्रिय शिक्षार्थी बनें और अपने तत्काल परिवेश से जुड़ें

  4.8 सांख्यिकी गणित एवं पर्यावरणीय जागरुकता हेतु गतिविधियां

  4.9 गतिविधि 5 : खिलौनों के साथ खेलना - स्वयं करें

5. सीखने के लिए आकलन

5.1 बच्चों की प्रगति का अवलोकन एवं आकलन

5.2 समग्र प्रगति कार्ड

5.3 गतिविधि 6 : समग्र विकास - अपनी समझ की जांच करें

सारांश

पोर्टफोलियो गतिविधि

» असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन

» संदर्भ

» वेब लिंक

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

खेल बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। उनके लिए खेल सीखना है। इस कोर्स के माध्यम से आप बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समग्र प्रगति पत्र सहित सीखना-सिखाना, खिलौनों के उपयोग, अवलोकन और बच्चों की प्रगति के आकलन में खेल और गतिविधि-आधारित शिक्षा पद्धति के उपयोग और महत्व को समझने में सक्षम होंगे।

मुख्य शब्द

NISHTHAECCE, PLAY, TOYS, ECCE, PRESCHOOL, HOLISTIC DEVELOPMENT, PLAY ACTIVITIES

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- यह समझने में कि बच्चे कैसे होते हैं, उनकी विशेषताएँ क्या होती हैं।
- खेल और गतिविधि आधारित अनुभवात्मक अधिगम और खेल आधारित शिक्षाशास्त्र के उपयोग का स्पष्ट रूप से बताने में।
- खिलौनों के उपयोग और डू इट योरसेल्फ (Do It Yourself) गतिविधियों की सराहना करने में।
- विकासात्मक लक्ष्यों गतिविधियों का संचालन करने में:
  - » बच्चे अच्छे स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को बनाए रखतें हैं।
  - » बच्चे प्रभावी संचारक बनते हैं।
  - » बच्चे सहभागी शिक्षार्थी बन जाते हैं और अपने तत्काल परिवेश से जुड़ जाते हैं।
- खेल-आधारित गतिविधियों के माध्यम से बच्चे की प्रगति का निरीक्षण और मूल्यांकन करने में।
- बच्चे के लिए समग्र प्रगति कार्ड के महत्व को समझने में।

कोर्स की रूपरेखा

- समग्र विकास हेतु खेल-आधारित गतिविधियों का महत्व।
- प्री-स्कूल बच्चों की विशेषताएँ।
- खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित शिक्षाशास्त्र का उपयोग।
- विकासात्मक लक्ष्यों हेतु गतिविधियाँ।
- बच्चों की प्रगति का आकलन और अवलोकन।
- समग्र प्रगति कार्ड का उपयोग और महत्व।

••• मॉड्यूल 1 •••

समग्र विकास के लिए खेल-आधारित गतिविधियाँ का महत्व

मॉड्यूल 1 : समग्र विकास के लिए खेल-आधारित गतिविधियाँ का महत्व

3.1 खेल-आधारित गतिविधियों का महत्व - प्रतिलिपि

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें।

या निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3136896566907043841187O?contentType=Resource

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों,

जीवन के प्रारंभिक वर्ष, मानव विकास और सीखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण वर्ष हैं। ये वो साल होते हैं जिनमें, बच्चों को सही अवसर और प्रोत्साहन दिया जाता है ताकि उनकी पांचों इंद्रियों का विकास हो सके, शारीरिक और गत्यात्मक विकास हो सके, आँख-हाथ का समन्वय मज़बूत हो सके और वो पढ़ने और लिखने में सक्षम हों।

जैसे-जैसे बच्चे अन्य बच्चों के साथ अधिक से अधिक खेल-आधारित गतिविधियों की शुरुआत करते हैं और संलग्न होते हैं, उनमें पहचान करने और सामाजिक कौशल की भावना विकसित होने लगती है। धीरे-धीरे वे समग्र एवं आनंदपूर्ण तरीके से सीखने के लिए आवश्यक प्रमुख दक्षताओं और कौशलों को सीखने लगते हैं।

खेल बच्चों के लिए सीखने का माध्यम है। खेल के माध्यम से, बच्चे यह प्रदर्शित करते हैं कि वे क्या सीख रहे हैं? उनकी रुचि किसमें है? और वे क्या सोच रहे हैं? खेल किसी भी प्रकार का हो सकता है - मुक्त रूप से खेलना, शिक्षक के निर्देशानुसार खेलना या किसी ढांचे में रह कर खेलना। खेलने में खिलौने विशेष भूमिका निभाते हैं। खिलौने, सीखने और विकसित होने के पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं। वे बच्चों में रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच विकसित करते हैं।

स्वयं करें (DIY), प्रकार की गतिविधियाँ, बच्चों को सोचने की शक्ति प्रदान करती हैं और सीखने को और अधिक मजबूत और मनोरंजन बनाकर, उनमें सीखने की प्रेरणा विकसित कर, उन्हें कार्यों में संलग्न करती हैं। अतः प्री-स्कूल के बच्चों के शैक्षिक कार्यक्रम में उनके शारीरिक और मानसिक कल्याण के लिए, खेल-आधारित गतिविधियाँ और अनुभव, भाषा और साक्षरता का विकास, पर्यावरण को जानना, गणितीय सोच आदि शामिल होना ताकि बच्चे खुशी से स्कूली शिक्षा हासिल कर सकें और आगे बढ़ सकें, यह ज़रूरी है। अवलोकन और मूल्यांकन, आधारभूत शिक्षा स्तर पर सीखने का एक अभिन्न अंग है और यह बच्चों की प्रगति की निगरानी करने में मदद करता है और विकास संबंधी देरी या विशेष जरूरतों की पहचान करने में भी मदद करता है। खेल-आधारित गतिविधियों का उपयोग तनाव-मुक्त मूल्यांकन में सहायक होता है। जब बच्चे खेल गतिविधियों में संलग्न होते हैं तो वे खुद को बेहतर ढंग से व्यक्त कर सकते हैं।

विकास की प्रक्रिया में बच्चे कैसे अग्रसर हो रहे हैं, वे क्या हासिल कर पाए हैं और कहाँ कमी रही है, इसको समग्र प्रगति कार्ड में अवश्य शामिल करना चाहिए तथा माता-पिता और अगली कक्षा के शिक्षक के साथ भी साझा करना चाहिए क्योंकि वे भी बच्चे के विकास और सीखने की प्रक्रिया में भागीदार हैं और वे समय रहते कमी दूर करने के लिए बेहतर प्रयास कर सकते हैं।

जब बच्चे खेलते हैं, सीखते हैं और बढ़ते हैं तो वे अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर अपने ज्ञान का निर्माण करते चले जाते हैं इसलिए, खेल-आधारित शिक्षा के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए, यह बच्चों का अधिकार है।

3.2 गतिविधि 1 : बच्चों की विशेषताएँ - अपने अनुभव साझा करें

आपने अपने आस-पास अपने परिवार या पड़ोस में बच्चों को जरूर देखा होगा। बच्चों की विकासात्मक विशेषताओं के बारे में विचार करें तथा वे कैसे खेलते, सीखते और बढ़ते हैं, इसे साझा करें।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceHc3a1 टाइप करें

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें

https://nishtha-ecce.blogspot.com/2022/12/03-1.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड** को स्कैन करें

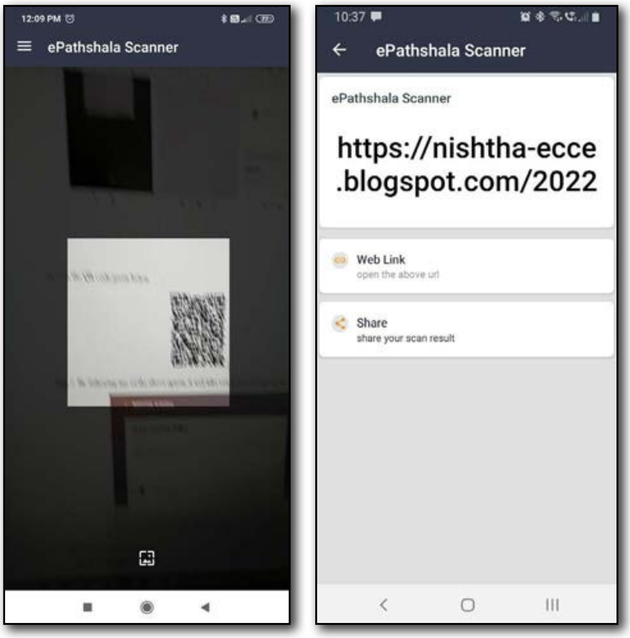

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है।

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें
- 'Enter your comment' पर क्लिक करें

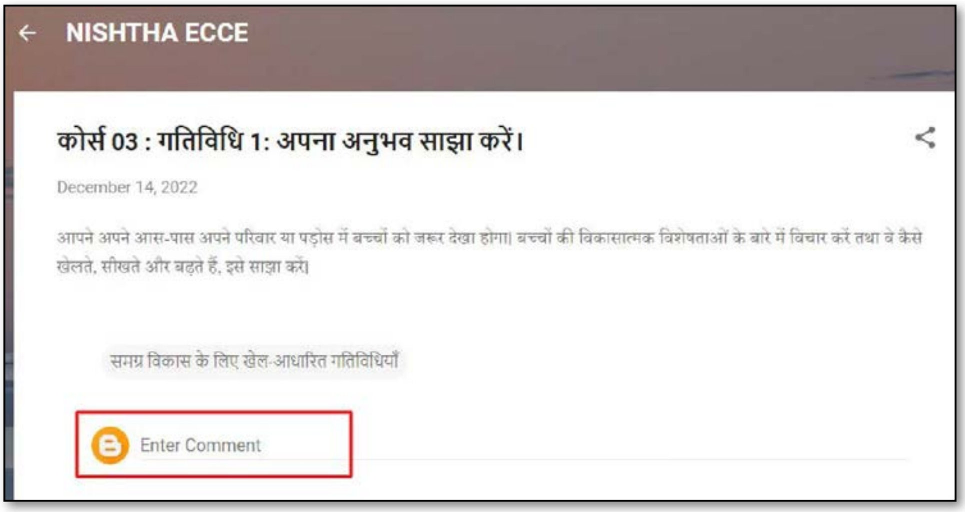

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

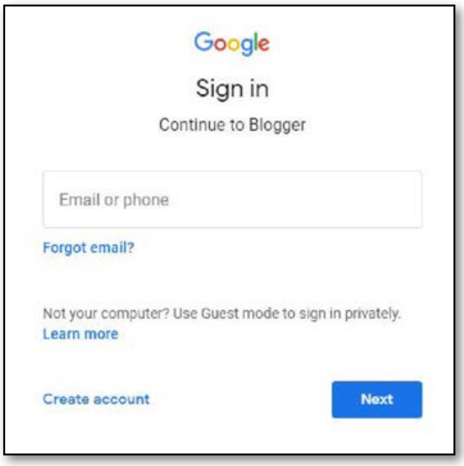

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 2

बच्चे को समझना

मॉड्यूल 2 : बच्चे को समझना

2.1 व्यक्तिगत सामाजिक और भावनात्मक विकास

प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है। बाल विकास एक सतत और संचयी प्रक्रिया है जो एक निश्चित परिपाटी का पालन करती है तथा अनुवांशिकता, परिवेश और पालन पोषण से प्रभावित होता है।

एक सफल स्कूल अनुभव के लिए सामाजिक और भावात्मक विकास उतना ही महत्वूपर्ण है जितना कि भाषा और संज्ञानात्मक विकास। प्री-स्कूल इस प्रकार के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है। यह वह जगह है जहाँ उपयुक्त सामाजिक व्यवहार के लिए मूलभूत कौशल सीखे जाते हैं।

वयस्कों के साथ मधुर और सकारात्मक संबंध बच्चों को अपने आसपास की दुनिया में विश्वास की भावना को विकसित करने में मदद करते हैं। छोटे बच्चे जिज्ञासु होते हैं, सीखने के लिए उत्सुक होते हैं तथा नई चीज़ों में रुचिपूर्वक प्रतिक्रिया करते हैं। वे एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं बैठ सकते। साथ ही कुछ सामाजिक कौशल भी हैं जो बुनियादी स्तर और उसके बाद के सफल पारगमन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

इस स्तर पर बच्चे खेल और गतिविधियों के माध्यम से सबसे अच्छा सीखते हैं। उनकी ध्यान क्षमता (Attention Span) कम होती है यानी उनमें लंबे समय तक किसी गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करने या उसमें भाग लेने की क्षमता कम होती है। उनके लिए लंबे समय तक बैठना, 7 से 15 मिनट तक एक गतिविधि पर ध्यान केंद्रित करना कठिन होता है। वे अभी तक बड़ी सामूहिक गतिविधियों के लिए तैयार नहीं हैं और इसलिए वे छोटी सामूहिक गतिविधियों से अधिक आनंद और लाभ लेते हैं। वे दोहराव का आंनद लेते हैं, विशेष रूप से कहानियों, गानों और कविताओं का। वे सहज रूप से संगीत, तुकबंदी और ताल का जवाब देते हैं। उन्हें खेलना, कूदना, रेंगना, दौड़ना और संतुलन बनाना पसंद है क्योंकि उन्हें ये सभी गतिविधियाँ सुखद लगती हैं।

बच्चे पूर्व प्राथमिक कक्षाओं में मौखिक क्षमता प्रदर्शित करते हैं, पढ़ना शुरू करते हैं, लिखते हैं और तर्क देते हैं। उनमें समस्या समाधान का कौशल विकसित होता है। उनका मांसपेशियों पर अच्छा नियंत्रण होता है और वे गतिविधियों में आत्मनिर्भर और अपनी जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होते हैं। वे दोस्तों के साथ का आनंद लेते हैं, नियमों के साथ समूह खेल आसानी से और प्रतिस्पर्धा से प्रेरित होकर खेल सकते हैं।

वे शक्तिशाली, सक्रिय, ऊर्जावान और बहुत अधिक क्रियाशील व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं, वे ऐसे वाक्यों को समझ सकते हैं जो थोड़े जटिल हैं और एक समय में दो या तीन निर्देशों का अनुसरण कर सकते हैं। वे खुद को अधिक प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने में सक्षम होते हैं। बच्चे कुछ हद तक संरचित गतिविधियों को अपना सकते हैं, जबकि उनका सीखना काफी हद तक उनके तात्कालिक परिवेश के अनुभवों पर आधारित होता है। हालांकि व्यक्तिगत भिन्नताएँ विकास की दर, विशेषताओं

और क्षमता दोनों में मौजूद होती हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य बच्चों का सर्वांगीण विकास है। व्यक्ति के सामाजिक विकास और कल्याण के लिए भावात्मक विकास महत्वपूर्ण है। अच्छे स्वास्थ्य का अर्थ अच्छा शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तथा खुशी व संतुष्टि की भावना है। बच्चों की भावात्मक सुरक्षा, सकारात्मक आत्म संप्रत्यय और सम्मान के विकास के लिए उनका वयस्कों के साथ जोशपूर्ण, सहायक संबंध महत्वपूर्ण है।

2.2 गतिविधि 2 : आयु विशिष्ट विकास - स्वयं प्रयास करें

किसी भी बच्चे के चित्र एकत्रित करें और उनकी विकासात्मक वृद्धि और विभिन्न गतिविधियों जो वे कर सकते हैं उनका एक एल्बम तैयार करें। आप देखकर चकित हो जाएंगे कि वे उस उम्र में क्या-क्या कर सकते हैं?

2.3 बच्चे के रूप में ज्ञान का निर्माण

सभी बच्चे अपने पूर्व अनुभव के आधार पर ही ज्ञान का निर्माण करते हैं और अपनी तत्कालिक दुनिया के बारे में नई समझ विकसित करते हैं। बच्चे अपने दैनिक अभ्यास और अनुभव के माध्यम से सीखते हैं और ज्ञान का निर्माण करते हैं जैसे कि वे खेलते समय निरीक्षण करते हैं और अपने आस पास का अवलोकन करते हैं, खिलौनों से खेलते हैं, वे दूसरों से बात करते हैं, छोटे समूह में खेलते हैं, मुक्त प्रश्नों का उत्तर देते हैं तो वे अपने ज्ञान को प्रतिबिंबित करते हैं। आइए हम इसे उदाहरण द्वारा समझते हैं -

- जब बच्चे गणित के क्षेत्र में खेलते हैं और ब्लॉक या पज़ल के साथ खेलते हैं – वे संपूर्ण अवधारणाओं को सीखना, एक दूसरे के साथ व्यवहार करना और सूक्ष्म मांसपेशियों पर नियंत्रण को मज़बूत करना सीख रहे होते हैं।
- जब वे लेखन क्षेत्र में लेखन और ड्राइंग टूल्स की खोज कर रहे होते हैं तो वे विभिन्न रंगों, आकृतियों के बारे में सीख रहे होते हैं, वे कागज़ पर बुनियादी साक्षरता से जुड़ते हुए अपने विचार व्यक्त करना सीख रहे होते हैं। यह सब बच्चों को प्रिंट से जोड़ने में मदद करता है। जब बच्चे सीख रहे होते हैं या अपने ज्ञान का निर्माण कर रहे होते हैं तो शिक्षकों और वयस्कों के लिए उनकी प्रगति का निरीक्षण करना अथवा आकलन करना बहुत सरल हो जाता है।

बच्चे वास्तविक अनुभवों से लाभान्वित होते हैं और वे इन्द्रियों के उपयोग जैसे महसूस करना, खुशबू, स्वाद और खेल सामग्री के उपयोग से अवधारणा का निर्माण करते हैं। खेल बच्चों के लिए स्वाभाविक है और बच्चे विभिन्न प्रकार के खेलों में संलग्न रहते हैं, जैसे - शारीरिक खेल, भाषिक खेल, खेल सामग्री, नाटकीय खेल, रचनात्मक खेल और नियम के साथ खेल आदि।

‘एन ई पी 2020’ के अनुसार ईसीसीई का समग्र उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों (Domains) में इष्टतम परिणाम प्राप्त करना है, शारीरिक और गत्यात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-भावात्मक, नैतिक विकास सांस्कृतिक/कलात्मक विकास, तथा लचीली, बहुआयामी, बहुस्तरीय, खेल-आधारित और पूछताछ आधारित अधिगम द्वारा संचार और प्रारंभिक भाषा साक्षारता और संख्यात्मकता का विकास। इसमें सामाजिक क्षमताओं का विकास, संवेदनशीलता, अच्छा व्यवहार, शिष्टाचार नैतिकता, व्यक्तिगत और सावजनिक स्वच्छता, टीम वर्क और सहयोग पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है।

मॉड्यूल 3

खेल-आधारित गतिविधियाँ और अनुभवात्मक अधिगम

मॉड्यूल 3 : खेल-आधारित गतिविधियाँ और अनुभवात्मक अधिगम

3.1 खेल-आधारित गतिविधियों का उपयोग

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3136896634393804801187 1?contentType=Resource

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों,

प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा में शिक्षकों द्वारा आयोजित खेल या खेल-आधारित गतिविधियां, बच्चों को खेलते समय सीखने के लिए प्रेरित करती हैं। प्री-स्कूल में बच्चों को उनकी रुचि के आधार पर गतिविधियों और सामग्रियों को चुनने की स्वतंत्रता दी जाती है जो उनकी कल्पना शक्ति को बढ़ाता है, उनके आत्म-सम्मान की भावना और आसपास की दुनिया की जानकारी को भी बढ़ाता है साथ ही साथ उनकी बोरियत से भी मुक्ति करता है। इस संबंध में खिलौने और खेल एक माध्यम के रूप में कार्य करते हैं और खेलने, सीखने और बढ़ने के पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं। खिलौने सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं हैं; वे संज्ञानात्मक विकास, भाषा विकास, रचनात्मकता आदि के लिए भी अवसर प्रदान करते हैं और बच्चों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खिलौने अन्वेषण, प्रयोग और समस्या समाधान के अवसर भी प्रदान करते हैं जो ज्ञान के निर्माण में मदद करते हैं। खिलौना आधारित शिक्षण खेल पर भी आधारित होता है, गतिविधि-आधारित और अनुभवयुक्त भी होते हैं। जब बच्चे खिलौनों से खेलते हैं तो वे नए विचारों की खोज करते हैं और भाषा का विकास करते हैं। जब वे जोड़-तोड़ वाले खिलौनों से खेलते हैं तो उनकी आंखों और हाथों का समन्वयन विकसित होता है; साथ ही

सूक्ष्म मांस-पेशीय विकास और संज्ञानात्मक विकास भी होता है। अगर हम देशी खिलौनों का इस्तेमाल करते हैं तो बच्चे अपनी संस्कृति और समाज से आसानी से जुड़ जाते हैं। जब बच्चे गुड़िया, बिल्डिंग ब्लॉक्स, किचन सेट या डॉक्टर सेट के साथ खेलते हैं तो उनकी कल्पना शक्ति, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच का भी विकास होता है। उन्हें अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का मौका मिलता है। साथ ही साथ जब बच्चे साथियों और वयस्कों के साथ खेलते हैं तो उनके सहयोग से जीवन जीने के वे अनेकों कौशल सीखते हैं। खिलौने, सामग्री या स्वयं करके सीखने वाली गतिविधियाँ शिक्षक के बहुत उपयोगी उपकरण हैं। विशेष रूप से भाषा और संज्ञानात्मक विकास के लिए शिक्षक-निर्मित सामग्री जैसे कठपुतली, पहेली, चार्ट और चित्र आदि। इसके अलावा कक्षा के बाहर और भीतर खेले जाने वाले खेल उपकरण जैसे झूले, रेत का ढेर, लकड़ी या प्लास्टिक के ब्लॉक, गुड़िया आदि सीखने की वृद्धि में बहुत उपयोगी साधन हैं। जब बच्चे खेल गतिविधियों में संलग्न होते हैं तब उनमें सामाजिक कौशल विकसित होता है। बच्चे बातचीत करना, दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना, सहयोग करना आदि सीखते हैं। हमें स्वदेशी, कम लागत या बिना लागत वाले खिलौनों और खेलों का उपयोग करके खेल और खेल गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के जीवन कौशल को परिष्कृत करना एवं जारी रखना चाहिए।

3.2 खेल और शिक्षण सामग्री

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में खेल सामग्री, उपकरण और फर्नीचर बच्चों की आयु, जरूरतें, विकास का स्तर, क्षमताएं और रुचियों के अनुसार होनी चाहिए। स्वदेशी और पारंपरिक भारतीय खिलौनों को प्रारंभिक वर्षों के सीखने का हिस्सा होना चाहिए उदाहरण के लिए – पजल इनसेट बोर्ड, लकड़ी के ब्लॉक्स, स्टैकिंग डॉल, (चेन्नपटना, कर्नाटक में लोकप्रिय खिलौने) शेप सॉटर्स, पेपर मेशी (जम्मू और कश्मीर) गुड़िया और इसी तरह के अन्य खिलौने। बच्चे इन्हीं स्वदेशी खिलौनों के माध्यम से स्थानीय जानवरों, बर्तनों, रंग और आकार के बारे में सीखते हैं। खेल सामग्री और खिलौने सुरक्षित होने चाहिए और उन्हें अवधारणाओं को आसानी से सीखने में सहायक होने चाहिए। साथ ही इनका सीखने के प्रतिफल के साथ मेल किया जाना चाहिए।

3.3 कम लागत और बिना लागत वाली सामग्री

विकास के विभिन्न क्षेत्रों के लिए अधिमानत: स्वदेशी कम लागत और बिना लागत वाली सामग्री होनी चाहिए। जैसे कि सामाजिक-भावात्मक विकास के लिए गुड़िया, नाम कार्ड, संगीत वाद्ययंत्र पुराने टेलीफोन, पुराने कैमरे, हाउसकीपिंग सामग्री, बटन, फ्रेम मोती पिरोने के लिए धागा, हैमरिंग टॉयस, लेगो ब्लॉक्स, क्रियात्मक/गत्यात्मक विकास के लिए संवेगी सामग्री, किताबें, जोड़-तोड़ वाली सामग्री, पेग बोर्ड डोमिनो कार्ड, नेस्टिंग खिलौने, अबेकस, मिलान, छंटाई के लिए सामग्री संज्ञानात्मक विकास के लिए संप्रत्ययों पर आधारित किताबें, कहानी की किताबें, अक्षरों के कट आउट्स, विभिन्न

विषयों पर चित्र पढ़ने वाले पोस्टर, बनावट वाले अक्षर और संख्याएँ कहानी के पात्र – भाषा और साक्षरता विकास के लिए फिरकी, पिनव्हील्स, कार्ड बोर्ड या कपड़े से बनी किताबें जिसमें उठाने के लिए फ्लैप और झांकने के लिए छेद हो आदि ऐसी सामग्री भी भरपूर मात्रा में होनी चाहिए।

बच्चों को सार्थक खेल अनुभव प्रदान करने के लिए, जो उनके स्वभाव और क्षमताओं से मेल खाते हों, उसमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए ढेर सारी सामग्री होनी चाहिए। खेल उपकरण बहुमुखी (Versatile) होने चाहिए ताकि बच्चे इसे अलग-अलग तरीके से प्रयोग कर सके। लैंगिक रूढ़िवादिता को अस्वीकार करते हुए खिलौने सभी बच्चों के लिए होने चाहिए। छोटे बच्चों के खिलौनों का चयन उनकी रुचियों और सामाजिक संदर्भों के अनुरूप होना चाहिए। ताकि वे उनके साथ पहचान कर उन्हें अपने दैनिक जीवन की स्थितियों से जोड़ सके। ये खिलौने अच्छी गुणवत्ता वाले होने चाहिए ताकि बच्चों के उपयोग के लिए सुरक्षित और मज़बूत हों। सभी बच्चों के उपयोग के लिए अच्छी तरह से बनाए गए, सुरक्षित और मजबूत होने चाहिए।

3.4 गतिविधि पुस्तकें/कविताओं और कहानियों का संग्रह

बच्चों को विभिन्न प्रकार की स्टेशनरी सामग्री जैसे कागज़, रंग, लेखन उपकरण और किताब बनाने के लिए गोंद, टेप, स्टेपलर आदि और ड्राइंग के लिए रंग, पेपर फोल्डिंग आदि उपलब्ध कराना चाहिए। प्रत्येक बच्चा अपनी गति और शैली से सीखता है अत: सभी बच्चों के लिए आयु और विकासात्मक रूप से उपयुक्त गतिविधियाँ और कार्यपत्रक होने चाहिए। ये गतिविधियाँ और कार्यपत्रक केवल अक्षरों या संख्याओं को बिना अर्थ लिखने या नकल करने की बजाय अवधारणाओं और कौशल की समझ विकसित करने पर आधारित होने चाहिए। ये कार्यपत्रक बच्चों को स्वतंत्र रूप से सीखने के अवसर प्रदान करते हैं। इन्हें पोर्टफोलियो के रूप में बनाए रखना चाहिए जिससे शिक्षक और माता-पिता बच्चे में हो रहे सीखने के विकास का विश्लेषण कर सकें। स्कूल में तुकबंदी वाले खेल, लोकगीत, कहानी की किताबें या चित्र पुस्तकें बड़ी किताबें, छोटी किताबें, श्रेणीबद्ध कहानी की किताबें, ई-कहानियाँ और पंचतंत्र की कहानियाँ आदि गतिविधियों का संग्रह होना चाहिए।

3.5 गतिविधि 3 : कक्षा में खिलौनों का उपयोग - अपने विचार साझा करें

शिक्षार्थी की वृद्धि और विकास सहायता के लिए कक्षा में खिलौनों का उपयोग कैसे किया जा सकता है?

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceHc3a3 टाइप करें।

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-ecce.blogspot.com/2022/12/03-3.html

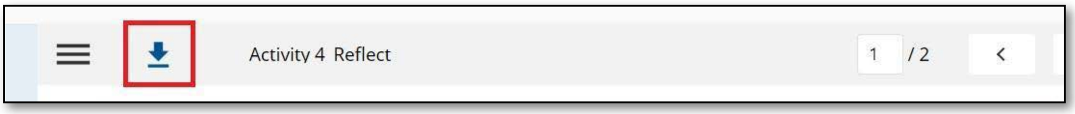

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड** को स्कैन करें।

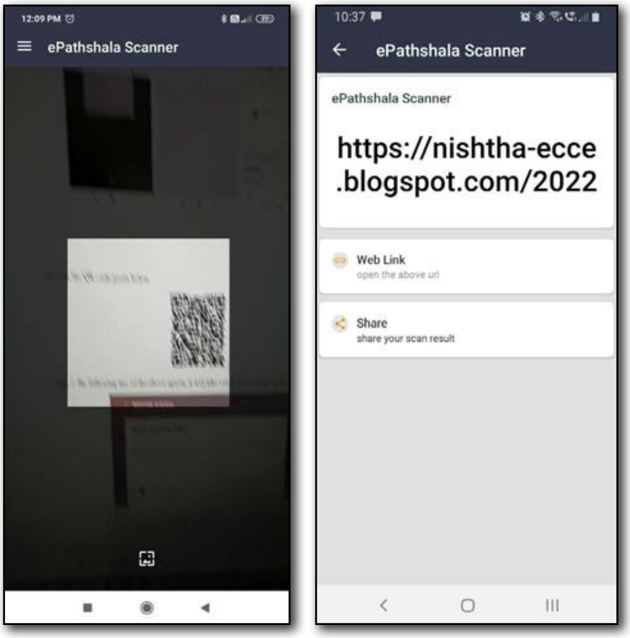

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है।

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- ‘Enter your comment’ पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- **‘PUBLISH’** पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

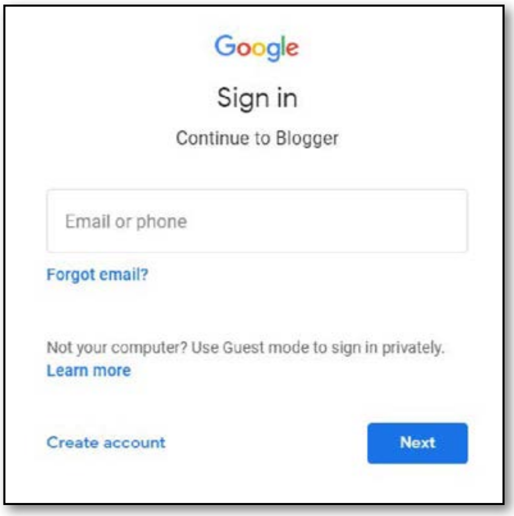

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

3.6 खिलौने आधारित शिक्षण पद्धति और डू इट योरसेल्फ (DIY) खिलौने

प्रारंभिक बाल देखभाल और शिक्षा में खिलौना आधारित शिक्षण पद्धति वह प्रणाली है जहाँ बच्चे खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखते हैं, बच्चे खेल के माध्यम से और खेल सामग्री से सबसे अच्छा सीखते हैं क्योंकि उनके लिए खेलना ही सीखना है।

कक्षा को विशिष्ट गतिविधि क्षेत्रों के साथ स्थापित किया जाना चाहिए और उसे आयु अनुरूप खिलौनों, शिक्षण सामग्री जैसे गुड़िया क्षेत्र, कठपुतली, सामाजिक-भावानात्मक और कल्पनाशील खेल क्षेत्र आदि से सुसज्जित किया जा सकता है, जैसे - ब्लॉक क्षेत्र – निर्माण और जोड़ तोड़ सामग्री के साथ : पढ़ने का क्षेत्र – आयु अनुरूप किताबों के साथ, विज्ञान क्षेत्र का सरल प्रयोग, अवलोकन के लिए सामग्री, रचनात्मक कला क्षेत्र आदि। शिक्षक द्वारा कम लागत और बिना लागत सामग्री का निर्माण या इकट्ठा किया जाना चाहिए। कक्षा में खेल सामग्री को और खिलौने रखने का पर्याप्त प्रावधान होना चाहिए जिससे बच्चे खेल सामग्री और खिलौने ले और खेलने के बाद खेल सामग्री और खिलौनों को व्यवस्थित रूप से वापिस रख दें। यदि जगह की कमी हो तो रोटेशन में हर 15 दिन के लिए गतिविधि क्षेत्रों को अस्थायी रूप से स्थापित किया जा सकता है। बच्चों को डी. आई. वाई. (DIY) खिलौने बनाने के लिए खुली सामग्री दी जा सकती है जिससे बच्चों में सहयोग कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी।

डी. आई. वाई. (DIY) सामग्री या खिलौने जैसे गुड़िया, डॉक्टर सेट, पुराने कपड़े, खिलौने/रसोई के बर्तन, दर्पण, पुराने चश्मे का फ्रेम, पर्स, पुराने जूते आदि कल्पनाशीलता, सृजनात्मकता, सामाजिक-भावनात्मक विकास के लिए उपयोगी होते हैं। वार्तालाप चार्ट, चित्र, फ्लैश कार्ड, चित्र डोमिनोज, चित्र पुस्तकें, तुकबंदी, संग्रह, और कहानियाँ भाषा के विकास को बढ़ावा देती हैं। ध्वनि – बॉक्स (Sound box), दृश्य –विभेदीकरण कार्ड, टच कार्ड, फिली बैग, महक वाले बॉक्स, अलग-अलग स्वाद के खाद्य पदार्थ आदि संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देते हैं। कला और शिल्प सामग्री जैसे कैंची, ग्लेज़ पेपर, कागज़, टिशू पेपर, पुरानी पत्रिकाएं, पुराने अखबार, कपड़ा, गोंद, फेविकोल, धागा क्रेयॉन, पेंट/रंग पेंट ब्रश, कागज़, रंगीन चॉक आदि रचनात्मकता को विकसित करने में मदद करते हैं। कोई उपयोगी सामग्री : उदाहरण के लिए डिब्बा, बोतल, बोतल के ढक्कन, थर्माकोल, कपड़े के टुकड़े, स्क्रैप, समाचार पत्र और पत्रिकाएं आदि का इस्तेमाल किया जा सकता है। हारमोनियम, ढफली, ढोलक, बांसुरी, ढोल, मंजीरा, घुंघरू आदि का प्रयोग संगीत और लयात्मक गतिविधियों के लिए उपयोग किया जा सकता है। गतिविधियों को करने के लिए सामग्री का चयन और निर्माण करने से पहले यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि सामग्री सुरक्षित हो और बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से सीखने के अवसर प्रदान करे जो केवल एक अधिगम सामग्री न हो बल्कि सीखने के अनेक अवसर प्रदान करे। खेल और गतिविधि-आधारित अधिगम में बच्चा सक्रिय भागीदार बन जाता है न कि एक निष्क्रिय प्राप्तकर्ता। एक शिक्षक के रूप में आपके पास विभिन्न प्रकार के खेलों, गतिविधियों, खेल सामग्री, कहानियों, गीतों का संग्रह होना चाहिए आप अपने सभी बच्चों के लिए योजना बना सकते हैं और उन्हें सीखने तथा आगे बढ़ने में मदद कर सकते हैं।

••• मॉड्यूल 4 •••

विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियाँ

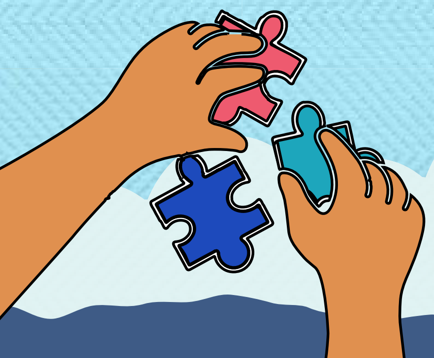

मॉड्यूल 4 विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियाँ

4.1 विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियाँ

बच्चे अतुल्य क्षमता और सीखने की इच्छा के साथ पैदा होते हैं। बच्चों को आयु और विकासात्मक उपयुक्त खेल और गतिविधियों के माध्यम से समृद्ध अनुभव प्रदान किये जाने चाहिए जो बच्चों में स्वयं के बारे में समझ, समीक्षात्मक सोच और समस्या समाधान विकसित करते है। इसलिए सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में गतिविधियों और अनुभवों को शामिल करना चाहिए। बाल विकास के सभी विकासात्मक पहलू तीन प्रमुख विकासात्मक लक्ष्यों की ओर ले जाते हैं।

- **विकास लक्ष्य 1 :** बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखना
- **विकास लक्ष्य 2 :** प्रभावशाली संप्रेषक बनाना
- **विकास लक्ष्य 3 :** बच्चों का सीखने के प्रति उत्साह प्रदर्शित करना और अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ना

इन विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षण प्रणाली बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आरंभिक बाल्यकाल और शिक्षा में शिक्षण प्रणाली की प्रक्रियाओं के मुख्य तीन घटक हैं- खेल, परस्पर संवाद और परिवेश, जिसे पाठ्यचर्या संचालन के दौरान खिलौनों, खेलों कहानियों, तुकबंदी आदि के माध्यम से संबोधित किया जाना चाहिए। शिक्षकों द्वारा गतिविधियों को एकीकृत तरीके से डिजाइन किया जाना चाहिए ताकि एक गतिविधि के माध्यम से कई दक्षताओं को प्राप्त किया जा सके। गतिविधियाँ आयु और विकासात्मक उपयुक्त होनी चाहिए।

4.2 लक्ष्य 1 : बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली को बनाए रखना

अच्छे स्वास्थ्य में अच्छा शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, खुशी, संतुष्टि और सफलता की भावना शामिल है। यह इस ओर प्रवृत्त करता है कि बच्चे अपने परिवेश में किस प्रकार परस्पर क्रिया करते हैं। स्वास्थ्य और खुशहाली की भावना बच्चों को आत्मविश्वासी और आशावादी बनाती है जिससे उनकी अधिकतम सीखने की क्षमता में वृद्धि होती है। प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में बच्चों को पर्याप्त नियमित रूप से दिलचस्प और आयु उपयुक्त बाह्य और आंतरिक खेल गतिविधियों के (जिसमें सुक्ष्म और स्थूल मांसपेशियों का विकास शामिल हो, में संलग्न होने के) अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य, स्वच्छता और सुरक्षा आदि का ध्यान उनके समग्र विकास के लिए रखा जाना चाहिए।

शरीर की बड़ी मांसपेशियों जैसे - जांघें, पैर, हाथ आदि को विकसित करने में स्थूल क्रियात्मक कौशल बहुत मदद करते हैं। इन स्थूल क्रियात्मक कौशलों में शामिल हैं - खेल, नाच, जिमनास्टिक, नाटक आदि जो बच्चों के शरीर, मन और आत्मा के विकास के लिए सहायक हैं।

- आइए स्थूल क्रियात्मक विकास की गतिविधियों के बारे में जानते हैं -
  - चलना, संतुलन बनाना
  - दौड़ना, कूदना
  - रेंगना, लुढ़कना, झूलना, कूदना
  - चढ़ाई (आरोही और अवरोही क्रम में)
  - लयबद्ध गति
  - गेंद से खेलना, फेंकना, पकड़ना और लात मारना आदि।

इसी प्रकार सूक्ष्म पेशीय समन्वय की गतिविधियाँ आँख, हाथ और उंगलियों के समन्वय के साथ-साथ आँख और हाथ की गति के समन्वय से संबंधित हैं। स्व-सहायता कौशल जैसे - स्वयं भोजन करना, स्वयं तैयार होना, स्वयं पढ़ना आदि इनमें शामिल हैं।

सूक्ष्म क्रियात्मक विकास के लिए विशिष्ट गतिविधियाँ है। जैसे -

- थ्रेडिंग
- फाड़ना, काटना, चिपकाना
- ड्राइंग, कलरिंग, पेंटिंग,प्रिंटिंग
- पेपर फोल्डिंग
- क्ले वर्क
- छाँटना
- पैटर्न बनाना
- जोड़-तोड़ वाली सामग्री का उपयोग करना आदि।

- **स्वास्थ्य स्वच्छता और पोषण -** एक और बहुत महत्वपूर्ण घटक है। बहुत सी गतिविधियाँ जैसे - भोजन का समय, शौच के लिए ब्रेक, हाथ धोना, पौष्टिक खाना खाना, धीरे-धीरे खाना, साफ़ पानी पीना, स्वस्थ आदतों के निर्माण का अवसर देती हैं।
- **सामाजिक भावनात्मक विकास** सुदृढ़ होता है जब आप स्वतंत्र खेल गतिविधियों को चुनाव करने, निर्णय लेने, दूसरों के अधिकारों और दष्टिकोणों को समझने के अवसर प्रदान करते हैं। इसके अलावा सामाजिक भावनात्मक विकासात्मक गतिविधियां बच्चों में अच्छे सामाजिक व्यवहार के विकास में सहायता करती हैं। जैसे -

» अपनी बारी का इंतजार करना

» साझा करना, दूसरे की मदद करना

» अपनी और दूसरे की भावना को पहचानना, करूणा और तदनुभूति का अनुभव करना।

इसके अलावा अपनी रूचि और पसंद का अनुकरण करना बच्चों में स्व-नियमन, काम पर दृढ़ता और काम की अच्छी आदतें आदि कौशल विकसित करने में सक्षम बनाता है।

4.3 अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण के लिए गतिविधियाँ

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3136896667703705601784?contentType=Resource

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों, जीवन के शुरुआती वर्ष मानव-विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। ये वे वर्ष हैं जब बच्चों को खेल-आधारित गतिविधियों के माध्यम से शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण और सुरक्षा आदि के अनुभव प्रदान किए जाने चाहिए। प्री-स्कूल में खिलौने, सामग्री, झूले आदि होते हैं, जो इन कौशलों को विकसित करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं। आइए, वीडियो में देखें कि कैसे खेल और गतिविधि आधारित पाठ्यक्रम के माध्यम से प्री-स्कूल में शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास के साथ-साथ बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण को विकसित किया जा रहा है।

शिक्षक : फायर इन दा माउंटेन (Fire in the mountain)

बच्चे : रन! रन! रन! (Run! Run! Run!)

शिक्षिका : फायर इन दा माउंटेन (Fire in the mountain)

बच्चे : रन! रन! रन! (Run! Run! Run!)

शिक्षिका : फायर इन दा माउंटेन (Fire in the mountain)

बच्चे : रन! रन! रन! (Run! Run! Run!)

शिक्षिका : स्टॉप एंड क्लैप (Stop and Clap)

इस वीडियो में आपने बच्चों को झूलों पर झूलते हुए, मैदान में दौड़ते, भागते, कूदते, चलते-फिरते, खेलते हुए देखा होगा। ये सभी गतिविधियाँ शारीरिक और गत्यात्मक विकास को बढ़ावा देती हैं। ये गतिविधियां जिनमें बच्चे रेत में खेल रहे थे, ड्रॉइंग, रंग भरना, कोलाज बनाना आदि कर रहे थे। सूक्ष्म माशपेशियों, आँख-हाथ के समन्वय को बढ़ावा देते हैं और रचनात्मकता भी विकसित करते हैं। ये दक्षताएँ बच्चों को पढ़ने और लिखने में भी मदद करती हैं। साथ में खाना खाना, हाथ धोना, रूमाल का उपयोग करना, मास्क पहनना आदि गतिविधियाँ स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण के विकास के लिए उपयोगी हैं। वीडियो में दिखाई गई सभी गतिविधियां शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास के साथ इंद्रियों के विकास, आंखों और हाथ के समन्वय को मजबूत करने आदि के अवसर प्रदान करती हैं। बच्चों के समाजीकरण, भाषा और संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने के अवसर भी प्रदान करती हैं। बच्चों में स्वस्थ आदतें और सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित होती हैं, जो बच्चों के स्वास्थ्य एवं कल्याण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को इस तरह की गतिविधियों को प्री-स्कूल में रोज़ाना आयोजित करने की ज़रूरत है और जहां भी आवश्यकता हो वहां माता-पिता का सहयोग भी लेना चाहिए।

4.4 लक्ष्य 2 : बच्चे प्रभावी संप्रेषक बनें

बच्चों को पूर्व प्राथमिक विद्यालय/आंगनवाड़ी या स्कूल की भाषा में आसानी से और दक्षता के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाने के लिए बच्चों को लिखित पाठ्यसामग्री से जोड़ना, बच्चों के पढ़े हुए और लिखे हुए को उनके निजी अनुभवों से जोड़ते हुए उनमें अर्थपूर्ण संबंध स्थापित करना, किताबों में रुचि पैदा करना और सीखने के लिए पढ़ने को महत्ता देना बहुत ज़रूरी है।

इसके अलावा, बच्चों को आसानी से पाठ को समझने, ध्वन्यात्मक जागरूकता (Phonological Awareness) और दृश्यों के साथ जुड़ाव (Visual Association) पैदा करने में उनकी मदद करना, बच्चों को कहानी सुनाना, उनमें बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को विकसित करने हेतु आवश्यक है। किसी परियोजना या विषय पर बातचीत करना, बच्चों की सरल निर्देशों का पालन करने में मदद करना, कहानी को याद कराना, सरल पहेलियाँ बूझना, समूह आधारित खेल खिलाना, संकेत देकर विचार पूरा करने के लिए कहना, विषय को अलग करना (W.R.T. Sound), गतिविधि आधारित कविताएं (Action Rhymes), नाटकीय रूपांतरण, गुड़ियों का खेल, अभिनय, चित्र पठन, कठपुतली का खेल, मौखिक अभिव्यक्ति, प्रकृति की सैर, वाक्य निर्माण, घर, शरीर, फल-सब्जियों से संबंधित शब्दावली आदि गतिविधियाँ बच्चों में सुनने और बोलने के कौशल विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह गतिविधियाँ 3-6 वर्ष के बच्चों के साथ और 6-8 वर्षों के बच्चों के साथ भी की जा सकती हैं।

बड़े बच्चों के लिए कहानी, संवाद, निर्देश आदि की जटिलता बढ़ाई जा सकती है। जहाँ तक संभव हो, वार्तालाप बच्चों के विद्यालय आने या प्रार्थनासभा के बाद की प्रथम गतिविधि होनी चाहिए। बच्चे जब विद्यालय आते हैं तो उनके पास बहुत कुछ कहने के लिए होता है। बच्चों को पूरा और सही वाक्य बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। यदि बच्चे गलत वाक्य बोलते हैं तो उन्हें रोककर सही नहीं करना चाहिए बल्कि इसकी जगह वयस्क या शिक्षक सही वाक्य को दोहरा सकते हैं। कहानी सुनाना एक दैनिक कार्यक्रम होना चाहिए। सुनाई जाने वाली कहानियाँ छोटी, आयु उपयुक्त, दिलचस्प और सरल भाषा में, चेहरे के हावभाव और आवाज़ के उतार-चढ़ाव के साथ सुनाई जानी चाहिए। बच्चे शिक्षक के पास समूह या आधा गोल घेरा बनाकर बैठाए जाने चाहिए। परिवेश में विभिन्न ध्वनियों को पहचानना, शुरुआत की ध्वनि की पहचान, शब्द तुकबंदी, अंताक्षरी, मिलान, भिन्न को अलग करना, अंतर का पता लगाना, वर्गीकरण करना, दी गई ध्वनि से शुरू होने वाली वस्तुओं/वस्तुओं के चित्रों का वर्गीकरण करना, चित्रों का मिलान मौखिक शब्दों से करना आदि गतिविधियाँ बच्चों को पढ़ने के लिए तैयार करने में सहायक होती हैं।

कुछ सुझाई गई गतिविधियाँ

- बच्चों को पास के पार्क/खेल के मैदान में प्रकृति की सैर कराने ले जाएं और उन्हें अपने तात्कालीन परिवेश से एक वस्तु चुनने के लिए कहें और इसके बारे में बात करें। उदाहरण के लिए पंख, पत्ती आदि।
- गतिविधि क्षेत्र में स्वतंत्र आंतरिक खेल जैसे गुड़िया खेलने, डॉक्टर सेट के साथ नाटकीय खेल आदि खेलने के अवसर दें।
- घेरा समय चर्चा, जहाँ बच्चों को अपने अनुभव व्यक्त करने के अवसर मिलते हैं, आयोजित करें।
- बच्चों को चित्रों का मिलान करने दें, जो भिन्न हैं उसे पहचानने दें, फोटो चित्र में एक विशिष्ट आकार ढूँढने दें।
- ध्वनि विभेदी गतिविधियाँ – अपने आस-पास के पर्यावरण में ध्वनियों को सुनना, शब्दों की पहली और अंत की ध्वनि की पहचान करना, उस ध्वनि से शुरू होने वाली वस्तुओं के बारे में सोचें, उसी ध्वनि से या किसी अन्य ध्वनि से शुरू होने वाले चित्र और कार्य पत्रिकाएँ बनाएँ और बच्चों से समान ध्वनि वाले चित्रों में रंग भरने को कहें। बच्चों के साथ शुरू और अंत ध्वनि के अनुसार अंताक्षरी खेलें।
- कुछ जाने पहचाने चित्र दें, चित्रों के नाम का उच्चारण करें या कोई अक्षर ध्वनि का उदाहरण दें जैसे 'ब' और बच्चों को 'ब' ध्वनि से शुरू होने वाले चित्र ढूंढने को कहें।
- डॉटेड लाइंस पर रेखा खींचते हुए चित्र और अक्षर को पूरा करना।
- कॉपी करना और आकार बनाना।

- कहानी कहना और कहानी बनाना।
- कविताएँ, गाना और संगीत व लयात्मक गतिविधियों का आंनद लेना, कविताएं सुनना, गानों का आनंद लेना और बच्चों का ध्यान लिखी हुई चीज़ों पर केन्द्रित करना।
- आयु उपयुक्त पुस्तकों से सुसज्जित पठन क्षेत्र की स्थापना करें और बच्चों में किताबों के प्रति लगाव पैदा करें।

4.5 भाषा और साक्षरता विकसित के करने हेतु गतिविधियाँ

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31368967311862169611873?contentType=Resource

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों, यह ज़रूरी है कि प्री-स्कूल में शिक्षक, बच्चे के साथ उनकी भाषा में संवाद करें और भाषा के विकास के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करें। एक बार जब बच्चा सहज हो जाता है और खुद को व्यक्त करना सीख जाता है तो शिक्षक राज्य में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा या स्कूली भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग कर सकते हैं। इससे प्री-स्कूल स्तर पर भाषा और साक्षरता की नींव मजबूत होगी और बच्चे बेहतर सीख सकेंगे। प्री-स्कूल स्तर पर भाषा और साक्षरता गतिविधियों को कैसे संचालित किया जाना चाहिए ताकि बच्चे बेहतर संवाद करना सीखें और लेखन कौशल विकसित करें। आइए इस वीडियो के माध्यम से समझने की कोशिश करते हैं।

शिक्षिका सहित सभी बच्चें :

बंदर मामा पहन पजामा दावत खाने आए,

बंदर मामा पहन पजामा दावत खाने आए,

बंदर मामा पहन पजामा दावत खाने आए,

ढीला कुर्ता टोपी जूता,
ढीला कुर्ता टोपी जूता,
पहन बहुत इतराए,
पहन बहुत इतराए,
रसगुल्ले पर जी ललचाया, मुंह में रखा गप्प से,
रसगुल्ले पर जी ललचाया, मुंह में रखा गप्प से,
नरम-नरम था, गरम-गरम था जीभ जल गई लप से,
नरम-नरम था, गरम-गरम था जीभ जल गई लप से,
बंदर मामा रोते-रोते.....

शिक्षिका : देखो बच्चो आज एलीज़ा कुछ डिफ़रेंट लग रही है, सहज क्या आप बताएंगे, एलीज़ा ने ये क्या पहना है?

सहज : एलीज़ा ने ट्रैफिक लाइट्स पहन रखी है।

शिक्षिका : चिल्ड्रेन दीज़ आर आवर ट्रैफिक सिग्नल्स। रेड, येलो एंड ग्रीन लाइट्स। श्रद्धा क्या आपने ऐसी लाइट्स कहीं देखी हैं?

श्रद्धा : यस मैम, रोड पर (सभी बच्चें एक-एक करके बोलते हैं मैने भी देखी है)

शिक्षिका : देवांश, कौन-कौन सी कलर्स की लाइट हैं?

देवांश : रेड, येलो, ग्रीन

शिक्षिका : रेड, येलो एंड ग्रीन, क्या आपको पता है रेड लाइट क्या कहती है हमें?

सभी बच्चे एक साथ : स्टॉप! स्टॉप! स्टॉप!

शिक्षिका : चलिए तन्मय से पूछते हैं, तन्मय रेडलाइट सेज़......

तन्मय : रेडलाइट सेय्स स्टॉप! स्टॉप! स्टॉप!

शिक्षिका : स्टॉप! स्टॉप! स्टॉप! वेरी गुड! अनन्या वॉट डज़ येलो लाइट सेज़

अनन्या : येलो लाइट सेज़ वेट! वेट! वेट!

शिक्षिका : वेट! वेट! वेट एंड पावनी ग्रीन लाइट सेज़

पावनी : ग्रीन लाइट सेज़ गो! गो! गो!

शिक्षिका : गो! गो! गो! क्या कहती है ग्रीन लाइट?

शिक्षिका सहित सभी बच्चे : गो! गो! गो!

आपने विडियो में कक्षा संगठन, बच्चों की भागीदारी, शिक्षक की व्यस्तता, कहानी सुनते समय भाव-भंगिमा में बदलाव आदि का अवलोकन किया होगा, जो भाषा साक्षरता विकास गतिविधियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। कहानियां, तुकबंदी, मुक्त बातचीत, निर्देशित बातचीत, शब्दावली विकास,

किताबों के साथ संबंध, प्रिंट समृद्ध वातावरण, पुस्तक क्षेत्र आदि बच्चों को पढ़ने में रुचि विकसित करने में मदद करते हैं और धीरे-धीरे बच्चे स्वतंत्र पाठक बन जाते हैं। ड्रॉइंग, रंग भरने, चिपकाने आदि के अवसर, सूक्ष्म मांसपेशियों का ठीक विकास, बच्चों को लिखने के लिए तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षकों को ऐसी गतिविधियां आयोजित करने की आवश्यकता है, जो बुनियादी स्तर पर पढ़ने और लिखने की दक्षता को बढ़ावा दें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार कक्षा तीन तक आते-आते सभी बच्चे पढ़ने और लिखने में सक्षम होने चाहिए।

4.6 गतिविधि 4: विकास के लक्ष्य और दक्षताएँ - अपनी समझ की जांच करें

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करके गतिविधि करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3136896812204933121787?contentType=Resource

विकास लक्ष्य 3 : बच्चे सक्रिय शिक्षार्थी बनें और अपने तत्काल परिवेश से जुड़ें

बच्चे अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से अपने आस पास की दुनिया से संबंधित अवधारणाओं का निर्माण करते हैं और भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक पर्यावरण के साथ अंत: क्रिया करते हैं। वे दैनिक जीवन की स्थितियों के अनुभव के आधार पर गणितीय अवधारना बनाते हैं। उदाहरण के लिए बच्चे संख्याओं से परिचित हैं क्योंकि उन्होंने टेलीफोन, पते (address) स्पीडोमीटर, पेज नंबर और कैलेंडर आदि पर उनका अनुभव किया है लेकिन उनके पास गणितीय कार्यविधि/संचालन का कोई अनुभव नहीं है इसीलिए उन्हें पूर्व-संख्या अवधारणा का परिचय दें। जैसे बड़ा-छोटा (आकार) लंबा-छोटा (लंबाई), भारी-हल्का (वज़न) लंबा, छोटा (चौड़ाई), अधिक-कम के रूप में (द्रव्यमान/मात्रा की अवधारणा), दूर-निकट (दूरी), यह किसी संख्या के मूल्य के बारे में सही आकलन बनाने में बच्चे की मदद करता है। इससे पहले कि वह गणितीय सिद्धांतों को अधिक जटिल समझे उनके सामने क्रम से लगाना आदि मूल्य के संदर्भ में संख्याओं की अवधारणा विकसित करें। बच्चों को छोटे (समूह) सेट के संदर्भ में सीखने और समझने की ज़रूरत है। एक ही समय में एक आयाम के साथ सरल तुलना, वर्गीकरण करना और आकार और समरूपता की पहचान करना, इस स्तर पर हासिल करने के लिए उपयुक्त कौशल है।

बच्चे अपने परिवेश से ही सीखते हैं अर्थात प्राकृतिक वातावरण (जानवर, पक्षी, कीड़े, सब्जियाँ और फल, पौधे); भौतिक पर्यावरण (जल, वायु, आकाश, पृथ्वी, मौसम/ऋतु) से सामाजिक पर्यावरण (स्वयं, परिवार, परिवाहन, सामुदायिक सहायक, त्योहार) से और इन पर्यावरणीय अवधारणाओं को परियोजना के रूप में लिया जा सकता है और यह सभी के लिए एक थीम का हिस्सा बन सकता है। बच्चों के साथ तार्किक रूप से संचालित गतिविधियाँ- रंग, संख्याएँ, आकार, समय, तापमान आदि से बच्चों को पर्यावरण अवधारणाओं से भी परिचित कराया जा सकता है।

इस विकास लक्ष्य के लिए कुछ सुझाई गई गतिविधियाँ नीचे सूचीबद्ध हैं :

- चित्र पहेली और भूलभूलैया को पूरा करना और हल करना।
- संबंध कार्ड के मिलान जैसे- ताला/कुंजी या चाबी, धागा/सुई आदि। समस्या समाधान वाले प्रश्नों का उत्तर देना - उदाहरण के लिए, यदि आप अपने बाल साफ़ नहीं रखोगें तो क्या होगा?
- प्रत्येक रंग के रंगों को हल्के से गहरे के क्रम में रखना (3 से 5 स्तर)।
- चीजों को व्यवस्थित करना।
- स्थानिक भावना (Spatial Sense) के विकास के लिए गतिविधियाँ और खेल (अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे) आदि।
- नंबर गेम खेलना।
- पैटर्न बनाना और पैटर्न पूरा करना।
- आनुक्रमिक सोच गतिविधियाँ (उदाहरण के लिए सबसे गहरे से सबसे हल्के रंग, सबसे बड़े से सबसे छोटे आकार।
- आकृतियों के साथ गतिविधियाँ - भिन्न को अलग करें।
- स्वतंत्र और संरचित बातचीत के द्वारा अपने परिवेश में उपस्थित आकृतियों के बारे में जागरूक करें।
- विभिन्न अवधारणाओं से संबंधित तुकबंदी और गीत (संख्या तुकबंदी, आकार आदि)।
- भ्रमण और प्रकृति की सैर के दौरान अवलोकन और अन्वेषण करना।
- त्योहार उत्सव और संबंधित हस्तकला (सांस्कृतिक जड़ता) की तैयारी।
- हवा/पानी पौधे के अंकुरण के साथ प्रयोग करना।
- रेत और पानी का खेल।
- ये गतिविधियाँ केवल सुझाव हैं, आप अपनी गतिविधियाँ बना सकते हैं और बच्चों को उन गतिविधियों में भाग लेते देख आनंद ले सकते हैं।

4.7 सांख्यिकी गणित एवं पर्यावरणीय जागरूकता हेतु गतिविधियां

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31368967747464396817 86?contentType=Resource

प्रतिलिपि

प्रिय शिक्षार्थियों, बच्चें अपने परिवेश में पैटर्न आकार और अन्य गणितीय आयामों को देखते हैं और उनके बारे में जानने लगते हैं। वे अपनी इंद्रियों का उपयोग करके अपने आस-पास की दुनिया को समझने लगते हैं। संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने हेतु बच्चों में पांचों इंद्रियों के विकास के अवसर, अन्वेषण और प्रयोग के अवसर बढ़ाने की आवश्यकता है। पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य है बच्चों को उनकी धारणा-युक्त सोच से वैचारिक समझ की ओर ले जाना है। भौतिक, सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण के साथ-साथ प्रत्यक्ष अनुभवों और बातचीत के माध्यम से बच्चों को उनके आसपास की दुनिया से परिचित होने का मौका देना है। आइए, वीडियों देखें और समझें कि कैसे बच्चें अवधारणा विकसित करते हैं और अपने तात्कालिक वातावरण से जुड़ते हैं।

सभी बच्चें साथ में : लाल बत्ती, लाल बत्ती, तुम क्या कहती हो?

बच्चा : मैं कहता हूँ रूक जाओ। विश्राम! विश्राम!

सभी बच्चें साथ में : पीली बत्ती पीली बत्ती क्या कहती हो?

बच्चा : मैं कहता हूँ रूको! रूकना! रूकना!

सभी बच्चें साथ में : हरी बती हरी बत्ती, तुम क्या कहते हो?

बच्चा : मैं कहता हूँ जाओ! जाओ! जाओ!

इस वीडियो में आपने बच्चों को पानी के साथ प्रयोग करते, सामान को तैरते और डूबते हुए देखते, पहेलियां सुलझाते हुए, फलों और सब्जियों का अवलोकन करते हुए, परिवहन, हमारे सामुदायिक

सहायकों के बारे में जानते हुए आदि को देखा होगा। मिलान करना, वर्गीकरण करना, पैटर्न बनाने, अनुक्रमिक सोच, समस्या समाधान आदि के सभी अवसर बच्चों में संज्ञानात्मक सोच विकसित करने में मदद करते हैं। बच्चें इन कौशलों द्वारा रंग, आकार, संख्या आदि से संबंधित अवधारणाएं बनाते हैं। अवलोकन, प्रयोग, अन्वेषण आदि दक्षताएं वैज्ञानिक सोच विकसित करती हैं। ये कौशल बच्चों को शिक्षार्थी बनने में भी मदद करते हैं और वे अपने तात्कालिक वातावरण से भी आसानी से जुड़ते हैं।

4.7 गतिविधि 5 : खिलौनों के साथ खेलना - अपनी समझ की जांच करें

विकास के लक्ष्यों में से किसी एक को प्राप्त करने के लिए एक खिलौना बनाएं/चुनें और एक गतिविधि तैयार करें गतिविधि का आयोजन करें और अपने प्रेक्षणों को सूचीबद्ध करें।

••• मॉड्यूल 5 •••

सीखने के लिए आकलन

मॉड्यूल 5 : सीखने के लिए आकलन

5.1 बच्चों की प्रगति का अवलोकन एवं आकलन

बच्चों की प्रगति का अवलोकन और मूल्यांकन कि वे क्या कर सकते हैं और उन्हें क्या करना चाहिए। नियमित रूप से बच्चों की क्षमता पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है मूल्यांकन शिक्षाशास्त्र का एक अभिन्न अंग है। मूल्यांकन बच्चों की गतिविधियों, उनकी स्थिति, स्वास्थ्य, पोषण, शारीरिक और सामाजिक कल्याण के गुणात्मक निर्णय पर आधारित होना चाहिए। बच्चों की प्रगति की जाँच सावधानीपूर्वक, निरंतर और लगातार अवलोकन के माध्यम से की जानी चाहिए। इस स्तर पर कोई मात्रात्मक मूल्यांकन या मानकीकृत परीक्षणों के उपयोग की सिफ़ारिश नहीं की जाती है।

शुरुआती वर्षों में बच्चे का परीक्षण या मौखिक साक्षात्कार अन्य कक्षा में स्थानांतरित करने के लिए नहीं किया जाना चाहिए। शिक्षकों को कक्षा में बच्चों की भागीदारी का रिकॉर्ड रखना चाहिए। गतिविधियों और दूसरों के साथ घुलने-मिलने के उनके कौशल के आधार पर शिक्षकों को बच्चों के मूल्यांकन की योजना बनानी चाहिए। आकलन में बच्चे की क्षमता (Strengths) पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए न कि कमी पर। आकलन से बच्चों की रुचियों, उपलब्धियों, संभावनाओं और उनके सीखने में कठिनाइयों के बारे में जानकारी मिलती है। विकास के प्रमुख क्षेत्रों में बच्चे की प्रगति पर नज़र रखने के लिए व्यवहार और कौशल के अवलोकन के लिए एक चेकलिस्ट बनाई जा सकती है। मूल्यांकन द्वारा नए कौशल सीखने के लिए एक नई दिशा प्रदान करनी चाहिए।

उदाहरण -

- क्या बच्चा एक निश्चित दिशा में गेंद फेंक सकता है?
- क्या बच्चा अपने दोनों हाथों से गेंद को पकड़ सकता है?
- क्या बच्चा चलते समय अपने शरीर का संतुलन बना सकता/सकती है?
- क्या बच्चा किसी दिए गए नमूने (Pattern) की नकल कर सकता है या उसे बढ़ा सकता है?
- क्या बच्चा कहानी सुनते समय चौकस रहता है?
- क्या बच्चा निर्देशों को समझता है और उनका पालन करता है?
- क्या बच्चा चित्र में विभिन्न वस्तुओं का वर्णन कर सकता है?
- क्या बच्चा कोई घटना या कहानी सुना सकता है?
- क्या बच्चा शब्दों की शुरुआती ध्वनियाँ बता सकता है?
- क्या बच्चा बुनियादी रंगों को पहचानता है?
- क्या बच्चा वस्तुओं को रंग के अनुसार हल्के से गहरे रंग में व्यवस्थित कर सकता है?

- क्या बच्चा बड़ी वस्तु और छोटी वस्तु के बीच अंतर करने में सक्षम हैं? और क्या इनका उपयोग उचित रूप से कर सकता है?
- क्या बच्चा सामूहिक गतिविधियों में अन्य बच्चों के साथ शामिल होना पसंद करता है?
- क्या बच्चा आसानी से अपनी चीज़ों को दूसरों के साथ साझा करता है?
- क्या बच्चा अपनी बारी की प्रतीक्षा करता है?

माता पिता को बच्चे की प्रगति, विकासात्मक पहलुओं, स्कूल की तैयारी और स्कूल में सफलता के आकलन के महत्व के बारे में अवगत कराया जाना चाहिए। प्री-स्कूल चरण में मूल्यांकन का प्रमुख कार्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान करना है। आकलन बच्चों के सीखने की बाधाओं को दूर करने की मुख्य विधा है। इसके लिए निगरानी और सुनियोजित गतिविधियों की आवश्यकता हो सकती है ताकि बच्चों को निरंतर प्रगति करने में और आवश्यक कौशल में कुशलता हासिल करने की दिशा में सक्षम बनाया जा सके। मूल्यांकन का उद्देश्य फीडबैक प्रदान करना भी है। अपने उद्देश्यों को पूरा करने में कार्यक्रम किस हद तक प्रभावी रहा यह मूल्यांकन द्वारा मालूम होता है। प्रत्येक बच्चे की प्रगति को रिपोर्ट करने के लिए एक समग्र प्रगति कार्ड (HPC) तैयार किया जा सकता है।

5.2 समग्र प्रगति कार्ड

समग्र प्रगति कार्ड (HPC) एक समग्र, 360-डिग्री बहुआयामी रिपोर्ट है जो प्रगति के साथ साथ संज्ञानात्मक, भावनात्मक और क्रियात्मक आयामों को बारे में बहुत विस्तार से दर्शाती है। यह सभी बच्चों में बाल विकास के विभिन्न पहलुओं से संबंधित जानकारी प्रदान करता है। एच. पी. सी. हितधारकों को बच्चे की क्षमता, रुचि के क्षेत्रों के साथ-साथ सुधार के विभिन्न क्षेत्रों में अवगत कराता है।

5.2 गतिविधि 6 : समग्र विकास - अपनी समझ की जांच करें

क्यूआर कोड स्कैन करके गतिविधि करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31369251278254899213606?contentType=Resource

सारांश

समग्र विकास के लिए खेल आधारित गतिविधियाँ

खिलौनों की भूमिका और डी. आई. वाई. (DIY) गतिविधियाँ

- मनोरंजन
- बच्चों की इंद्रियों का जुड़ाव
- कल्पना जागृत करता है
- संज्ञानात्मक विकास
- रचनात्मकता और कल्पनाशीलता पैदा करता है
- सीखने को प्रेरित करता है
- सामाजिक भावनात्मक विकास

विकासात्मक लक्ष्य

- लक्ष्य 1 - बच्चे अच्छे स्वास्थ्य और तंदरुस्ती को बनाए रखें
- लक्ष्य 2 - बच्चे प्रभावी संचारक बनें
- लक्ष्य 3 - बच्चे सक्रिय शिक्षार्थी बनें और अपने तत्काल परिवेश के साथ जुड़ें
- समग्र विकास के लिए खेल-आधारित गतिविधि के माध्यम से प्रत्येक लक्ष्य के लिए प्रमुख दक्षताओं और कौशलों का विकास

खेल और शिक्षण सामग्री

- संग्रह
- चयन
- विकास कम लागत/बिना लागत के
- सामग्री सहित गतिविधि क्षेत्रों का संगठन
- आवश्यकता और रुचि के आधार पर लक्ष्यों का विकास

खेल और गतिविधि आधारित शिक्षाशास्त्र का उपयोग

- समग्र विकास
- रचनात्मकता
- समीक्षात्मक सोच
- समस्या समाधान
- कल्पना
- भाषा विकास
- संज्ञानात्मक विकास
- कविताएँ और कहानियाँ
- प्रभावी कार्यपत्रक के माध्यम से

समग्र प्रगति कार्ड

- 360 डिग्री
- बहुआयामी
- प्रगति को दर्शाता है
- विकास के सभी आयामों को दार्शाता है
- क्षमता और सुधार की गुंजाइश के बारे में जागरूक करता है।
- अवलोकन और मूल्यांकन
- शिक्षाशास्त्र का अभिन्न अंग
- बच्चों की गतिविधियों का गुणात्मक निर्णय
- सावधानीपूर्वक निगरानी
- व्यापक सतत और लगातार
- कोई मात्रात्मक मूल्यांकन नहीं
- कोई परीक्षण या मौखिक बातचीत नहीं
- नए कौशल सीखने के लिए दिशा प्रदान करनी चाहिए
- (CWSN) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की प्रारंभिक पहचान

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

विभिन्न आयु समूहों (3-4/ 4-5/ 5-6 वर्ष) के बच्चों की सक्रिय भागीदारी के लिए गतिविधियों को विकसित करने का प्रयास करें। उनके लिए इन गतिविधियों का आयोजन करें गतिविधि से जो वे सीख रहे हैं का अवलोकन करें और इसके परिणामों को भी नोट करें।

- गतिविधि का नाम :
- लक्ष्य :
- प्रमुख कौशल/दक्षताएं :
- आवश्यक सामग्री :
- प्रक्रिया :
- परिणाम :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार नई दिल्ली

  https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
- महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति, भारत सरकार, 2013

  https://wcd.nic.in/sites/default/files/National%20Early%20Childhood%20Care%20and%20Education-Resolution.pdf

वेब लिंक

- खुला आकाश (हिंदी वीडियो) –

  https://www.youtube.com/watch?v=1XjDHOrcJyw
- प्री-स्कूल एजुकेशन -

  https://www.youtube.com/watch?v=0GPBUPua7wk&t=872s
- प्री-स्कूल एजुकेशन - एन सी ई आर टी की पहलें-

  https://www.youtube.com/watch?v=TUXRDzLxHlU&t=203s
- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (हिंदी वीडियो) -

  https://www.youtube.com/watch?v=tQ14uLumU4c&t=6s
- मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता -

  https://www.youtube.com/watch?v=HY7OtDASt-o

निष्ठा (ईसीसीई)

शिक्षा के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों और स्कूल प्रमुखों के लिए एक एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम

कोर्स 04

अभिभावकों एवं समुदायों के साथ भागीदारी

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली - 110016

अनुक्रमणिका

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

मुख्य शब्द

उद्देश्य

कोर्स की रूपरेखा

1. अभिभावकों एवं समुदायों के साथ भागीदारी का महत्व

1.1 प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी शिक्षा में अभिभावकों एवं समुदायों की सहभागिता की आवश्यकता तथा महत्व

1.2 गतिविधि 1 : स्वयं प्रयास करें

2. अभिभावकों, परिवारों एवं समुदायों की सहभागिता

2.1 अभिभावकों एवं समुदायों की सहभागिता का महत्व

2.2 अभिभावकों एवं समुदाय की कम प्रतिभागिता के कारण

2.3 गतिविधि 2 : अभिभावकों एवं समुदाय की संलग्नता कैसे बढ़ाएं - विचार करें

3. अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय के साथ सार्थक भागीदारी

3.1 आइए, सार्थक भागीदारी की आवश्यकताओं को जानें

3.2 साझेदारी को सार्थक कैसे बनाया जाए

4. परिवारों, समुदायों और प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों के बीच संबंध का विकास

4.1 परिवारों और प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों के बीच विश्वास का बंधन कैसे स्थापित किया जाए?

4.2 छोटे बच्चों के जीवन में उनके माता-पिता, दादा-दादी एवं नाना-नानी की भूमिका

4.3 प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों और अभिभावकों के बीच बेहतर संबंध विकसित करने हेतु कुछ पद्धतियाँ

4.4 गतिविधि 3 : स्वयं करें

5. बच्चों को खुशहाल और स्वस्थ बनाने के लिए समुदायों को संलग्न करना

5.1 समुदायों से सहायता प्राप्त करना

5.2 गतिविधि 4 : स्कूल जीवन - विचार करें

5.3 अभिभावकों, परिवारों एवं समुदायों की सहभागिता के प्रकार

6. अभिभावकों, परिवारों एवं समुदायों को शामिल करने के लिए संप्रेषण रणनीतियाँ

6.1 अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय को प्रभावी संप्रेषण द्वारा संलग्न रखना

6.2 छोटे बच्चों की सीखने में कैसे सहायता करें - इसे जानने में अभिभावकों की सहायता करना

6.3 गतिविधि 5 : अपनी समझ की जाँच करें

6.4 अतिरिक्त गतिविधि : अभिभावक-शिक्षक मीटिंग (PTM) - संप्रेषण के सशक्त तरीके के रूप में

7. घर पर सीखने की गतिविधियां

7.1 अभिभावकों और परिवारों द्वारा घर पर सीखने में सहायता करने वाली गतिविधियाँ

7.2 गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करें

सारांश

पोर्टफोलियो गतिविधि

» असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन

» संदर्भ

» वेब लिंक

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

यह कोर्स प्री-स्कूल स्तर पर गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा प्रदान करने हेतु समुदाय की सहभागिता के महत्व की समझ प्रदान करता है। साथ ही यह बताता है कि किस प्रकार अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय की स्कूलों के साथ भागीदारी बच्चों की सीखने में सहायता कर सकती है। यह इन भागीदारियों के सृजन और पोषण हेतु सुझाव भी देता है।

मुख्य शब्द

NISHTHAECCE, COMMUNITY ENGAGEMENT PARENTS, FAMILIES, PARTNERSHIPS, ECCE

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- गुणवत्तापूर्ण प्री-स्कूल शिक्षा के लिए अभिभावकों एवं समुदाय की भागीदारी की आवश्यकता की सराहना।
- अभिभावकों एवं समुदाय के साथ अर्थपूर्ण सहभागिता की अवधारणा को समझना।
- अभिभावकों एवं समुदाय के साथ संलग्न होने के तरीकों को खोजना और विकसित करना।
- साक्षरता और संख्याज्ञान संबंधी गतिविधियों को पहचानना जिनमें घर पर अभिभावकों/वयस्कों की सहायता मिल सकती है।
- घर में एक उत्प्रेरक अधिगम वातावरण निर्माण करने हेतु अभिभावकों का मार्गदर्शन करने में शिक्षक की भूमिका को समझना।

कोर्स की रूपरेखा

- अभिभावकों एवं समुदाय तथा प्री-स्कूल शिक्षकों/आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों के बीच भागीदारी का महत्व।
- परिवारों तथा प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों के मध्य मज़बूत बंधन का विकास।
- बच्चों को खुशहाल और स्वस्थ बनाने में अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय की संलग्नता।
- घर पर सीखने में सहायता करने के लिए सुझावात्मक गतिविधियाँ।
- अभिभावकों एवं समुदाय को संलग्न करने की युक्तियाँ।
- अधिक मज़बूत भागीदारी के लिए प्रभावी संप्रेषण पद्धतियाँ।
- सच्ची भागीदारी विकसित करने में अभिभावकों और प्री-स्कूल शिक्षकों/आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों की आपसी झिझक को दूर करना।

••• मॉड्यूल 1 •••

अभिभावकों एवं समुदायों के साथ भागीदारी का महत्व

मॉड्यूल 1 : अभिभावकों एवं समुदायों के साथ भागीदारी का महत्व

1.1 प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी शिक्षा में अभिभावकों एवं समुदायों की सहभागिता की आवश्यकता तथा महत्व

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31363995487663718411514

प्रतिलिपि

प्रिय प्रतिभागियों,

आपका स्वागत है। हम अपने छोटे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पूर्वस्कूली शिक्षा प्रदान करने के लिए माता-पिता, परिवारों और समुदाय को शामिल करने की आवश्यकता के बारे में जानने जा रहे हैं। इसके साथ हम बात करेंगे प्री-स्कूल के विभिन्न वर्षों के लिए परिभाषित मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) के सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के बारे में। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने बालवाड़ी, आंगनवाड़ी, पूर्वस्कूली केंद्रों जैसे विभिन्न संस्थानों के माध्यम से तीन से छः वर्ष की आयु के सभी बच्चों को पूर्व–प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता के बारे में बहुत ज़ोर दिया है। आप इस बात से सहमत होंगे कि जब बच्चे छोटे होते हैं तो वे अपने घरों और आस-पड़ोस में अधिक समय व्यतीत करते हैं। वे समझने और सीखने में तेज़ होते हैं, इसीलिए यह बहुत अच्छा होगा यदि उनके माता-पिता, परिवार और समुदाय को उनके सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाया जाए। माता-पिता और परिवार, उनकी शैक्षणिक योग्यता कुछ भी हो, बहुत अच्छी तरह से यह निगरानी कर सकते हैं कि छोटा बच्चा क्या कर रहा है? वे तुरंत उत्तेजना और प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं और यह

बच्चों को उत्साहित शिक्षार्थियों के रूप में विकसित करने के लिए बहुत अच्छा होगा। इसी प्रकार के क्रियाकलापों से बच्चे प्रयोग, अन्वेषण और हेरफेर द्वारा सीखने के लिए तत्पर होते हैं। माता-पिता और परिवारों को शामिल करने की रणनीतियों और तरीकों पर, हमारे ईसीसीई कार्यकत्रियों और अन्य स्टॉफ को तैयार करना महत्वपूर्ण है चाहे वे प्री-स्कूल में तैनात हों या फिर बालवाड़ी या आंगनवाड़ी में। माता-पिता, परिवारों और ईसीसीई केंद्रों के बीच साझेदारी बच्चों के लिए समग्र रूप से सीखने और विकसित होने लिए एक आसान रास्ता बनाती है।

एक साझेदारी तरीके से, पूर्वस्कूली शिक्षक और आंगनवाड़ी कार्यकत्री परिवार जैसा स्कूल बनाते हैं जिसका अर्थ है कि स्कूल या केंद्र प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता को पहचानता है और बच्चे को सहज और अपनापन महसूस कराता है। ऐसे स्कूल और केंद्र सभी परिवारों का स्वागत करते हैं जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जिन तक पहुँचना अपेक्षाकृत मुश्किल होता है। इसी तरह, एक स्कूल जैसे परिवार को लगता है कि बच्चे सीखने के लिए तैयार हो रहे हैं। वे केंद्र और उसकी गतिविधियों के महत्व को समझते हैं और इन केंद्रों में बच्चे जो सीखते हैं उसका समर्थन करते हैं। वे उन गतिविधियों की व्यवस्था भी कर सकते हैं जो छोटे बच्चे की रचनात्मकता और जिज्ञासा को विकसित और पोषित करती है। माता-पिता के समूह और समुदाय विभिन्न प्रकार के अवसर और कार्यक्रमों का आयोजन कर सकते हैं। समुदाय के नेता और बड़े लोग भी छोटे बच्चों के विकास और शिक्षा के मामले में परिवारों को आवश्यक सहायता प्रदान कर सकते हैं। सरकारी स्कूलों, आंगनवाड़ी केंद्रों और समुदायों को माता-पिता और परिवारों की जरूरतों और वास्तविकताओं पर विचार करना चाहिए और उन्हें उन गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जो उनके लिए संभव है। उदाहरण के लिए, यदि किसी समुदाय में कुछ माता-पिता कठपुतली शो आयोजित करना जानते हैं, तो उन्हें इसे एक सामुदायिक कार्यक्रम के रूप में करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है और उस समुदाय के सभी बच्चों को शो देखने और इसके बारे में बात करने के लिए कहा जा सकता है। इसी प्रकार यदि कुछ माता-पिता या स्थानीय समुदाय के सदस्य स्थानीय सामग्री से मिट्टी के बर्तन बनाना या खिलौना बनाना जानते हैं तो उन्हें सामुदायिक कार्यक्रम में आमंत्रित किया जा सकता है। स्कूलों, ईसीसीई केंद्रों के शिक्षकों और कर्मचारियों को इन आयोजनों में सम्मानपूर्वक शामिल होना चाहिए ताकि वे इन अनुभवों को अपनी कक्षा की चर्चा में जोड़ सकें। स्कूल, माता-पिता और समुदाय के बीच आपसी सम्मान और प्रतिबद्धता की भावना का होना महत्वपूर्ण है और तभी यह एक अच्छी सच्ची साझेदारी होगी जो अद्भुत परिणाम दिखाएगी।

1.2 गतिविधि 1 : शिक्षकों एवं अभिभावकों के बीच संबंध - स्वयं प्रयास करें

निम्नलिखित तालिका को देखें और अपनी समझ के अनुसार उपयुक्त बॉक्स में सही (√) का निशान लगाकर आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों एवं अभिभावकों के बीच संबंध के बारे में अपना मत प्रकट करें :

क्र. सं.	अभिभावकों, एसएमसी के साथ संप्रेषण एसएमसी	प्रायः 1	कभी-कभी 2	कभी नहीं/ मुश्किल से 3
1	बच्चे के स्वास्थ्य एवं पोषण के बारे में अभिविन्यास			
2	मासिक पीटीएम की व्यवस्था और प्रत्येक बच्चे के संपूर्ण विकास पर चर्चा।			
3	अपने बच्चों की सहायता करने के लिए अभिभावकों को सामग्री देकर सहायता प्रदान करना।			
4	वंचित वर्ग के बच्चों और सीडब्ल्यूएसएन के अभिभावकों की ज़रूरतें सुनना और आवश्यकता आधारित सहायता प्रदान करना।			
5	सभी अभिभावकों के लिए उनकी सुविधा अनुसार संप्रेषण मार्गों को खुला रखना।			
6	कक्षा और अभिभावकों से संबंधित विशिष्ट मुद्दों पर अन्य साथियों तथा सीडीपीओ के साथ चर्चा।			
7	बच्चों के काम के बारे में शिकायत या गलती निकालने के व्यवहार के स्थान पर सकारात्मक ढंग से चर्चा करना।			
8	आंगनवाड़ी/प्री-स्कूल गतिविधियों में अभिभावकों को शामिल करना।			
9	आंगनवाड़ी/प्री-स्कूल के कार्य संचालन में अभिभावकों के सुझावों को शामिल करना।			
10	आंगनवाड़ी/प्री-स्कूलों के बेहतर संचालन के लिए समुदाय की सहायता लेना।			

सभी उत्तर भरने के पश्चात अपने अंकों की गणना करें। कॉलम के अनुसार सभी टिक मार्कस को जोड़ें, फिर पहले कॉलम के टिक मार्कस की संख्या को 3 से, कॉलम दो के (√) चिह्नों की संख्या को 2 से और कॉलम 3 के (√) चिह्नों की संख्या को 1 से गुणा करें। अपने औसत अंक निकालें और विचार करें कि आप इसमें सुधार कैसे ला सकते हैं।

मॉड्यूल 2

अभिभावकों, परिवारों एवं समुदायों की सहभागिता

मॉड्यूल 2 : अभिभावकों, परिवारों एवं समुदायों की सहभागिता

2.1 अभिभावकों एवं समुदायों की सहभागिता का महत्व

अभिभावक प्रायः बुनियादी स्तर पर अपने बच्चों के सीखने में सहायता करने के लिए विशेष रूप से उत्सुक होते हैं, किंतु या तो वे यह नहीं जानते कि बच्चों की सहायता कैसे की जाए या वे यह नहीं समझते कि एक बार जब उनका बच्चा आंगनवाड़ी या एक औपचारिक स्कूल में जाने लगता है तो उनकी सहभागिता आवश्यक और महत्वपूर्ण होती है। यहाँ, केंद्रों या स्कूलों तथा शिक्षकों और आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे स्वेच्छा से अभिभावकों, परिवारों और उनके आस-पास के समुदाय को छोटे बच्चों के सीखने और विकास की प्रक्रिया में शामिल करें।

बच्चों की शिक्षा और कल्याण में प्रत्येक वयस्क एक हितधारक होता है। वयस्कों के लिए आवश्यक है कि वे आंगनवाड़ियों और स्कूलों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करें और मिलकर कार्य करें ताकि बच्चे स्वयं को सुरक्षित महसूस करें और सीखने के लिए प्रेरित हों। बच्चे दिन का काफ़ी समय घर और पड़ोस में व्यतीत करते हैं। यदि अभिभावक और समुदाय के अन्य सदस्य स्कूलों के साथ हाथ मिला लें और स्कूल में चर्चा की गई अवधारणाओं और विचारों को ग्रहण करने में घर पर सहायता प्रदान करें तो परिणाम बेहतरीन हो सकते हैं। अपने बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। शिक्षकों/आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि माता-पिता ही बच्चे के प्रथम शिक्षक होते हैं और घर तथा स्कूल में भागीदारी से बच्चों, परिवारों, स्कूलों, आंगनवाड़ियों सभी को लाभ होता है। परिवार और शिक्षक जब मिलकर काम करते हैं तो उनके बच्चे सुरक्षित महसूस करते हैं। इसमें बच्चों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी को बेहतर ढंग से समझने के लिए शिक्षकों को भी कई अवसर मिलते हैं। ये भागीदारियाँ अभिभावकों के लिए बहुत ही उपयोगी होती हैं जो उन्हें नियमित रूप से यह जानने में सहायता करती हैं कि उनका बच्चा स्कूल या आंगनवाड़ी में किस प्रकार का प्रदर्शन कर रहा है और अभिभावकों तथा शिक्षकों के बीच एक अच्छा वैयक्तिक संवाद स्थापित हो जाता है। अभिभावकों को यह भी मालूम होता रहता है कि शिक्षक किस प्रकार बच्चों की वृद्धि और सीखने का मार्ग दिखाते हैं। ये सभी लाभ संयुक्त रूप से एक अवधि में बच्चों की क्षमता को उनकी उपलब्धियों में परिवर्तित कर देते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने बच्चों की शिक्षा में अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता पर बल दिया है।

2.2 अभिभावकों एवं समुदाय की कम प्रतिभागिता के कारण

जबकि अभिभावकों, परिवारों, समुदाय और स्कूलों के बीच भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है और समुदाय सहभागिता ईसीसीई के सार्वभौमीकरण तक पहुँचने की प्रमुख रणनीति है, तथापि हम अभी तक कोई

महत्वपूर्ण कदम नहीं उठा पाए हैं। समुदाय और इसके सदस्यों की कम प्रतिक्रिया के कारणों की खोज के लिए अनेक कदम उठाए गए हैं। इस स्थिति के लिए चिह्नित कुछ मुख्य कारण इस प्रकार हो सकते हैं :

- काम के घंटों का अतिव्यापन (Overlapping)
- समय की कमी
- अभिभावकों की क्षमताओं के बारे में आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों की गलत धारणा
- आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा भेजी गई जानकारी के बारे में अभिभावकों की अपर्याप्त समझ
- किसी गतिविधि के प्रदर्शन के लिए अभिभावकों की ओर से विश्वास की कमी
- साक्षरता और अनावरण (exposure) की आवश्यकता
- समुदाय स्तर पर योग्य नेतृत्व की कमी
- अधिक लोगों को शामिल करने के लिए आंगनवाड़ियों के पास संसाधनों की कमी
- स्कूल या समुदाय द्वारा हस्तक्षेप का भय
- दोनों ओर से उचित संप्रेषण कौशल और तरीकों का अभाव
- स्कूलों और समुदाय की अनिच्छा और उदासीनता

प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों की स्थिति और संदर्भ के आधार पर अन्य कारण भी हो सकते हैं। हालांकि, यह महत्वपूर्ण है कि बड़े पैमाने पर छोटे बच्चों और समुदायों के हित में आपसी सहयोग से कठिनाइयों को दूर किया जाए।

विचार करें

क्या अभिभावक और समुदाय स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने में शर्माते हैं?

आपने देखा होगा कि किस प्रकार अभिभावक और समुदाय के लोग स्कूल/आंगनवाड़ी आते हैं और गतिविधियों में भाग लेते हैं। उनकी भागीदारी की गुणवत्ता और सीमा पर आपका अवलोकन क्या है? क्या आप महसूस करते हैं कि वे स्वयं को अभिव्यक्त करने और भाग लेने से शर्माते हैं या आपका इससे कोई भिन्न मत है? अपने अवलोकन दूसरों के साथ साझा करें।

2.3 गतिविधि 2 : अभिभावकों एवं समुदाय की संलग्नता कैसे बढ़ाएं - विचार करें

अभिभावकों के साथ नियमित और अनवरत बातचीत तथा इसे बनाए रखने के लिए प्रेरित करना, अभिभावकों और परिवारों की सहभागिता के लिए काफ़ी महत्वूपर्ण है। अपनी जानकारी के अनुसार अभिभावकों की प्री-स्कूलों में कम भागीदारी के कारणों पर विचार करें। उन मौजूदा रणनीतियों में सुधार लाने पर भी विचार करें जो उन्हें संलग्न कराने में लाभकारी हो सकती हैं।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceHc4a2 टाइप करें।

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-ecce.blogspot.com/2022/11/4-2.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड** को **स्कैन** करें।

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- 'Enter your comment' पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

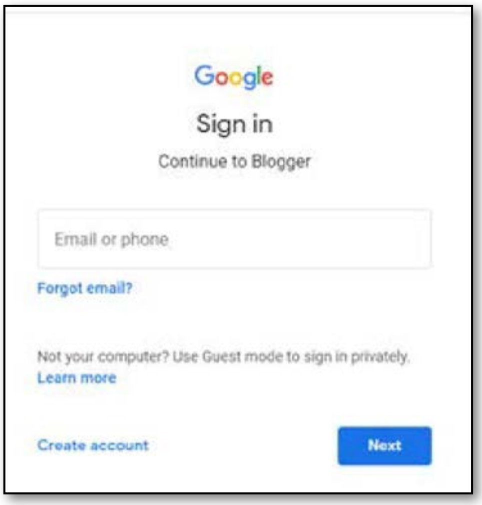

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- ‘PUBLISH’ पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

मॉड्यूल 3

अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय के साथ सार्थक भागीदारी

मॉड्यूल 3 : अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय के साथ सार्थक भागीदारी

3.1 आइए, सार्थक भागीदारी की आवश्यकताओं को जानें

आप अक्सर शिक्षकों या आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को यह कहते हुए पाएँगे - "यदि परिवार अपना काम करें, तो हम भी अपना काम कर पाएंगे", "दूसरी ओर ऐसे परिवार हैं जो कहते हैं", "हमने बच्चे को बड़ा कर दिया, बच्चे के स्वास्थ्य और शिक्षा का ध्यान रखना अब आपका काम है"। ये शब्द शिक्षकों और अभिभावकों के बीच ज़िम्मेदारी को लेकर अलग-अलग दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी प्रकार कुछ शिक्षक हैं जो कहते हैं कि "हम अपने बच्चों के परिवारों की सहायता और समुदाय की सहायता के बिना अपना काम नहीं कर सकते हैं।" कुछ अभिभावक यह भी कह सकते हैं कि "मुझे वास्तव में यह जानने की आवश्यकता है कि केंद्र में क्या हो रहा है और मैं अपने बच्चे की सहायता कैसे कर सकता/सकती हूँ।" ये विचार यह बताते हैं कि अभिभावकों, परिवारों, शिक्षकों या स्कूल प्रशासन के विभिन्न मत हैं। एक बात समझनी बहुत आवश्यक है कि जब हम आंगनवाड़ी की या उसमें आने वाले बच्चों की बात करते हैं, तो हम अभिभावकों के साथ-साथ बच्चों देखभालकर्ताओं की भूमिका की उपेक्षा नहीं कर सकते। ये देखभालकर्ता उनके दादा-दादी, भाई-बहन, पड़ोसी या घनिष्ठ संबंधी या बच्चे के आसपास रहने वाला कोई ऐसा व्यक्ति जिसका उस पर प्रभाव हो सकता है। इसलिए जब हम अभिभावकों और परिवारों के साथ भागीदारी की बात करते हैं तो हम इन सभी देखभालकर्ताओं को शामिल करते हैं।

भागीदारी के तरीके से शिक्षक और आंगनवाड़ी कार्यकत्री, परिवार - जैसे स्कूलों का सृजन करते हैं। परिवार - जैसा स्कूल प्रत्येक बच्चे के अनूठेपन को पहचानता है और बच्चे को आरामदायक स्थिति का तथा शामिल होने का अहसास कराता है। ऐसे स्कूल और केंद्र सभी परिवारों का स्वागत करते हैं, यहां तक कि उनका भी जिन तक पहुँचना कठिन होता है। इसी प्रकार अभिभावकों के लिए भागीदारी में वे स्कूल - जैसे परिवारों का और अधिक सृजन करते हैं। एक स्कूल - जैसा परिवार यह अनुभव करता है कि प्रत्येक बच्चा एक शिक्षार्थी भी है। वे केंद्र और उसमें होने वाली गतिविधियों के महत्व को समझते हैं और जो कुछ बच्चे केंद्र में सीखते हैं, उसमें उनकी सहायता करते हैं। वे उन गतिविधियों की व्यवस्था करते हैं जो छोटे बच्चों के आयु उपयुक्त कौशलों का विकास व पोषण करते हैं। समुदाय जिनमें एक साथ काम करने वाले अभिभावकों के समूह शामिल होते हैं, स्कूल - जैसे अवसरों, कार्यक्रमों, उत्सवों का सृजन करते हैं। समुदाय आवश्यकतानुसार ज़रूरी सहायता भी परिवारों को प्रदान करते हैं जिससे वे बेहतर तरीके से अपने बच्चों को सहायता देने में सक्षम हो सकें।

प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी केंद्र, स्कूल और समुदाय उन कार्यक्रमों और सेवाओं का समर्थन करते हैं जो अभिभावकों और परिवारों की जरूरतों और वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हैं और संचालित करने

योग्य गतिविधियों में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी समुदाय में कुछ अभिभावकों को कठपुतली का तमाशा करना आता है तो उन्हें इसे एक समुदाय कार्यक्रम के रूप में करने के लिए कहा जा सकता है। समुदाय के सभी बच्चों को इसे देखने और इसके बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार यदि कुछ अभिभावकों को मिट्टी के बर्तन बनाना या स्थानीय सामग्री से खिलौने बनाना आता है तो उन्हें समुदाय कार्यक्रम में आमंत्रित किया जाना चाहिए। आपसी सम्मान और ज़िम्मेदारी की भावना होना बहुत आवश्यक है, तभी यह सच्ची भागीदारी कही जाएगी।

3.2 साझेदारी को सार्थक कैसे बनाया जाए

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3136399601139056641257 7

प्रतिलिपि

प्रो. संध्या संगई : शिक्षकों, विद्यालयों, माता-पिता और समुदायों के बीच भागीदारी बहुत उपयोगी होती है क्योंकि यह बच्चों और समुदायों के बेहतर विकास में मदद करती है। ऐसे कई तरीके है जिनसे इन भागीदारियों को सक्रिय करने की योजना बनाई जा सकती है। यकीनन आप सभी ने अपने स्कूल की सेटिंग में यह सब देखा होगा। मैं अपनी सहयोगी डॉ. रोमिला से पूछती हूँ कि क्या माता-पिता और समुदाय को विद्यालय के साथ शामिल करने से किसी को लाभ होता है।

प्रो. रोमिला सोनी : जी बिल्कुल। बुनियादी स्तर पर प्रारंभिक साक्षरता तथा गणितीय कौशलों एवं अवधारणाओं के विकास में माता-पिता को शामिल करना बहुत ही आवश्यक है। इससे ये होता है कि बच्चे और शिक्षक दोनों के प्रयासों को समर्थन मिलता है। एक बात में यहां कहना चाहूंगी कि स्कूल शिक्षक, स्कूल प्रबंधन समितियां हर एक की एक भूमिका होती है और जब ये तीनो मिलजुल कर काम

करते हैं, आपस में सहयोग करते हैं तो अच्छे परिणाम लाने वाली एक सार्थक साझेदारी निकल कर आती है।

प्रो. संध्या संगई : आपने बहुत अच्छे तरीके से बताया रोमिला, लेकिन अभी आपने एक वाक्यांश का इस्तेमाल किया।

प्रो. रोमिला सोनी : जी

प्रो. संध्या संगई : जो था सार्थक साझेदारी।

प्रो रोमिला सोनी : जी

प्रो. संध्या संगई : क्या आप बताएंगी कि सार्थक साझेदारी से आपका क्या अभिप्राय है?

प्रो रोमिला सोनी : जी, अगर मैं ये बोलूं कि सार्थक साझेदारी का तात्पर्य या मैं और सरल शब्दों में बोलूं कि सार्थक साझेदारी का मतलब, अच्छे परिणाम लाने वाली साझेदारी। अगर मैं उदाहरण दूँ कि प्रत्येक समूह की अपनी एक विशिष्ट ज़िम्मेवारी होती है। जिस के लिए वो अपनी भूमिका के लिए प्रतिबद्ध होता है यानी कि प्रत्येक समूह को अपनी-अपनी भूमिका को समझना चाहिए और अपनी भूमिका के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य करना चाहिए। अगर हम कहें कि अगर प्रत्येक समूह अपनी ज़िम्मेवारी के लिए प्रतिबद्ध है तो बच्चें एफएलएन के कौशलों और अवधारणाओं के विकास में प्रगति करेंगे और उनमें तेजी से अपने-अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। दूसरी बात ये कि जब अभिभावक या माता-पिता घर में पढ़ते हैं, एक पढ़ाई का माहौल बनाते हैं तो बच्चे भी पढ़ाई की तरफ रुझान दिखाते हैं और हम अपने भाषाई और गणितीय कौशलों को सरलता से प्राप्त कर सकते हैं।

प्रो. संध्या संगई : हाँ रोमिला, आपने सही कहा छोटे बच्चों के आस पास रहने वाले सभी लोग उनके हितधारक हैं और इस स्थिति में यदि हम देखे तो बच्चों के हितधारक मुख्य रूप से उनके परिवार, समुदाय तथा विद्यालय हैं। और बच्चों की जो गुणवत्तापूर्ण है रोमिला, उसके के लिए इन सभी हितधारकों को अपनी-अपनी भूमिका को अच्छे से निभाना चाहिए। इसकी एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी उनके ऊपर है, आपका क्या विचार है इस बारे में?

प्रो. रोमिला सोनी : जी संध्या, आप ही की तरह मैं भी बहुत ही आशान्वित हूँ कि साझेदारी और सहयोग की मदद से हमें बहुत अच्छे परिणाम मिलने वाले हैं और हम ये बार-बार कह रहे हैं कि अगर हम मिलजुल कर कार्य करें और प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक समूह अपनी भूमिका के लिए प्रतिबद्ध रहे तो हमारे बच्चे बहुत ही अच्छा करेंगे। उदाहरण के लिए अगर हम अभिभावक का एक उदाहरण लें, अगर माता-पिता जैसा कि मैंने पहले भी ये बातचीत उठाई कि घर पर अगर वो एक पढ़ाई का माहौल बनाते हैं, बच्चे को रोज़ कहानियाँ पढ़कर सुनाते है, बच्चे के साथ खेल खेलते हैं, छोटी-छोटी समस्याओं का सुलझाव करने में, बच्चे को अपने खेल में इन्वोल्व करते हैं या उनको भी सम्मिलित करते हैं, तो हम पाएंगे कि बच्चे खुदबखुद और खेल-खेल में और मजे-मजे में प्रारंभिक साक्षरता और गणितीय कौशलों और अवधारणाओं को बहुत ही सरलता से सीख लेते हैं, लेकिन ये हमे बिलकुल मानना होगा कि हमे अपनी-अपनी भूमिका के लिए सजग और प्रतिबद्ध रहना ही पड़ेगा।

प्रो. संध्या संगई : आप क्या सोचती हैं कि क्या इन साझेदारियों को सक्रिय करने के लिए हमें कुछ रणनीतियाँ बनानी चाहिए?

प्रो. रोमिला सोनी : जी बिल्कुल। रणनीतियों के बिना तो हम शायद अपने लक्ष्य तक पहुंच भी न पाएं, तो रणनीतियाँ बनाना तो बिल्कुल आवश्यक है।

प्रो. संध्या संगई : मैं आपसे चाहूँगी कि आप कुछ रणनीतियों के बारे में बताएँ।

प्रो. रोमिला सोनी : संध्या वैसे तो बहुत सारे तरीके हैं और बहुत सारी रणनीतियाँ हैं और ऐसा नहीं है कि स्कूल और विद्यालय इन तरीकों को नहीं अपना रहे। बहुत सारे स्कूल इनमें से बहुत सारे तरीके भी अपना रहे हैं लेकिन अगर हम एफएलएन के मद्देनज़र इस बात को देखें कि हमें किन मुद्दों पर और किन रणनीतियों पर अधिक ध्यान देना है तो सबसे पहले बात आती है पीटीएम की। जिसको हम कहते हैं अभिभावकों की बैठक तो सबसे पहले शिक्षक और स्कूल, अभिभावकों और माता-पिता और उनके परिवारजनों को पीटीएम में एक नियमित रूप से उनका इंगेजमेंट देखें, उनका सम्मिलित होना देखें और पीटीएम को या अभिभावकों की बैठक को अटेंड करना मतलब ये नहीं हुआ कि आपने खाली हाज़िरी लगायी। मतलब आपने अपने बच्चों की प्रोग्रेस यानी कि बच्चे कैसे अग्रसर हो रहे हैं वो शिक्षक के साथ साझा करें और अगर बच्चे कहीं कुछ भूल कर रहे हैं या कहीं कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं, उसको भी शिक्षक के साथ साझा करें और शिक्षक से गतिविधियों को सीखें तो पहली तो ये रणनीति हुई। दूसरी हुई शिक्षक का सभी अभिभावकों को कक्षा की गतिविधियों में सम्मिलित करना जैसे कि अभिभावक से कहानी सुनना, अभिभावक से कभी-कभी मुक्त वार्तालाप करवाना कक्षा में, इससे एक फायदा होगा संध्या अभिभावकों को गतिविधियां आ भी जाएंगी और वो मज़े-मज़े में सीख भी लेंगे, और बच्चों को भी लगेगा कि हमारे माता-पिता कक्षा की गतिविधियों को सीख रहे हैं और शिक्षक पर भी किसी प्रकार का दबाव नहीं पड़ेगा। तीसरा उदाहरण मैं ये देना चाहूंगी कि शिक्षक, जो हम क्रियाकलाप कराते हैं, जो गतिविधियां कराते हैं उसको कराने के लिए मज़ेदार कार्यशालाओं का आयोजन करें। तो अगर ये छोटी-छोटी कार्यशालाएं अभिभावकों के लिए कराई जाएं जैसे आपने कभी सिर्फ कहानी कहने की कला पर ही वर्कशॉप या कार्यशाला करा दी तो अभिभावक मज़े-मज़े में इसको सीखेंगे भी और इन्ही गतिविधियों को घर पर अपने बच्चो के साथ सरलता से कर पाएंगे। मेरे ख्याल से मैंने दो तीन रणनीतियां अच्छी बता दीं, अब मैं चाहूँगी कुछ बिंदु आप भी बताएं।

प्रो. संध्या संगई : आपने बहुत अच्छी गतिविधियां बताई रोमिला, लेकिन यहाँ मैं कुछ बिंदु जोड़ना चाहूंगी ताकि इन गतिविधियों के हमें अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकें, जैसे कि विद्यालयों को और शिक्षकों को अभिभावकों के प्रति और परिवारों के प्रति एक नम्र व्यवहार रखना चाहिए, सहायक पूर्ण रवैया बनाना चाहिए, ताकि अभिभावक सम्मानित महसूस करें। दूसरी बात उनके साथ में एक निरन्तर संचार रखना चाहिए। कई बार ऐसे होता है कि अभिभावक कहते हैं कि हम करना तो चाहते हैं, लेकिन विद्यालय से हमें पता ही नहीं लगता कि कक्षा में क्या हो रहा है तो ऐसे में ये जरूरी है कि हम उनके साथ में बातचीत के माध्यम से या नोट वगैरह के थ्रू ये बताते रहें कि कक्षा में क्या हो रहा है, विद्यालय में क्या हो रहा है? इसके साथ-साथ कुछ ऐसी एक्टिविटीज़ जिसके निर्णय लेने में हम पेरेंट्स को यदि

शामिल कर सकें। मैं ये तो नहीं कहूँगी कि विद्यालय के सभी निर्णयो में पेरेंट्स को लेना चाहिए लेकिन जो बच्चों से सम्बंधित हैं या जहाँ पर कोई पैरेंट अपना योगदान दे सकता है ऐसे में हमे उनको शामिल करना चाहिए। ऐसा करने से उनका उत्साहवर्धन होगा और वो विद्यालय में इंट्रस्ट लेंगे, रूचि लेनी शुरू करेंगे। मुझे लगता है ये सब प्रयासों के साथ में ये जो सांझेदारी होगी ये एक बिल्कुल एक सार्थक साझेदारी होगी। हमें धीरे-धीरे प्रयास करना चाहिए और धीरे-धीरे प्रयास करते हुए आगे बढ़ना चाहिए, तभी हमारी ये साझेदारी सार्थक होगी।

••• मॉड्यूल 4 •••

परिवारों, समुदायों और प्री-स्कूलों/ आंगनवाड़ियों के बीच संबंध का विकास

मॉड्यूल 4 : अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय के साथ सार्थक भागीदारी

4.1 परिवारों और प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों के बीच विश्वास का बंधन कैसे स्थापित किया जाए?

परिवारों और प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों के बीच विश्वास का बंधन विकसित करने के कई तरीके हैं। सर्वप्रथम, शिक्षकों को अभिभावकों या परिवार के सदस्यों की बात स्वीकार्य रूप में सुननी चाहिए और अपनी प्रतिक्रिया ऐसी भाषा और शैली में देनी चाहिए कि अभिभावकों को विश्वास हो। अभिभावकों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे पूर्व सूचना देकर प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी आएँ ताकि दैनिकचर्या में हस्तक्षेप न हो। अभिभावकों द्वारा दिए गए सुझावों का सही ढंग से सम्मान होना चाहिए। उन्हें विभिन्न गतिविधियों के लिए स्वेच्छा से आगे आने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए जैसे खिलौने और अन्य टीएलएम बनाना, पास के पार्क में बच्चों को प्रकृति भ्रमण के लिए ले जाना, अंत: प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी खेल कार्यक्रमों की व्यवस्था करना, पीने के पानी की व्यवस्था करना, प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी को आरामदायक बनाने के लिए प्रकाश/बिजली और पंखों की व्यवस्था करना, केंद्र को आकर्षक बनाने के लिए मरम्मत और पेंट करने की ज़िम्मेदारी लेना तथा इसी प्रकार की अन्य गतिविधियाँ। पोषण समय के दौरान सहायता और बच्चों के लिए अतिरिक्त भोजन सामग्री में योगदान करना भी सहायता करने का एक तरीका है। छुट्टियों या अवकाश के दौरान आस पड़ोस में बच्चों की जानकारी रखने तथा सहायता करने के लिए भी अभिभावकों को शामिल किया जा सकता है।

4.2 छोटे बच्चों के जीवन में उनके माता-पिता, दादा-दादी एवं नाना-नानी की भूमिका

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_3136400546459320321 2655

प्रतिलिपि

प्रो. मंजु जैन : यह हम सभी जानते हैं कि बच्चों के माता-पिता, परिवार, दादा-दादी और नाना-नानी के बीच के संबंध बहुत महत्वपूर्ण होते हैं और प्री-स्कूल शिक्षक यहां एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे माता-पिता को कुछ तुकबंदी, कहानियों, खेलपूर्ण गतिविधियों और खेलों के बारे में सीखने में बहुत मदद कर सकते हैं क्योंकि इसमें छोटे बच्चों को प्री-स्कूल केंद्र या आंगनवाड़ियों हो, में अच्छा प्रदर्शन करने में बेहतर समायोजन करने में बहुत मदद मिलती है। आप दिलचस्प कार्यशालाओं की योजना भी बना सकते हैं तथा माता-पिता के साथ उनके दादा-दादी, नाना-नानी को भी वहां बुलाया जा सकता है और व्यावहारिक रूप में मूल्य आधारित कहानियाँ, अवधारणा आधारित भाषा और संख्यात्मक खेल आदि भी उन्हें सिखा सकते हैं। आज हमारे साथ डॉ. जितेंद्र पाटीदार हैं, जो एक पिता के रूप में अपने अनुभव साझा करेंगे। हमारे साथ श्रीमती ज्योतिकांत प्रसाद भी हैं जिन्हें आईआईटी नर्सरी स्कूल के प्रधान अध्यापिका के रूप में लंबा अनुभव है। ये स्वयं एक नानी भी हैं और उनके पास गीतों, कहानियों का एक खजाना है। तो ज्योति जो बात में अभी कर रही थी, इस पर आपकी क्या राय है?

श्रीमती ज्योतिकांत : मैडम मैं उन सब बिंदुओं से सहमत हूँ जिसके बारे में अभी आपने बताया। लेकिन मैं यहां पर यह भी बोलना चाहूंगी कि हमें हर माता-पिता और परिवार को यह समझाना चाहिए कि हमारे घर में कुछ ऐसी सामग्री उपलब्ध होती है जिनकी बहुत कम लागत होती है या लागत होती ही नहीं है। ऐसे सामान से हम बहुत सारे खिलौने बना सकते हैं और उन खिलौनों से बच्चों को खेलने का अवसर दे सकते हैं। जब बच्चें ऐसे खिलौनों से खेलते हैं तो उनका मनोरंजन होता है और साथ ही साथ वो विभिन्न प्रकार का ज्ञान भी अर्जित कर सकते हैं। इस तरीके के मैं कुछ उदाहरण आपको समझाती हूँ।

कुछ दिनों पहले मेरी ग्रैंड डॉटर का घर में बर्थडे था। तो घर में केक आया था, तो ये केक के नीचे की बची हुई प्लेट है। इसको मैने घड़ी का रूप दिया है। इस घड़ी के माध्यम से बच्चों को हम अंकों का ज्ञान आसानी से दे सकते हैं जैसे बच्चों से हम पूछ सकते हैं बच्चे बताओ इसमें अंक दो कहां पर है, तो बच्चा बताएगा अंक दो यहां पर है। फिर हम विभिन्न वस्तुओं के बच्चों को कार्ड देते हैं। बच्चों से बोलते हैं कि जो हमने अंक आपसे पूछा था, उसी अंक वाली वस्तु का कार्ड आपको उठाना है। तो बच्चा दो वस्तु वाला कार्ड उठाएगा और हम बच्चों से कहेंगे कि ये दो वस्तु वाले कार्ड को आप अंक के ऊपर रख दीजिए। तो बच्चा दो अंक के ऊपर दो वस्तु रखेगा। इसी प्रकार से तीन वस्तु को तीन अंक के ऊपर रखेगा। एक वस्तु को एक अंक के ऊपर रखेगा और चार वस्तु को चार अंक के ऊपर रखेगा। इससे क्या हुआ कि बच्चे को पता ही नहीं चला कि हम उसको अंकों का ज्ञान का दे रहे हैं। उसको लगा कि मैडम कोई एक खेल मुझे खिला रही हैं और खेल-खेल में ही उन्होंने अंको का ज्ञान भी प्राप्त कर लिया। इसी तरह मेरे घर में चपाती फॉयल (foil) आता है, ये उसके अंदर की रॉड है। इसको मैने येलो कलर के चार्ट पेपर से चिपका कर पेंसिल का मैने स्टैंड बना दिया है। इसमें बच्चें पेंसिल और पेन रखते हैं। बच्चों से हम बोल भी सकते हैं कि इसमें दो पेंसिल रखिए, इसमें दो पेन रखिए आगे मैने बिल्ली का चेहरा लगाकर इसको बिल्ली एनिमल का रूप दे दिया है। ये मैने बच्चों के सामने ही बनवाया है। बच्चों के सामने जब बनाते हैं, तो बच्चें बहुत रुचि भी लेते हैं। उनकी छोटी मांसपेशियों का विकास तो होता ही है, साथ ही साथ हम बच्चों को बिल्ली से संबंधित जितनी भी जानकारी देना चाहे हम दे देते हैं कि ये पालतु जानवर है, ये दूध पीती है, मलाई खाती है, चूहे खाना पसंद करती है। इसकी साउंड के बारे में हम बता सकते हैं और साथ ही साथ हम कोई छोटा सा गीत भी गवा सकते हैं जैसे -

मेरी बिल्ली प्यारी बिल्ली,
दो लोटे पानी से हो गई गीली,
गीली होकर लगी कांपने,
आंछी-आंछी लगी छींकने,
मैंने बोला कुछ तो सीख,
बिना रुमाल के कभी न छींक।

इससे क्या हुआ? बिल्ली की जानकारी भी बच्चों को मिल गई। उसकी छोटी मांसपेशियों का विकास भी हो गया और बच्चे को पता भी नहीं चला कि हमने बच्चे को कुछ सिखाया है।

प्रो. मंजु जैन : बहुत अच्छा। बहुत ही अच्छे उदाहरण आपने दिए। अब डॉ. पाटीदार आप बच्चों को रात में सोते टाइम कहानियां सुनाते हैं या गीतों को भी उनके साथ में गाते हैं?

डॉ. जितेंद्र कुमार पाटीदार : हाँ, बिल्कुल मैडम। हम बच्चों को सोते समय उन्हें नई-नई कहानियां सुनाते हैं। उन कहानियों के माध्यम से हम उन्हें प्रेरणादायी प्रसंग भी सुनाते हैं और हमारे जो परंपरागत मूल्य हैं, जो संस्कार हैं उनसे भी अवगत कराते हैं। इसके अलावा बच्चे मैडम, जब उनको हम इन कहानियों को सिखाते हैं तो उनके साथ-साथ वे शब्द भी सीखते हैं, वाक्यों की रचना भी सीखते हैं और

साथ ही नई-नई अवधारणाओं के बारे में भी समझते हैं। इसलिए बच्चों को हम सोते समय कहानियां सुनाते हैं और कहानियों में बड़ी रुचि लेते हैं और इस रुचि में उनसे हम इस तरह के प्रेरक प्रश्न करते हैं ताकि वे उत्साह लेकर उसमें भाग लें और अपने प्रश्नों के उत्तर भी दें। तो इस तरह से सहजता के साथ बच्चे सीखते हैं।

प्रो. मंजु जैन : बहुत अच्छा। बच्चों के जीवन के प्रारंभिक वर्षों में पिता की भूमिका बहुत ही महत्वूपर्ण होती है और माता-पिता का यह समझने में मदद करने के लिए ज्योति को बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमती ज्योतिकांत : मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि डॉ. जितेंद्र ने कहानी सुनाने के महत्व को समझा और हर माता-पिता को यह समझना चाहिए कि कहानी, गीत और खिलौनों के माध्यम से बच्चे व्यस्त तो रहते ही हैं लेकिन साथ ही साथ बड़ी तीव्र गति से अपने ज्ञान को अर्जित करते हैं और इनके माध्यम से बच्चा प्री-प्राइमरी स्कूल में ही नहीं बल्कि प्राइमरी स्कूल में भी बहुत तीव्र गति से सीखता है। डॉ. जितेंद्र क्या आप अपने बच्चों को कहानी सुनाते हैं और बच्चे कहानी सुनाने के बाद दुबारा आपको कहानी सुनाते हैं?

डॉ. जितेंद्र कुमार पाटीदार : हाँ बिल्कुल मैम, हम बच्चों को जब कहानी सुनाते हैं तो उस कहानी में हम मूल्यों को और संस्कारों को शामिल करते हैं। जब उन्हें हम मित्रता की कहानी सुनाते हैं, स्वच्छता की कहानी सुनाते हैं, ईमानदारी की कहानी सुनाते हैं तो बच्चे रुचिपूर्वक भाग लेते हैं और जब हम कहानी सुनाते-सुनाते कहीं पर हम रुक जाते हैं। हम बच्चों को कहते हैं इसके आगे आप कहानी बताओ। तो बच्चे उस कहानी को आगे बढ़ाते हैं तो इस तरह से वो कहानी कहने में रुचि लेते हैं, सीखते हैं, समझते हैं और जो सीखने-सिखाने की प्रक्रिया है उसमें कहानी हमारे लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और साथ ही साथ बच्चों को सहजता के साथ मूल्य भी सिखा सकते हैं उन्हें, संस्कार भी सिखा सकते हैं और उन्हें इन छोटी-छोटी कहानियों से जीवन में अपनाने के लिए भी प्रेरित कर सकते हैं।

श्रीमती ज्योतिकांत : बिल्कुल

प्रो. मंजु जैन : बहुत अच्छा उदाहरण। ज्योति अब मैं आपसे कहानी सुनाने का एक साधारण तरीका साझा करने के लिए अनुरोध करूंगी।

श्रीमती ज्योतिकांत : मैं यहां पर ये साझा करना चाहूंगी कि जब भी मैं स्कूल में बच्चों को कहानी सुनाती हूं या घर में अपनी ग्रैंड डॉटर को कहानी सुनाती हूं तो मैं कठपुतलियों का सहारा लेती हूं और मेरा यह प्रयत्न रहता है कि कठपुतलियां बनाते समय मैं बच्चों को भी शामिल करुं। इसका मैं एक उदाहरण आपको देती हूँ। ये देखिये ये दादा जी की है, कठपुतली है, ये हमने खुद ही बनाई हुई है, बच्चों को साथ में बैठाया था बनाते समय। ये हमारे पापा जी हैं, ये मिनी है और ये चटोरी म्याऊ बिल्ली।

प्रो. मंजु जैन : ये बच्चों ने बनाए हैं या आपने बनाए हैं?

श्रीमती ज्योतिकांत : बच्चे इतना नहीं कर सकते। जितना हम उनसे हेल्प ले सकते हैं, उनसे ले लेते हैं हेल्प। ये फिंगर पपेट भी होते हैं। ये ग्लव पपेट थे। ये फिंगर पपेट है। इसके माध्यम से मैं आपको एक कहानी सुनाने का प्रयत्न करती हूं। ये मिनी है, ये मिनी की मम्मी है।

मिनी की मम्मी : मिनी बेटा जल्दी से तैयार हो जाओ, स्कूल जाने का समय हो रहा है, अपने दांत साफ कर लो।

मिनी : अच्छा मम्मी मैं अभी दांत साफ करके आती हूं।

मिनी : ललला...ललला...लललललललला... ललला...ललला...लललललललला...

मिनी की मम्मी : मिनी ये आपके हाथ में क्या है?

मिनी : मम्मा, ये तो दांत साफ करने वाला ब्रश है।

मिनी की मम्मी : नहीं मिनी, ये दांत साफ करने वाला ब्रश नहीं है, इससे तो हम ड्राइंग करते हैं, चित्रों में रंग भरते हैं। जाओ आप दांत साफ करने वाला ब्रश लेकर आओ।

मिनी : ललला...ललला...लललललललला...

मिनी की मम्मी : मिनी ये आप क्या लेकर आई हो, आपके हाथ में क्या है?

मिनी : मम्मा ये तो दांत साफ करने वाला ब्रश है।

मिनी की मम्मी : नहीं मिनी, ये दांत साफ करने वाला ब्रश नहीं है, ये तो जूतों पर पॉलिश करने वाला ब्रश है। जाओ और दांत साफ करने वाला ब्रश लेकर आओ।

मिनी : लालललला...लल...लालललला...

मिनी : देखो मम्मी ये मैं ब्रश लाई हूं, क्या यही दांत साफ करने वाला ब्रश होता है?

मिनी की मम्मी : हाँ बेटा, यही दांत साफ करने वाला ब्रश होता है और इसी से हम दांत साफ करते हैं। चलो जल्दी से दांत साफ कर लो।

मिनी की मम्मी : मंजन कर लो, मंजन कर लो, मंजन कर लो रे... जल्दी से तुम मिनी बेटा मंजन कर लो रे....मंजन कर लो, मंजन कर लो, मंजन कर लो रे... जल्दी से तुम मिनी बेटा मंजन कर लो रे.... जल्दी से तुम मिनी बेटा मंजन कर लो रे...

इस तरह हम पपेट के माध्यम से बच्चों को जो भी संदेश देना चाहते हैं और बच्चों को पता भी नहीं चलता कि हमें कुछ सिखाया गया है और बच्चे अप्रत्यक्ष रूप से सीख लेते हैं।

प्रो. मंजु जैन : बहुत बढ़िया, ज्योति आपने बहुत अच्छे तरीके से कहानी का उदाहरण यहां पर दिया। बच्चों के साथ खेलने, गाना गाने और कहानी सुनाने की गतिविधियां करने में बच्चों को मज़ा आता ही है। माता-पिता और परिवार आपस में एक क्वालिटी टाइम भी व्यतीत करते हैं। डॉ. जितेंद्र मुझे यकीन है कि आप अपने बच्चों के साथ घर पर कुछ इंडोर और आउटडोर गेम भी खेलते होंगे। क्या आप उनके कुछ उदाहरण देंगे?

डॉ. जितेंद्र कुमार पाटीदार : जरूर मैडम, हम बच्चों के साथ क़्वालिटी टाइम व्यतीत करते हैं जिसमें बच्चों के साथ इंडोर गेम खेलते हैं, आउटडोर गेम भी खेलते हैं। इंडोर गेम में हम बच्चों के साथ सांप-सीढ़ी, लूडो, शतरंज, पिट्ठू इस तरह के गेम खेलते हैं। जिसमें बच्चों को हम खेलते-खेलते संख्या का ज्ञान कराते हैं उन्हें, अक्षरों का ज्ञान कराते हैं उन्हें और बच्चे उन खेलों के साथ जुड़ कर के इन छोटे-छोटे गणित के अंक सिखा सकते हैं, समझा सकते हैं और बच्चे रुचि भी लेते हैं और इसके

साथ-साथ हम हमारे जो परंपरागत खेल हैं उन खेलों को भी आगे बढ़ा सकते हैं। क्यों? क्योंकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अब हमने परंपरागत खेलों को भी छोटे बच्चों की शिक्षा से जोड़ा है और अब हम हमारे ट्रेडिशनल जो गेम्स हैं उन गेम्स के माध्यम से हम बच्चों को शिक्षा भी प्रदान करना चाहते हैं, तो उनमें ये जो इनडोर, आउटडोर गेम हैं वो बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे बच्चों की मसल्स का भी डेवलपमेंट होता है और संख्या ज्ञान और अक्षरों का ज्ञान भी होता है।

प्रो. मंजु जैन : बहुत अच्छा, बहुत अच्छा उदाहरण आपने दिया। यह सब कितना दिलचस्प है। माता-पिता और प्रधान अध्यापिका के रूप में मैं अपने अनुभव साझा करने के लिए डॉ. जितेंद्र कुमार और श्रीमती ज्योति प्रसाद का धन्यवाद करती हूं। मुझे आशा है कि आपको इस बारे में कई सुझाव मिल गए होंगे कि आप माता-पिता और परिवार का मार्गदर्शन मनोरंजक गतिविधियों के लिए कैसे कर सकते हैं? जो वे अपने बच्चों के साथ घर पर आसानी से कर सकते हैं। इन गतिविधियों को जब माता-पिता व परिवार घर पर मिल बैठ कर करते हैं तो बच्चे स्कूल में बेहतर सीख पाते हैं और सीखने के इन शुरुआती वर्षों को एंजॉय करते हैं।

4.3 प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों और अभिभावकों के बीच बेहतर संबंध विकसित करने हेतु कुछ पद्धतियाँ

सुगम्यता बढ़ाने के लिए मैत्रीपूर्ण संवाद

अभिभावकों को उनका महत्व अनुभव कराना चाहिए और ऐसा औपचारिक और अनौपचारिक मार्गों से आपसी संवाद को जारी रखकर ही करना संभव है। उन्हें बहुत ही आसान तरीके से उनके बच्चों के संपूर्ण विकास (शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावात्मकता सहित) के लिए केंद्र में हो रही गतिविधियों की जानकारी दें। उन्हें यह सुनिश्चित करें कि केंद्रों के साथ उनकी भागीदारी से छोटे बच्चों की प्रतिभा और क्षमता वास्तव में खुलकर सामने आ सकती है। उनसे यह भी पूछें कि क्या समय-समय पर केंद्र द्वारा प्रदान की गई जानकारी उनके लिए उपयोगी है? अथवा क्या वे केंद्र में होने वाली गतिविधियों और कार्यक्रमों के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं।

बच्चे को स्कूल में छोड़ते और ले जाते समय होने वाली अनौपचारिक मुलाकात

आमतौर से बच्चों को स्कूल में छोड़ने और स्कूल से ले जाने के समय अभिभावक जल्दी में होते हैं। यह एक अनौपचारिक और संक्षिप्त संपर्क करने का अच्छा समय है। बच्चों का उनके मनपसंद तरीके से स्वागत करना और उन्हें 'गुडबाय कहना', 'कल फिर मिलेंगे' आदि छोटी-छोटी कुछ ऐसी क्रियाएं हैं जो केंद्रों, अभिभावकों और बच्चों के बीच संबंधों में घनिष्ठता ला सकती हैं।

बिना देर किए बच्चों के विशेष प्रदर्शनों को साझा करना

कई बार बच्चे हमें आश्चर्य में डाल देते हैं। किसी दिन यदि एक बच्चा कोई खास काम करता

है जैसे सुर-ताल में कोई कविता गाना या कोई नया खिलौना मिट्टी से बनाना या अपने किसी साथी की अच्छी मदद करना तो अच्छा होगा कि आप बिना देर किए इन घटनाओं को अभिभावकों के साथ साझा करें। इससे बच्चों के साथ-साथ अभिभावक भी प्रेरित होंगे। इसी तरह यदि किसी बच्चे को बहुत परेशान या बीमार देखते हैं तो इसे भी तुरंत अभिभावकों के साथ साझा करें ताकि वे तत्काल कदम उठा सकें।

- ***अभिभावकों को केंद्र की गतिविधियों में भाग लेने के लिए नियमित रूप से आमंत्रित करना***

  यदि अभिभावक कक्षा या केंद्र की गतिविधियों में भाग लेते हैं तो कई बार शिक्षकों को लगता है कि वे हस्तक्षेप कर रहे हैं। किंतु उनमें यदि अच्छी समझ है तो अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय के सदस्यों की भागीदारी सभी के लिए बहुत सहायक हो सकती है। शिक्षकों को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वे यह निश्चित करें कि परिवारों या अभिभावकों को कब कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए बुलाना है। कुछ अभिभावक शांत रहकर अवलोकन करते हैं। वे शिक्षकों/आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को बच्चों को बेहतर ढंग से सँभालने के अच्छे सुझाव दे सकते हैं।

- ***अभिभावकों के लिए विशेष कार्यक्रम नियोजित करना***

  कक्षा की विशिष्ट गतिविधियों में जहाँ अभिभावकों को शामिल करना आवश्यक है, वहीं अभिभावकों को एक-दूसरे के सामने आने के अवसर देना भी जरूरी है। कुछ ऐसे विशिष्ट अवसर हैं जो आमतौर से सभी प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों में मनाए जाते हैं जैसे ईसीसीई दिवस या महिला मंडल की मीटिंग। यद्यपि ये अलग-अलग राज्यों में भिन्न तरीकों से होते हैं और स्थानीय पहल पर किए जाते हैं किंतु अभिभावकों को इन अवसरों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है। इससे प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों और अभिभावकों, परिवारों एवं समुदायों के बीच अनवरत भागीदारी में सहायता मिलेगी। समुदाय के बड़े-बूढ़े और स्थानीय नेता भी इन अवसरों में शामिल हो सकते हैं।

- ***प्री-स्कूल शिक्षकों/आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों द्वारा घर का भ्रमण***

  प्री-स्कूल शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों आमतौर से उसी समुदाय के होते हैं जिसमें वह प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी स्थित होती है। वे परिवार के सदस्यों को अधिक अनौपचारिक और घरेलू रूप से जानते हैं। अच्छा होगा कि घरों के भ्रमण के दौरान वे बच्चों के स्वास्थ्य और संपूर्ण विकास के लिए घरों के सकारात्मक परिवेश के बारे में बात करें। किसी भी प्रकार की शारीरिक हिंसा या अभद्र भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए, बच्चों पर घर के ऐसे परिवेश का विपरीत प्रभाव पड़ता है। बल्कि अभिभावकों और अन्य सदस्यों को सम्मानपूर्वक सौहार्दपूर्ण ढंग से रहना चाहिए और बच्चों को प्यार देना चाहिए। इस प्रकार के व्यवहार का बच्चों के व्यक्तित्व पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। प्री-स्कूल शिक्षकों/आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों को इस प्रकार से परिवारों तक पहुँच बनानी चाहिए कि वे उनकी सलाह का मूल्य समझें।

4.4 गतिविधि 3 : स्वयं करें

प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में नामांकन अभियान के लिए एक पोस्टर बनाएँ। पोस्टर के लिए उद्देश्य हो सकते हैं : अभिभावकों, एसएमसी के सदस्य एवं समुदाय तक यह संदेश पहुँचाना - 'प्रारंभिक वर्षों में स्वास्थ्य स्वच्छता और शिक्षा का महत्व'। पोस्टर इस बात की जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार किया जाए कि बच्चे का प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में नामांकन कैसे कराया जाए, बच्चों को प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में भेजने के क्या लाभ हैं? आप अपने समुदाय के सभी बच्चों के लिए ईसीसीई को सुगम बनाने के लिए और क्या सोच सकते हैं।

मॉड्यूल 5

बच्चों को खुशहाल और स्वस्थ बनाने के लिए समुदायों को संलग्न करना

मॉड्यूल 5 : अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय के साथ सार्थक भागीदारी

5.1 समुदाय से सहायता प्राप्त करना

प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी समुदाय का ही हिस्सा होता है और यदि यह भावना समुदाय के सभी सदस्यों के बीच साझा हो जाए तो बहुत ही अच्छा प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी प्रभारी और कार्यकत्रियों को समुदायों के वरिष्ठ जनों और अधिकारियों जैसे सरपंच तक पहुँचने की अनुमति होनी चाहिए ताकि वे बच्चों और केंद्र की बेहतरी के लिए सहायता माँग सकें। उदाहरण के लिए किसी प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी के पास बाह्य क्षेत्र नहीं है और बच्चे स्थूल मांसपेशीय विकास की गतिविधियाँ या बाह्य खेल नहीं कर पाते हैं तो प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी प्रभारी और संबंधित सीडीपीओ (चाइल्ड डेवलपमेंट प्रोजेक्ट ऑफिसर) स्थानीय नेता या सरपंच से मिल सकते हैं और उन्हें बच्चों के विकास के लिए इन गतिविधियों के संचालन के महत्व के बारे में बता सकते हैं। विश्वास हो जाने पर नेता समुदाय के स्वामित्व वाले पार्क या अन्य क्षेत्रों को केंद्र को प्रदान करने के लिए सहमत हो सकता है।

एक और उदाहरण हो सकता है कि एक क्लस्टर में कई प्री-स्कूल/आंगनवाड़ियाँ हैं और यह महसूस किया जाता है सभी बच्चों को एक-दूसरे के सामने आने और एक साथ क्लस्टर गतिविधियों की व्यवस्था करके सामाजिक रूप से मिलने-जुलने के अवसर दिए जाने चाहिए जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम, मेले या खेल आयोजन। ज़रुरत होती है पैसे, जनबल और स्थान की। यहाँ अभिभावकों की सहायता से केंद्र समुदाय के वरिष्ठ जनों से समस्या पर चर्चा कर सकते हैं और उनसे सुझाव माँग सकते हैं। संभव है कि पैसा तो परिवारों द्वारा थोड़ा-थोड़ा योगदान देने से जमा हो जाए, अभिभावक स्वेच्छा से अपनी सेवाएँ दें और आम समुदाय क्षेत्र संबंधित स्थानीय नेता द्वारा प्रदान कर दिए जाएँ। कुछ अन्य उदाहरण हैं अपने केंद्र के चारों ओर हरा-भरा क्षेत्र बनाना, एक किचन गार्डेन विकसित करना और इसमें उगाई सब्ज़ियों को पोषण के लिए प्रयोग करना, टीकाकरण और नियमित स्वास्थ्य निरीक्षण की व्यवस्था करना आदि। इस प्रकार समुदाय स्वयं में एक बड़ा संसाधन है और यदि इसके सदस्यों और नेताओं के साथ नियमित संवाद बना रहता है तो और भी कई तरीकों से सहायता प्राप्त की जा सकती है।

5.2 गतिविधि 4 : स्कूल जीवन - विचार करें

एक क्षण रुकें और आपके द्वारा भ्रमण किए गए प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों में आमतौर से देखी गई कठिनाइयों के बारे में सोचें। यह जानने का प्रयास करें कि किन कठिनाइयों का हल अभिभावकों एवं समुदाय के सदस्यों की सहायता से निकाला जा सकता है। पुन: इस बात पर विचार करने का प्रयास करें कि इन व्यक्तियों तक कैसे पहुँचा जा सकता है और स्थिति को बेहतर बनाने के लिए कहा जा सकता है। अपने विचार साझा करें।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceHc4a4 टाइप करें।

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें। https://nishtha-ecce.blogspot.com/2022/08/01-4.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए **क्यूआर कोड** को **स्कैन** करें।

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

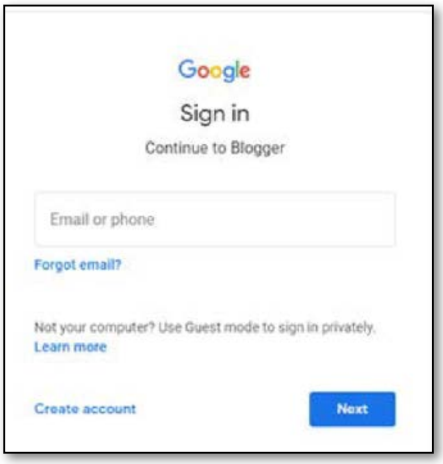

- लॉग इन करने के बाद 'Display Name' डालें और फिर 'Continue to Blogger' पर क्लिक करें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

5.3 अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय की सहभागिता के प्रकार

अभिभावक एक प्राथमिक संसाधन तथा स्वयंसेवक के रूप में

एक प्राथमिक संसाधन के रूप में अभिभावकों की बढ़ती भूमिका सामान्यतः इस बात पर ध्यान केंद्रित करती है कि अभिभावक किस प्रकार घर पर सीखने की गतिविधियों के माध्यम से अपने बच्चों की सहायता कर सकते हैं और उन तरीकों पर भी ध्यान केंद्रित करती है जिनसे इन गतिविधियों के माध्यम से सीखने को उत्तम बनाया जा सकता है। घर पर सीखने की गतिविधियों के कई रूप हो सकते हैं जिसमें कक्षा अधिगम में घर की सहायता, फुरसत में पठन, परिवार-चर्चा, शैक्षणिक खेल, और अधिगम विस्तार की गतिविधियाँ शामिल हैं।

समुदाय के सदस्य बच्चों की शिक्षा के समर्थकों के रूप में

स्थानीय सदस्यों, विशेष रूप से बड़ों और सेवानिवृत्त व्यक्तियों तक प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों और बच्चों के विकास के लिए विभिन्न प्रकार से सहायता करने के लिए पहुँचा जा सकता है। वे सभी बच्चों को प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में लाने; उन्हें स्थानीय नायकों और नेताओं की प्रेरक कहानियाँ सुनाकर रोचक गतिविधियों में संलग्न करने; स्वच्छता और पोषण की आवश्यकता के बारे में बात करने; समुदाय के बड़े बुजुर्गों तथा अन्य बच्चों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के बारे में बात करने में सहायता कर सकते हैं। ये लोग किसी भी समुदाय के लिए खजाना होते हैं और सामाजिक विकास के लिए आगे आते हैं। उनके सुझाव और हस्तक्षेप काफ़ी मददगार हो सकते हैं और वे अभिभावकों तथा परिवारों में घर पर सीखने का एक अच्छा परिवेश बनाने में रुचि लेने के लिए कुछ सीमा तक प्रभाव डाल सकते हैं। आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों और क्लस्टर प्रभारी/समन्वयक की अभिभावक और समुदाय के सहभागिता कार्यक्रमों के विकास और कार्यान्वयन के लिए बड़ी जिम्मेदारी होती है।

अभिभावकों एवं समुदाय के सदस्यों से पूछा जा सकता है कि किन गतिविधियों को वे स्वेच्छा से चुनेंगे (नीचे दिया फ़ॉर्म देखें) और एक डाटा बैंक तैयार किया जा सकता है। ये लोग हमारे प्री-स्कूलों/आंगनवाड़ियों के लिए अच्छे संसाधन बन सकते हैं।

तालिका 1 : अभिभावकों/समुदाय सदस्यों द्वारा स्वैच्छिक गतिविधियों के लिए फ़ॉर्म

तिथि	अभिभावक/समुदाय सदस्य का नाम	स्वैच्छिक गतिविधि
		कोई कहानी/कविता सुनाना या ईसीई केंद्र के बच्चों के सामने अपनी रुचि की अन्य किसी गतिविधि का प्रदर्शन करना।
		कला और संगीत की गतिविधियों में सहायता करना।
		पिकनिक, ट्रैफ़िक पार्क भ्रमण, प्राकृतिक भ्रमण आदि ट्रिप्स के दौरान साथ चलना, शिक्षक के मार्गदर्शन में फ़ील्ड ट्रिप्स के लिए ड्राइव करना।
		बिजली की फ़िटिंग, छत के पंखों की व्यवस्था करना (यदि आंगनवाड़ी में आवश्यकता है)।
		कहानी की पुस्तकों, कार्य पुस्तक को लैमिनेट करना या मरम्मत करना।
		केंद्र के गतिविधि क्षेत्रों के लिए सामग्री एकत्रित करना जैसे खिलौने बिल्डिंग ब्लॉक्स, पज़ल्स, पुराने कपड़े, पर्स, चित्र पुस्तकें आदि।
		पानी के खेल, रेत के खेल या विज्ञान गतिविधि में बच्चों के छोटे समूह की सहायता करना (शिक्षक मार्गदर्शन में)।

••• मॉड्यूल 6 •••

अभिभावकों, परिवारों एवं समुदायों को शामिल करने के लिए संप्रेषण रणनीतियाँ

मॉड्यूल 6 : अभिभावकों, परिवारों एवं समुदायों को शामिल करने के लिए संप्रेषण रणनीतियाँ

6.1 अभिभावकों, परिवारों एवं समुदाय को प्रभावी संप्रेषण द्वारा संलग्न रखना

जैसा कि अभिभावक, समुदाय और परिवार तथा एसएमसी सदस्य स्कूलों के दक्षता स्तर को बढ़ाने और बच्चों के सीखने में योगदान दे सकते हैं, यह भी जानना आवश्यक है कि किस प्रकार इस सहकार्यता को जारी रखा और प्रभावी बनाया जा सकता है। स्कूल निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाकर एक परिवार-अनुकूल परिवेश का सृजन कर सकते हैं :

- स्कूल के अंदर एक परिवार या अभिभावक केंद्र विकसित करें।
- परिवारों/अभिभावकों के साथ जल्दी-जल्दी, उचित और उनके अनुकूल संवाद रखें।
- स्कूल के बाद कुछ अच्छे कार्यक्रम नियोजित करें जिनमें अभिभावक और समुदाय संगठन शामिल हों।
- शिक्षकों और परिवारों के लिए सामाजिक गतिविधियों का आयोजन करें।
- अभिभावक शिक्षा और परिवार साक्षरता कार्यक्रमों की व्यवस्था करें।

प्रारंभिक अवस्था में बच्चे अपने दिन का अधिकांश समय अपने अभिभावक या परिवार के वयस्कों की देखभाल में व्यतीत करते हैं। सभी अभिभावकों को तकनीकी आधारित (जहाँ तक संभव हो) और जीवंत मॉडल का प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। आसानी से किए जाने वाले 'स्वयं प्रयास करें' आधारित गतिविधियाँ संचालित करने में उनकी सहायता की जा सकती है। कुछ अवसरों (ईवेंट्स) की व्यवस्था करने के लिए सरपंच या किसी स्थानीय नेता की सहायता ली जा सकती है; जैसे कि खिलौने बनाना, पतंग बनाना आदि जिनमें अभिभावकों और बच्चों को आमंत्रित किया जाना चाहिए। बच्चों को स्थानीय कला, हस्तकला सीखने के अवसर दिए जाने चाहिए ताकि उनकी उनमें रुचि विकसित हो। इसी प्रकार राष्ट्रीय त्योहारों स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस पर समुदाय के स्तर पर समारोह की व्यवस्था की जा सकती है और प्री-स्कूल, आंगनवाड़ी कर्मचारी, बच्चों और उनके अभिभावकों को इन अवसरों पर प्रदर्शन करने का अवसर दिया जाना चाहिए। अभिभावकों के अनुकूल संवाद के तरीकों का प्रयोग करते हुए प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी कर्मचारियों द्वारा किया गया संवाद प्रेरक होना चाहिए।

अभिभावकों के साथ संप्रेषण के औपचारिक और अनौपचारिक तरीके

अभिभावकों और आंगनवाड़ियों के बीच संप्रेषण के बहुत से तरीके हैं - औपचारिक और अनौपचारिक। यदि संप्रेषण नियोजित है तो यह औपचारिक है। उदाहरण के लिए, अभिभावकों का अभिविन्यास कार्यक्रम, अभिभावक-शिक्षक मीटिंग (पीटीएम) या शिक्षक या अभिभावक द्वारा तय की गई कोई

मीटिंग या अन्य इसी प्रकार के अवसर। अनौपचारिक संप्रेषण तब होता है जब एक शिक्षक और अभिभावक या समुदाय का सदस्य बिना कोई योजना बनाए मिलते हैं। संप्रेषण के कुछ जाने-माने औपचारिक और अनौपचारिक तरीके निम्न प्रकार से हो सकते हैं :

संप्रेषण के अनौपचारिक तरीके

अभिभावक बच्चों को जब स्कूल छोड़ने आते हैं या स्कूल से घर ले जाने आते हैं, तब वे अनौपचारिक तरीके से लगभग प्रतिदिन स्कूल स्टाफ़ से आपसी बातचीत कर सकते हैं। कई बार शिक्षिका/शिक्षक यदि स्कूल के पास ही रहती/रहता है तो सामान्य जगहों जैसे बाज़ार या क्लीनिक आदि में अभिभावक या समुदाय सदस्य से मिलना हो जाता है, तब वे संक्षेप में स्कूल या बच्चे के बारे में बात कर सकते हैं। ऐसी आपसी बातचीत अनौपचारिक होती है। बार-बार मिलने से स्कूल, घर, समुदाय के बीच एक संवाद स्थापित हो जाता है। आपने स्वयं भी अपने जीवन में ऐसा अनुभव किया होगा।

संप्रेषण के औपचारिक तरीके

अभिभावकों से बात करते समय

- आँखों का संपर्क बनाएँ।
- अभिभावकों को धैर्यपूर्वक ध्यान से सुनें।
- उनकी भावनाओं को समझें।
- एक मैत्रीपूर्ण माहौल बना कर रखें।
- अभिभावकों को बोलने का एक अवसर दें।
- खुले प्रश्न पूछें और उनके प्रश्नों के उत्तर दें।
- सूचनाएँ/जानकारियाँ साझा करें।
- अभिभावकों के दृष्टिकोण को समझें।
- ईसीई कार्यक्रमों में स्वेच्छा से कार्य करने के लिए अभिभावकों को प्रोत्साहित करें (तरीकें सुझाएँ)।
- यकीन दिलाएँ कि उनके बच्चों की देखभाल होगी।

6.2 छोटे बच्चों की सीखने में कैसे सहायता करें - इसे जानने में अभिभावकों की सहायता करना

वीडियो देखिये

वीडियो देखने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31364491707659059214З

प्रतिलिपि

प्रो. संध्या संगई : क्या आप चाहते हैं कि आपके बच्चे बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान में उत्कृष्ट प्रदर्शन करें? वास्तव में कौन नहीं चाहता तो चलिए आज इस बात को जानने का प्रयास करें कि माता-पिता को बच्चों की शिक्षा में शामिल करने के क्या फायदे होते हैं। माता-पिता, दादा-दादी और अन्य बड़े लोगों को गतिविधियों में किस प्रकार शामिल कर सकते हैं? चलिए यदि आप वास्तव में उत्साहित हैं तो आप तुरंत पूछेंगे शिक्षक, माता-पिता को बच्चों को घर पर साक्षरता और संख्या संबंधी गतिविधियों में संलग्न रखने के लिए कैसे प्रोत्साहित कर सकते हैं? आप उन्हें यह भी सुझाव दें कि वे

किस प्रकार एफएलएन गतिविधियों को एक खेल तरीके से बच्चों को व्यस्त रखने और सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। आइए देखते हैं यह वीडियो -

(https://www.youtube.com/watch?v=A7ht7judow4&t=1s)

श्रीमान अक्षत श्रीवास्तव : हेलो बच्चों! मेरा नाम अक्षत श्रीवास्तव है। मैं नर्सरी रोज का पीएसी मेंबर हूं और काश्वी श्रीवास्तव का फादर हूं। आज मैं आपको एक स्टोरी सुनाता हूं। हमारी स्टोरी में एक एलीफेंट है और एक टेलर है। क्या होता है कि एलीफेंट जंगल से पानी पीने के लिए एक पॉण्ड (Pond) के पास आता है।

प्रो. संध्या संगई : जैसा कि आप देख चुके हैं इस वीडियो में एक पिता को दिखाया गया है जो विद्यालय की कमेटी के सदस्य हैं तथा अभिभावक भी हैं वह विद्यालय में आकर सभी बच्चों को कहानी सुना रहे हैं। आपने यह भी देखा होगा कि माता-पिता घर पर रहते हुए बच्चे के साथ कैसे बातचीत कर सकते हैं? आपको उन्हें यह विश्वास दिलाकर प्रोत्साहित करना चाहिए कि वह इसे अपनी दिनचर्या में बहुत आसानी से कैसे शामिल कर सकते हैं? आइए अब देखें कि माता-पिता घर पर आसानी से उपलब्ध घरेलू वस्तुओं का उपयोग करके बच्चों के संख्यात्मक कौशल को बढ़ाने में कैसे सहायता कर सकते हैं?

इस चर्चा में भाग लेने के लिए और अपने अनुभवों को साझा करने के लिए आज हमारे यहां पर दो अभिभावक हैं, श्रीमती ममता यादव और श्रीमती विमला पवार। ममता यादव एक माता के रूप में यहां पर है और श्रीमती विमला पवार एक दादी के रूप में यहां पर हैं। आप देखिए कि किस प्रकार से घर के सभी लोग चाहे वे माता-पिता हों या दादा-दादी हों किस प्रकार से बच्चों के साथ में लग कर उनका कौशल विकसित कर सकते हैं। एक गतिविधि मैं आपको सुझाती हूं। हम सबके घर में फल और सब्जियां होते ही हैं। उनको हम एक टोकरे में रख सकते हैं जैसे कि हमने इसमें रखा। इसमें कुछ फल हैं और कुछ सब्जियां हैं जैसे केला, जैसे प्याज़, जैसे टमाटर, जैसे आलू, यह सब चीजें क्या हैं जो हम सबके घर में उपलब्ध होती हैं। आपने मिला जुलाकर इसको एक टोकरी में रख दिया। अब आपने बच्चों से कहा कि इसमें से ज़रा फल और सब्जियां अलग करिए पहली बात। फिर आपने यह कहा अच्छा बताओ कितने केले हैं, तो इस प्रकार से यह एक बड़ी छोटी सी एक्टिविटी है। इससे क्या होगा कि बच्चों को वर्गीकरण का अंदाजा होगा कि वह फल को अलग कर सकेंगे, सब्जियों को अलग कर सकेंगे। किस बेसिस पर कि यह फल है और यह सब्जी है। यह एक वर्गीकरण कौशल है और इससे पहले कि हम औपचारिक रूप से गणित को समझें यह वाला कॉन्सेप्ट बच्चों को समझना जरूरी है और यह उनके लिए महत्वपूर्ण होगा। क्यों ममता?

श्रीमती ममता : बिल्कुल ठीक कहा मैम आपने। इसी प्रकार की गतिविधियां मैं भी अपनी बिटिया के साथ करती हूं। वह कक्षा पहली में है। इस प्रकार की गतिविधियों का साझा करते समय हम टॉफी बिस्किट्स की गिनती जैसी गतिविधियां कर लेते हैं। लेकिन आपने ठीक ही समझाया कि इस प्रकार की गतिविधियों को करते समय सक्रिय रूप से सीखने और एफएलएन कौशल वृद्धि को उपयोग में किया जा सकता है।

प्रो. संध्या संगई : आप क्या सोचती हैं विमला।

श्रीमती विमला : हाँ! ठीक है मैम।

प्रो. संध्या संगई : आप इस बात से सहमत हैं?

श्रीमती विमला : बिल्कुल

प्रो. संध्या संगई : अब हम दूसरी चीज़ यह देखेंगे कि क्या हम संख्यात्मक ज्ञान और साक्षरता को जोड़कर चल सकते हैं?

श्रीमती विमला : बिल्कुल

श्रीमती ममता : जी हां बिल्कुल

प्रो. संध्या संगई : बच्चो को संख्या ज्ञान देते समय हम साथ-साथ साक्षरता को भी बढ़ावा दे सकते हैं। हम कुछ ऐसी एक्टिविटीज कर सकते हैं जिसमें संख्यात्मक कौशल और साक्षरता कौशल को जोड़ा जा सके। यहां पर एक बात मैं आप सब से कहना चाहूंगी वह यह है कि आप इस बात को ज़रूर ध्यान रखें कि छोटे बच्चों का अंतराल समय का अंतराल जो उनके सोचने का होता है जिसको हम अटेंशन स्पैन कहते हैं वह बहुत छोटा होता है। उनको बहुत लंबे समय तक हम किसी एक काम में लगाकर नहीं रख सकते हैं। तो इसलिए यह ज़रूरी है कि हम गतिविधियों में कुछ वेरियेशन दें, कुछ बदलाव करते रहे या फिर हम बीच-बीच में उनको ब्रेक देते रहें, बीच-बीच में हम उनको गतिविधि से बोर ना होने दें, हम किसी भी समय ऐसा ना करें कि बच्चों को उन गतिविधियों को करने में दबाव का महसूस हो, आप बताएं विमला आप क्या कहेंगी।

श्रीमती विमला : क्योंकि मेरे घर में मेरा पोता है। वो किचन में मेरे पीछे आ जाता है और वह अक्सर मेरे साथ टोकरी से सब्जियां और फल वगैरह, वह मुझे लाकर देता है और सर्व करने के बर्तन जो है वह भी मुझे उठा कर देता है, मेरी मदद करता है लेकिन मैं उसको वो चीज़ संख्या में कुछ लाने को बोलती हूँ जैसे 5 गिलास ले आओ, 3 प्याज ले आओ और 4 टमाटर ले आओ। तो वह मेरी मदद करता है और वह मुझे अच्छा लगता है, हम एंजॉय करते हैं दोनों बहुत।

प्रो. संध्या संगई : बहुत अच्छा लगा सुनकर यह सब। ऐसी कई गतिविधियां है जिनको सीखने में बच्चों को आनंद आता है और इस प्रकार से सीखने में आनंद आने से बच्चों का जो ज्ञान कौशल होता है वो और अच्छे से विकसित होता है। शिक्षक माता-पिता को सुझा सकते हैं। जैसे कि वो बच्चों से कहें कि खाने के समय परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए एक सेब रख दे। सेब के स्थान पर कोई भी फल हो सकता है और इसी प्रकार से वह उनसे यह भी कह सकते हैं कि हम घर के जितने भी सदस्य हैं, उन सब के लिए एक-एक प्लेट एक-एक चम्मच कुछ इस तरह से लाएं। तो इस तरह की गतिविधियां बच्चों की संख्या की अवधारणा और गिनती विकसित करने में मदद करेंगी। इस तरह की बहुत सारी चीज़े हो सकती है उदाहरण के लिए प्रत्येक सदस्य के लिए कोई भी चीज़ मान लीजिए हमने कहा एक रसगुल्ला ले आइए या हमने उनसे कहा कि प्रत्येक सदस्य को सामने आखिर में एक बाउल (Bowl) रख दीजिए जिसमें कि वह अपने हाथ धो सकें, तो ये सब बच्चों को लगाए रखने के लिए छोटी-छोटी चीज़े होती हैं जिनसे कि बच्चों का एक तो संख्या ज्ञान बढ़ता है, एक साक्षरता भी उनकी साथ-साथ

में बढ़ती है। अच्छा ममता और विमला क्या आप इस बात से सहमत हैं कि हमें गतिविधियां कुछ इस प्रकार से करनी चाहिए कि बच्चों का जो संख्यात्मक कौशल है मतलब जो गणित से संबंधित है जैसे कि आपने गिनती की बात की और जो साक्षरता कौशल है जिसमें कि हम पढ़ना, लिखना, बोलना, नए शब्द सीखना इन बातों को करते हैं कि हम इन सब को ज्वाइन कर सके। क्या हमें एक ऐसी एक्टिविटी करनी चाहिए?

श्रीमती ममता : जी हाँ! बिल्कुल।

श्रीमती विमला : जी

प्रो. संध्या संगई : अब हमें धीरे-धीरे समझ आ रहा है कि बच्चों की सीखने में रुचि किस प्रकार पैदा की जा सकती है? हम वस्तुओं की मदद से उन्हें कुछ कठिन अवधारणाएं जैसे अधिक संख्या, जोड़ और घटाव समझाने की कोशिश भी कर सकते हैं। मेरे प्रिय शिक्षकों यहाँ मैं कहूँगी कि माता-पिता को किसी भी गतिविधि के बारे में सोचने तथा साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। आपको उनके साथ ढेर सारे व्यावहारिक विचार साझा करने चाहिए। आइए अब छोटे बच्चे की शिक्षा के लिए माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को शामिल करने के संभावित लाभों पर विचार करें। चलिए आप इस बात से तो सहमत होंगे ना कि बच्चों के साथ सहज रूप से बात करने से उनके शब्द ज्ञान और शब्दावली में वृद्धि होगी। वे नए शब्द और उनका उपयोग सीखेंगे और यह ज्ञान उनके संचार कौशल को भी मज़बूत करेगा और खुद को व्यक्त करने के लिए उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाएगा। क्यों विमला?

श्रीमती विमला : जी मैम। हाँ! बिलकुल। जैसे बच्चा घर में हम बातचीत की भाषा करते है तो वो सब ज़्यादा सीखता है और जब हम उन्हें नए शब्द सिखाते है तो जल्दी से सीख लेता है और फिर स्कूल में वो नई शब्दावली लेकर के प्रवेश पाता है।

प्रो. संध्या संगई : वैरी गुड

श्रीमती ममता : मैडम मेरी बिटिया को चित्रकथा की किताबें पसंद है तो क्या आप मुझे कहानी पढ़ने का सही तरीका बता सकते हैं।

प्रो. संध्या संगई : आपने बहुत अच्छी बात पूछी ममता। हमारे पास कहानी की किताबें तो बहुत होती हैं लेकिन फिर भी हम छोटे बच्चों को अच्छा होगा कि ये बतायें कि कहानी की किताब किस प्रकार से पढ़नी चाहिए। मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ। देखो मेरे पास भी एक कहानी की किताब है जो कि छोटे बच्चों के मतलब की ही है। ठीक है, तो जब आप उनको ये किताब दिखाते हैं या कहानी सुनाते हैं तो सबसे पहले आप उसको ये कवर पेज दिखाइए ताकि बच्चा ध्यान से देखे कि उस किताब में क्या हो सकता है। उसके बाद आप उसको खोलते हैं फिर आप उसको ऐसे बोलते हैं 'म' 'द' 'न' मदन तो आप जब पढ़ रहे होते हैं तो जो प्रिंट होता है उसके नीचे आप अपनी तरजनी को रखते है। जिससे बच्चे को यह पता लगता है कि जब वह पढ़ेगा तो उसको लेफ्ट टू राइट जाना है और जब वो इसके साथ-साथ चलेगा तो उसको शब्द ज्ञान भी होगा। तो यह एक कहानी की किताब पढ़ने का एक उचित तरीका है।

श्रीमती विमला : अच्छा मैडम जब हम बच्चे के लिए कोई कहानी की किताब खरीदते हैं तो किन

बातों का ध्यान रखना चाहिए?

प्रो. संध्या संगई : ठीक है विमला। यहाँ आप शिक्षकों कों अभिभावकों को यह बताना होगा कि उनके द्वारा चुनी गई कहानी की किताब उम्र के अनुकूल होनी चाहिए। उसमें चित्र, बोल्ड प्रिंट, बड़ा फोंट होना चाहिए और एक पेज़ पर दो या तीन पंक्तियों से अधिक नहीं होनी चाहिए। माता-पिता को बच्चों के साथ अपनी दैनिक बातचीत में नए शब्दो का उपयोग करने के लिए भी शिक्षकों को उन्हें निर्देशित करना चाहिए।

श्रीमती ममता : मैडम साक्षरता से संबंधित गतिविधियां आपने बहुत अच्छे से समझाई लेकिन क्या आप गणित से संबंधित कुछ गतिविधियां हमें बता सकती हैं।

प्रो. संध्या संगई : अच्छा है कि आप लोगों ने कुछ दिलचस्पी लेनी शुरू की है। जो आपने पूछा वह भी बहुत आसान है। आप बच्चों को रसोई के बर्तनों की गिनती करने के लिए या उन्हें किसी भी आकार, रंग आदि के आधार पर वर्गीकृत करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं जैसे जब बच्चे रसोई में आते हैं तो आप उनको कुछ जैसे जैसे ये टिफ़िन दिखा सकते है। जिसमें आप उनको ये बता सकते है कि विमला आप बताओ कि गोल क्या होता है? ये गोल होता है। चौकोर क्या होता है? तो इस तरह जो आपके पास रसोई में टिफ़िन रखे हुए हैं उनके आधार पर आपने बच्चों को आकार के बारे में एक जानकारी दी। तो आप बच्चों का ध्यान शेप्स की तरफ आकर्षित कर सकते हैं और इसी तरह संख्या के बहुत से खेल आप कर सकते हो। बच्चों के साथ आप कुछ नंबर से रिलेटेड गाने भी गा सकते हो, जैसे आजकल बहुत तरीके के गाने चले हुए हैं। विमला आप कोई कविता सुनाना चाहेंगी?

श्रीमती विमला : हाँ बिल्कुल सुना सकती हूं मैम।

प्रो. संध्या संगई : बताइये

श्रीमती विमला : जैसे बच्चे को, मैं अपने पोते को कराती रहती हूँ

एक एक एक है नाक हमारी एक
दो दो दो है कान हमारे दो, है आँख हमारी दो
तीन तीन तीन रिक्शे के पहिये तीन
तीन तीन तीन रिक्शे के पहिये तीन
चार चार चार घोड़े की टाँगे चार
चार चार चार घोड़े की टाँगे चार
पाँच पाँच पाँच हाथ में ऊँगली पाँच
पाँच पाँच पाँच हाथ में ऊँगली पाँच

वो अक्सर मेरे साथ खेलता है और मैं उसको कराती रहती हूँ ये सब।

प्रो. संध्या संगई : बहुत अच्छा। मुझे उम्मीद है आपका पोता खूब मज़े लेता होगा। प्यारे शिक्षकों आपने देखा कि किस प्रकार से घर में हम बच्चों को मज़े-मज़े में सिखा सकते हैं। यहाँ मैं एक बात और कहना चाहूँगी कि क्यों ना हम ऐसे लोगों को अपनी कक्षा कक्ष तक लायें, जहाँ पर उनके इस कौशल

का लाभ न केवल उनके पोते को बल्कि आपकी कक्षा में बैठे हुए अन्य बच्चों को भी मिले। यह एक बहुत ही अच्छी साझेदारी होगी।

श्रीमती ममता : लेकिन मैडम क्या यह संभव है कि छोटे-छोटे अंतराल पर हमें शिक्षकों का मार्गदर्शन मिलता रहे? मुझे लगता है ये बहुत ही उपयोगी होगा।

प्रो. संध्या संगई : आप सही कह रही हैं। यहाँ मैं सुझाव देना चाहूँगी कि शिक्षकों को साप्ताहिक और मासिक गतिविधियों के लिए घर पर संचार पत्र भेजने की योजना बनानी चाहिए। ऐसी गतिविधियां जो माता-पिता द्वारा घर पर बिना किसी कठिनाई के की जा सकती हैं। याद रखें कि गतिविधियों को उम्र उपयुक्त अवधारणाओं से जोड़ा जाना चाहिए। मुझे लगता है कि अब आप इस बात से सहमत होंगे कि पढ़ना और संख्याओं की खोजपूर्ण जानकारी के लिए रूचि घर से ही शुरू होती है और इसे सरल आकर्षित कार्यों को करके और बढ़ाया जा सकता है जैसा कि हमने अभी देखा है, कृपया कोशिश करें और बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी रचनात्मकता को गतिविधियों से जोड़े।

6.3 गतिविधि 5 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31364067145316761613014

6.4 अतिरिक्त गतिविधि : अभिभावक-शिक्षक मीटिंग (PTM) - संप्रेषण के सशक्त तरीके के रूप में

इन बिंदुओं पर संरचनात्मक तरीके से विचार करें : प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी कब-कब पीटीएम का आयोजन करती हैं? अक्सर अभिभावकों के साथ किस प्रकार की चर्चा की जाती है? क्या आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों/शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे खोजें कि किस तरह वे अभिभावकों और स्कूलों को प्रभावी ढंग से कार्य करने में सबसे अच्छे तरीके से सहायता कर सकते हैं। आपके विचार में क्या उन्होंने अभिभावकों की सामान्य चिंताओं के बारे में सोचने का प्रयास किया है और उनकी या केंद्र की ओर से क्या समाधान हो सकते हैं? इन प्रश्नों पर सृजनात्मक ढंग से समस्या-समाधान दृष्टिकोण से विचार करें और अपने विचारों को साझा करें।

••• मॉड्यूल 7 •••

घर पर सीखने की गतिविधियां

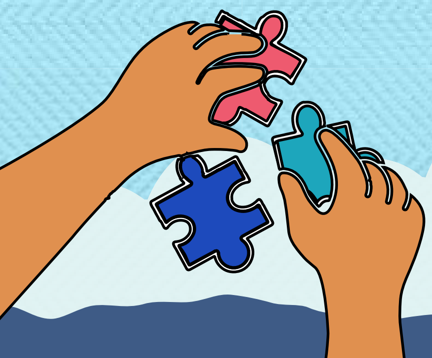

मॉड्यूल 7 : घर पर सीखने की गतिविधियां

7.1 अभिभावकों और परिवारों द्वारा घर पर सीखने में सहायता करने वाली गतिविधियाँ

जैसा कि बच्चे अपने समय का अधिकांश भाग अपने अभिभावकों, भाई-बहनों, दादा-दादी या अन्य वयस्कों के साथ बिताते हैं, हितधारकों की यह श्रेणी छोटे बच्चों को घर आधारित उपयुक्त सहायता प्रदान करके महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है। नीचे कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं जिनसे परिवार और पड़ोस की सहभागिता का पूरा दृश्य ही बदल सकती हैं।

मूलभूत साक्षरता (FL) से संबंधित गतिविधियाँ

- ***घर के परिवेश को मुद्रण समृद्ध बनाना***

  एक मुद्रण समृद्ध परिवेश छोटे बच्चों के लिए मुद्रण से अंत:क्रिया करने के अनेक अवसर प्रदान करता है। घर के विभिन्न भागों को लेबल करने जैसे कमरे, शौचालय, रसोईघर और दरवाज़े आदि, अभिभावक इस प्रकार के परिवेश का सृजन कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों के नाम चित्र सहित एक एल्बम या पेपरबोर्ड पर लगाए जा सकते हैं। रसोई घर के डिब्बों, कूड़ेदान, वॉशबेसिन घर की कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो घर को मुद्रण समृद्ध बनाने में सहायता कर सकती हैं। भाषा और साक्षरता विकास के लिए जैसे भी संभव हो घर में 'पढ़ने का कोना' बनाया जाना चाहिए।

- ***गीत और कविताओं को उच्च स्वर से पढ़ना***

  उच्च स्वर से पठन एक सरल गतिविधि है जिसमें अभिभावक या वयस्क किसी पुस्तक से एक रोचक कहानी चुन सकते हैं और उसे बच्चों को पढ़कर सुना सकते हैं। आवाज़ का उतार-चढ़ाव और सुर में विभिन्नता बच्चों का ध्यान आकर्षित करती है और रुचि पैदा करती है। कहानी पढ़ने के दौरान बच्चों को प्रश्न पूछने और टिप्पणी करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सस्वर पढ़ने से बच्चों में धीरे-धीरे श्रवण और बोधन कौशलों का विकास होता है। बच्चों को कहानी के बारे में किसी भी तरह बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए - कहानी को आगे बढ़ाएँ, कहानी के पात्रों में बदलाव, नया पात्र जोड़ना या स्वयं अपनी कहानी बनाना। कहानियों के साथ-साथ बच्चों को कविताएँ और गीत सुनने और गाने में आनंद आता है।

- ***मुक्त बातचीत***

  बच्चों को सामान्यतया बातें करना और अनायास बोल पड़ना बहुत पसंद होता है। बच्चों की इस आदत का उनके शब्द भंडार के विकास तथा शब्दों के सही उच्चारण और प्रयोग को जाँचने के अवसर के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्हें व्यस्त करते समय उनकी आयु और विकास का ध्यान रखें। बच्चों को अपने प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी के अनुभवों को मज़ेदार ढंग से साझा करने

के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे उनकी मौखिक भाषा विकसित होती है और साथ ही अभिभावकों को उनके प्री-स्कूल अनुभवों के बारे में पता चलता है।

गणितीय सोच को उत्प्रेरित करने के अवसर

छोटे बच्चों को उनके आसपास के परिवेश में ऐसे अधिक-से-अधिक अवसर दिए जाने चाहिए जिनमें गणितीय सोच लागू होती हो। ऐसी कितनी ही स्थितियाँ अनौपचारिक रूप से सृजित की जा सकती है जो स्कूल में बच्चों के सीखने में सहायक हो सकती हैं, उदाहरण के लिए गिनती गिनने, जोड़ने, घटाने आदि से संबंधित गतिविधियाँ। अभिभावक को ऐसी कुछ गतिविधियों को घर पर बनाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकत्री भी उनका मार्गदर्शन कर सकता है।

हस्तकौशलीय (हेर-फ़ेर) सामग्री और स्थानीय खिलौनों का प्रयोग

अनुभवात्मक अधिगम और ठोस सामग्री के माध्यम से सीखना इसी अवस्था में सबसे अधिक कारगर रणनीति है। बच्चों को अपने खोजी तरीके से गणित सीखने के लिए प्रेरित करने को अभिभावक स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री और खिलौने ढूँढ़ सकते हैं जो हानिकारक न हों। स्थानीय मेलों में बहुत से ऐसे खिलौने बिकते हैं। कई बार अभिभावक भी कागज़ और मिट्टी के खिलौने बनाते हैं। यदि वे बच्चों को भी इस काम में शामिल करें और उन्हें अपने खिलौने और चीज़ें बनाने दें तो इससे न केवल बच्चों के सृजनात्मक कौशलों का विकास होगा बल्कि उन्हें अनुपात, स्थानिक और आकृति/आकार अवधारणाओं की समझ होगी। इससे सूक्ष्म तरीके से उनकी गणितीय अवधारणाओं के विकास में सहायता होगी।

इसे स्वयं करें

घरों में उपलब्ध वस्तुओं और खिलौनों जैसे बोतल के ढक्कन, आकृति के कट आउट्स, बटन, विभिन्न डिज़ाइन के कपड़े के टुकड़े, कलेंडर्स, ब्लॉक्स आदि का प्रयोग करते हुए आप अपने बच्चों के लिए कौन-सी विशेष गतिविधियाँ बना सकते हैं? इन गतिविधियों में आप अभिभावकों/परिवारों को कैसे शामिल करेंगे? सोचें और अपने कुछ विचार अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए साझा करें।

7.2 गतिविधि 5 : अपनी समझ की जाँच करें

गतिविधि पूर्ण करने हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें।

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31364068530792038413034

सारांश

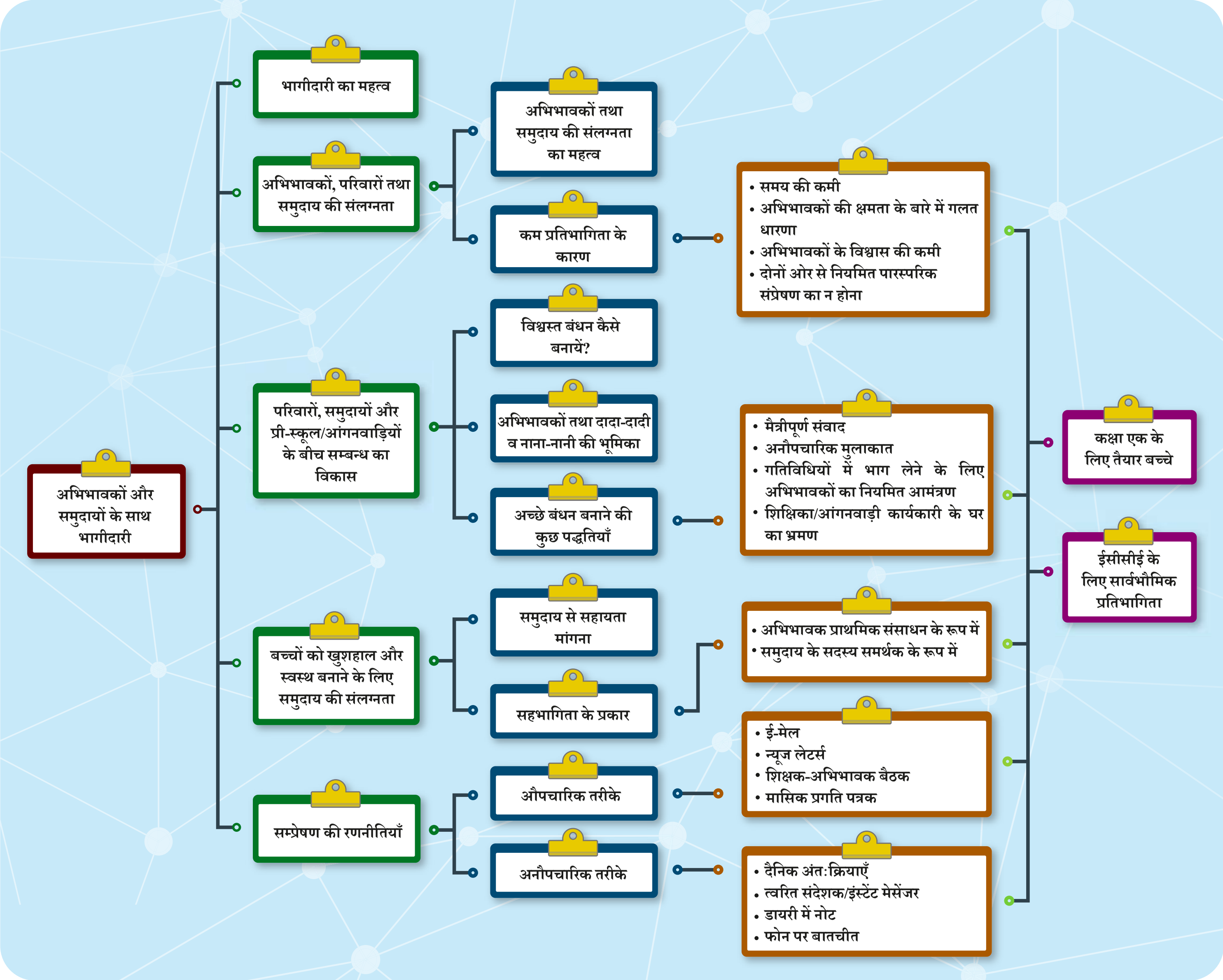
अभिभावकों और समुदायों के साथ भागीदारी
भागीदारी का महत्व
अभिभावकों, परिवारों तथा समुदाय की संलग्नता
अभिभावकों तथा समुदाय की संलग्नता का महत्व
कम प्रतिभागिता के कारण
• समय की कमी
• अभिभावकों की क्षमता के बारे में गलत धारणा
• अभिभावकों के विश्वास की कमी
• दोनों ओर से नियमित पारस्परिक संप्रेषण का न होना
परिवारों, समुदायों और प्री-स्कूल/आंगनवाड़ियों के बीच सम्बन्ध का विकास
विश्वस्त बंधन कैसे बनायें?
अभिभावकों तथा दादा-दादी व नाना-नानी की भूमिका
अच्छे बंधन बनाने की कुछ पद्धतियाँ
• मैत्रीपूर्ण संवाद
• अनौपचारिक मुलाकात
• गतिविधियों में भाग लेने के लिए अभिभावकों का नियमित आमंत्रण
• शिक्षिका/आंगनवाड़ी कार्यकारी के घर का भ्रमण
बच्चों को खुशहाल और स्वस्थ बनाने के लिए समुदाय की संलग्नता
समुदाय से सहायता मांगना
सहभागिता के प्रकार
• अभिभावक प्राथमिक संसाधन के रूप में
• समुदाय के सदस्य समर्थक के रूप में
सम्प्रेषण की रणनीतियाँ
औपचारिक तरीके
• ई-मेल
• न्यूज लेटर्स
• शिक्षक-अभिभावक बैठक
• मासिक प्रगति पत्रक
अनौपचारिक तरीके
• दैनिक अंत:क्रियाएँ
• त्वरित संदेशक/इंस्टेंट मेसेंजर
• डायरी में नोट
• फोन पर बातचीत
कक्षा एक के लिए तैयार बच्चे
ईसीसीई के लिए सार्वभौमिक प्रतिभागिता

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

अभिभावकों के अभिन्यास कार्यक्रम के लिए एक अनुसूची विकसित करें जो स्कूल और बच्चों के सर्वांगीण विकास की गतिविधियों में उनकी रूचि की खोज पर फोकस करती हो। उनके लिए डीआईवाई गतिविधियों और उन विचारों को जो आप सुझावित करें चिह्नित करें।

अंतराल के दौरान नीरसता को तोड़ने के लिए कुछ अभ्यास सोचें और फिर नीचे दिए गए ब्योरे को भरें :

- अवधारणा/विषय :
- उपविषय, यदि है तो :
- ग्रेड : बालवाटिका/कक्षा I-III :
- उद्देश्य :
- पूर्वापेक्षित ज्ञान/कौशल :
- अधिगम सामग्री और तैयारियाँ :
- मुख्य विचार/विषयवस्तु कवरेज :
- पूर्व ज्ञान :
- प्रारंभिक सीखने के प्रतिफल :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- नेशनल काउंसिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, विद्या प्रवेश-थ्री मंथ प्ले बेस्ड स्कूल प्रीपरेशन माड्यूल फॉर ग्रेड 1, न्यू दिल्ली, 2022
- नेशलन काउंसिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, गाइड लाइंस फॉर प्री-स्कूल एजूकेशन, नई दिल्ली, 2019
- एनसीईआरटी, द प्री-स्कूल करिकुलम, नई दिल्ली, 2019
- एनसीईआरटी, (2017) एव्री चाइल्ड मैटर्स, ए हैंडबुक फॉर ई सी ई प्रेक्टीशनर्स
- एनसीईआरटी, यंग चिल्ड्रेन इन मोशन, नई दिल्ली, 2016
- एनसीईआरटी, स्मूथ एंड सक्सेसफुल ट्रांजीशन्स, नई दिल्ली (2017)
- ईप्सटीन जायस बी, सेंडर्स माविस जी, साइमन बेथ एस, सलिना केरेन क्लार्क, जनसार्न नटाले राड्रिग्ज, बूरिज फ्रांसेस एल वान (2002) स्कूल, फैमिली एंड कम्यूनिटी पार्टनरशिप्स - यॉर हैंडबुक फॉर एक्शन, कार्विन प्रेस, आई एन सी थाउसेंड ओक्स, केलिफोर्निया, एसेज पब्लिकेशन्स कंपनी

वेब लिंक

- हाऊ टू एंगेज प्री-स्कूल चिल्ड्रेन एट होम?
  https://www.youtube.com/watch?v=EN12s4_8Tjw
- पिक्चर रीडिंग एंड मेचड्स ऑफ स्टोरीटेलिंग -
  https://www.youtube.com/watch?v=fS1Br0QjhPw
- अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजूकेशन (हिन्दी वीडियो) -
  https://www.youtube.com/watch?v=tQ14uLumU4c&t=6s
- प्री-स्कूल एजूकेशन (हिंदी वीडियो) -
  https://www.youtube.com/watch?v=0GPBUPua7wk&t=61s
- हाऊ चिल्ड्रेन लर्न/पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चे कैसे सीखते हैं (हिन्दी वीडियो) -
  https://www.youtube.com/watch?v=DELWLVysuTk&t=1310s
- होम बेस्ड फिजीकल एक्टीविटीज फॉर चिल्ड्रेन (हिंदी वीडियो) -
  https://www.youtube.com/watch?v=U_o17QaVrO8&t=264s
- नरचरिंग इमेजीनेशन इन प्री-स्कूल चिल्ड्रेन क्लास - प्री प्राइमरी (हिंदी वीडियो) -
  https://www.youtube.com/watch?v=7ex4fvYF8m8

- साइज एंड सीरिएशन फॉर फाउंडेशनल न्यूमेरेसी -
  https://www.youtube.com/watch?v=mORwL-ZPJ6g
- वन टू वन कॉरेस्पॉन्डेंस क्लास : प्री प्राइमरी -
  https://www.youtube.com/watch?v=A-ZvzhKczRQ
- हाऊ कैन पेरेंट्स सपोर्ट देयर यंग चिल्ड्रेन्स अर्ली लर्निंग एट होम -
  https://ncert.nic.in/dee/pdf/booklet_for_Parents.pdf
- क्लासीफिकेशन एक्टीविटी फॉर प्री-स्कूल एंड क्लास -
  https://www.youtube.com/watch?v=48dnjqXTZHY&t=20s
- प्रीनंबर कांसेप्ट (साइज एंड सीरिएशन) फॉर प्री-स्कूल एजूकेशन एंड क्लास : प्राइमरी -
  https://www.youtube.com/watch?v=mORwL-ZPJ6g
- गाइडेड कन्वर्सेशन : मी एंड माय सेल्फ फॉर प्री-स्कूल चिल्ड्रेन -
  https://www.youtube.com/watch?v=fWs-e7p3XWU

निष्ठा (ईसीसीई)

शिक्षा के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों और स्कूल प्रमुखों के लिए एक एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम

कोर्स 05

स्कूल के लिए तैयारी

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली - 110016

अनुक्रमणिका

- **कोर्स की जानकारी**
  - कोर्स का विवरण
  - मुख्य शब्द
  - उद्देश्य
  - कोर्स की रूपरेखा
- **1. स्कूल के लिए तैयारी का परिचय**
  - 1.1 स्कूल के लिए तैयारी की आवश्यकता
  - 1.2 जीवन के प्रारंभिक वर्षों और महत्वपूर्ण अवधियों का महत्व
  - 1.3 गतिविधि 1 : स्वयं करें
- **2. स्कूल के लिए तैयारी का महत्व और इसके आयाम**
  - 2.1 सीखने का संकट और स्कूल के लिए तैयारी
  - 2.2 गतिविधि 2 : विचार करें
  - 2.3 स्कूल के लिए तैयारी क्या निर्धारित करती है?
  - 2.4 स्कूल के लिए तैयारी की परिभाषा
  - 2.5 गतिविधि 3 : स्वयं करें
  - 2.6 स्कूल के लिए तैयारी क्यों महत्वपूर्ण है?
  - 2.7 गतिविधि 4 : अपनी समझ की जाँच करें
- **3. स्कूल के लिए तैयारी के आयाम**
  - 3.1 स्कूल के लिए तैयारी के तीन आयाम
  - 3.2 आयाम 1 : स्कूल के लिए बच्चों की तैयारी
  - 3.3 गतिविधि 5 : अपनी समझ की जाँच करें
  - 3.4 बच्चों में तत्परता विकसित करने के लिए गतिविधियां
  - 3.5 आयाम 2 : परिवार की तैयारी
  - 3.6 माता-पिता की तैयारी के लिए सुझाव
  - 3.7 आयाम 3 : बच्चों के लिए स्कूल की तैयारी
  - 3.8 गतिविधि 6 : अपने विचार करें
  - 3.9 स्कूल के लिए तैयारी का आकलन

- **सारांश**
- **पोर्टफोलियो गतिविधि**
  - » असाइनमेंट
- **अतिरिक्त संसाधन**
  - » संदर्भ
  - » वेब लिंक

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

यह कोर्स स्कूल के लिए तैयारी की अवधारणा पर प्रकाश डालता है, इसके महत्व का वर्णन करता है और भविष्य के सभी विकास और सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि के रूप में प्रारंभिक वर्षों के महत्व पर प्रकाश डालता है। यह स्कूलों, परिवारों और समुदायों को स्कूल के लिए तैयार करने की आवश्यकता और महत्व का वर्णन भी करता है।

मुख्य शब्द

NISHTHAECCE, SCHOOL READINESS, VIDYA PRAVESH, READY SCHOOLS, READY FAMILIES, COMMUNITIES, HOLISTIC DEVELOPMENT, ECCE

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- स्कूल के लिए तैयारी को परिभाषित करना।
- स्कूल के लिए तैयारी के महत्व का वर्णन करना।
- महत्वपूर्ण अवधियों के रूप में प्रारंभिक वर्षों के महत्व की समझ को प्रदर्शित करना।
- भारतीय संदर्भ में ई.सी.सी.ई और स्कूल के लिए तैयारी का वर्णन करना।
- बच्चों, स्कूल, परिवार और समुदाय को स्कूल के लिए तैयार करने की आवश्यकता एवं महत्व का वर्णन करना।

कोर्स की रूपरेखा

- स्कूल के लिए तैयारी की अवधारणा।
- स्कूल के लिए तैयारी की आवश्यकता।
- जीवन के प्रारंभिक वर्षों और महत्वपूर्ण अवधियों का महत्व।
- स्कूल के लिए तैयारी का महत्व।
- स्कूल के लिए तैयारी के आयाम।

••• मॉड्यूल 1 •••

स्कूल के लिए तैयारी का परिचय

मॉड्यूल 1 : स्कूल के लिए तैयारी का परिचय

1.1 स्कूल के लिए तैयारी की आवश्यकता

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_3137122989046824961296

प्रतिलिपि

नमस्कार!,

प्रिय साथियों स्वागत है। प्रत्येक बच्चा जन्म से ही खुद को नये वातावरण के अनुकूल ढालने और सीखने के लिए तैयार होता है। बच्चे स्कूल में प्रवेश करने से पहले ही चलना-फिरना, बोलना, सुनना, दूसरों के साथ बातचीत करना, वस्तुओं में जोड़-तोड़ करना, खेलना और तलाशना, अपनी पसंद को व्यक्त करना आदि सीख चुके होते हैं। जीवन की शुरुआत से ही मनुष्य न्यूरोजैविक यानी न्यूरोबायोलॉजिकल रूप से सीखने की तैयारी से जुड़ा हुआ है। जीवन के शुरुआती वर्षों में मिलने वाले अनुभव और अवसर इस बात की नींव रखेंगे कि बच्चे अकादमिक और स्कूली जीवन सहित अपने जीवन के अगले चरण में कैसे और क्या सीखते हैं। स्कूली परिस्थितियों में बच्चों को सफलतापूर्वक सीखने के लिये तैयार करने में ये प्रारंभिक वर्षों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अध्ययनों से पता चलता है कि जिन बच्चों की स्कूल की तैयारी ठीक नहीं होती उनकी अकादमिक उपलब्धि कम होने की संभावना अधिक होती है। स्कूल के लिए तैयारी न केवल बच्चों के लिए बल्कि नीति निर्माताओं, शिक्षकों, माता-पिता और समुदाय के लिए भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। परंपरागत रूप से यह माना जाता था कि बच्चे तब स्कूल के लिए तैयार होते हैं जब उनमें परिपक्वता आती है या वह एक आयु विशेष में पहुंचते हैं। बच्चे को स्कूल के लिए तब तैयार माना जाता था, जब उसने विकासात्मक उपलब्धियों के कुछ स्तर प्रदर्शित किये हों। परन्तु यह दृष्टिकोण तैयारी का एक सीमित दृष्टिकोण दर्शाता है जिसके अनुसार बच्चे की आवश्यकताओं को

पूरा करने के लिए तैयार होने में माता-पिता, स्कूल और समुदाय की कोई भूमिका नहीं होती है। स्कूल के लिए तैयारी के अंतर्गत न केवल शैक्षिक रूप से संचालित कौशल आते हैं अपितु विकासात्मक कौशल भी एक विस्तृत भूमिका निभाते हैं। स्कूल की तैयारी के तीन प्रमुख घटक हैं - बच्चों की तैयारी, परिवार की तैयारी और स्कूल की तैयारी। प्रारंभिक विकास के दौरान बच्चों के अनुभव उन्हें भविष्य में सीखने के लिए तैयार करते हैं। जब बच्चों को शुरुआती अनुभव प्रदान किये जाते हैं, तब बच्चे बेहतर या प्रभावी रूप से सीखते हैं और जीवन में कठिनाइयों से उबरने की क्षमता का विकास भी कर पाते हैं और इस प्रकार वे अनुभव व कौशल बच्चों के लिए सुसंगत, विकासात्मक रूप से मजबूत और भावनात्मक रूप से सहायक होते हैं। जब बच्चे विभिन्न सन्दर्भों और पृष्ठभूमि से स्कूल में प्रवेश करते हैं तो उन्हें अपनी गति से सीखने के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता होती है। इसलिए स्कूल के लिए तैयारी माता-पिता, शिक्षकों और नीति-निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। उन्हें यह जानने की ज़रूरत है कि बच्चा स्कूल में प्रवेश के लिए कब तैयार होगा और बच्चे स्कूल के लिए कैसे तैयार हो सकते हैं। इस कोर्स का उद्देश्य स्कूल के लिए तैयारी की अवधारणा, जीवन के प्रारंभिक वर्षों के महत्व तथा महत्वपूर्ण अवधियों के साथ-साथ प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के महत्व की व्याख्या करना है। यह बच्चों में स्कूल के लिए तैयारी के विभिन्न आयामों और माता-पिता और स्कूलों द्वारा किए जाने वाले कार्यों के बारे में भी चर्चा करता है। यह कोर्स इस बात पर भी प्रकाश डालेगा कि कैसे बच्चे, माता-पिता , परिवार और समुदाय मिल कर काम कर सकते हैं ताकि बच्चों के समग्र विकास और आजीवन सीखने के लिए अनुभव प्रदान कराए जा सकें।

1.2 जीवन के प्रारंभिक वर्षों और महत्वपूर्ण अवधियों का महत्व

प्रारंभिक बाल्यावस्था, जन्म से आठ वर्ष तक की आयु वृद्धि, विकास तथा सीखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण अवधि होती है। स्नायु विज्ञान (न्यूरो साइंस) के अनुसार बच्चे के मस्तिष्क का 90% से अधिक संचयी विकास 6 वर्ष की आयु से पहले ही हो जाता है। यह इस बात को दर्शाता है कि निरंतर और स्वस्थ मस्तिष्क के विकास एवं वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए, बच्चों के शुरुआती वर्षों में मस्तिष्क की विकासात्मक रूप से उचित देखभाल और उद्दीपन (स्टिमुलेशन) बहुत महत्वपूर्ण है। (हास्टेन जोन एंड जॉनसन, (2016), शैंकॉफ (2009), डोहर्टी, 1997) संबंधों में प्रतिक्रियात्मक समझ और भाषा समृद्ध अनुभव बच्चों को भविष्य की सफलताओं के लिए सहायता प्रदान करते हैं (नेशनल साइंटिफिक काउंसिल ऑन द डेवलपिंग चाइल्ड, 2020)।

इसलिए जीवन के पहले 6 वर्षों को बच्चे के विकास के लिए 'महत्वपूर्ण अवधि' माना जाता है। इस आयु में बच्चा उचित उद्दीपन पर प्रतिक्रिया देने के लिए 'जैविक (बायोलॉजिकल) रूप से सक्षम' होता है जो कि अधिक उन्नत तंत्रिका कोशिका (न्यूरो) संरचनाओं तथा कौशलों के विकास का आधार बनता है। जैसे-जैसे मस्तिष्क परिपक्व होता है, उच्च स्तरीय न्यूरल सर्किट निचले स्तर के सर्किट का आधार बनाते हैं (शॉनकॉफ़ एंड रिक्टर, 2013)। इस प्रकार इस तथ्य की पुष्टि होती है कि सीखने

की प्रक्रिया प्रकृति में संचयी और निरंतर है। ये महत्वपूर्ण अवधियाँ कुछ विशिष्ट दक्षताओं जैसे कि भाषा प्रवाह और मित्रों के साथ सामाजिक व्यवहार, प्रतीकात्मक प्रासंगिकता और कुछ संज्ञानात्मक दक्षताओं को विकसित करने के लिए अनेक अवसर प्रदान करती हैं, जो न केवल स्कूली शिक्षा के लिए बल्कि आजीवन सीखने और विकास के लिए भी मूलभूत हैं (डोहर्टी, 1997)।

1.2 गतिविधि 1 : स्वयं करें

एक बच्चे के लिए प्रारंभिक वर्षों के महत्व पर माता-पिता से उनकी धारणा के बारे में बात करें। प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करें और माता-पिता की तैयारी विकसित करने की आवश्यकता पर एक लेख तैयार करें।

••• मॉड्यूल 2 •••

स्कूल के लिए तैयारी का महत्व और इसके आयाम

मॉड्यूल 2 : स्कूल के लिए तैयारी का महत्व और इसके आयाम

2.1 सीखने का संकट और स्कूल के लिए तैयारी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी. 2020) 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है, जिसका लक्ष्य देश के विकास हेतु सभी आवश्यक प्रयास करना है। इस नीति के अनुसार सीखने के प्रतिफलों की वर्तमान स्थिति और जो अपेक्षित है, के मध्य एक बहुत बड़ी खाई है। इस खाई को प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा (ई.सी.सी.ई) तथा शिक्षा में अनिवार्य गुणवत्ता बढ़ाने वाले सुधारों से, पाटा जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने इस बात पर भी ध्यान केन्द्रित किया है कि विभिन्न सरकारी, तथा गैर-सरकारी सर्वेक्षणों से संकेत मिलता है कि हम वर्तमान में सीखने के संकट से ग्रस्त हैं, वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय में छात्रों का एक बड़ा हिस्सा (5 करोड़ से अधिक) मूलभूत शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाया है। जिसका अर्थ है की बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान यानी मूल पाठ को पढ़ने और समझने की क्षमता और भारतीय अंकों के साथ बुनियादी जोड़ और घटाव करने की क्षमता का अभाव है। वर्तमान समय में, विशेष रूप से सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए, गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई) उपलब्ध नहीं है। ई.सी.सी.ई में मजबूत निवेश सभी छोटे बच्चों को ऐसी पहुंच की क्षमता देता है, जिससे वे अपने पूरे जीवन में शैक्षिक प्रणाली में भाग लेने और उनमें समृद्ध हो पाने में सक्षम होते हैं। वर्तमान में, ई.सी.सी.ई की सार्वभौमिक पहुंच के अभाव के कारण, बच्चों का एक बड़ा हिस्सा कक्षा 1 के आरंभिक कुछ हफ्तों के भीतर ही पिछड़ने लगता है इसलिए एनसीईआरटी और एससीईआरटी द्वारा कक्षा पहली के विद्यार्थियों के लिए अल्पकालीन तीन महीनों का प्ले (खेल) आधारित 'स्कूल के लिए तैयारी का मॉड्यूल' (विद्या प्रवेश) जिसमें है। अनेक प्रकार की गतिविधियाँ एवं वर्कबुक होंगी जिनमें अक्षर, ध्वनियाँ, शब्द, रंग, आकार, संख्या आदि सम्मिलित होंगे। इस मॉड्यूल के द्वारा ये सुनिश्चित किया जाएगा कि प्रत्येक बच्चा स्कूल के लिए तैयार हो सके।

बच्चों के सीखने के स्तर में कमी को सुधारने के लिए, विभिन्न देशों की सरकारें शिक्षकों की तैयारी, मूल्यांकन या निगरानी तंत्र को अधिक प्रभावी बनाने, पाठ्यपुस्तकों के संशोधन, बेहतर भौतिक बुनियादी ढांचे आदि में निवेश करती हैं, लेकिन पढ़ाने के तरीके और कक्षा में अभ्यास के तरीके पूर्ववत रहते हैं।

2.2 गतिविधि 2 : विचार करें

हमारी शिक्षा व्यवस्था में ऐसी क्या कमी है कि बड़ी संख्या में बच्चों को पढ़ाई के संकट का सामना करना पड़ रहा है? इसमें सुधार के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं? अपने विचारों को साझा करें।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceHc5a2 टाइप करें।

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-ecce.blogspot.com/2023/01/05-2_01487296634.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप 'ईपाठशाला स्कैनर' इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है -

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- 'Enter your comment' पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

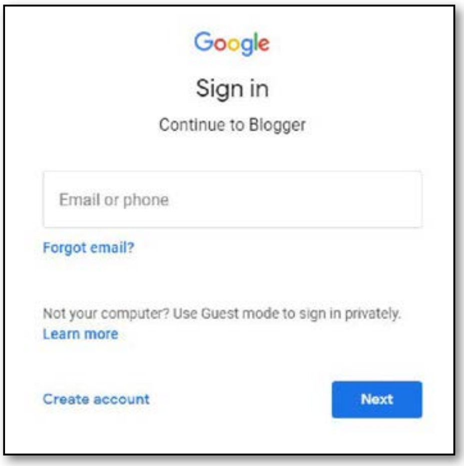

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

2.3 स्कूल के लिए तैयारी क्या निर्धारित करती है?

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_31371237620910489612228

प्रतिलिपि

स्कूल के लिए तैयारी क्या निर्धारित करती है? बच्चे के लिए स्कूल के लिए तैयारी एक तरह से बदलाव का समय है। यह एक ऐसा समय है जब बच्चे घर के वातावरण से प्ले स्कूल, प्रीस्कूल, आंगनवाड़ी, बालवाड़ी और किंडरगार्डन जैसी किसी भी अवस्था में आते हैं। बच्चे के लिए यह एक ऐसा समय है जब वह प्रारंभिक देखभाल और सीखने के उस माहौल से बाहर निकलता है जो कि लघु स्तरीय और अत्यधिक व्यक्तिगत होता है और एक नए उच्च स्तरीय तथा कम व्यक्तिगत वातावरण की ओर प्रवेश करता है। यह सीखने, सिखाने और देखभाल की प्रक्रिया में एक बदलाव है। स्कूल के लिए तैयारी की अवधारणा को अक्सर गलत समझा जाता है क्योंकि माता-पिता तथा स्कूल दोनों ही केवल अक्षर और संख्याओं को सीखने का दबाव बनाते हैं और बच्चों पर उन्हें लिखने और पढ़ने पर ज़ोर डालते हैं। उनको यह लगता है कि उन्हें बच्चों को अक्षर और संख्या लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे बच्चे भविष्य में सीखने के लिए तैयार हो पाएंगे। परंतु नेक इरादे से उठाए गए ये कदम बच्चे की सीखने की प्रक्रिया में हानिकारक हो सकते हैं। बच्चे को स्कूल के लिए तैयार होने के लिए निम्नलिखित अनिवार्य तत्वों की आवश्यकता है। बच्चों के उचित पोषण के लिए मूलभूत आवश्यकताएँ जैसे - उचित पोषण, पर्याप्त कपड़े और आश्रय, आर्थिक सुरक्षा, प्राथमिक सुरक्षा, शारीरिक और मानसिक स्वस्थ्य संबंधी पूर्व सतर्कता सेवाएँ। बच्चों को अपने सहकर्मी समूहों अपने परिवार और समुदाय के साथ मजबूत संबंधों की आवश्यकता होती है। बच्चों को अपनी प्रतिभा और कौशल विकसित करने और अपने समुदाय में योगदान देने के लिए अवसरों की आवश्यकता होती है। कठिनाइयों या विकलांगता के संकेत प्रदर्शित करने वाले बच्चों में बाद में उत्पन्न होने वाली अधिक गंभीर समस्याओं से बचाने के

लिए प्रारंभिक मूल्यांकन और हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है। बच्चों को एक सुरक्षित वातावरण के साथ इस बात की भी आवश्यकता होती है कि उन्हें किसी भी प्रकार की क्षति, दुर्व्यवहार, उपेक्षा और भेदभाव के खतरे से भी सुरक्षा मिले। बच्चों को किसी भी नुकसान से उबरने के लिए भावनात्मक समर्थन की बहुत आवश्यकता होती है। उनकी मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य एवं देखभाल पर ध्यान देने की ज़रूरत है जो बच्चों में संकट से उबर पाने की क्षमता को पैदा करती है।

2.4 स्कूल के लिए तैयारी की परिभाषा

यूनाइटेड नेशंस वर्ल्ड फिट फॉर चिल्ड्रन (UN WFFC) मिशन स्टेटमेंट 2002 स्कूल के लिए तैयारी को 'जीवन में एक अच्छी शुरुआत, पोषण और सुरक्षित वातावरण' के रूप में परिभाषित करता है, जो बच्चों को जीवित रहने और शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से सतर्क, भावनात्मक रूप से सुरक्षित, सामाजिक रूप से सक्षम और सीखने के लिए सक्षम बनाता है।

यूनिसेफ (2012) स्कूल के लिए तैयारी, की दो विशिष्ट विशेषताओं, अर्थात 'परिवर्तनकाल' (एक स्तर से दूसरे स्तर में पहुँचना) और 'दक्षता प्राप्त करना', को तीन आयामों में परिभाषित करता है :-

- *तैयार बच्चे :* बच्चों के सीखने और विकास पर ध्यान केंद्रित करना,
- *तैयार स्कूल :* स्कूल के माहौल पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ ऐसे आचरण जो प्राथमिक स्कूल में बच्चों के लिए एक सुचारु परिवर्तनकाल को बढ़ावा देते हैं और सभी बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देते हैं, और
- *तैयार परिवार :* माता-पिता और देखभाल करने वालों के व्यवहार पर ध्यान देना, साथ ही अपने बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा, विकास और स्कूल में एक स्तर से दूसरे स्तर में जाने के लिए माता-पिता की भागीदारी पर ध्यान केंद्रित करना।

स्कूल के लिए तैयारी का मतलब है कि बच्चों ने स्कूल शुरू करने से पहले वह सामाजिक, मानसिक और शारीरिक कौशल विकसित कर लिए हैं जो उन्हें कक्षा में सीखने के लिए सहायता प्रदान करते हैं। स्कूल के लिए तैयारी न केवल प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत तैयारी है अपितु, स्कूल की बच्चों के लिए तैयारी और प्रभावी प्रारंभिक बाल विकास के लिए परिवार और समुदाय की क्षमता का विकास भी है। बच्चे स्कूल के लिए तैयार हैं या नहीं, यह उनके परिवारों और अन्य लोगों के साथ बच्चों की बातचीत और स्कूल आने से पहले उनके तत्काल वातावरण पर काफी निर्भर करता है।

तालिका 1 : स्कूल के लिए तैयारी क्या है और क्या नहीं है?

स्कूल के लिए तैयारी क्या है?	यह क्या नहीं है?
बच्चे अपनी पसंद, नापसंद, मनोभाव और भावनाओं के बारे में बात करते हैं, और उनका चुनाव करते हैं।	आज्ञाकारी होना

हर दिन सक्रिय रहना - दौड़ना, कूदना, नृत्य करना, उछलना और कूदना, बाहरी वस्तुओं और प्रकृति की खोज करना।	शांत बैठने में सक्षम होना
निर्देशों का पालन करने में सक्षम होना और सीखने के लिए रूचि एवं जिज्ञासा प्रदर्शित करना।	'लाइन अप' करने में सक्षम होना
पुस्तकों, कहानियों और गीतों के प्रति प्रेम विकसित करते हुए चित्रों और कहानियों का उपयोग करना।	पढ़ने में सक्षम होना
रचनात्मक खेल जैसे पेंटिंग, चित्रकारी, क्रेयॉन, आटे से खेलना और सृजन करना।	लिखने में सक्षम होना
समस्याओं को हल करना, प्रश्न पूछना, पूछताछ करना, अन्वेषण और प्रयोग करना।	20 तक गिनने में सक्षम होना
शौचालय का उपयोग करने में सक्षम होना, संप्रेषणीय होना, खाने में और कपड़े पहनने में स्वावलंबी होना।	जूतों के फीते बांधने में सक्षम होना
घर पर मदद करना, भागीदारी और साझेदारी करने में सक्षम होना।	गृहकार्य करने में सक्षम होना

2.5 गतिविधि 3 : स्कूल के लिए तैयारी - स्वयं करें

हर बच्चे के लिए स्कूल के लिए तैयारी क्यों जरूरी है? माता-पिता को इसे समझाने के लिए एक पोस्टर/प्रस्तुति तैयार करें।

संदर्भ के लिए बिंदु :

1. यह घर और स्कूल के बीच और पूर्व प्राथमिक विद्यालय से कक्षा 1 और 2 के बीच सुचारू बदलाव सुनिश्चित करता है।
2. यह बच्चों के जीवन में एक अच्छी शुरुआत प्रदान करता है, उनके समग्र विकास और सीखने की क्षमता में मदद करता है।
3. बच्चे अपने आधारभूत कौशल का निर्माण करते हैं जिनके आधार पर उच्च स्तर के कौशल का विकास होता है।
4. पहले छह वर्षों में नब्बे प्रतिशत मस्तिष्क का विकास होता है।

2.6 स्कूल के लिए तैयारी क्यों महत्वपूर्ण है?

स्कूल के लिए तैयारी बड़े पैमाने पर बच्चों, उनके परिवार और समाज के लिए महत्वपूर्ण है। शोध दर्शाता है कि जो बच्चे स्कूली शिक्षा शुरू करने पर सीखने के लिए तैयार होते हैं, वे अधिक तेज़ी से सीखते हैं, और उनके सीखने में व्यस्त होने, स्कूल में रहने और स्नातक होने और कार्यस्थल और जीवन में सफल होने की संभावना अधिक होती है। शुरुआती वर्षों में सफल होने वाले बच्चों में अधिक आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान होता है।

अभी तक हमने यह समझा है कि बच्चे विविध पृष्ठभूमि से स्कूलों में प्रवेश करते हैं। यह अंतर संज्ञानात्मक, गैर-संज्ञानात्मक और सामाजिक कौशल के रूप में देखे जा सकते हैं। स्कूल के लिए तैयारी ऐसे वर्गों तक पहुंचने की प्रक्रिया है जो की विशेष रूप से वंचित वर्ग के बच्चे हैं, जिन्हें घर पर शुरुआती शिक्षा के लिए समर्थन प्राप्त होने की संभावना कम है। यह एक ऐसा ढांचा है जो शिक्षा को न्यायसंगत एवं सीखने के परिणामो में सहायक बनाता है। शोध दर्शाता है कि स्कूल के लिए तैयारी सीखने, भविष्य में नए कौशल विकास, स्कूल में सफलता, स्कूल में बने रहने और स्कूल की पूर्णता से जुड़े हुए है।

2.7 गतिविधि 4 : अपनी समझ की जाँच करें

क्यूआर कोड स्कैन करके गतिविधि करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें।

https://diksha.gov.in/play/content/do_31370730124433817611062

मॉड्यूल 3

स्कूल के लिए तैयारी के आयाम

मॉड्यूल 3 : स्कूल के लिए तैयारी के आयाम

3.1 स्कूल के लिए तैयारी के तीन आयाम

स्कूल के लिए तैयारी के तीन आयाम हैं :- तैयार परिवार, तैयार बच्चे और तैयार स्कूल

स्रोत: 'स्कूल रेडिनेस एंड ट्रांज़िशन : ए कम्पेनियन टू द चाइल्ड फ्रेंडली स्कूल मैनुअल, यूनिसेफ 2011; पृष्ठ-5' से उद्धृत

3.2 आयाम 1 : स्कूल के लिए बच्चों की तैयारी

स्कूल के लिए तैयारी का अर्थ है कि सभी बच्चे जिनमें विशेष रूप से कमजोर और वंचित वर्ग, लड़कियाँ, विशेष रूप से सक्षम (नि:शक्त जन) बच्चे, जातीय अल्पसंख्यक और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग आदि को भी एक संरचित सीखने के वातावरण में सफल होने के लिए तैयार किया जा सकता है। प्रारंभिक स्तर से प्राथमिक स्तर तक पहुँचने के लिए बच्चों में कुछ अपेक्षित दक्षताएँ होनी चाहिए, इन दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए बच्चे, परिवार तथा व्यवस्था में परस्पर संबंध होना आवश्यक है। ये अनिवार्य है कि तीनों आयाम मिलकर काम करें।

एक बच्चे को निम्नलिखित क्षेत्रों में बुनियादी कौशल और ज्ञान की आवश्यकता होती है जो स्कूल में सफल होने में मदद करते हैं :-

- **शारीरिक तंदुरुस्ती, अच्छी स्वास्थ्य स्थिति और संवेदी गत्यात्मक विकास -** इस आयाम में बच्चे की इंद्रियों का विकास, जन्म के समय वजन, स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति, स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल और अक्षमताएं शामिल हैं। अध्ययनों से संकेत मिलता है कि जन्म के समय कम वजन, खराब पोषण और स्वास्थ्य संबंधी असमानताएं स्कूल की खराब तैयारी से जुड़ी हैं (हेयर एट अल, 2006; जानूस एंड ड्यूक, 2007)। सभी सरकारी नीतियों का पूरा ध्यान माताओं और बच्चों के लिए संतुलित पोषण, पर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल और बच्चों के स्थूल और सूक्ष्म गत्यात्मक विकास के लिए पर्याप्त भीतरी और बाहरी गत्यात्मक अनुभव प्रदान कराने पर होना चाहिए।
- **सामाजिक और भावनात्मक विकास -** इसके अंतर्गत आत्म-नियमन, ध्यान, आवेग नियंत्रण, आक्रामक और विघटनकारी व्यवहारों को सीमित करने की क्षमता, टर्न-टेकिंग, सहयोग, सहानुभूति और अपनी भावनाओं को संप्रेषित करने की क्षमता, भावनाओं की पहचान और भावनाओं के सटीक संचार की सुविधा आदि आते हैं। प्रीस्कूल/आंगनवाड़ी शिक्षकों की कक्षा प्रबंधन शैली, शिक्षक के साथ बच्चों का सुरक्षित जुड़ाव और उत्तरदायी संबंध आदि भी बच्चों की स्कूल के लिए तैयारी से संबंधित पाए गए हैं।
- **सीखने के तरीके -** यह उन कौशलों और व्यवहारों पर ध्यान केंद्रित करता है जिनका उपयोग बच्चे सीखने में संलग्न होने के लिए करते हैं। सीखने का तरीका बच्चों के स्वभाव, सीखने का नज़रिया, उत्साह, झुकाव और शैलियों को दर्शाता है। जिज्ञासा, रचनात्मकता, दृढ़ता, पहल, कार्य निपुणता, सहकारिता, समस्या-समाधान, कल्पना और आविष्कार इस क्षेत्र के प्रमुख घटक हैं। उच्च गुणवत्ता वाले प्रीस्कूल/आंगनवाड़ी वातावरण और विकासात्मक रूप से उपयुक्त खेल आधारित सीखने के अनुभवों में, बच्चों के सीखने के दृष्टिकोण को बढ़ाने की क्षमता है। बच्चों

का समर्थन करने से उन्हें ज्ञान प्राप्त करने, नए कौशल सीखने, लक्ष्य निर्धारित करने तथा उन्हें पूरा करने में मदद मिलती है।

भाषा विकास - बच्चों को दूसरों के साथ संवाद करने, अपने विचार और अनुभव साझा करने और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भाषा पर अच्छी पकड़ की आवश्यकता होती है। अच्छी मौखिक भाषा पढ़ने और लिखने के कौशल के विकास की नींव है। भाषा सीखने के कुछ प्रमुख कौशल हैं ध्वन्यात्मक जागरूकता, वर्णमाला ज्ञान, प्रिंट के बारे में अवधारणा, मौखिक भाषा कौशल, शब्दावली और आकस्मिक लेखन कौशल। शोध दर्शाता है कि माता-पिता के शैक्षिक स्तर और आय, माता-पिता व बच्चे की बातचीत, घर में साक्षरता का माहौल और साझा पढ़ने की गतिविधियाँ बच्चों के प्रारंभिक भाषा विकास से जुड़ी हैं।

प्रारंभिक साक्षरता और गणित कौशल सहित सामान्य ज्ञान और अनुभूति - इस डोमेन (ज्ञान क्षेत्र) में बच्चों की समस्या को सुलझाने के कौशल, ध्यान, स्मृति, प्रतिनिधित्व संबंधी विचार, गणितीय सोच और बच्चे का सामान्य और शारीरिक ज्ञान, सामाजिक-पारंपरिक ज्ञान और तार्किक-गणितीय क्षमताओं के साथ-साथ भाषा की क्षमताएं भी शामिल हैं। शोध दर्शाता है कि बच्चों का संज्ञानात्मक तथा सामान्य ज्ञान बच्चों में स्कूल के लिए तैयारी, प्राथमिक गणित, पढ़ने और सामान्य शैक्षणिक उपलब्धि (डंकन एट अल, 2007; रोमाना एट अल, 2010) के सूचक हैं। बच्चों के संज्ञानात्मक तथा सामान्य ज्ञान के विकास के लिए खेल आधारित अनुभव, समृद्ध और उच्च गुणवत्ता वाला घर और स्कूल का वातावरण और माता-पिता के साथ लगातार बातचीत आदि की अधिक आवश्यकता होती है।

3.3 गतिविधि 5 : अपनी समझ की जाँच करें

क्यूआर कोड स्कैन करके गतिविधि करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_313710066881314816169

3.4 बच्चों में तत्परता विकसित करने के लिए गतिविधियां

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_31371230159006105612050

प्रतिलिपि

एंकर : बच्चों को अन्वेषण, प्रयोग, अवलोकन, समस्या समाधान, बातचीत, रचनात्मक सोच, आंतरिक और बाहरी खेल के बहुत सारे अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है। ताकि बच्चे का प्रभावी विकास हो सके। यहाँ उदाहरण के तौर पर कुछ गतिविधियां दी गई हैं जो माता पिता द्वारा घर पर और शिक्षकों द्वारा स्कूल में कराई जा सकती हैं।

गतिविधि 1

अध्यापिका : हेलो बच्चों आज हम एक गेम खेलेंगे, जिसका नाम है, व्हाट इस गॉन।

बच्चा : व्हाट इस गॉन?

अध्यापिका : अब बताओ इस कपड़े के पीछे क्या होगा।

बच्चे : टॉयज

अध्यापिका : चलो हटा के देखते हैं इस कपड़े के पीछे क्या है। अब आप लोग अच्छे से देखो इसके पीछे क्या है। अच्छे से देख लो इसके पीछे क्या है। अच्छे से देख लो, देख लिया। फिर इसमें वापस रख दो। चलो अब सब लोग अपनी आँखें बंद करो. कर ली? चलो अब आँखे खोलो। अब बताओ इसमें क्या मिसिंग है? वॉट इज़ गॉन?

बच्चे : बनाना, बनाना

अध्यापिका : येस, वैरी गुड! बनाना इस द करेक्ट आंसर, चलो एक बार फिर से करते हैं। अब आप लोग अपनी आईज बंद कर लो। चलो 1,2,3 आईज खोलो। अब बताओ इसमें क्या मिसिंग है?

बच्चे : ग्रेप्स! ग्रेप्स!

अध्यापिका : यस। हमारे ग्रेप्स मिसिंग हैं।

इस गेम से हम बच्चों की मेमोरी को एनहान्स कर सकते हैं, अगर बच्चे भूल जाएँ तो हम उन्हें क्लूज़ दे सकते हैं जैसे ऑब्जेक्ट्स यूज़्ड इन द किचन या ऑब्जेक्ट्स यूज़्ड फॉर सेल्फ क्लीनिंग एक्सेक्ट्रा।

गतिविधि 2

अध्यापिका : आज हम एक खेल खेलेंगे जो कि राइम्स और नोन राइम्स शब्दों के ऊपर होगा। हाँ मिट्ठू, हम एक खेल खेलते हैं, कुछ राइम वर्ड्स मैं बोलूंगा कुछ नॉन राइम बोलूंगा जिसमें आपको राइम वर्ड्स पे ताली बजानी है और नॉन राइम वर्ड पर आपको गर्दन हिलाकर ना कहना है। ठीक है? तो चलो शुरू करें।

अध्यापिका : कैट - मैट

बच्चा : (ताली)

अध्यापिका : राजा -बाजा

बच्चा : (ताली)

अध्यापिका : एप्पल-मैंगो

बच्चा : (गर्दन हिलाता है)

अध्यापिका : अरे वाह! मिठू आपको तो आ गया है खेलना। फिश -डिश

बच्चा : (ताली)

अध्यापिका : ताला - माला

बच्चा : (ताली)

अध्यापिका : ऑरेंज - बनाना

बच्चा : (गर्दन हिलाता है)

अध्यापिका : केक -बेक

बच्चा : (ताली)

अध्यापिका : मक्खी-हाथी

बच्चा : (गर्दन हिलाता है)

अध्यापिका : वाह! बहुत बढ़िया। अब हम नया खेल खेलते हैं जिसको अंताक्षरी कहते हैं। क्या आपको अंताक्षरी खेलनी आती है?

बच्चा : हाँ

अध्यापिका : ठीक है। मैं आपको एक शब्द बोलता हूँ। ताला। अब ल से नया शब्द बताइये।

बच्चा : लकड़ी

अध्यापिका : इ से इमली। अब ल से बोलिये।

बच्चा : लड़की

अध्यापिका : क से कबूतर, अब र से बताइये।

बच्चा : राजा।

अध्यापिका : जग , ग से बोलिये कुछ।

बच्चा : ग से गाजर।

अध्यापिका : गाजर, बहुत बढ़िया। र से रस्सी।

बच्चा : सामान

अध्यापिका : सामान , बहुत अच्छे। न से नदी।

बच्चा : दरवाजा

अध्यापिका : बहुत बहुत बढ़िया। ज से जोकर

बच्चा : रस्सी

अध्यापिका : स , स से सड़क , क से बताओ

बच्चा : कबूतर

अध्यापिका : कबूतर, ठीक है। र से रानी

बच्चा : नाला

अध्यापिका : नाला, बहुत बहुत अच्छे।

गतिविधि 3

अध्यापिका : बच्चों आज हम अक्षर ध्वनि के साथ चित्रों का मिलान करेंगे। ठीक है? ये हमारे सामने क्या रखा है अभी?

बच्चे : बोर्ड

अध्यापिका : बोर्ड, ठीक है, इस पर कुछ अक्षर लिखे हैं, हमें उन्हें पहचानना है।

बच्चे : हाँ

अध्यापिका : मुझे आप बताएंगे इस पर क्या लिखा है।

बच्चे : "क" , "म", "ल" , "न", " प"

अध्यापिका : "क" , "म", "ल" , "न", " प ठीक है तो हम इनको अब चित्रों के साथ मिलाएंगे कि 'क' से शुरू होने वाले अक्षर कितने हैं और इसी के साथ और भी जो अक्षर दिए हुए हैं उनका मिलान करेंगे चित्रों के साथ। ठीक है, तो मैं आपको चित्र देती हूँ, तो आप मुझे बताना कि 'क' से शुरू होने वाले अक्षर इनमें से क्या हैं?

बच्चे : क से केला

अध्यापिका : हाँ, क से केला

बच्चे : क से कान

अध्यापिका : हाँ क से कान, और क से

बच्चे : कौआ

अध्यापिका : कौआ, अब म से शुरू करेंगे , म से मोर , म से माचिस

बच्चे : म से एक और चीज़ है म से मछली

अध्यापिका : म से मछली , वैरी गुड, और अब हम शुरू करेंगे ल से, ल से शुरु होने वाले अक्षर

बच्चे : ल से लोमड़ी

अध्यापिका : ल से लोमड़ी, और ल से

बच्चे : ल से लकड़ी

अध्यापिका : ल से लकड़ी, और ल से क्या शुरू होता है बताओ?

बच्चे : ल से लड़का

अध्यापिका : ओके, ल से लड़का। न से क्या शुरू होता

बच्चे : न से नाक

अध्यापिका : न से नाक

बच्चे : न से नदी

अध्यापिका : न से नदी और आपके पास है न

बच्चे : न से नल

अध्यापिका : नल वैरी गुड, अब प से शुरू होने वाले

बच्चे : प से पपीता

अध्यापिका : पपीता

बच्चे : प से पतंग

अध्यापिका : प से पतंग और

बच्चे : प से पलंग

अध्यापिका : प से पलंग वैरी गुड

अध्यापिका : जैसा के आप सभी ने देखा हमने बच्चों को अक्षर के माध्यम से बच्चों को ध्वनि की पहचान कराना सिखाया। और इसी प्रकार चित्रों का मिलान करना भी सिखाया। हम इसी के माध्यम से कई अन्य गतिविधियां भी कर सकते हैं जैसे कि हम इसमें ऑड-ईवन का प्रयोग भी कर सकते हैं। बच्चों को एक ही शब्द से शुरू होने वाले शब्द के साथ एक अन्य शब्द लगाकर हम बच्चों को सिखा सकते हैं कि इसके विपरीत क्या शब्द है।

गतिविधि 4

अध्यापिका : आज जो है न हम सब, लेटर हंटिंग का गेम खेलेंगे और उस गेम को खेलने के लिए हमें पहले एक कहानी पढ़नी पड़ेगी। तो आप सब वो कहानी सुनना चाहेंगे?

बच्चे : यस

अध्यापिका : उस कहानी का जो नाम है वो है 'द बेबी बर्ड एंड ओल्ड बी'। इस कहानी में एक बेबी बर्ड है जिसने अभी-अभी उड़ना सीखा है और वो पेड़ से क्या देख रही है कि यहाँ पर एक हनी बी बैठ के फूलों का रस पी रही है। और फिर वो जो है उड़ के बेबी बर्ड किस के पास गयी?

बच्चे : हनी बी के पास गई।

अध्यापिका : हनी बी के पास गई। और वहाँ जा कर उसने बोला कि ये जो फूलों का रस है, वो मै भी पीना चाहती हूँ। लेकिन फिर बेबी बी ने क्या बोला? कि आप जाओ और जाके अपना खाना खाओ। जैसे कि नट्स, फ्रूट्स। बेबी बर्ड ने यही किया और वो जा कर पेड़ पर उसने फ्रूट्स तोड़ कर खाए। लेकिन बेबी बर्ड्स ने वो फ्रूट्स तो खाये वो इतने टेस्टी नहीं थे और न ही फूलों के रस जितने मीठे थे। और वहाँ से बेबी बर्ड क्या देख रही है कि जो बेबी बी है वो बहुत एन्जॉय कर रही है फूलों के रस को। और ये देख कर बेबी बर्ड को थोड़ी से जेलेसी हुई और वो जा कर फूलों पर बैठ जाती है और फूलों पे बैठ के उसने क्या किया? उसने फूलों का रस पीना चाहा। और जैसे उसने अपनी चोंच उसके अंदर मारी फूलों के अंदर तो फूल पूरा का पूरा टूट गया। पता है क्यों टूट गया? क्योकि उसकी चोंच बहुत नुकीली थी और ये सब जो है एक ओल्ड बी अपने बहुत सारे बी के साथ ये सब देख रही थी कि फूल टूट गया है। लेकिन बेबी बर्ड को ये सब देख कर की उसका फूल टूट गया है, उसको बहुत बुरा लग रहा था और ये सब की सब बीज़ जो थी वो बहुत गुस्सा थी और उन्होंने बेबी बर्ड पे अटैक कर दिया। और बेबी बर्ड जल्दी से वहां से भागी और उड़ कर वापस अपनी मम्मी के पास गयी और उसने मम्मी को जा कर सब बताया कि आज मेरे साथ क्या-क्या हुआ। फिर मम्मी ने उसको बताया कि चलो ठीक है अब हो गया, लेकिन दोबारा से ऐसी गलती मत करना। फिर बेबी बर्ड ने प्रॉमिस किया कि ठीक है मम्मा, मैं अब हमेशा बड़ों की बात मानूँगी। हम्म।

इस कहानी में आपने देखा होगा कि एक ही लेटर बार बार आ रहा है वो कौन सा लेटर है?

बच्चा : बी

अध्यापिका : वैरी गुड। कौन सा लेटर है वो

बच्चा : बी

अध्यापिका : अब हम क्या करेंगे, इसके अंदर देखेंगे कि कितनी बार ये जो बी है ऐसा दिखने वाला लेटर आता है। ढूंढें इसमें?

बच्चा : हाँ

अध्यापिका : क्या इस लाइन में ऐसा कोई बी दिख रहा है??

बच्चा : नहीं।

अध्यापिका :क्या इस लाइन में है ऐसा कोई बी?

बच्चा : हाँ

अध्यापिका : यस, ये हो गया?

बच्चा : 1

अध्यापिका : क्या इस लाइन में है ऐसा कोई बी ?

बच्चा : हाँ

अध्यापिका : कितने हो गए ?

बच्चा : 2

अध्यापिका : चलो आगे देखें। क्या इस लाइन मे है?

बच्चा : नहीं

अध्यापिका : क्या इस लाइन में है ऐसा कोई भी ?

बच्चा : नहीं

अध्यापिका : क्या इधर है?

बच्चा : 3

अध्यापिका : यस। द फर्स्ट वन इज़ बी। व्हिच लेटर ?

बच्चा : बी

अध्यापिका : चलो आगे देखें। क्या इस वर्ड में है कोई ऐसा बी?

बच्चा : यस

अध्यापिका : कितने हो गए ?

बच्चा : 4

अध्यापिका : क्या इधर है?

बच्चा : बी

अध्यापिका : कितने हो गए?

बच्चा : 5

अध्यापिका : क्या इधर है ऐसा कोई बी?

बच्चा : बी

अध्यापिका : कितने हो गए?

बच्चा : 6

अध्यापिका : वैरी गुड !

तो आप सबने देखा की ये जो गतिविधि थी लेटर हंटिंग बच्चों ने कहानी के माध्यम से कितने मजेदार तरीके से इसको पूरा किया।

एंकर : तो आपने देखा की किस तरह हमारे दैनिक जीवन में बच्चों के साथ की गयी छोटी-छोटी सरल गतिविधियों और बच्चों के साथ बिताए गए समय के फलस्वरूप बच्चे स्कूल की तैयारी हेतु आवश्यक कौशल अर्जित करते हैं?

3.5 आयाम 2 : परिवार की तैयारी

स्कूल के लिए तैयारी के संदर्भ में एक परिवार में वे सभी सदस्य शामिल होते हैं जो छोटे बच्चों के साथ रहते हैं, जिनमें जैविक और गैर-जैविक देखभालकर्ता, भाई-बहन और विस्तृत परिवार के सदस्य शामिल हैं। घर पहला परिवेश और माता-पिता पहले शिक्षक होते हैं जिनका बच्चे के विकास पर असर पड़ता है। अध्ययनों से पता चला है कि घरेलू आय और माता-पिता, विशेष रूप से मां का शैक्षिक स्तर, बच्चों की स्कूल के लिए तैयारी से जुड़े हैं। शिक्षा के निम्न स्तर वाले, निम्न आय वाले परिवारों के बच्चों में मध्यम और निम्न वर्ग के परिवारों की तुलना में स्कूल के लिए तैयारी का स्तर कम होता है। माता-पिता का शैक्षिक स्तर भी निम्न आय स्तर से जुड़ा हुआ है। कम आय वाले परिवारों में बच्चों के लिए जन्म के पहले का मातृ पोषण और प्रसव के बाद पोषण प्रदान करने की कमी होती है। खराब मातृ पोषण और तनाव का बच्चे के मस्तिष्क के विकास पर बुरा प्रभाव पड़ता है। वंचित परिवारों में, बच्चों के लिए असमानताएं जन्मपूर्व अवधि में शुरू होती है और तब से वे बढ़ते रूप से पर्याप्त पोषण, स्वास्थ्य, सीखने के अवसरों से वंचित रह जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप स्कूल के लिए तैयारी का स्तर खराब होता है।

परिवारों को अपने बच्चों को स्कूली शिक्षा की मांगों के लिए "तैयार" होना चाहिए। बच्चे तब फलते-फूलते हैं जब उन्हें महत्व दिया जाता है और उनका सम्मान किया जाता है और उन्हें बड़ों के साथ बातचीत करने का अवसर मिलता है। परिस्थिति की परवाह किए बिना जो परिवार गर्मजोशी, भावनात्मक समर्थन और परस्पर संबंधों को पोषित करते हैं और बच्चों की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य देखभाल की जरूरतों को पूरा करते हैं वे बच्चों को फलने फूलने में सहायता करते हैं। परिवारों और समुदायों को बच्चों को सुरक्षित, स्वस्थ, सौम्य और प्रोत्साहवर्द्धक वातावरण और संचार के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है जहां बच्चे समन्वेषण कर सकें, प्रश्न पूछ सकें और समस्याओं का समाधान कर सकें।

प्री स्कूल कार्यक्रम में शिक्षक/आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, माता-पिता और परिवारों को कैसे शामिल कर सकते हैं?

- **बच्चों को स्कूल से लेने और छोड़ने के अवसरों का अधिकतम लाभ उठाएं -** जब माता-पिता अपने बच्चों को छोड़ने या लेने आते हैं, तो उत्साह के साथ उनका स्वागत करें। माता-पिता से बात करते समय, उनके बच्चे की प्रगति, सामर्थ्य, पसंद/नापसंद और कक्षा की गतिविधियों में उनके बच्चों की भागीदारी के बारे में कुछ विशेष जानकारी जोड़ें।

- **निरंतर संवाद करें -** समय-समय पर माता-पिता, शिक्षक बैठकों के माध्यम से, प्रिंटेड सामग्री जैसे पत्रक, बाल विकास के विभिन्न पहलुओं पर विवरणिका (ब्रोशर) या व्हाट्सप्प (WhatsApp), टेलीग्राम आदि जैसे तत्काल संचार माध्यमों या जी-मेल (Gmail), याहू (Yahoo) आदि जैसे ईमेल के माध्यम से माता-पिता के साथ लगातार संपर्क बनाए रखा जाना चाहिए ताकि साझा की गई जानकारी के आधार पर उनकी राय ली जा सके।
- **माता-पिता का उन्मुखीकरण -** प्रत्येक बच्चे को सफल होने में मदद करने के लिए माता-पिता को पाठ्यक्रम, सीखने के लक्ष्यों, शिक्षाशास्त्र और रणनीतियों के बारे में सूचित करें। माता-पिता को कार्यक्रम में उनकी भागीदारी की भूमिका के बारे में सूचित करें।
- **माता-पिता को कक्षा में आमंत्रित करें -** माता-पिता को स्कूल/आंगनवाड़ी आने और कक्षा में समय बिताने के लिए नियमित रूप से निमंत्रण दें। चाहे माता-पिता को गतिविधियों में मदद करने के लिए आमंत्रित किया जाए या मूक पर्यवेक्षक बनने के लिए, ये मुलाकातें सबसे अधिक सहायक और सुखद हो सकती हैं।
- **विशेष कार्यक्रम आयोजित करें -** पिकनिक, फील्ड ट्रिप, क्लास ट्रिप की योजना बनाएं, माता-पिता को स्वयंसेवकों के रूप में शामिल करें। शैक्षिक पुस्तकों और खिलौनों वाले बाल मेलों का आयोजन किया जा सकता है। माता-पिता से इस प्रकार के आयोजनों की योजना बनाने के लिए विचार प्रदान करने के लिए कहा जा सकता है। माता-पिता की सुविधा के अनुसार गतिविधियों की योजना बनाएं - दिन के दौरान या शाम को।
- **पोर्टफोलियो और काम के सैम्पल बनाए रखें -** माता-पिता के लिए कक्षा में बच्चों के अनुभवों के पोर्टफोलियो, स्क्रैपबुक बनाएं या इकट्ठा करें ताकि वे जब भी कक्षा में आएं, उन्हें देख सकें।
- **माता-पिता के बीच सहकर्मी नेटवर्किंग बनाएं -** माता-पिता की एक संपर्क सूची या व्हाट्सएप समूह, टेलीग्राम समूह आदि जैसे एक तत्काल संदेशवाहक समूह बनाएं जिसमें माता-पिता को आने वाले कार्यक्रमों के बारे में सूचित किया जा सके, स्वयं सेवा के लिए आमंत्रित किया जा सके, माता-पिता आंगनवाड़ी में सुधार लाने, मध्याह्न का भोजन आदि के बारे में सुझाव दे सकें।
- **माता-पिता को उपयोगी संसाधनों की पहचान कराना और उसे उपलब्ध कराना -** माता-पिता को अक्सर मार्गदर्शन और आश्वासन की आवश्यकता होती है। ये मार्गदर्शन व्यवहार प्रबंधन, विकासात्मक उपलब्धियों के स्तर, सीखने की अक्षमताओं के संभावित कारण या बच्चों में विशेष प्रतिभा विकसित करने के बारे में हो सकता है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता/शिक्षक ई.सी.सी.ई (ECCE) दिवस पर माता-पिता की सहायता के लिए विशेषज्ञों को आमंत्रित कर सकते हैं या स्थानीय पुस्तकालय से संसाधन उपलब्ध करा सकते हैं।

स्कूल के लिए तैयारी के लिए माता-पिता द्वारा की जा सकने वाली गतिविधियाँ :

माता-पिता अपनी शैक्षणिक योग्यता या व्यवसाय की परवाह किए बिना विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान कर सकते हैं : माता-पिता कौन हैं कि तुलना में यह अधिक महत्त्वपूर्ण है, वह अपने बच्चों के साथ क्या करते हैं। (सिल्वा एट अल, 2004)

- माता-पिता को अपने बच्चे को सीखने में सहायता और सहयोग प्रदान करने के लिए प्रतिदिन कुछ समय निकालने की आवश्यकता है,
- स्कूल में सफलता के लिए, बच्चों के लिए आवश्यक सामाजिक और भावनात्मक विकास परिवार के भीतर सहायक और उत्तरदायी संबंधों के माध्यम से प्रदान किया जाता है,
- बच्चों को उनकी उम्र के हिसाब से ढेर सारी किताबें उपलब्ध कराना और तस्वीरों/चित्रों की ओर उनका ध्यान आकर्षित करके और उन्हें चित्र पढ़ने में मदद करके किताबों से जुड़ने के अवसर प्रदान करना,
- समन्वेषण (खोजने के), प्रश्न पूछने और जानकारी प्राप्त करने के लिए ढेर सारे अवसर प्रदान करना,
- बच्चों को पढ़कर सुनाना और उनके साथ पढ़ना,
- उन्हें गाने और तुकबंदी के गीत सिखाना,
- अक्षरों और संख्याओं के साथ खेलना,
- बच्चों को बाहरी क्षेत्रों, पार्कों, बगीचों और मेलों में छुट्टियों पर घुमाने ले जाना,
- उनके लिए घर पर अपने दोस्तों के साथ खेलने के लिए नियमित अवसर बनाना,
- गिनती के खेल, भाषा के खेल, पहेलियों को सुलझाना, स्मृति के खेल आदि खेलना।

3.6 माता-पिता की तैयारी के लिए सुझाव

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_3137123043658792961350

प्रतिलिपि

नमस्कार, अक्सर माँ बाप अपने बच्चो को पढ़ाते हैं, और अपेक्षाएं करते हैं कि बच्चे पढ़ाई में बहुत आगे आएं और कई बार बच्चे इन अपेक्षाओं में उन्हें लगता है, माँ-बाप को लगता है कि वह खरे नहीं उतर रहे हैं। आज इसी विषय पर चर्चा करने के लिए मेरे साथ हैं, एक प्रीस्कूल टीचर मिस मरियम अयूब, एक बच्चा रोहन जो कि एक प्रीस्कूल में जाता है, उसकी मम्मी श्वेता और उसकी मौसी मीनाक्षी।

शिक्षक : रोहन की मम्मी और उनकी मौसी हम से इस बारे में चर्चा करना चाहते हैं कि उनको पढ़ाने में रोहन को बहुत कठनाइयां आती हैं। तो उनकी मम्मी से पूछते हैं कि उनको क्या कठनाइयां आती हैं।

रोहन की माँ : रोहन का बिल्कुल पढ़ाई में मन नहीं लगता। अगर वो ऐसे ही करता रहा तो पता नहीं आगे जाकर क्या करेगा।

विशेषज्ञ : कौन पढ़ाता है रोहन को?

रोहन की माँ : रोहन की मौसी उसको पढ़ाती है मुझे तो टाइम ही नहीं मिल पाता पढ़ाने के लिए।

विशेषज्ञ : क्या दिक्क़तें आपको आ रही हैं ?

रोहन की आंटी : जब मैं रोहन को पढ़ाती हूँ तो उसका ध्यान आधा-पोना घंटा से ज़्यादा पढ़ाई पे नहीं रहता है और अक्षर जब पढ़ाती हूँ विशेषकर, तो अक्षरों में वो 10-12 अक्षर तक तो कर लेगा उसके बाद वो नहीं बैठ पाता, न वो समझ पाता है। तो मैं समझ नहीं पा रही हूँ कि उसकी समस्या का समाधान कैसे कराया जाए।

विशेषज्ञ : तो मैं आप दोनों से जानना चाहती हूं कि क्या रोहन, आप उसके साथ कभी खेलते हैं? उससे बातचीत करते हैं? उसके प्रश्नों के उत्तर देते हैं? क्या आप इस तरह की गतिविधियां कभी करते है रोहन के साथ?

रोहन की माँ : मुझे तो बिल्कुल ही टाइम नहीं मिल पाता, सारा भार तो मौसी पर ही है। तो वही बातएंगी।

रोहन की आंटी : मैं काम पे जाती हूँ और इसलिए थोड़ा कम समय दे पाती हूँ रोहन को। परन्तु जितना समय दे पाती हूँ, उस समय में मैं उसके साथ उसकी जो भी पढ़ाई में दिक्कतें हैं; उनको सॉल्व करने की कोशिश करती हूँ। मगर जैसा आपने कहा कि ये सब कहानी सुनाना यह सब मैं नहीं कर पाती उसके साथ।

विशेषज्ञ : देखिये बच्चे जो हैं वो तब सीखते हैं जब उनको सीखने में मज़ा आए और उनको जो उनकी सीखने की प्रक्रिया है उसको खेल के द्वारा और गतिविधियों के द्वारा बहुत मज़ेदार बनाया जा सकता है।

रोहन की माँ : और आप और बता सकती हैं कि और हम क्या-क्या कर सकते हैं? कैसे कर सकते हैं?

विशेषज्ञ : आप न जो दिन भर की गतिविधियां हैं जैसे कि हम देखते हैं स्कूल में भी कि बहुत तरह की आप बच्चों के साथ एक्टिविटीज़ कर सकते हैं जैसे कि आपके घर में कोई खाने का फ़ूड के प्रोडक्ट्स

आते हैं पैकेज आते हैं, आप देखेंगे कि उसमे बहुत सारी चीज़े बनी होती हैं, उसमें लोगो लिखे रहते हैं, उसमें कई इन्फॉर्मेशन रहती हैं। तो आप बच्चों को वो दिखा सकते हैं। जब आप ट्रैफिक में जाते हैं तो आपको बहुत सारे साईनेज दिखते हैं कि ये ज़ेबरा क्रासिंग है या ट्रैफिक लाइट है आप उसकी तरफ बच्चों का ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। आप इस तरह से आपने साथ जब बच्चों को लेके जाएं तो जो भी आप खरीद रहे हैं, उसमें किस तरह से पैसे ले रहे हैं, किस तरह से आप गिनती गिन रहे हैं, चीज़ें बढ़ा रहे हैं, पैसे दे रहे हैं, कितने पैसे वापस ले रहे हैं, ये सब में अगर आप बच्चे को शामिल करें तो आप देखेंगे कि बच्चे को बहुत मज़ा आएगा और वो इसी के साथ-साथ बहुत सारी चीज़ें सीख जायेगा।

रोहन की आंटी : ये तो बहुत ही आसान है और किया भी जा सकता है। आप थोड़ा सा और विस्तार से बताएंगी की इसको और मैं कैसे करवा सकती हूँ इसके उसके साथ।

विशेषज्ञ : देखिए आपको एक तो बच्चे शुरू से ही जिज्ञासु होते हैं, वो बहुत तरह के प्रश्न पूछते हैं।

शिक्षक : सबसे अच्छा तरीक़ा बच्चों से बातचीत करने का है कि जो भी आप काम कर रहे हैं आप उनको उसमें इन्वॉल्व करें, उनसे बातचीत करें बातचीत से बच्चे सारी चीज़े सीखतें हैं।

डॉ. सुनीति सनवाल : बिलकुल बच्चे बातचीत से बहुत सारी चीज़ें सीखते हैं और बच्चे जब बात कर रहे होते हैं तो उनको वह इनफार्मेशन भी बहुत सारी मिलती है बहुत सारे नए शब्द सीखते हैं। तो बातचीत जो है कि बहुत सशक्त माध्यम है और जब अगर बच्चे से बातचीत ज़्यादा होगी तो उसका रीडिंग और राइटिंग में भी ध्यान ज़्यादा अच्छी तरह से जाएगा और एक दूसरा बहुत इम्पोर्टेन्ट जो माध्यम है वो है पढ़ना कहानियां पढ़ कर सुनाना, जब आप बच्चों के साथ कहानियां पढ़ कर सुनाते हैं, तो बच्चा एक तो किताब के बारे में जानता है किताब को कैसे पकड़ना है, कैसे हम ऊपर से नीचे और दाएं से बाएं की तरफ हम पढ़ते हैं। बच्चा ये जानता है कि जो चित्र बने होते हैं वो भी हमको बहुत सारी बातें बताते हैं। बच्चे नए-नए शब्द सीखता है। बच्चे की कल्पना शक्ति मज़बूत होती है जब वो कहानियां पढ़ते हैं। तो आप ज़रूर एक टाइम निकाल के बच्चों को कहानी पढ़ना और कहानी सुनाना शुरू करें। किताब लेकर उसके बारे में बातचीत करें उसके बाद उसके जो भी प्रश्न हैं आप वो प्रश्न पूछें।

शिक्षक : रोहन को कलरिंग मे ड्राइंग मे बहुत मज़ा आता है और तुकबंदी वाले गीत भी वो गाना बहुत पसंद करता है और नाचने में भी बहुत मज़ा आता है। तो ऐसी गतिविधियां घर पर कराना जिसमें बच्चे की रुचि हो यह बहुत महत्वपूर्ण है।

रोहन की आंटी : हां ये बात आपने सही कही। उससे इन चीज़ो में मज़ा तो बहुत आता है और यह बहुत आसान लग रहा है ये कराया भी जा सकता है।

विशेषज्ञ : अक्सर माँ बाप जो हैं वो अक्षर सिखाने में पूरा ध्यान लगाते हैं, लेकिन जो चित्रकारी जो ड्राइंग है वो लिखने की एक पहली प्रक्रिया है, पहली सीढ़ी है। तो हमको बच्चे को बहुत सारे चित्र बनाने के और उसके बारे में बातचीत करने के अवसर देने चाहिए।

रोहन की आंटी : जी-जी बिल्कुल तो मुझे लगता है कि आपसे बात करके मुझे ये कुछ नई चीज़े समझ में आई जो मैं रोहन के साथ कर सकती हूँ और ये जो हम पढ़ने की प्रक्रिया कर रहे थे क ख ग की वो

और भी ज़्यादा अच्छे तरीके से की जा सकती हैं। जिसमें वो गा सकता है, नाच सकता है और उसे मस्ती से सीख सकता है।

विशेषज्ञ : बिल्कुल और आप चिंता न करें जब बच्चों को सीखने और सिखाने में मज़ा आने लगता है तो बच्चे स्कूल में भी बहुत अच्छा करते हैं।

विशेषज्ञ : तो आपने देखा कि अक्सर माता पिता बच्चों से यह अपेक्षा करते हैं कि वो बहुत ही जल्दी लिखना और पढ़ना सीख लें। लेकिन बच्चे तभी अच्छी तरह से सीखते हैं जब गतिविधियों को मज़ेदार बनाया जाए। बच्चों को बहुत ही चित्रकारी के अवसर देने चाहिए, गाने बजाने के अवसर देने चाहिए और उनसे बहुत सारी बातचीत होनी चाहिए जिससे वो अपने उम्र के अनुसार सीखने को मज़ेदार और अपने ढंग से सीख सकें।

3.7 आयाम 3 : बच्चों के लिए स्कूल की तैयारी

तैयार विद्यालयों की परिभाषित विशेषता यह है कि ऐसे विद्यालयों में सहायक, समृद्ध और विकासात्मक रूप से उपयुक्त सीखने के वातावरण प्रदान करने की क्षमता है और साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाता हैं कि ई.सी.सी.ई कार्यक्रमों और प्राथमिक विद्यालय के वातावरण के बीच सीखने के अनुभवों और शिक्षाशास्त्र में निरंतरता है (लोम्बार्डी, 1992)। बचपन के प्रारंभिक चरण में देखभाल और प्राथमिक विद्यालय प्रणाली के बीच जितना अधिक अंतर होगा, छोटे बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा से प्राथमिक विद्यालय के वातावरण में परिवर्तन करने की चुनौती उतनी ही अधिक होगी।

भारत में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि पूर्व प्राथमिक पाठयक्रम महज़ "गीत और तुकबंदी" एकीकृत बाल विकास सेवा पाठ्यक्रम से लेकर प्राथमिक पाठयक्रम का निचली कक्षाओं में धकेला जाना है जो ज्यादातर निजी पूर्व प्रथमिक विद्यालयों में देखने को मिलता हैं। इन पाठयक्रमों को कड़ाई और अनुशासित तरीके से बच्चों को पढ़ाया जाता हैं, उस अवस्था में जब वह विकासात्मक रूप से इस तरह के "शैक्षिक दबाब" के लिए तैयार/परिपक़्व नहीं हैं। यह दबाव "पाठ्यक्रम भार" की शुरुआत है जो की सीखने की प्रक्रिया में बाधक होती हैं और बच्चे वह समझ नहीं पाते जो वो पढ़ते हैं तो वह "ना समझ पाने" के भार से भी जूझते हैं।

स्कूलों को भी बच्चे के लिए "तैयार" होना चाहिए, जिसका अर्थ है कि स्कूलों को विविध पृष्ठभूमि के बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार रहना चाहिए, उचित निर्देशात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, और विकासात्मक रूप से उपयुक्त शैक्षणिक माँगें रखनी चाहिए। स्कूलों को प्रशिक्षित कर्मचारियों की नियुक्ति करनी चाहिए जो पारस्परिक और सम्मानजनक संबंधों में परिवारों के साथ मिलकर इस तरह काम करें कि प्रत्येक बच्चे की सफलता को स्कूल का समर्थन मिले।

बच्चों के लिए 'स्कूल के लिए तैयारी' को निम्न द्वारा चित्रित किया गया है :

- घर और स्कूल के बीच सहज परिवर्तनकाल सुनिश्चित करना, जिसमें सांस्कृतिक संवेदनशीलता शामिल हो;

- प्रारंभिक बाल विकास की समझ, खेल और प्राकृतिक अनुभवों का महत्व; और प्रारंभिक चरण में देखभाल, हस्तक्षेप, और शिक्षा कार्यक्रमों और प्राथमिक विद्यालय के बीच निरंतरता सुनिश्चित करना;
- विकासात्मक रूप से उपयुक्त उच्च गुणवत्तापूर्ण निर्देश प्रदान करना;
- एक सुरक्षित, भय-मुक्त और सम्मिलित वातावरण के संदर्भ में अभिभावक और समुदाय के जुड़ाव के अवसर जो छात्र स्वास्थ्य और कल्याण का समर्थन करते हैं और सीखने को बढ़ावा देते हैं और पिछड़ने वाले बच्चों के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप प्रदान करते हैं;
- बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतों के अनुसार ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण करना जो गरीबी, नस्लीय भेदभाव सहित बचपन में होने वाले प्रतिकूल अनुभवों के प्रभाव को ध्यान में रखकर इस प्रकार बनाये गए हों कि वह नियमित कक्षा के भीतर बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा कर सके। बच्चों के लिए व्यक्तिगत शिक्षा योजना जिसमें बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनुकूलन किया जा सके और यदि योजनाओं और कार्यक्रमों से बच्चे लाभान्वित नहीं होते तो उन्हें बदल देना चाहिए;
- बच्चों को प्रभावी निर्देश प्रदान करने के लिए शिक्षकों को मजबूत नेतृत्व और समर्थन और प्रशिक्षण प्रदान करना; प्रभावी शैक्षणिक अभ्यास सुनिश्चित करना और शिक्षकों की क्षमता विकसित करना;
- कक्षाओं में सीखने के लिए पर्याप्त समय देना;
- शिक्षण अधिगम सामग्री, किताबें, खिलौने और खेल सामग्री की पर्याप्त आपूर्ति;
- घर और स्कूल के बीच सांस्कृतिक विभाजन उन बच्चों के लिए सबसे बड़ा है जिनकी पहली भाषा, स्कूल की भाषा के समान नहीं है। निर्देश का माध्यम इसलिए बच्चे की शिक्षा प्राप्ति का निर्धारण करने में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। जब स्कूल की भाषा बच्चे की पहली भाषा के समान नहीं होती है, तो बच्चों के स्कूल छोड़ने की संभावना विशेष रूप से कम आय वाले, अल्पसंख्यक और कमजोर बच्चों को प्रभावित करती है (अवरबॅक 1989; लैड 1996)। स्कूलों को बच्चों की पहली भाषा का उपयोग करने सहित सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी प्रथाओं को शामिल करना (विलेगस और लुकास 2002)।

बच्चों को गतिविधियां देते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए

बच्चों के सीखने के लिए घर पर माता-पिता और कक्षा में शिक्षकों द्वारा बच्चों को बहुत सारे अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। बच्चों को गतिविधियां देते समय निम्नलिखित बातों पर विचार करना महत्वपूर्ण है :

- गतिविधियां किसी विशेष समय में बच्चों की स्थिति और रुचियों पर आधारित होनी चाहिए।

- सुनिश्चित करें कि बच्चा गतिविधि करना चाहता है।
- गतिविधि को बच्चों के लिए रोचक और मनोरंजक बनाएं।
- बच्चों की भागीदारी के लिए उनकी प्रशंसा करें, उनकी सराहना करें और उन्हें प्रोत्साहित करें।
- स्पष्ट निर्देश दें और सुनिश्चित करें कि बच्चा इसे समझ गया है।
- सुनिश्चित करें कि गतिविधियों को शुरू करना आसान है और यदि बच्चे ने पिछले स्तर में महारत हासिल कर ली है तो इसमें और भी चरण जोड़े जा सकते हैं। जहां आवश्यक हो अपेक्षित संकेत प्रदान करें।
- यदि बच्चा थकान या रूचि में कमी के लक्षण दिखाता है तो रुक जाएं।
- गतिविधि को प्रासंगिक ढंग से दोहराएं।
- इसे और अधिक रोचक बनाने के लिए गतिविधि में विविधताओं का उपयोग करें।
- यदि परिवर्तन काल हो या गतिविधि समाप्त होने वाली हो तो बच्चों को पहले से तैयार करें।

3.8 गतिविधि 6 : अपने विचार साझा करें

बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों को स्कूल के लिए तैयार करने में आ रही चुनौतियों को साझा करें? अपने विचारों को साझा करें।

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceh5a6 टाइप करें।

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-ecce.blogspot.com/2023/01/05-6.html

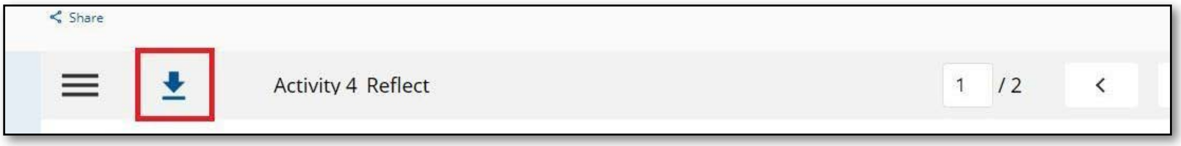

__विकल्प 3 :__ प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप 'ईपाठशाला स्कैनर' इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है -

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें।

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

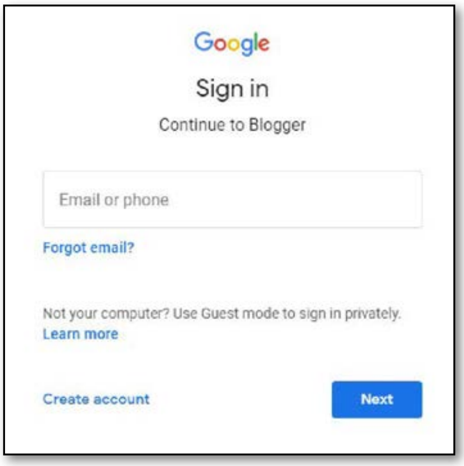

- लॉग इन करने के बाद **'Display Name'** डालें और फिर **'Continue to Blogger'** पर क्लिक करें।

- **'PUBLISH'** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

3.9 स्कूल के लिए तैयारी का आकलन

तत्परता का आकलन न केवल बच्चों के स्कूल के लिए तैयारी के स्तर का मूल्यांकन करने के लिए आवश्यक है, बल्कि सीखने के माहौल, प्रारंभिक बचपन के पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र और शिक्षक गुणवत्ता, माता-पिता की भागीदारी और स्थानीय शिक्षा नीतियों में सुधार के लिए भी आवश्यक है। स्कूल के लिए तैयारी का आकलन एक चुनौती बन जाता है क्योंकि इसमें कई हितधारक शामिल होते हैं जैसे बच्चे, माता-पिता, परिवार, शिक्षक, प्रशासक, नीति निर्माता और समुदाय के सदस्य जिनकी स्कूल के लिए तैयारी के मुद्दे पर पहले से ही अपनी अपेक्षाएं, विश्वास, मूल्य और दृष्टिकोण हैं। प्री स्कूल और आंगनवाड़ी के लिए तैयारी का आकलन करने के लिए विभिन्न प्रकार की तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं जैसे अवलोकन (जांच), चेकलिस्ट (जाँच सूची) और पोर्टफोलियो या प्रमाण के अनुसार किया हुआ परीक्षण।

मूल्यांकन के परिणामों का उपयोग इसके लिए किया जाना चाहिए :

सीखने में सुधार करें

शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की सामर्थ्य और जरूरतों को जानना चाहिए ताकि वे अपनी शिक्षण पद्धतियों को अनुकूलित कर सकें। अच्छी तरह से तैयार शिक्षक पूरे दिन बच्चों के कौशल का आकलन करते हैं, उदाहरण के लिए, बच्चे की ब्लॉक संरचना की तस्वीर लेकर या दिन के अंत में दो बच्चों के सामाजिक संपर्क आदि के बारे में एक नोट लिखकर। सुधार के उद्देश्य से स्कूल के लिए तैयारी के आकलन पर ध्यान केंद्रित करना अच्छी शिक्षण प्रथाओं का समर्थन कर सकता है। ये आकलन परिवारों को अपने बच्चों की विकासात्मक स्थिति को बेहतर ढंग से समझने में भी मदद करते हैं।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान करें

बोलने और भाषा में देरी, विकासात्मक देरी और ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार जैसी अक्षमताओं वाले बच्चों को स्कूल के लिए तैयारी में कमी का खतरा होता है। ऐसे बच्चों को शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है ताकि उनकी ज़रूरतों को समय पर पूरा किया जा सके। यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि संभावित परिणामों में सुधार के लिए पर्याप्त समर्थन और माता-पिता के मार्गदर्शन और संसाधनों के साथ उचित शैक्षिक सेवाएं प्रदान की जाती हैं। किसी भी विकास संबंधी देरी/कठिनाई के लिए बच्चों की जांच करना, उन बच्चों को गहन परीक्षण के लिए भेजने के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। यह परीक्षण उनकी व्यक्तिगत सीखने की जरूरतों और कक्षाओं में आवश्यक अनुकूलन को निर्धारित करने के लिए है।

संवेदनशील बच्चों के लिए हस्तक्षेप कार्यक्रमों की योजना बनाना

भारत में, अधिकांश राज्य, आयु का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए एकमात्र मानदंड के रूप में करते हैं कि कोई बच्चा कब योग्य है और कानूनी रूप से स्कूल जाने का हकदार है। संवेदनशील बच्चों

के लिए, राज्यों को हस्तक्षेप कार्यक्रम तैयार करने की आवश्यकता है जो बच्चों को प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश करने से पहले उपलब्धि के अभाव को कम करने के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और परिवार सेवाएँ प्रदान करते हैं। ये कार्यक्रम गृह-आधारित और/या केंद्र-आधारित कार्यक्रम हो सकते हैं। गृह आधारित कार्यक्रम आम तौर पर तीन साल से कम उम्र के बच्चों वाले माता-पिता को लक्षित करते हैं। माता-पिता के घर जाकर बच्चों की देखभाल, विकास और शिक्षा के बारे में प्रशिक्षित और सूचित किया जाता है। कुछ कार्यक्रम बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति और पूरक पोषण की जांच के लिए स्वास्थ्य सेवाएँ भी प्रदान करते हैं। केंद्र आधारित कार्यक्रम विकासात्मक रूप से उपयुक्त पाठ्यक्रम, माता-पिता के लिए सहायता सेवाओं और एक ठोस समुदाय-स्थानीय नेटवर्क के माध्यम से कार्यान्वित किए जाते हैं। शिक्षकों, प्रशासकों और माता-पिता को एक दूसरे के साथ साझेदारी में बच्चों के लिए सभी पांच ज्ञानक्षेत्र में विकासात्मक रूप से उपयुक्त निर्देश प्रदान करने के लिए व्यक्तिगत कार्यक्रम तैयार करने की आवश्यकता है।

नीति प्रावधानों को सक्षम करना

बच्चों को स्कूल के लिए तैयार होने के लिए शुरुआती वर्षों के दौरान घर, स्कूल और समुदायों में सर्वोत्तम सामाजिक, भावनात्मक और सीखने के दौरान प्राप्त अनुभव और वातावरण की आवश्यकता होती है। ऐसा करने के लिए, परिस्थितियों को बनाने की जरूरत है ताकि परिवार और समुदाय, बच्चों की जरूरतों को पूरा कर सकें। सर्वोत्तम स्थितियों के लिए सुविधाओं और कार्यक्रमों के बीच सहयोग की आवश्यकता होती है। इससे यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि बच्चों और परिवारों को उनकी ज़रूरत की सभी सहायता प्राप्त हो, और यह कि बच्चों के सीखने में आने वाली संभावित बाधाएँ दूर हो जाएँ। इसलिए, नीतियों और कार्यक्रमों को सभी बच्चों को उच्च गुणवत्ता वाले प्रारंभिक शैक्षिक अनुभव प्रदान करने के लिए प्रावधान करने की आवश्यकता है। परिवारों और प्रारंभिक बाल्यावस्था सेवाओं के बीच मजबूत संबंध की आवश्यकता है।

सारांश

स्कूल के लिए तैयारी

क्या

स्कूल के लिए तैयारी

- अवधारणा
- आवश्यकता
- महत्व
- आयाम

कैसे

तैयार परिवार

प्रारंभिक शिक्षा, विकास और स्कूल में एक स्तर से दूसरे स्तर तक पहुंचने में माता-पिता और परिवारों को शामिल करना।

तैयार स्कूल

स्कूल का वातावरण और गतिविधियाँ जो सहज बदलाव से गुजरने और उससे जुड़ी हुई गतिविधियों का समर्थन करती हैं।

तैयार बच्चे

सीखने के लिए तैयारी और उत्सुकता सहित स्कूल में प्रवेश करने के लिए बच्चों को क्या पता होना चाहिए और क्या करने में सक्षम होना चाहिए।

क्यों

- शिक्षा को विशेष रूप से वंचित वर्गों के लिए अधिक न्यायसंगत बनाता है।
- 'स्कूल के लिए तैयारी' स्कूल में बने रहने और स्कूल की पढ़ाई पूरी करने में सीखने/कौशल विकास की सफलता से जुड़ी हुई है।

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

एक 'स्कूल के लिए तैयारी' कार्यक्रम तैयार करें। इसमें स्कूल के वातावरण में किन बदलावों की जरूरत है, इस पर प्रकाश डालें। माता-पिता को कार्यक्रमों में कैसे शामिल किया जाएगा और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे स्कूल के लिए तैयार हैं पर चर्चा करें। बच्चों को किस तरह के अनुभव प्रदान किए जाएंगे की सूची बनाएँ। आप बच्चों की प्रगति और कार्यक्रम की सफलता का आकलन कैसे करेंगे? इसके लिए विवरण लिखें :

- उद्देश्य :
- स्कूलों को तैयार करने के लिए आवश्यक कदम :
- माता-पिता को तैयार करने के लिए आवश्यक कदम :
- बच्चों को उनके समग्र विकास और स्कूल के लिए तैयारी के लिए अनुभव प्रदान करना :
- शिक्षण सामग्री और तैयारी :
- इस्तेमाल की गई मूल्यांकन तकनीक :

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- डोहर्टी, जी. (1997), शून्य से छ: स्कूल की तैयारी, मानव संसाधन विकास के लिए आधार - कनाडा

  https://www.researchgate.net/publication/242683154

- भारत सरकार (2020)। नई शिक्षा नीति, मानव संसाधन विकास मंत्रालय

  https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

- हार्टसन, आर., जोन्स, ई., और जॉनसन एम. एच. (2016) प्रारंभिक वर्षों में मानव मस्तिष्क विकास, व्यवहार विज्ञान में वर्तमान राय, 10, 149-154

  https://doi.org/10.1016/j.cobeha.2016.05.015

- जानूस, एम., और डुकू, ई. (2007) 'स्कूल में प्रवेश का अंतर- सामाजिक-आर्थिक, पारिवारिक और बच्चों के स्कूल में सीखने की तैयारी से जुड़े स्वास्थ्य कारक' प्रारंभिक शिक्षा और विकास, 18 (3)

- कौल, वी. और शंकर, डी. (2009) भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा, सभी के लिए शिक्षा, मध्य-दशक मूल्यांकन, एन.यू.ई.पी.ए (NUEPA)

- शोंकॉफ, जैक पी., और लिंडा रिक्टर (2013), 'प्रारंभिक बाल्यावस्था के विकास की शक्तिशाली पहुँच - एक ध्वनि निर्देश के लिए एक विज्ञान आधारित नींव'। न्यूयॉर्क, 2013; ऑनलाइन संस्करण

- पिया रेबेलो ब्रिटो, पैट्रिस एल. एंगेल और चार्ल्स एम. सुपर (एड्स) (2013), 'हैंडबुक में प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास अनुसंधान और वैश्विक नीति पर इसका प्रभाव'। ऑक्सफोर्ड शैक्षणिक, 24 जनवरी 2013.

  https://doi.org/10.1093/acprof:oso/9780199922994.003.0002

- हार्टसन, आर., जोन्स, ई., और जॉनसन एम. एच. (2016) प्रारंभिक वर्षों में मानव मस्तिष्क विकास, व्यवहार विज्ञान में वर्तमान राय, 10, 149-154

  https://doi.org/10.1016/j.cobeha.2016.05.015pdf

- विलेगास, ए., और लुकास, टी. (2002) 'सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षकों को शिक्षित करना - एक सुसंगत दृष्टिकोण।' अल्बानी, एनवाई: सनी प्रेस

वेब लिंक

- पूर्वस्कूली वर्षों के दौरान मौखिक भाषा का विकास -

  https://www.youtube.com/watch?v=S1tSAafINFg&t=497s

- मूलभूत अंकज्ञान के लिए समस्या समाधान कौशल : प्रारंभिक वर्ष -

  https://www.youtube.com/watch?v=aZJ4kiVhO3U

- बुनियादी अंक ज्ञान के लिए पैटर्न बनाना -

  https://www.youtube.com/watch?v=L4TMfJqi7Dk

- मूलभूत अंक ज्ञान के लिए आकार और क्रम -

  https://youtu.be/mORwL-ZPJ6g

- चित्र पढ़ना और कहानी कहने के तरीके -

  https://youtu.be/3gav6BXih4M

- इस पर चर्चा : घर पर प्रीस्कूली बच्चों को कैसे शामिल करें -

  https://www.youtube.com/watch?v=EN12s4_8Tjw

- बच्चों के लिए घर पर आधारित शारीरिक गतिविधियां (हिंदी वीडियो) -

  https://www.youtube.com/watch?v=U_o17QaVrO8&t=264s

निष्ठा (ईसीसीई)

शिक्षा के पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों और स्कूल प्रमुखों के लिए एक एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम

कोर्स 06

जन्म से तीन साल – विशेष आवश्यकताओं के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली - 110016

अनुक्रमणिका

- **कोर्स की जानकारी**

  कोर्स का विवरण

  मुख्य शब्द

  उद्देश्य

  कोर्स की रूपरेखा

- **1. पहले 1000 दिनों के दौरान प्रारंभिक पहचान**

  1.1 सभी को स्कूल के लिए तैयार करना

  1.2 गतिविधि 1 : बच्चे का अवलोकन करना – स्वयं प्रयास करें

- **2. पहले 1000 दिनों का महत्व और ई.सी.सी.ई. पदाधिकारियों की भूमिका**

  2.1 पहले 1000 दिनों का महत्व

  2.2 गतिविधि 2 : अपनी समझ की जांच करें

  2.3 तीन डी - विकास (*डेवलपमेंट*), विलम्ब (*डिले*) और दिव्यांगता (*डिसेबिलिटी*)

  2.4 पहला 'डी' : विकासात्मक दिशा सूचक

  2.5 अतिरिक्त गतिविधि : विकास के आयाम - अन्वेषण

  2.6 दूसरा 'डी' : विकास में देरी या विलंब

  2.7 तीसरा 'डी' : दिव्यांगताएं

  2.8 विकासात्मक दिशासूचक और विलंब की पहचान

  2.9 दिव्यांगताओं की प्रारंभिक पहचान के लिए लाल झण्डा (सतर्कता संदेश)

  2.10 गतिविधि 3 : हस्तक्षेप/कार्रवाई/ध्यान की पहचान करें - अपनी समझ की जांच करें

- **3. पहले 1000 दिनों के दौरान प्रारंभिक हस्तक्षेप**

  3.1 आरंभिक हस्तक्षेप

  3.2 सुलभ टी.एल.एम. और जागरूक गतिविधियों की तैयारी

  3.3 गतिविधि 4 : स्वयं प्रयास करें

  3.4 माता-पिता और परिवारों से संवाद करना

  3.5 गतिविधि 5 : अपने विचार साझा करें

  3.6 ई.सी.सी.ई. केंद्र के लिए यू.डी.एल. आधारित गतिविधियाँ बनाना

  3.7 गतिविधि 6 : समावेशी ECCE केंद्र - अपने विचार साझा करें

  3.8 पूर्व प्राथमिक शिक्षक की भूमिका और दायित्व

सारांश

» सारांश

पोर्टफोलियो गतिविधि

» असाइनमेंट

अतिरिक्त संसाधन

» संदर्भ

» वेब लिंक

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

यह कोर्स एक बच्चे के जीवन के पहले 1000 दिनों और विकास के दिशा सूचकों के बारे में है। विद्यार्थियों को प्रारंभिक हस्तक्षेप के लिए चिंता सूचक (लाल झंडा) और प्रासंगिक रणनीतियों का ज्ञान प्राप्त होगा, जिससे दिव्यांगता के प्रभावों में कमी आएगी। पेशेवर मदद और माता-पिता के सहयोग से काम करने के सुझाव भी प्रदान किए गए हैं।

मुख्य शब्द

NISHTHAECCE, ANGANWADI, EARLY IDENTIFICATION, EARLY INTERVENTION, DEVELOPMENTAL MILESTONES, VISIBLE DISABILITIES, INVISIBLE DISABILITIES

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- बच्चे के विकास के लिए पहले 1000 दिनों के महत्व का वर्णन करने में।
- 3-डी : विकास, विलम्ब और विकलांगता (दिव्यांगता) में अंतर करने में।
- जन्म से 3 वर्षों के दौरान विकास के महत्वपूर्ण दिशा संकेतों का वर्णन कर पाने में।
- चिंता संकेतों की पहचान और शिशुओं के विकास हेतु उद्दीपकों की आवश्यकता का वर्णन कर कर पाने में।
- दिव्यांग बच्चों की पहचान, हस्तक्षेप और शुरुआती उद्दीपकों के बारे में माता-पिता और अन्य परिवारजनों से बातचीत कर पाने में।
- यू.डी.एल. आधारित गतिविधियों का निर्माण कर पाने में।
- अभिभावकों को अतिरिक्त विशेषज्ञ सहायता हेतु सुझाव देने में।

कोर्स की रूपरेखा

- बच्चे के जीवन में पहले 1000 दिनों का महत्व।
- 3 डी : विकास, विलम्ब और विकलांगता (दिव्यांगता)।
- जन्म से तीन साल के दौरान विकास के महत्वपूर्ण दिशा सूचक।
- विकलांगताओं (दिव्यांगताओं) की आरंभिक पहचान के चिंता सूचक लाल झंडे।
- विकास हेतु उद्दीपक।
- शुरुआती हस्तक्षेप के लिए परिवारों के साथ सहयोग करना।
- यू.डी.एल. आधारित ई.सी.सी.ई. केंद्र विकसित करना।
- अभिभावकों को परामर्श देना।

••• मॉड्यूल 1 •••

पहले 1000 दिनों के दौरान प्रारंभिक पहचान

मॉड्यूल 1 : पहले 1000 दिनों के दौरान प्रारंभिक पहचान

1.1 सभी को स्कूल के लिए तैयार करना

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_3137123540627783681371

प्रतिलिपि

प्रिय विद्यार्थियों, हम सभी जानते हैं कि आज के बच्चे कल के नागरिक हैं और वह एक जीवंत भारत बनाएंगे। बच्चों को अक्सर कलियों के रूप में जाना जाता है जो जल्द ही फूलों में बदल जाएँगे और हमारे राष्ट्र को खुशी के साथ प्रगति करने में मदद करेंगे। इस विचार के समर्थन में बहुत सारे सबूत हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा जिसे हम (ई.सी.सी.ई) के नाम से जानते हैं बच्चों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। पहली बार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बच्चों के विकास के बुनियादी मूलभूत वर्षों को उचित महत्व दिया गया है और इसे औपचारिक शिक्षा के तहत लाया गया है। इससे सतत राष्ट्रीय विकास के लिए ई.सी.सी.ई. के महत्व को बल मिला है। नीति विशेष रूप से जन्म से 3 साल तक की अवधि में मानसिक विकास पर बल देती है ताकि बच्चे विद्यालय के लिए तैयार हो सकें। शिक्षा नीति इस तथ्य पर भी हमारा ध्यान आकर्षित करती है, कि बच्चे के मस्तिष्क का 85% विकास शुरुआती वर्षों में ही हो जाता है। इसलिए इन वर्षों में देखभाल और उचित उद्दीपक विशेष रूप से पहले 1000 दिनों के दौरान स्वस्थ मस्तिष्क के लिए अति आवश्यक है।

एन ई पी 2020 का एक महत्वपूर्ण अवलोकन सभी बच्चों के लिए ई.सी.सी.ई. की गुणवत्ता के बारे में है। इसमें उल्लेख किया गया है कि भारत में करोड़ों छोटे बच्चों के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली

ई.सी.सी.ई. उपलब्ध नहीं है। यह विशेष रूप से सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि जिन्हें हम (एस.ई.डी.जी) के नाम से जानते हैं से संबंध रखने वाले बच्चों के बारे में है। जिसमें दिव्यांग बच्चे भी शामिल हैं। हमारे देश के भविष्य के लिए बहुत ही प्रभावी समाधान का उल्लेख इस नीति में किया गया है। यह समाधान है - समावेशी तरीके से ई.सी.सी.ई. में एक मजबूत निवेश करने का। इसका निहतार्थ है कि अच्छी गुणवत्ता वाले ई.सी.सी.ई.कार्यक्रमों में सभी छोटे बच्चों में प्रारंभिक साक्षरता और संख्यात्मकता विकसित करने की क्षमता है। इससे सभी को विद्यालय के लिए तैयार होने और मुख्यधारा से जुड़ने में मदद मिलेगी। जब हम कहते हैं 'सभी', तो इसमें वे सभी बच्चे सम्मिलित हैं जो अपनी दिव्यांगता या विकासात्मक विलंब के कारण ई.सी.सी.ई. से बाहर रह जाते हैं। इसमें शामिल हैं दृश्य, श्रवण या बौद्धिक दिव्यांगताएं जिन पर विशेष रूप से अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। अगर सही समय पर ध्यान दिया जाए तो शुरुआत भी सही और अच्छी ही होगी। दुनिया भर के साक्ष्य साबित करते हैं कि दिव्यांग बच्चों में आगे बढ़ने की क्षमता समान रूप से ही होती है, यदि आवश्यकता है तो केवल जल्द से जल्द पहचान कर उचित सहायता देने की। इस तरह के कदमों से जीवन पर्यन्त पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था में भागीदारी करने और आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। यही कारण है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने बच्चों के विकास की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उल्लेख किया है कि सभी बच्चों को ई.सी.सी.ई. के दायरे में लाया जाए और इस सन्दर्भ में तुरंत आवश्यक कदम उठाने की जरूरत है। नीति पुरजोर वकालत करती है कि वर्ष 2030 तक ऐसे आवश्यक कदम उठाये जाएँ जिससे सुनिश्चित किया जा सके कि कक्षा एक में प्रवेश लेने वाले सभी विद्यार्थी शाला के लिए तैयार हैं।

1.2 गतिविधि 1 : बच्चे का अवलोकन करना – स्वयं प्रयास करें

- अपनी आंगनवाड़ियों या पूर्व प्राथमिक विद्यालय में 2½ वर्ष की आयु के 10-10 बच्चों की मुख्य विशेषताओं का अवलोकन करें।
- उन गतिविधियों को लिखें जो वे करने में सक्षम हैं और ऐसी किसी भी विशेषता पर ध्यान दें, जो आपको लगता है कि अन्य बच्चों से अलग हैं। ऐसे 2 बच्चों के उदाहरण दिए गए हैं। निम्नलिखित तालिका प्रारूप में सभी बच्चों का एक संक्षिप्त विवरण तैयार करें।
- तालिका भरने के बाद निम्नलिखित पर विचार करें :
  - » क्या सभी बच्चे समान हैं?
  - » यद्यपि वे सभी समान आयु के हैं, अतः क्या वे सभी गतिविधियों को समान रूप से करने में सक्षम हैं?
  - » कुछ ऐसी आकर्षक विशेषताओं/विभिन्न क्षमताओं के बारे में सोचें जो आपने इन बच्चों में देखी हैं?

तालिका 1 : विशेषताएं और गतिविधियाँ जो बच्चे कर सकते हैं।

क्रमांक	बच्चे का नाम	गतिविधियाँ जो बच्चा करता है	उल्लेखनीय गुण/विभिन्न क्षमता
1.	राधा	◆ खिलौनों के साथ खेलती हैं। ◆ 2 या 3 शब्दों से छोटे वाक्यों में बात करती है। ◆ संगीत और छोटे बच्चों के साथ का आनंद लेती है। ◆ दादा-दादी से कहानियां सुनना अच्छा लगता है। ◆ दादा-दादी के साथ बगीचे में जाना पसंद है।	आम तौर पर एक मिलनसार बच्ची है।
2.	सुमित	◆ एक ही खिलौने से बार-बार खुद ही खेलता है। ◆ मात्र 2 या 3 शब्दों में ही बोलता हैं जो स्पष्ट भी नहीं हैं।	माँ से चिपक जाता है और, जब परिवार के अन्य लोग उसके साथ खेलने की कोशिश करते हैं, तो चिल्लाता है।
3.			
4.			
5.			
6.			
7.			

••• मॉड्यूल 2 •••

पहले 1000 दिनों का महत्व और ई.सी.सी.ई. पदाधिकारियों की भूमिका

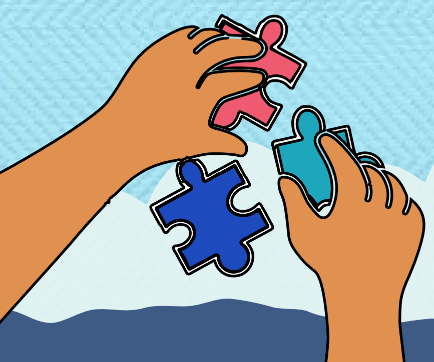

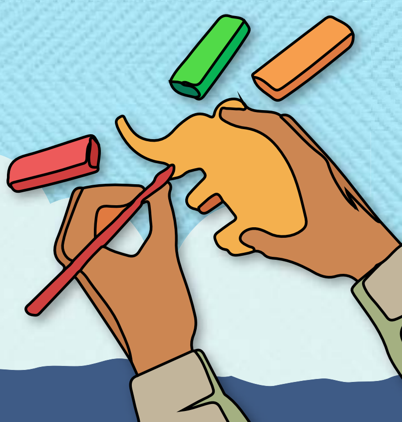

मॉड्यूल 2 : पहले 1000 दिनों का महत्व और ई.सी.सी.ई. पदाधिकारियों की भूमिका

2.1 पहले 1000 दिनों का महत्व

बच्चों के लिए, गर्भाधान से लेकर 2 साल की उम्र तक की अवधि बहुत महत्वपूर्ण है और इसे सबसे प्रभावशाली 1000 दिनों के रूप में जाना जाता है। एक ओर तो जहाँ यह जबरदस्त क्षमता का समय है, तो वहीं दूसरी ओर ये समय अतिरिक्त सावधानियों का भी है। गर्भावस्था के दौरान, यदि माँ सभी आवश्यक देखभाल पर ध्यान देती है और स्वस्थ रहती है, तो अच्छी संभावना है, एक स्वस्थ बच्चे के जन्म की। अन्य देशों की तरह भारत में भी बच्चे के जन्म का जश्न मनाया जाता है और आमतौर पर यह परिवार के लिए बहुत खुशी लाता है। भारत के लगभग सभी समुदायों में, गर्भवती महिलाओं की गोद भरनी या गोद भराई, बच्चे का आगमन, नामकरण समारोह, 'अन्नप्राशन' यानी ठोस भोजन की शुरुआत आदि को भव्यता के साथ मनाया जाता है। हम, कृष्ण के बचपन के कथाओं और अन्य पुरानी कहानियों को सुनकर अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोते हैं और इसके साथ ही, बड़े उत्साह से हम "जन्माष्टमी" और "राम जन्म" उत्सव मनाते हैं।

एक सुरक्षित प्रसव और नवजात शिशु की शुरुआती सुरक्षित अवधि, बच्चों में बाद के विकास और सीखने हेतु एक मजबूत नींव रखती है और इसलिए आंगनवाड़ी/पूर्व प्राथमिक विद्यालयी शिक्षकों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। बच्चों की समग्र वृद्धि और सर्वांगीण विकास के लिए, प्रतिबद्धता, कई राष्ट्रीय पहलों के माध्यम से स्पष्ट है और इनमें से सबसे महत्वपूर्ण है, एकीकृत बाल विकास योजना (आई.सी.डी.एस.)। यह प्रतिष्ठित राष्ट्रीय योजना 1974 में शुरू की गई थी और अगले साल, यह अपने 50 साल पूरे करेगी। कल्पना कीजिए कि कितने बच्चे और माताएं इस योजना से लाभान्वित हुए हैं। यह समग्र बहु केंद्रित दृष्टिकोण वाली सेवाओं का एक ठोस पुलिंदा है। इसका लक्ष्य है, आरंभिक महत्वपूर्ण 6 वर्षों के दौरान बच्चों की विकासात्मक जरूरतों को पूरा करना, और साथ ही माताओं की भलाई और देखभाल भी है। अनुसंधान इंगित करता है कि एक गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिला के स्वास्थ्य का संबंध सीधे उसके शिशु के विकास एवं वृद्धि से है। पहले वर्ष के दौरान माँ और बच्चे का संतुलित भोजन और पोषण, न केवल बच्चे के विकास एवं वृद्धि पर सीधा प्रभाव डालता है, बल्कि यह बीमारी और दिव्यांगता के जोखिम को कम करने के लिए भी जाना जाता है।

गर्भावस्था के दौरान हानिकारक स्व-दवा, अपौष्टिक भोजन या बुखार आदि भ्रूण के विकास को प्रभावित कर सकते हैं और परिणामस्वरूप संकुचित वृद्धि या विकास में विलम्ब का कारण बन सकते

हैं। इसी तरह, प्रसव के दौरान जटिलताएं जैसे कि लंबे समय तक प्रसव या अन्य जोखिम कारक भी बच्चे के विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

'*रोकथाम इलाज से बेहतर है*' के आधार पर काम करते हुए, आंगनवाड़ी/ पूर्व प्राथमिक विद्यालयी शिक्षकों सहित ई.सी.सी.ई. के पदाधिकारियों को जन्म से पहले (प्रसव पूर्व), जन्म के दौरान (नवजात) और जन्म के तुरंत बाद (प्रसवोत्तर) जोखिम कारकों के बारे में विस्तृत जानकारी होनी चाहिए। यह जानकारी अच्छे स्वास्थ्य के बारे में जानकारी का प्रचार करने और माताओं और उनके बच्चों दोनों के लिए बीमारी या दिव्यांगता के जोखिम को कम करने में सहायक होगी यह उस आंगनवाड़ी/पूर्व प्राथमिक विद्यालयी शिक्षक की भूमिका और अपेक्षाओं को परिभाषित करने में भी मदद करेगी, जो सशक्त युवा आबादी के साथ एक स्वस्थ देश के निर्माण की दिशा में काम कर रहे हैं।

जोखिम कारक

बच्चे की वृद्धि और विकास से जुड़े कई जोखिम कारक हैं। ये 1000 दिनों की अवधि में विभिन्न चरणों में उत्पन्न हो सकते हैं।

- **सामान्य कारक :** बहुत करीबी रक्त सम्बन्धों में विवाह जैसे ममेरे, चचेरे भाई बहनो में विवाह, कम उम्र में विवाह और गर्भधारण, खराब मातृ स्वास्थ्य, कुपोषण, आर.एच. असंगति और दिव्यांगता का पारिवारिक इतिहास।
- **प्रसव-पूर्व (गर्भावस्था के दौरान) की स्थिति :** चिकित्सा सहायता की कमी, उच्च बुखार, खसरा, गर्भावस्था के पहले 3 महीनों के दौरान कण्ठमाला (mumps), कठोर शारीरिक कार्य, दुर्घटनावश गिर जाना, विकिरण और एक्स-रे के संपर्क में आना, धूम्रपान, दवा की खपत, स्व-दवाएं, सीसा विषाक्तता आदि।
- **नवजात (प्रसव के दौरान) की स्थिति :** समय से पहले प्रसव, सुरक्षित प्रसव सुविधाओं की कमी, जन्म के तुरंत बाद बच्चे का न रोना और पुनर्जीवन उपायों की अनुपस्थिति, जन्म के समय कम वजन।
- **प्रसवोत्तर (प्रसव के बाद) की स्थिति :** आपात स्थिति हेतु चिकित्सा सुविधा का अभाव, शिशु पीलिया, तेज बुखार, गिरने या दुर्घटना, तेज शोर के संपर्क में आना, मेनिन्जाइटिस और एनसेफलाइटिस (तानिकाशोद और दिमागी बुख़ार) जैसे संक्रमण, कुपोषण, महत्वपूर्ण अंगों की कानों, आँखों या दिमाग को नुकसान पहुंचाना।

2.2 गतिविधि 2 : अपनी समझ की जांच करें

क्यूआर कोड स्कैन करके गतिविधि करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_31371076509461708811005

2.3 तीन डी - विकास (*डेवलपमेंट*), विलम्ब (*डिले*) और दिव्यांगता (*डिसेबिलिटी*)

एक बच्चे के जीवन के पहले 1000 दिनों का अत्यधिक महत्व है और बच्चे के साक्षी, उसके आस पास रहने वाले सभी लोगों को 3-डी के बारे में विस्तार से जानकारी होनी चाहिए। पहले 1000 दिनों के दौरान इन 3-डी पर नजर रखने से बाद के साथ एवं उत्पादक जीवन की नींव रखी जा सकेगी।

पहला 'डी' है, विकास (डेवलपमेंट), इसका संबंध है, सिर पर नियंत्रण, पहला शब्द, आपका नाम पहचानना, इत्यादि में आनंद से विशिष्ट पूर्ण व्यवहारों (शैक्षिक रूप से जिन्हें विकासात्मक दिशा सूचक कहा जाता है) की समयोचित उपलब्धि में किसी भी अकारण विसंगति को विलम्ब कहा जाता है। यह हमारे 3-डी का दूसरा 'डी' यानी विलम्ब (डिले) है। विकासात्मक दिशा सूचकों की समयोचित उपलब्धि में देरी, बाद के जीवन में संभावित दिव्यांगता, की शुरुआती अभिव्यक्तियों का संकेत दे सकती है। ध्यान योग्य बात यह भी है कि स्वीकृत समय सीमा से थोड़ा विलम्ब चिंता का कारण नहीं होना चाहिए। उदाहरण के लिए, बच्चों का दसवें महीने या चौदहवें महीने में पहला कदम उठाना दोनों ही स्वीकार्य है। विकास में ऐसा विलंब या देरी जिसे उचित नहीं ठहराया जा सकता है, के बारे में डॉक्टरों के साथ चर्चा की जानी चाहिए ताकि दिव्यांगता की शुरुआत या शुरुआती लक्षणों पर ध्यान दिया जा सके। डिसेबिलिटी (दिव्यांगता) तीसरा 'डी' है। औचित्य के अभाव में, विकास के दिशा सूचकों में विलम्ब, अक्सर दिव्यांगता की संभावना का संकेत दे सकता है, जिसका यदि जल्दी पता लग जाए, तो समय पर सही हस्तक्षेप से प्रभावी प्रबंधन किया जा सकता है।

2.4 पहला 'डी' : विकासात्मक दिशा सूचक

शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक जैसे विकास के सभी संदर्भ में एक बच्चे का समग्र विकास महत्वपूर्ण है।

विकास के लिए प्रमुख सिद्धांत निम्न हैं :

- विकास गुणात्मक रूप से सरल से जटिल के क्रम में आगे बढ़ता है।
- विकास सामान्य से विशिष्ट तक जारी रहता है।
- विकास दिशात्मक रूप से आगे बढ़ता है।
- विकास जीवन भर जारी रहता है।
- विकास परिपक्वता और सीखने पर निर्भर करता है।
- विकास वंशानुक्रम और परिवेश पर निर्भर करता है।

बच्चों में, कई व्यवहार और कौशल एक विशेष उम्र में और अनुमानित तरीके से विकसित होते हैं और इन्हें विकास के दिशा सूचक कहा जाता है। उन्हें विभिन्न श्रेणियों के तहत वर्गीकृत किया गया है और इसमें शामिल हैं, भौतिक, गत्यात्मक, संज्ञानात्मक, संचार एवं भाषा, और सामाजिक-भावनात्मक आयाम। ई.सी.सी.ई. कार्यकर्ताओं और आंगनवाड़ी/पूर्व प्राथमिक विद्यालयी शिक्षकों के लिए प्रत्येक आयाम के तहत आने वाले विकास के दिशा सूचकों से परिचित होना महत्वपूर्ण है, ताकि किसी भी विचलन को ध्यान से देखा और रिपोर्ट किया जा सके। राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (आर.बी.एस.के.) ने 2 वर्ष तक के बच्चों के लिए विकास के दिशा सूचकों की पहचान की है। इन विकासात्मक दिशा सूचकों को निम्नलिखित तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

- **शारीरिक और गत्यात्मक श्रेणियाँ -** ऐसा कौशल जिसमें मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र के साथ समन्वय के साथ, कंकाल की माँसपेशियों के उपयोग की आवश्यकता होती है, उन्हें गत्यात्मक कौशल के रूप में जाना जाता है। ये मुख्य रूप से सकल गत्यात्मक कौशल और महीन गत्यात्मक कौशल में उप-विभाजित हैं। शरीर की बड़ी माँसपेशियों का उपयोग करके किए गए सकल गत्यात्मक कौशल के उदाहरण सिर उठाना,हाथ घुमाना, संतुलन आदि हैं। शरीर की छोटी माँसपेशियों का उपयोग करके महीन गत्यात्मक कौशल का प्रदर्शन किया जाता है, इसके उदाहरण हैं, काटना, रंगना, लिखना, चिमटे की पकड़, अंगूठे और तर्जनी का उपयोग करना, जैसे- मोती पिरोना आदि।
- **संज्ञानात्मक श्रेणियाँ -** यह मुख्य रूप से मानसिक प्रक्रियाओं जैसे याद रखना, समझना, लागू करना, विश्लेषण करना, मूल्यांकन करना आदि से संबंधित कौशल है। ये कौशल पर्यावरण के साथ बेहतर ढंग से जुड़ने में मदद करते हैं।

- **सामाजिक-भावनात्मक श्रेणियाँ -** इसमें स्वयं सहायता, जीवन कौशल, प्रशंसा, दोस्ती, समूह बातचीत, भावनाओं को व्यक्त करना, दूसरों की भावनाओं को स्वीकार करना, भावनाओं को प्रबंधित करना और नियंत्रित करना, लोगों और हमारे आसपास के अन्य संसाधनों के साथ जुड़ना जैसे कौशल शामिल हैं।

2.5 अतिरिक्त गतिविधि : विकास के आयाम - अन्वेषण

क्यूआर कोड स्कैन करके गतिविधि करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_31371160801422540811259?contentType=Resource

2.6 दूसरा 'डी' : विकास में देरी या विलंब

क्या आपने, कभी माताओं को अन्य ऐसी माताओं के साथ बातचीत करते हुए सुना है जिनके बच्चे लगभग समान उम्र के हैं। उनकी बातचीत अक्सर अपने बच्चों की वृद्धि और विकास सूचक संकेतों के आसपास ही रहती है। वह अक्सर एक दूसरे से पूछती हैं कि आपके बच्चे ने कब बोलना शुरू किया? आपका बच्चा कितना बड़ा था जब उसने घुटनों के बल चलना शुरू किया था? मेरा बच्चा पीछे की ओर रेंगता है, क्या यह ठीक है? मेरा बच्चा अभी तक खड़ा भी नहीं हो पाता है लेकिन पड़ोस में रहने वाला उसी के साथ का बच्चा दौड़ता है।

शिशु और बच्चों के विकासात्मक दिशा सूचक के बारे में चर्चा करना माता-पिता के बीच बहुत आम है, खासकर माताओं के बीच। यह तुलना नहीं है, लेकिन यह एक पुन: आश्वासन की तरह है कि उनका बच्चा इन्हीं बच्चों की तरह है।

हालांकि, माता-पिता के लिए यह निश्चित रूप से चिंताजनक हो सकता है कि अन्य बच्चों ने उनके बच्चों से पहले विकासात्मक दिशा सूची हासिल कर ली है।

जब अनुमति विकास की आवश्यकता या क्रम में एक बच्चे की प्रगति धीमी या रुक जाती है या उलट जाती है तो इसे विकास में देरी या विलम्ब कहा जाता है। विलम्ब का मतलब है कि बच्चे ने समान आयु के अन्य बच्चों की तुलना में, अपेक्षित विकास कौशल प्राप्त नहीं किया है।

विलम्ब या देरी किसी भी एक क्षेत्र में हो सकती है, जैसे कि गत्यात्मक कामकाज, वाणी और भाषा, संज्ञानात्मक, खेल और सामाजिक कौशल। जब विलम्ब किसी एक या अधिक क्षेत्र में हो, तो उसे सकल विकास, विलम्ब या देरी कहा जाता है।

विकासात्मक देरी' के बारे में हमें कब चिंता करनी चाहिए?

थोड़ी बहुत देरी चिंताजनक नहीं होनी चाहिए। हम जानते हैं कि प्रत्येक बच्चा अपनी गति से विकसित होता है, लेकिन बहुत अधिक समय तक 'प्रतीक्षा करना और देखना' भी उचित नहीं है। इससे बच्चा कुछ विकास कौशल प्राप्त करने से चूक सकता है।

2.7 तीसरा 'डी' : दिव्यांगताएं

हर बच्चा अद्वितीय और विविध है, वह न केवल अलग तरह से सीखने में सक्षम है, बल्कि अलग तरह से सफल होने में भी सक्षम है।

दिव्यांगता भी, एक तरह की मानव विविधता ही है और निश्चित रूप से दिव्यांगता, किसी व्यक्ति की सफलता में बाधा नहीं है। *दिव्यांगता, किसी भी समय, जन्म से पहले, जन्म के समय यानी जन्मजात या जन्म के बाद अर्थात अधिग्रहित हो सकती है। जन्मजात दिव्यांगता यानी अक्सर अधिग्रहित दिव्यांगताओं की तुलना में अधिक प्रभाव डालती है।* बच्चों के विकास में देरी या बाधा का कारण दिव्यांगता हो सकती है।

तालिका 2 : अनुभव की गई विशेषताएं और कठिनाइयां।

दिव्यांगता का प्रकार	अनुभव की गई विशेषताएं और कठिनाइयां
सेरेब्रल पाल्सी (प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात)	◆ चलने-फिरने, लुढ़कने, रेंगने, और पकड़ने में कठिनाई। ◆ सिर पर नियंत्रण रखने में असमर्थता, जोड़ों और माँसपेशियों में जकड़न। ◆ वस्तुओं तक पहुंचने, उन्हें पकड़ने और ताली बजाने में कठिनाइयाँ। ◆ मांसपेशियों के तनाव की कमी के कारण वाणी और संचार में देरी होती है। ◆ बच्चों के पैरों में जकड़न या विकृति हो सकती है, पीठ या गर्दन में असामान्य खिंचाव हो सकता है। ◆ अत्यधिक लार टपकना।

गत्यात्मक/शारीरिक विकार	◆ मांसपेशियों में असामान्य रूप से तनाव है और सीधे बैठने या उठने या फिर टांगों को घुटने को बैठने या मोड़ने की कोशिश का विरोध करता है। ◆ मांसपेशियों असामान्य रूप से ढीली है और लगभग 3 महीने के बाद भी अपना सिर संभाल नहीं पाता है। ◆ खिलौनों तक पहुंच नहीं पाता है। ◆ स्वेच्छा से वस्तुओं पकड़ कर छोड़ने में परेशानी होती है। ◆ खेल के दौरान शरीर के सभी अंगों तक नहीं पहुँच पाता है। ◆ केवल एक ही हाथ का बहुत अधिक उपयोग, यहां तक कि खुद को खिलाते समय भी। ◆ गिरने की संभावना होने पर भी खुद को पकड़ने के लिए हाथ का सहारा नहीं ले पाता है। ◆ हाथ अविकसित है या उँगलियों का समन्वय खराब है और वस्तुओं को उठा या पकड़ नहीं सकता है। ◆ संतुलन खराब है अथवा लड़खड़ाता है और अक्सर हिलता-डुलता या गिरता रहता है।
बौनापन	◆ असमानुपातिक बौनेपन में शरीर का आकार छोटा होता है और हाथ-पैर या तो बहुत छोटे या लंबे होते हैं। ◆ समानुपातिक बौनेपन में अंग अनुपात हो सकते हैं, लेकिन पूरे शरीर का आकार छोटा होता है।
दृश्य-दोष	◆ देखने में बच्चों की आंखें असामान्य लग सकती है और शायद वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने या उनके करीब होने पर भी अच्छी तरह से नहीं देख पाता है। ◆ परिचित चेहरों पर मुस्कुराता नहीं है, आंखो से संपर्क नहीं कर पाता है। ◆ झटके के साथ आंखों को तेजी से एक से दूसरी ओर घुमाता है। ◆ आंखों की पुतली सफेद या धुंधली लगती है। ◆ गतिविधियों, अवधारणात्मक विकास और सामाजिक-भावनात्मक कौशलों में कठिनाई होती है।

श्रवण-दोष	◆ परिवेश की ध्वनियां या खिलौनों की आवाजों पर प्रतिक्रिया नहीं दे पाता। ◆ परिवार के सदस्यों से बातचीत या अन्य हम उम्र, बच्चों की तरह प्रतिक्रिया नहीं दे पाता है। बड़बड़ाने और खिलखिलाने में देरी हो सकती है। ◆ वाणी और भाषा में गंभीर रूप से देरी हो सकती है। संचार या संवाद इशारों तक ही सीमित हो जाता है और इससे सामाजिक-भावनात्मक कौशल भी प्रभावित होते हैं। ◆ भाषा की कमी से पूर्व साक्षरता कौशल अधिक प्रभावित होते हैं।
वाणी और भाषा की अक्षमता (दिव्यांगता)	◆ दूसरे क्या कहते हैं को समझने में समस्या यानी भाषाई ग्रहणशीलता। ◆ शब्दों को न सुन पाना (श्रवण दोष) और शब्दों के अर्थ को नहीं समझ पाना। ◆ भाषा का उपयोग करके विचारों को संप्रेषित (भाषायी अभिव्यक्ति) करने में समस्या इस कारण हो सकते हैं – शब्दों के उपयोग को नहीं जाना है; शब्दों को एक साथ रखने का तरीका नहीं पता; उपयोग करने के लिए शब्दों को जानना लेकिन सही से उपयोग न कर पाना। ◆ उचित रूप से विशिष्ट शब्दों या ध्वनियों को बनाने में कठिनाई। ◆ शब्दों या वाक्यों को सुचारू रूप से प्रवाहित करने में कठिनाई, जैसे कि तुतलाना या हकलाना। ◆ भाषा में देरी या विलंब - समझने और बोलने की क्षमता सामान्य की तुलना में अधिक धीरे-धीरे विकसित होती है। ◆ अफाशिया - मस्तिष्क के चोट अथवा मस्तिष्क की कार्यप्रणाली के कारण भाषा के कुछ हिस्सों को समझने या बोलने में कठिनाई। ◆ श्रवण प्रसंस्करण विकार - कान द्वारा मस्तिष्क को भेजी जाने वाली ध्वनियों के अर्थ को समझने में कठिनाई।

बौद्धिक अक्षमता	◆ विकासात्मक दिशा सूचकों की उपलब्धि में देरी, विकास के लगभग सभी आयामों जैसे संचार, भाषा और सामाजिक-भावनात्मक कौशल के साथ-साथ, बुनियादी समस्या सुलझाने के कौशल को भी प्रभावित करती है। ◆ ऐसे अनुकूलित व्यवहार, जिसमें सामाजिक और व्यावहारिक कौशल शामिल हैं, जो अवलोकन और बातचीत करके सीखे जाते हैं, वहाँ भी प्रभावित होते हैं, इससे नियमित दैनिक जीवन गतिविधियों के लिए स्वयं सहायता कौशल प्रभावित होते हैं।
विशिष्ट अधिगम अक्षमता	◆ इसके लक्षण आमतौर पर तब सामने आते हैं जब बच्चे आंगनवाड़ी या औपचारिक विद्यालय जाना शुरू करते हैं यानी तब जब पढ़ना और लिखना शुरू होता है। ◆ 'बोलने में देरी' इसके शुरुआती संकेतों में से एक हो सकता है। ◆ आमतौर पर सुनने, सोचने और बोलने में कठिनाई भी इसके आरंभिक संकेत हो सकते हैं।
स्वपरायणता स्पेक्ट्रम विकार (ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर/ स्वलीनता)	◆ स्वलीनता वाले बच्चों में सामाजिक-भावनात्मक कौशलों में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयां आ सकती है। ◆ बच्चों में अपनी माँ के प्रति भी लगाव की कमी हो सकती है। ◆ वह लगातार दोहराए जाने वाले व्यवहार (जैसे- हिलते रहना) काफी देर तक कर सकते हैं और दिनचर्या में बदलाव को आसानी से स्वीकार नहीं कर पाते हैं। ◆ कुछ को खिलौनों और उनके आसपास के लोगों में बहुत सीमित रुचि हो सकती है। ◆ सामाजिक मुस्कान और आंखो से संपर्क नहीं कर पाते हैं और संवाद के लिए सीमित इशारों का उपयोग करते हैं।
बहु-दिव्यांगताएं जैसे बधिरता और अंधापन	◆ गत्यात्मक विकास और गतिशीलता, संचार, भाषा, वाणी, साक्षरता विकास, समाजीकरण, व्यवहार, भावनात्मक और संवेदी मुद्दे।

2.8 विकासात्मक दिशासूचक और विलंब की पहचान

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_31371231330758656012184

प्रतिलिपि

नमस्कार!

जैसा कि अब आप परिचित हैं 3D's से जो हैं डेवलपमेंटल माइलस्टोन्स, डिलेज़ एंड डिसैबिलिटीज। इन्हें हम हिंदी में विकासात्मक दिशासूचक, विलंब और विक्लांगताएं यानी कि दिव्यांगताओं के नाम से जानते हैं। दिन प्रतिदिन के जीवन में हमारा इनसे विभिन्न प्रकार से सामना होता है। अभिभावक और शिक्षक इन्हें अपने अनुभवों से समझते हैं और व्यवहार करते हैं। आइए देखते हैं पहला दृश्य जहां दो माताएं आपस में बात कर रही हैं -

पहली माता - हाय!! कैसी हो?

दूसरी माता - मैं ठीक हूँ, आप कैसे हैं?

पहली माता - मैं बढ़िया

दूसरी माता - बहुत देर हो गई आपको आने में।

पहली माता - अरे, आप तो जानती ही हैं न बच्चों के साथ लाइफ कैसी है आज कल के दिन में।

दूसरी माता - मैं बिल्कुल समझ सकती हूँ। मैं बताती हूँ आपको, मेरा मोहित, हर बार उसके पास यही सवाल होता है, मम्मी ये ऐसे क्यों होता है, मम्मी ये वैसे क्यों होता है और वो चाहता है कि मुझे हर सवाल का जवाब पता हो। मतलब आप बताइए ऐसा तो कैसे ही हो सकता है।

पहली माता - और मेरा सुमित मुझे तो लिट्रली उसके ऊपर चिल्लाना पड़ता है कोई भी बात बताने के लिए।

दूसरी माता - अरे, आप चिल्लाती क्यों हैं उसके ऊपर?

पहली माता - नहीं कुछ भी उससे बोलो तो वो सुनता ही नहीं है और उससे बार-बार हमें ऊँची आवाज़ में बात करना पड़ता है।

दूसरी माता - कहीं ऐसा तो नहीं कि वो ऐसा आपके और आपके परिवार के साथ है।

पहली माता - हम्म... आपने पूछा तो मैं रियलाइज़ कर रही हूँ कि कई मेरे रिलेटिव हैं जिन्होंने ये बात शेयर करी है कि जब वो सुमित से बात करते हैं तो उन्हें ऊँची आवाज़ में बात करना पड़ता है।

दूसरी माता - देखिये, प्लीज बुरा मत मानिएगा लेकिन मुझे लगता है की आपको एक बार उसे डॉक्टर के पास लेकर जाना चाहिए। आखिर नुकसान ही क्या है?

पहली माता- ज़रूर

आइये अब देखते है की एक पिता और शिक्षिका आपस में क्या बात कर रहे हैं।

शिक्षिका - नमस्ते सर!

पिता - नमस्ते मैडम! और बताइए रुबी कैसा व्यवहार कर रही है क्लास में?

शिक्षिका - ओह! सर रूबी, रूबी तो एक बहुत प्यारी बच्ची है, लेकिन वो अपने आप में रहना पसंद करती है।

पिता - क्या मतलब आपका?

शिक्षिका - सर रूबी अक्सर बातों को दोहराती है और अपनी क्लास में अन्य बच्चों के साथ ना तो खेलती है ना बातें करती है।

पिता - नहीं-नहीं देखिए ऐसा इसलिए क्योंकि वो बहुत शर्मीली है। वो घर पर मेरे साथ और अपने बड़े भाई के साथ भी ऐसा ही व्यवहार करती है। उसकी माँ ने उसे बहुत लाड-प्यार से रखा है और वो सिर्फ अपनी माँ के साथ ही रहना चाहती है, हर समय।

शिक्षिका - मुझे यकीन है सर जो आप कह रहे हैं वो बिल्कुल सही होगा लेकिन मुझे तब भी आपसे कुछ सवाल पूछने हैं।

पिता - हम्म-हम्म।

शिक्षिका - क्या वो अक्सर आपकी बातों को भी दोहराती है? क्या वो आँखों से संपर्क करती है?

पिता - नहीं देखिये ऐसी तो कोई बात नहीं है बल्कि रूबी तो खेल-कूद में बहुत अच्छी है। पूरा दिन खेलती रहती है और अपने खिलौनों का बहुत ही विशेष ख्याल रखती है और रंगों की तो उसको ऐसी परख है कि एक बार मैंने उसकी लाल बॉल को कुछ उसका रंग कुछ बदलने की कोशिश की तो वो बिलकुल नहीं मानी और पूरा एक घंटा रोती रही, परेशान करती रही, मगर हाँ एक बात हमने देखी है कि कभी भी कोई अनजान व्यक्ति, कोई स्ट्रेंजर उससे बात करने आता है तो वो अपनी माँ के पीछे छुप जाती है और उससे इंटरेक्ट नहीं करती। मगर ऐसा इसलिए शायद क्योकि मेरी माँ ने कहा था कि उनकी बोलने की क्षमता, बोलना-चालना भी देर से शुरू हुआ था। जैसे पांच या छः की उम्र में मगर पारंपरिक

तरीकों से और ऐसा ही हमने रूबी के साथ किया और देखिये आज वो ठीक से बात करती है कोई परेशानी नहीं है वो बहुत ही बहुत ही टैलेंटेड लड़की है।

विशेषज्ञ - तो आप घटना एक और घटना दो के बारे में क्या सोचते हैं? यहाँ दोनों ही घटनाएं विकास में विलंब से जुड़ी हुई हैं। आपने शायद महसूस किया होगा कि सभी दिव्यांगताएं बाहरी रूप से दिखाई नहीं देती हैं, कुछ छुपी हुई भी होती हैं। गत्यात्मक दिव्यांगता जैसी स्थितियां स्पष्ट दिखाई देती हैं। इसलिए परिवारजन तुरंत चिकित्सकीय सहायता ले लेते हैं। यदि यह सही समय पर किया जाता है, तो बच्चा बाधाओं को जल्दी दूर करने में सक्षम होगा और विकासात्मक विलंब के परिणामों में कमी भी संभव होगी, हालांकि छुपी हुई या कम व्यावहारिक लक्षणों वाली अक्षमताएं जैसे कि श्रवण हानि पर माता-पिता का ध्यान जल्दी से नहीं जाता है। श्रवण दोष को देख कर नहीं पहचान सकते हैं। यदि इसका पता जल्दी नहीं चलता है तो परिणामस्वरूप भाषा और वाणी का विकास प्रभावित हो सकता है। इसका कारण है कि भाषा और वाणी के विकास के लिए ध्वनियों को सुन पाना अति आवश्यक है। इस प्रकार से आपस में जुड़ी स्थितियों को दिवयांगता के संबंधित प्रभाव कहा जाता है। सरल शब्दों में इसका अर्थ है कि एक तरह की इंद्रीय दोष अन्य क्षेत्रों में अतिरिक्त कठिनाइयों की ओर ले जाता है।

2.9 दिव्यांगताओं की प्रारंभिक पहचान के लिए लाल झण्डा (सतर्कता संदेश)

एक आंगनवाड़ी/पूर्व प्राथमिक विद्यालयी शिक्षक आकलन और पहचान के साथ-साथ हस्तक्षेप के लिए भी विशेष केंद्रों से संपर्क कर सकता है। लेकिन एक आंगनवाड़ी/पूर्व प्राथमिक विद्यालयी शिक्षक ये कैसे पता लगा सकते हैं कि विशेष प्रारंभिक हस्तक्षेप के लिए किस बच्चे को भेजना चाहिए? प्रारंभिक हस्तक्षेप केंद्र में एक बच्चे को भेजने का आधार क्या होना चाहिए? यदि संदेह हो तो किससे परामर्श करें? ऐसे कुछ स्पष्ट संदेशों के बारे में जानकारी हो जो बच्चों में दिव्यांगों के शुरुआती व्यवहारी लक्षण हो सकते हैं, अतिरिक्त दिव्यांगता जाँच हेतु बच्चे का चयन करने में मदद करेंगे। इन स्पष्ट व्यावहारिक संकेतों को लाल झण्डा (सतर्कता संदेश) कहा जाता है।

इस तरह के लाल झण्डे (सतर्कता संदेश) के अंतर्गत आने वाले व्यवहार, सावधानी बरतने का इशारा करते हैं। यह हमें यह सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित करते हैं, कि बच्चा विकास के सही पथ पर है अथवा नहीं। चिल्ड्रेन्स लीग (*Children's League*) ने 2017 में उम्र वार लाल झण्डों की एक सूची बनाई, जिससे अतिरिक्त हस्तक्षेप के लिए भेजे जाने वाले बच्चों की पहचान में बहुत सुविधा हो गई।

विकासात्मक लाल झण्डा (सतर्कता संदेश) : जन्म से 3 महीने

बच्चा ऐसा नहीं कर पाता है। ...

- तेज आवाजों पर प्रतिक्रिया देना।
- 2 से 3 माह के आस-पास चलती वस्तुओं को लगातार देखना।
- 3 माह के उपरांत वस्तुओं को पकड़ पाना।

- 3 माह के उपरांत लोगों के साथ मुस्कुराना।
- 3 माह के उपरांत अपने सिर को संभाल पाना।
- 3 से 4 माह के उपरांत खिलौनों तक पहुँच कर उसे पकड़ पाना।
- आंखों से संपर्क करना।

विकासात्मक लाल झण्डा (सतर्कता संदेश) जी.एस. : 4 महीने से 7 महीने

- माँसपेशियां बहुत कठोर और अकड़ी हुई लगती है।
- पूरा शरीर ढीला-ढाला लगता है।
- बैठाए जाने पर बच्चे का सर कभी भी पीछे की ओर लुढ़क जाता है।
- परिवार के लिए कोई स्नेह दिखाई देता है और बच्चा अपने आसपास के लोगों में दिलचस्पी नहीं लेता।
- आंखें लगातार अंदर या बाहर की ओर रहती है और उसकी आँखों में पानी आता रहता है। आँखें हमेशा प्रकाश के प्रति अतिसंवेदनशील हैं।
- अपने आस-पास की ध्वनियों पर प्रतिक्रिया नहीं दे पाता है।
- अपने अंगों को हिलाने और वस्तुओं को मुंह में डालने या पैरों पर वजन उठाने में कठिनाई होती है।
- 6 माह के उपरांत भी पेट से पीठ के बल नहीं लुढ़क पाना।
- 6 माह के उपरांत भी बिना किसी की मदद के नहीं बैठ पाना।
- 5 माह के उपरांत भी मुस्कुरा या हंस ना पाना।

विकासात्मक लाल झण्डा (सतर्कता संदेश) : 8 महीने से 12 महीने

बच्चा.......

- घुटनों के बल चलने या रेंगने में असमर्थ है।
- शरीर को केवल एक ही तरफ खींचता है।
- सहायता मिलने पर भी खड़ा नहीं हो पाता।
- 10 से 12 महीने तक छुपा दी गई वस्तुओं की खोज नहीं कर पाता है।
- कम बुदबुदाता है और 1 वर्ष का होने पर एक सार्थक शब्द नहीं बोल पाता है।

विकासात्मक लाल झण्डे (सतर्कता संदेश) : 12 महीने से 24 महीने

बच्चा...

- 18 माह के उपरांत भी चल नहीं पाता है।
- 18 माह के उपरांत भी कम से कम 15 शब्द नहीं बोल पाता हैं।

- 2 वर्ष के उपरांत भी दो शब्दों के वाक्यों का उपयोग नहीं कर पाता है।
- 15 माह के उपरांत भी आसपास की वस्तुओं जैसे की पंखा, मोबाइल, प्रकाश को समझ नहीं पाता है।

विकासात्मक लाल झण्डे (सतर्कता संदेश) : 24 महीने से 36 महीने

बच्चा...

- 24 माह के उपरांत भी कार्यों या शब्दों की नकल नहीं कर पाता है।
- 24 माह के उपरांत भी, एक चरण वाले सरल-निर्देशों का पालन नहीं कर पाता है।
- बार-बार गिर जाता है और चढ़ने में कठिनाई होती है।
- लार निकलती है और उसकी बोली स्पष्ट नहीं है।
- घरेलू चीजों या खेलने के ब्लॉक्स को एक दूसरे के उपर रखकर ऊंची इमारत जैसा नहीं बना पाता।
- 3 वर्ष के उपरांत भी आकृतियों की नकल या ट्रेस (trace) नहीं कर पाता है।
- वाक्यों या वाक्यांशों में बातचीत नहीं कर पाता है।
- अन्य बच्चों के साथ खेल में शामिल नहीं हो पाता है।
- माँ से अलग होने में अत्यधिक कठिनाई महसूस करता है।

2.10 गतिविधि 3 : हस्तक्षेप/कार्रवाई/ध्यान की पहचान करें - अपनी समझ की जांच करें

क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_3137123220864040961359

••• मॉड्यूल 3 •••

पहले 1000 दिनों के दौरान आरंभिक हस्तक्षेप

मॉड्यूल 3 : पहले 1000 दिनों के दौरान आरंभिक हस्तक्षेप

3.1 आरंभिक हस्तक्षेप

आरंभिक हस्तक्षेप का अर्थ है पहचान करना यानी, दिव्यांगता का जल्दी पता लगाना और बच्चों को प्रभावी और समय पर उचित सहायता प्रदान करना। इसके परिणामस्वरूप संभावित कठिनाइयों की रोकथाम हो सकती है और व्यक्तिगत शक्तियों और कौशलों का प्रभावी रूप से विकास हो सकता है।

आरंभिक हस्तक्षेप के लाभ

- सीखना आसान बनाता है और बच्चे और परिवार के तनाव को कम करता है।
- परिवारों को सशक्त बनाता है और उन्हें बराबर का भागीदार बनाता है, इसलिए बच्चे को दोहरा लाभ मिलता है।
- पहले 3 वर्षों में बच्चे का मस्तिष्क सबसे ज़्यादा लचीला होता है। इसलिए यदि सही उद्दीपक जल्दी प्रदान किए जाते हैं तो इससे सीखने के लिए मजबूत नींव बनाने में मदद मिलती है।
- इससे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।
- विकास के सभी आयामों में सुधार होता है और विद्यालय के लिए तैयार होने में सहायक होता है।
- संवाद और सामाजिक भावनात्मक कुशलताओं के साथ-साथ, बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक कुशलताओं का भी विकास होता है। ये समावेशी शिक्षा की बढ़ोतरी मे सहायक है।

आरंभिक हस्तक्षेप के लिए कार्यनीतियाँ :

- **गृह आधारित कार्यक्रम :** ये तब किया जाता है जब दिव्यांगता बेहद गंभीर होती है अथवा कठिन भौगोलिक स्थिति के कारण, आवास के आस-पास उचित चिकित्सा सुविधा का अथवा आरंभिक हस्तक्षेप केंद्रों का अभाव हो।
- **केंद्र आधारित कार्यक्रम :** स्वास्थ्य मंत्रालय एवं सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने बहु-दिव्यांगता प्रारंभिक हस्तक्षेप केंद्र {क्रॉस डिसएबिलिटीज अर्ली इंटरवेंशन सेंटर/सी.डी.ई.आई.सी. (CDEIC)} शुरू किए हैं। सी.डी.ई.आई.सी. एक छत के नीचे सभी दिव्यांगताओं के शुरुआती हस्तक्षेप की सुविधा देता है। बच्चों को हस्तक्षेप के लिए एक समग्र कार्यनीति और गहन विशेषतापूर्ण सेवाएं मिलती है।

3.2 सुलभ टी.एल.एम. और जागरूक गतिविधियों की तैयारी

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_3137123157007237121354

प्रतिलिपि

ई.सी.सी.ई केंद्र में काम करते समय शायद आपके सामने भी ऐसी स्थितियां आई होंगी, जहां बच्चे की वैयक्तिक विशेषताओं जैसे कि बोलना, देखना, सुनना आदि न कर पाने के कारण आपको उसे अपने केंद्र या विद्यालय में हो रही दैनिक क्रियाकलापों में भागीदारी करवाने में कठिनाई आई हो। आइये, ऐसी ही कुछ स्थितियों से जूझ रहे कुछ शिक्षकों की चर्चा से समाधान तक पहुंचने की कोशिश करते हैं।

पूर्व प्राथमिक अध्यापिका 1 : नमस्ते मैम।

विशेषज्ञ : नमस्ते।

पूर्व प्राथमिक अध्यापिका 2 : नमस्ते मैम कैसे हैं आप?

विशेषज्ञ : मैं ठीक हूं, नमस्ते आप दोनों कैसे हैं?

पूर्व प्राथमिक अध्यापिका 1 : मैम बहुत अच्छे हैं।

विशेषज्ञ : आपको यहाँ ज्वाइन किए हुए तीन महीने हो गए, क्या आप अपने यहाँ के एक्सपेरिएन्सेस शेयर करना चाहेंगे?

पूर्व प्राथमिक अध्यापिका 1 : मैम सब कुछ तो बहुत अच्छा चल रहा है। मगर मुझे हर रोज़ नई-नई कठिनाइयों का सामना करना पढ़ रहा है।

विशेषज्ञ : किन कठिनाइयों का सामना करना पढ़ रहा है?

पूर्व प्राथमिक अध्यापिका 1 : मैम मेरी कक्षा में एक छात्रा है, जिसका नाम मुस्कान है और वह बची देख नहीं सकती, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं उसको कैसे बाकि एक्टिविटीज में शामिल करूँ। जैसे ड्राइंग, पेंटिंग और बाहरी जो भी गतिविधियां हैं उनमें।

विशेषज्ञ : और आपको भी ऐसी कोई कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

पूर्व प्राथमिक अध्यापिका 2 : जी मैम बिल्कुल, मेरी भी कक्षा में एक छात्र है उसका नाम राघव है और वह सुन नहीं सकता। मुझे भी इस चीज़ में कठिनाई होती है की मैं पढ़ाते वक़्त उसे अपनी क्लास में कैसे शामिल करूँ।

विशेषज्ञ : तो आइये मिल कर कुछ ऐसी गतिविधियों को विचार करते है जिसमें हम सभी बच्चों को शामिल कर सकें। आपने बताया था कि राघव कक्षा में सुन-बोल नहीं सकता है। तो राघव के लिए हम कुछ ऐसी गतिविधियां बताएंगे, जैसे अगर बच्चों को कूदना है, तो हम सभी बच्चों के लिए हाथ में हाथ पकड़ कर कूदने की एक्टिविटी करा सकते हैं। हम बच्चों को बोल सकते हैं कि सब बच्चे एक दूसरे का हाथ पकड़ लेंगे और राघव उसे देख कर कूदने की गतिविधि कर सकता है और मुस्कान भी अपने दोस्त का हाथ पकड़ के कूद सकती है।

पूर्व प्राथमिक अध्यापिका 1 : लेकिन जैसे बाहरी गतिविधि जैसे साइड जंपिंग और रस्सी पार इन सब में मैम बच्चों को कैसे शामिल करें।

विशेषज्ञ : यह तो बहुत आसान है। राघव दूसरे बच्चों को देख कर कूद सकते हैं, रस्सी पार जैसे खेल कर सकते हैं इसके अलावा आप इस तरीके से क्यू कार्ड भी बना सकते हैं जिसमें चित्र के द्वारा आप समझा सकते हैं। और आप शुरू करने के लिए हरे कार्ड और रोकने के लिए लाल कार्ड का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। मुस्कान के लिए आप इस रस्सी का यूज़ कर सकते हैं रस्सी को अगर आप ज़मीन पर बिछाएंगे और मुस्कान इसको छू कर स्पर्श करके यह पता लगा सकती है कि नीचे रस्सी है उसके आर-पार उसे कूदना है, तो इसके लिए आपको उसे धीरे-धीरे से पहले ही समझाना पड़ेगा।

पूर्व प्राथमिक अध्यापिका 1 : वाह! मैम यह तो बहुत ही अच्छा विचार है। अगर हमें मुस्कान और राघव को बाकि गतिविधि जैसे चित्रकारी, छापने और कागज़ मोड़ने की गतिविधियों में शामिल करना हो, तो हम वो कैसे करें।

विशेषज्ञ : आइए जानते हैं की अपने आस-पास रखी हुई चीज़ो को हम कैसे इन गतिविधियों में इस्तेमाल कर सकते हैं। जैसे कि आप देख सकती हैं कि मैंने यह एक रेक्टेंगल का शेप निकाला है। अब इसे हमें उभरा या खुरदरा बनाना है, ताकि सभी बच्चे इसको छू कर स्पर्श करके इसके अंदर कलर कर सकें। तो इसके लिए मैंने फेविकोल का इस्तेमाल किया है और मैं फेविकोल को इसके चारों ओर अगर लगाती हूँ तो और सूखने के बाद यह सतह खुरदरी हो जाती है। अगर मैं छू कर देखूंगी आँख बंद करके तो यह मुझे खुरदरी लगेगी। तो इस प्रकार आप सारे बच्चों को यह कह सकते हैं कि अपनी आँखे बंद करके आप छू के, सतह को छू के आप इसके अंदर ही कलर करेंगे और उनके लिए यह बहुत ही उत्साह भरी गतिविधि होगी। इसके अलावा यह एक क्लिप बोर्ड है जिसकी सतह उभरी हुई खुरदरी है, यदि मैं इसके ऊपर इस कागज़ को रखती हूँ और पेन इसके ऊपर चलाती हूँ, तो आप देख सकते हैं कि इसकी उल्टी दिशा में यह खुरदरापन आ जाता है। तो इस प्रकार आप अलग-अलग चीज़ो का इस्तेमाल करके अपनी जो गतिविधि है उसको आप अपने सभी छात्रों के लिए बना सकते हैं। आप सभी छात्रों को कह सकते हैं कि आँखे बंद करके इसके अंदर कलर करिए। आप देख सकती हैं मेरे पास

एक जूट का फोल्डर रखा है, जूट के बैग भी होते हैं तो इनके ऊपर भी यह कागज़ अगर आप रख कर करेंगे तो आपको उभरी हुई सतह मिल जाएगी। जिससे आप सभी बच्चों को इस गतिविधि में शामिल कर सकते हैं।

पूर्व प्राथमिक अध्यापिका 2 : अरे वाह! मैम आपने जितनी भी गतिविधियां बताई, मुझे लगता है कि उससे हमारे पढ़ाने का तरीका बहुत ही सरल हो सकता है। पर मैम मेरा अभी भी एक सवाल है, जैसे की मेरी कक्षा में राघव है और इनकी कक्षा में मुस्कान तो हम उन बच्चों को किस तरीके से अटेंडेंस लेते हुए शामिल कर सकते हैं।

विशेषज्ञ : देखिये जब भी आप छोटे बच्चों की क्लास में जाते हैं तो आपको सबसे पहले क्या करना है उनका अटेंशन लेना है यानी कि उनको आकर्षित करना है। तो वह कैसे करेंगे आप अलग अलग चीज़े इस्तेमाल कर सकती हैं जैसे की आप कोई ऑडियो सुना दीजिये, राइम सुना दीजिये, पोयम सुना दीजिये। राघव के लिए आप लाइट स्विच ऑफ़, स्विच ऑन कर सकते हैं और ऐसी ही कोई आप सोच सकते हैं कि किस तरीके से मैं राघव को अपनी तरफ आकर्षित करूँ। उसके बाद अटेंडेंस को भी एक आप खेल के रूप में दिखा सकते हैं, जैसे की आप कह सकते हैं जब आप अटेंडेंस ले रहे हैं बच्चों का तो आप बच्चों से कह सकते हैं कि मैं जिसका भी नाम पुकारूंगी वो अपने दोस्त के कंधे पर हाथ रखेंगे और वो बच्चा खड़ा हो जाएगा। तो इस तरीके से आप अलग-अलग गतिविधियां सोच सकते हैं तो अटेंडेंस भी एक फन एक्टिविटी के रूप में बन जाएगी और सभी बच्चे उनमें शामिल भी हो जाएंगे।

विशेषज्ञ : जब भी आप बच्चों को बाहर या अंदर की गतिविधियों में शामिल करते हैं तो इस चीज़ का ध्यान ज़रूर रखिये कि आप उनकी सुरक्षा पहले रखें, उनको जो भी आप निर्देश दे रहे हैं वो बहुत ही सरल भाषा में हो और कोशिश करें की उनकी सारी इन्द्रियों को शामिल करने की तो इससे क्या होगा की उनकी सभी इन्द्रियाँ शामिल हो जाएंगी और सभी बच्चे गतिविधि का हिस्सा बन जाएंगे।

3.3 गतिविधि 4 : स्वयं प्रयास करें

उन गतिविधियों की सूची बनाएँ जो अक्सर पूर्व प्राथमिक विद्यालय/आंगनवाड़ी केंद्र में आयोजित की जाती हैं। सार्वभौमिक अधिगम रचना (यूनिवर्सल डिजाइन ऑफ लर्निंग) के सिद्धांतों के आधार पर, इन गतिविधियों को सभी के लिए सुलभ बनाने हेतु अपने सहयोगियों के साथ चर्चा करें?

3.4 माता-पिता और परिवारों से संवाद करना

सभी माता-पिता एक खुश और स्वस्थ बच्चे की कामना और सपने देखते हैं। माता-पिता के लिए यह जानना कि उनके बच्चे के साथ कुछ सही नहीं है एक झकझोरने ने वाली बात है।

माता-पिता का सहयोग पाने के लिए ई.सी.सी.ई. पदाधिकारी हेतु कुछ सुझाव -

- प्रभावी संवाद आपसी समझ और विश्वास पर बनता है, इसलिए माता-पिता के साथ विश्वास स्थापित करें।

- माता-पिता की चिंताओं को सुनें।
- सौम्य और सकारात्मक रहें, लेकिन अपने संवाद में स्पष्ट रहें।
- लाल झण्डा (सतर्कता संदेशों) के बारे में सूचित करने से पहले बच्चे के विकास, सीखने और व्यवहार के बारे में सकारात्मक बातें साझा करें।
- आशा दिखाएं, निराशा नहीं।
- परिवार की सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखें।
- उल्लेख करें कि आपको जल्द ही विशेषज्ञ से मिलने की आवश्यकता महसूस होती है ताकि उचित मार्गदर्शन मिल सके।
- विशेषज्ञों से मिलते समय अथवा आकलन केन्द्रों पर यथासंभव अभिभावकों के साथ रहें।
- आकलन के बाद, हस्तक्षेप के लिए विशेषज्ञों से निर्देश और सुझाव लें।
- माता-पिता को पूर्ण जानकारी सहित विकल्प प्रदान करें और निर्णय लेने में उनकी सहायता करें।
- बच्चे के विकासात्मक दिशा सूचकों की नियमित निगरानी करें और तदनुसार, आवश्यक कार्य करें।
- स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र या चिकित्सालयों या विशेष स्कूलों या केंद्रों में सहायता के लिए संपर्क किया जा सकता है।

3.5 गतिविधि 5 : अपने विचार साझा करें

अपने पूर्व प्राथमिक विद्यालय/आंगनवाड़ी केंद्र में आप अक्सर किस तरह की विशेष आवश्यकताओं का अवलोकन करते हैं? उस स्थिति का उल्लेख करें जिसमें आप विशेषज्ञ की सहायता लेना चाहेंगे?

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें:

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceH6a5 टाइप करें।

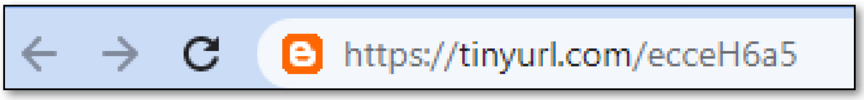

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-ecce.blogspot.com/2023/01/06-5.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है।

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- ‘Enter your comment’ पर क्लिक करें।

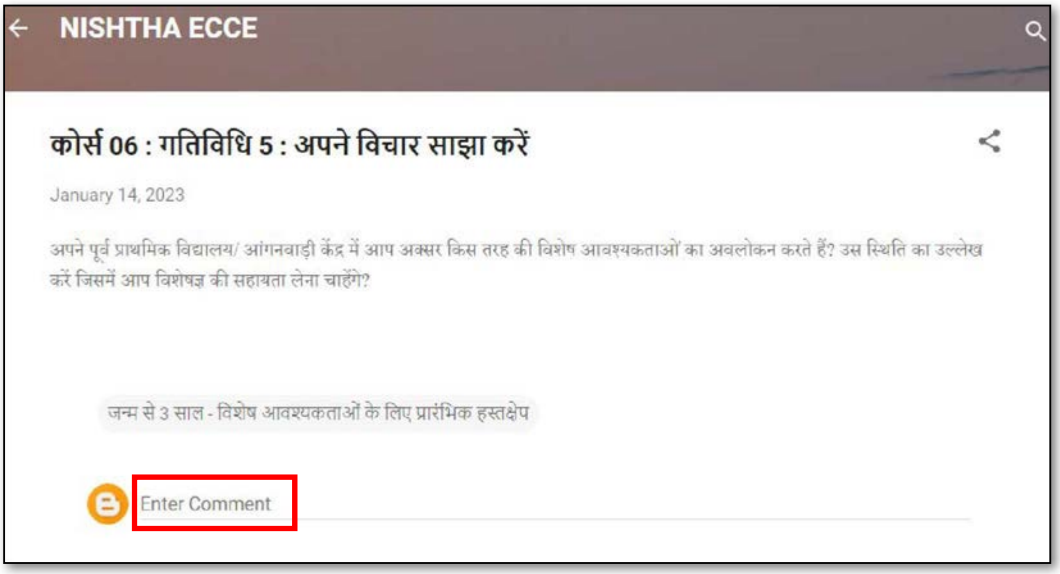

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- ‘PUBLISH’ पर क्लिक करें

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

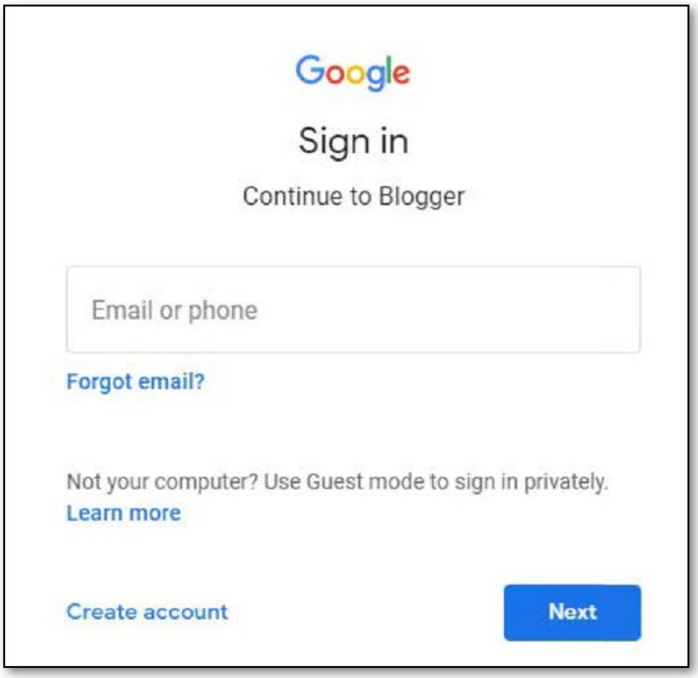

- लॉग इन करने के बाद **‘Display Name’** डालें और फिर **‘Continue to Blogger’** पर क्लिक करें।

- **‘PUBLISH’** पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

3.6 ई.सी.सी.ई. केंद्र के लिए यू.डी.एल. आधारित गतिविधियाँ बनाना

सीखने के लिए सार्वभौमिक अधिगम रचना (यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग अथवा यू.डी.एल.) सीखने में व्यक्तिगत विविधताओं को समायोजित करने के लिए, सीखने हेतु लचीला वातावरण विकसित करने की एक शैक्षिक रूपरेखा है। ई.सी.सी.ई. केंद्र में, ई.सी.सी.ई. पदाधिकारी को बच्चों की व्यक्तिगत भिन्नताओं यह विविधताओं के आधार पर बाल देखभाल और शिक्षा की योजना बनाने और लागू करने की आवश्यकता है। छोटे बच्चों के समग्र विकास के लिए, सीखने को अधिक लचीला और बाधा रहित बनाने के लिए ई.सी.सी.ई. केंद्र में यू.डी.एल. आधारित सुविधाओं और गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए। इससे ई.सी.सी.ई. केंद्र को अधिक जीवंत, समावेशी, आकर्षक और सुलभ बनाने में मदद मिलेगी, जो व्यक्तिगत विविधताओं के बावजूद आपके क्षेत्र के सभी बच्चों

की देखभाल और उन्हें सीखने में सहायक होगा। जब आप अपने मौजूदा केंद्र को सभी के लिए सुलभ और समावेशी बनाने की कोशिश करेंगे, तब निम्नलिखित सुझाव आपके लिए लाभदायक हो सकते हैं। जिसमें दिव्यांग बच्चे भी शामिल हैं, ये सुझाव एक ऐसे नए केंद्र की संकल्पना करने और उसे बनाने में भी मदद करेंगे, जो यू.डी.एल. के सिद्धांतों के अनुसार है और समतामूलक दर्शन पर पर आधारित है।

- **प्रत्येक टी.एल.एम. को सुलभ एवं सुगम्य बनाएं :** अंधेपन वाले बच्चों की भागीदारी को सुविधाजनक बनाने के लिए स्पर्श रेखाओं या सीमाओं के साथ ड्राइंग/रंगीन शीट प्रदान करें। कहानी की किताबें श्रव्य प्रारूप में हों, जैसे - डेज़ी (DAISY) अथवा मोबाइल पर रिकॉर्ड की गई खेल खिलौने के हिस्सों को अलग-अलग बनावट या चिन्ह (texture) या आकार होना चाहिए।
- **सकल गत्यात्मक कौशल के लिए गतिविधियाँ :** चलना, दौड़ना, चढ़ना रस्सी कूदना, गेंद लपकना, संतुलन, रेंगना, कूदना, फेंकना, लात चलाना, गतिविधि के साथ गीत या कविता, रस्सी खींचना आदि कुछ सामान्य गतिविधियां हैं जो अनिवार्य रूप से लगभग हर ई.सी.सी.ई. केंद्र का हिस्सा हैं। चलने, दौड़ने और कूदने में सहायता के लिए स्पर्श रेखाएं खींचें। पकड़ने या लपकने के लिए उपयोग की जाने वाली गेंदों या अन्य वस्तुओं में ध्वनि हो ताकि जो बच्चे नहीं देख सकें, वे भी प्रभावी ढंग से भाग लेने में सक्षम हों। इसी तरह प्रार्थना सभा, लंच (मध्यान्तर समय) आदि जैसी गतिविधियों के अंत और शुरुआत को इंगित करने के लिए फ्लैश लाइट का भी उपयोग करें, इससे सुनने की चुनौतियों वाले बच्चों को भी सुविधा होगी।
- **महीन गत्यात्मक कौशल के लिए गतिविधियाँ :** सभी की सहज भागीदारी के लिए, छपाई के साथ साथ इस बार चिन्हों को भी लगाएं, ताकि फाड़ने, काटने, चिपकाने, मोड़ने, आदि में सुविधा हो विभिन्न तरह के धागों, तरह तरह के आकार वाले बटनों आदि का भी प्रयोग अधिक से अधिक करें।
- **संवेदी विकास के लिए गतिविधियाँ :** स्पर्श छवियों या लाइफ स्केल ई-मॉडल का उपयोग करके छवियों की पहचान, ध्वनियों या रोशनी की पहचान, स्पर्श अनुरेखण लाइनों या बिंदुओं का उपयोग करके स्पर्श को समझना और तुलना करना, कार्य या ध्वनि की प्रतिलिपि बनाना, लोरी सुनना या देखना, लुका-छिपी खेल, ड्रम बजाना, पानी में विभिन्न रंगों के कंकड़ या पत्थर फेंकना आदि।
- **मानसिक कौशल के लिए गतिविधियाँ :** प्रिंट या स्पर्श प्रारूप में बिंदुओं को जोड़ना, पहचान, वर्गीकरण, तुलना, पहेली, रचनात्मक कृत्य/खेल, नंबर गेम, तुकबंदी, चित्र गेम या ध्वनि गेम, पानी के खेल, शब्द निर्माण खेल, स्पर्शक विशेषताओं के साथ चित्र और कठपुतलियाँ।
- **भाषा विकास के लिए गतिविधियाँ :** कहानी निर्माण, शब्द निर्माण खेल, वाक्य गेम को पूरा करना, प्रिंट/ब्रेल/संकेतों में अक्षर धारणा के लिए लूडो का खेल, पौधों पर आधारित पहेलियाँ, बच्चे की विसंगति और परिचित वस्तुएँ, लयबद्धता, ध्वनि भेदभाव, मुक्त बातचीत, प्रकृति

चलना, पढ़ना, लिखना (डॉट्स में शामिल होना, छापा बनाना, नकल करना, स्पर्श शीट का उपयोग करके प्रतिरूप बनाना) और वस्तुएं, दृश्य अभिव्यक्ति (एक तस्वीर देखें और कहानी बताएं या अभिव्यक्ति को सुनें और अभिव्यक्ति की पहचान करें), पक्षी उड़ते हैं, और चिड़िया उड़- मैना उड़ (तर्जनी उँगली को ज़मीन से हवा में उठाने वाला खेल) आदि।

- **सामाजिक-भावनात्मक विकास के लिए गतिविधियाँ :** कठपुतली के खेल के माध्यम से सामाजिक जागरूक गतिविधियाँ, अपने दोस्त को जानें, नाटक, समूह भोजन, समूह गतिविधियाँ (नृत्य, खेल, त्योहार उत्सव, जन्मदिन उत्सव), बिल्डिंग ब्लॉक, ड्रेसिंग, एक्शन गीत, गुड़िया खेल, सजावट, बच्चों पर आधारित श्रव्य-दृश्य कार्यक्रम आदि। जो दिव्यांग बच्चों के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए विषय वस्तु को शामिल करें।

3.7 गतिविधि 6 : समावेशी ECCE केंद्र - अपने विचार साझा करें

मान लीजिए कि आपके क्षेत्र में एक प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) केंद्र/पूर्व प्राथमिक विद्यालय/आंगनवाड़ी कक्षा का निर्माण होने जा रहा है। आपके अनुसार उस केंद्र को अधिक समावेशी, न्यायसंगत और सुलभ बनाने के लिए क्या सुविधाएं होनी चाहिए? दिव्यांग बच्चों के लिए इसे और अधिक सुलभ बनाने के लिए मौजूदा ई.सी.सी.ई. केंद्र/पूर्व प्राथमिक विद्यालय/आंगनवाड़ी केंद्र के उन्नयन के लिए संशोधनों का भी उल्लेख करें?

चरण 1 : गतिविधि पृष्ठ तक पहुंचना

गतिविधि पृष्ठ तक पहुँचने के लिए निम्नलिखित में से किसी एक विकल्प का अनुसरण करें :

विकल्प 1 : ब्राउज़र में URL https://tinyurl.com/ecceH6a6 टाइप करें।

विकल्प 2 : इस पीडीएफ को दीक्षा से डाउनलोड करें और इस यूआरएल को कॉपी करें।

https://nishtha-ecce.blogspot.com/2023/01/06-6.html

विकल्प 3 : प्ले स्टोर से मोबाइल ऐप **'ईपाठशाला स्कैनर'** इंस्टॉल करें। ऐप का इस्तेमाल करके नीचे दिए गए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

चरण 2 : उपरोक्त में से किसी भी विकल्प का पालन करने पर, यह आपको एक बाहरी साइट पर ले जाएगा जैसा कि नीचे दिखाया गया है।

चरण 3 : अपनी प्रतिक्रिया पोस्ट करें।

- दी गई गतिविधि पढ़ें।
- **'Enter your comment'** पर क्लिक करें।

- अपनी प्रतिक्रिया कमेंट बॉक्स में लिखें।

- 'PUBLISH' पर क्लिक करें।

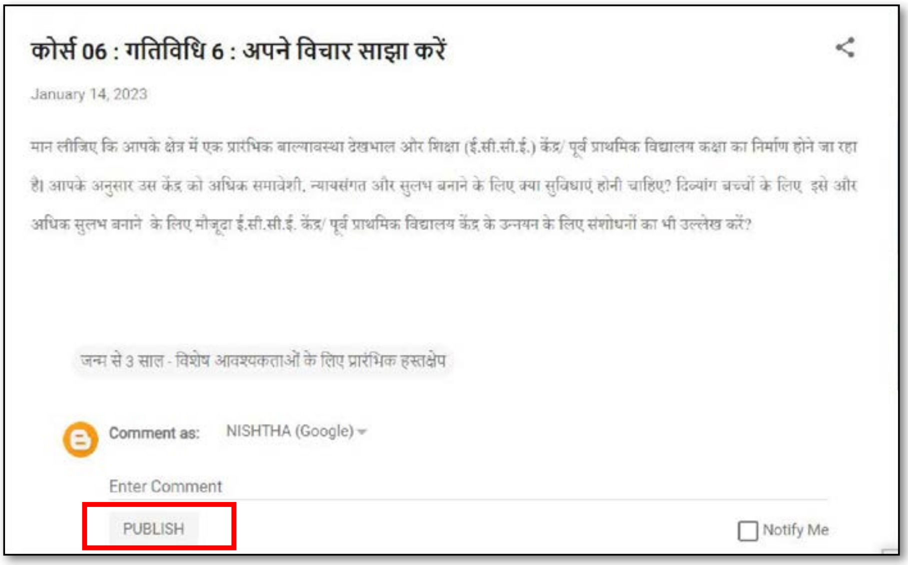

- यदि आप पहले से ही अपने जीमेल खाते से लॉग इन हैं तो टिप्पणी प्रकाशित हो जाएगी। यदि आप लॉग इन नहीं हैं, तो आपको जीमेल लॉगिन पेज पर जाने के लिए निर्देशित किया जाएगा।

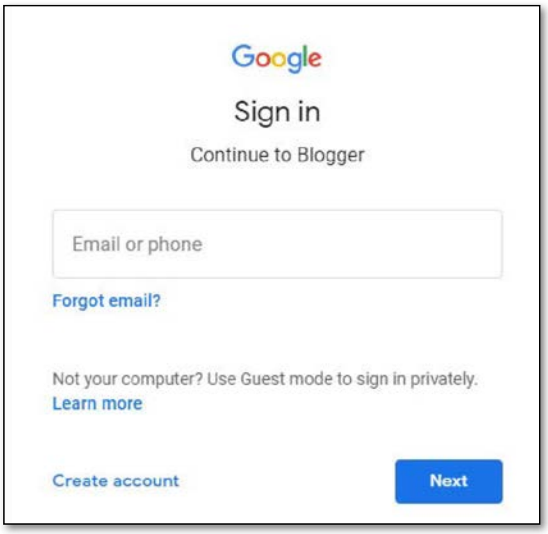

- लॉग इन करने के बाद 'Display Name' डालें और फिर 'Continue to Blogger' पर क्लिक करें।

‘PUBLISH’ पर क्लिक करें। टिप्पणी पोस्ट हो जाएगी।

3.8 पूर्व प्राथमिक शिक्षक की भूमिका और दायित्व

वीडियो देखिये

क्यूआर कोड स्कैन करें

अथवा

निम्नलिखित लिंक पर क्लिक करें

https://diksha.gov.in/play/content/do_3137123739177451521227

प्रतिलिपि

एक शिक्षक होने के नाते हमें अक्सर अभिभावकों से बातचीत करते रहनी पड़ती है और अभिभावकों से बातचीत का दायरा या मुद्दा होता है - आपका बच्चा कैसा कर रहा है, आपका बच्चा बहुत अच्छा कर रहा है, आपका बच्चा चित्र बनाने में बहुत अच्छा है, आपका बच्चा बहुत अच्छा गाता है। इस तरह की चीजें जब हमें अभिभावकों को बतानी होती हैं तो वह बहुत सरल होता है एक शिक्षक या

शिक्षिका होने की नाते। लेकिन जहाँ बात आती है अभिभावक को यह बताने की कि शायद आपका बच्चा उतना अच्छा नहीं कर पा रहा है या शायद उसमें कोई चुनौती है या हमें कुछ नकारात्मक चीजें अभिभावकों तक पहुंचानी होती हैं, तो शिक्षक/शिक्षिका होने के नाते अक्सर मुझे लगता है कि क्या यह भी मेरी भूमिका है? अब मैं इस बारे में कैसे बात करुंगी अभिभावक से? ऐसे ही अन्य प्रश्नों, अन्य सवालों के जवाब देने के लिए आज हमारे साथ उपस्थित हैं एक विशेषज्ञ।

विशेषज्ञ 1 : मैडम आपका स्वागत है। और मैडम से हम ये जानेंगे ऐसे और इससे संबंधित कुछ प्रश्नों के जवाब। तो हम शुरू करते हैं पहले प्रश्न से। मैडम पहला प्रश्न हमारा है कि जब हम एक ई.सी.सी.ई. केंद्र या प्रीस्कूल की बात करते हैं तो उसमें की तरह के सांसद होने चाहिए।

विशेषज्ञ 2 : बहुत अच्छा सवाल है। कई बार टीचर कहते हैं कि हमारे जो संसाधन हैं ये सब हो तो फिर ये ई.सी.सी.ई. केंद्र हम चमका कर दिखाएंगे आपको लेकिन वह इतने साधन कब होंगे। वह भी न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी। ऐसा नहीं होना चाहिए। संसाधन टीचर्स उसको क्रिएट भी करने है। ह्यूमन संसाधन है कहने का तात्पर्य मेरा यह है कि अगर में एक टीचर हूँ तो मेरी बगल में बैठी एक और टीचर भी है। मेरे ही स्कूल में मेरी हेडमिस्ट्रेस भी है, मेरे ही साथ मेरा साथी है जो हेल्पर है मेरे ही साथ एक व्यक्ति है जो बच्चे के साथ रोज लेकर आता है और बच्चे को वापिस लेकर आता है। मेरे ही पास बच्चे के पेरेंट्स हैं। माँ-बाप हैं। दादा-दादी हैं। नाना-नानी हैं। नेबर है। तो ये सब मेरे ह्यूमन रिसोर्स हैं और इससे हम एक अध्यापक के रूप में बहुत कुछ बच्चे के बारे में जब वह आपके पास आता है उससे पहले भी जान सकते हैं और उस समय जिस में आप उसके साथ लगे हुए हैं अपनी क्रियाओं के साथ। अपनी जो आपको पढ़ाया गया तरीके को इस्तेमाल करने उस वक़्त भी ये ह्यूमन रसौर्स काम आ सकता है। और जहां तक रहा दूसरा रिसोर्स वह है मटेरियल रिसोर्स। आम तौर पर ये शब्द का इस्तेमाल सुना होगा। मटेरियल रिसोर्स कई बार हम जैसे मैंने शुरू में ही कहा, हम सोचते हैं महंगी चीजें, महंगे टॉयज, बाहर से आये टॉयज। इलेक्ट्रिकल टॉय एंड यू नो आल दी तोय यू आम तौर पर हमारे रीच में नहीं होते। वह अगर ई.सी.सी.ई. केंद्र में वासे ब्लॉक्स हों तो बच्चे बहुत अच्छा सीखेंगे। हमें देखना है कि पिट्ठू जब हम खेलते हैं जो वह पत्थर के पीस हैं वह भी ब्लॉक्स बन सकते हैं। अगर भरी पीस है तो दो बच्चे मिल कर पिट्ठू को stack करेंगे। तो वह ब्लॉक एक्टिविटी अगर ब्लॉक्स नहीं हैं तो उससे करवाईये और दो साथ करेंगे तो सीखेंगे एक दूसरे से। तो इंडिविज्युयल एक्टिविटी या ग्रुप एक्टिविटीज़ फ्रोम मटेरियल जो बिलकुल हमें आस-पास मिलता है। जिस वातावरण में बच्चा पल रहा है। वहां से कलेक्ट कर के जिसको लोकली अवेलेबल मटेरियल या नो कोस्ट/लो कोस्ट उस मटेरियल से भी टीचर बहुत कुछ कर सकते हैं बच्चों के साथ। तो रिसोर्स जो आपके पास है उससे क्रिएट करिये। लर्निंग एनवायरमेंट वो चेलेंज है एक ई.सी.सी.ई. टीचर के लिए और वह उसे समझना चाहिए और एक्सप्लोर करना चाहिए। जब वह करेगी एक दिन उसका मजा लेगी उसको दूसरे दिन और उसमे आंनद आएगा और इस तरह एक ई.सी.सी.ई. सेंटर विल बिकम ए प्लेस वेयर बच्चे आना चाहेंगे और खेल कर सीखना चाहेंगे।

विशेषज्ञ 1 : बिलकुल! इसके साथ ही जब, अब ई.सी.सी.ई. हमारा फॉर्मल एजुकेशन या औपचारिक शिक्षा का हिस्सा बन गया है पूरी तरह से तो एक ई.सी.सी.ई. केंद्र में काम करने वाले व्यक्ति शिक्षक के लिए या पूर्व प्राथमिक विद्यालय में काम करने वाले शिक्षक में क्या गुण होने चाहिए?

विशेषज्ञ 2 : उस व्यक्ति में वही गुण होने चाहिए जो एक माता-पिता में है। मैं बहुत साधारण तरीके से ये बात बता रही हूँ। जो भी डिग्री में सीखते हैं वह बहुत अच्छी बातें सीखते हैं और उनका पालन करना चाहिए। सबसे ज्यादा मगर जरूरी ये है कि बच्चे को बच्चा रहने दीजिए। एक ही महीने में ये मत सोचिये कि मैं तो एक महीने से मेहनत कर रही हूँ इसमें कोई चेंज नहीं दिख रहा है। ऐसे नहीं होता है। बच्चे की ग्रोथ अपना पैटर्न है, जिससे बच्चा बड़ा होता है। उसका एक टीचर का गुण होता है कि उस पैटर्न की इज़्ज़त की जाये। किसी बच्चे को रैट रेस में ऐसे नहीं कहें वह वहां पहुँच गया तू तो यहीं है और तू शब्द कभी इस्तेमाल भी नहीं करना चाहिए। अगर हम बच्चे की इज़्ज़त करेंगे तो वह हमारी इज़्ज़त करेगा। तो प्यार,मोहब्बत, केयर और एक इस तरह से पढ़ाना कि ये तो घर से आये हैं, खेलो-कूदो और सीखो। ये अगर टीचर रखेगी अपना लक्ष्य तो वह एक बच्चों की प्रिय टीचर बनेगी और जब वह शुरू में प्रिय टीचर बनती है एक बच्चे की तो वह बहुत आगे जाता है। बच्चा क्यूँकि उसको एक कम्फर्ट ज़ोन मिला टाइम पर टीचर के साथ और वह फिर छलांग मरता है आगे बढ़ने के लिए तो ये गुण जरूर टीचर रखे कि बच्चे को कभी भी ऐसा न लगे कि ये टीचर के सिर पर सींग है। ये तो हमेशा डाटती रहती है और खौफनाक सी इमेज कभी बनने ही नहीं देनी चाहिए। तो वह एक गुण सबसे पहले तो अपने आप को शीशे में देखें और अपनी आवाज़ भी सुने। क्या मेरी आवाज़ बहुत लाउड है? ये छोटी-छोटी बातें भी बहुत इंपोर्टेंट है। किस लेवल पर बैठ कर बच्चे से बात करती हैं। क्या वह गोल दायरे में साथ में बैठती है? कि खड़ी रहती है। अगर खड़ी रहेगी हमेशा तो वह भी बच्चे को अच्छा नहीं लगता। सहज नहीं लगता। तो ये छोटी-छोटी बातें लेकिन बहुत महत्वपूर्ण है। कहाँ पर टीचिंग एड चार्ट लगाना ऊपर या नीचे। क्या बच्चा ऐसे देखे? बच्चों के लेवल पर ये भी गुण है। कैसे में अपने क्लासरूम को अरेंज करूँ। ये सब बातें मिल कर एक टीचर को ई.सी.सी.ई. सेंटर की गुणी अध्यापक बनती है।

विशेषज्ञ 1 : और इसके साथ ही मुझे लगता है कि जो आप कहना चाह रही हैं उसमें ये भी जुड़ेगा कि धैर्य जरुरी है। बच्चा बहुत छोटा है। वह माँ बाप को याद भी करेगा केंद्र में आकर के। बहुत धैर्य के साथ, प्यार के साथ बच्चे से बात चीत जरूरी है।

विशेषज्ञ 2 : वह सींचना धैर्य और प्यार से। उसका कोई और विकल्प नहीं है।

विशेषज्ञ 1 : शिक्षक होने के नाते केंद्र में एक कठपुतली का इस्तेमाल कर रही हूँ तो पेरेंट्स भी घर में वैसा ही कर सकते हैं। उसी से केंद्र और घर की गतिविधियों में समरसता रहेगा।

विशेषज्ञ 2 : बिलकुल और वह उंगलिओं के पपेट्स भी हो सकते हैं। ये जरुरी नहीं है कि आपके पास वैसा ही पपेट हो (ये ये और ये वाला) इस तरह भी आप बात कर सकते हैं। तो पेरेंट्स उनको ग्रेस्प करना है। क्या करना है। किस तरह करें ये उन पर छोड़िये। वह उनपर छोड़ सकतें हैं।

विशेषज्ञ 1 : बिलकुल सही बात है। अच्छा अब जब अभिभावकों की बात हो रही हो तो अक्सर अभिभावक आते हैं और कहते हैं घर में भी सारा दिन खेलता रहता है, स्कूल में भी सारा दिन खेलता रहता है, यहाँ आपके केंद्र में आकर सारा दिन देखता रहता है। पढ़ाई लिखाई में तो मन ही नहीं लगता। अब इस स्थिति में मैं तो शिक्षिका हूँ या शिक्षक हूँ मुझे पता है वह खेल-खेल में पढ़ रहा है। मै अभिभावकों से कैसे बातचीत करूं।

विशेषज्ञ 2 : बहुत अच्छा सवाल फिर से अपने पूछा। आपके सारे सवाल अनोखे हैं। ये क्यों मैं इसको अनोखा कहती हूँ क्योंकि आम तौर पर ये सुनने को मिलता है सवाल। अब बात सिर्फ इतनी सी है कि हमें ये ध्यान रखना है कि जब वो ये सवाल वह पूछते हैं उनके ईंटेंशन सही है। वह इसलिए नहीं पूछ रहे कि आप पर व्यंग कर सके या आपकी क्रिया को छोटा मानते हैं। वह समझते हैं कि बच्चे को 6 हफ्ते में गिनती आ जानी चाहिए। या बच्चे को सेंटेन्स लिखना आ जाए। आपको उनको बताना है कि ये आएगा। इसका समय अभी दूर है। अभी हमें रेडिनेस स्किल्स बच्चे को हमें पहले अगर कोई भी चीज़ लिखनी है। उसको सीधी लाइन और कर्व लाइन पर उंगली फेरना आना चाहिए न। अब ये सीधी लाइन पर उंगली फेरना और कर्व लाइन पर फेरना ये खेल-खेल में ही करेंगे न। हम बैठा कर तो बच्चे को नहीं देंगे। तो इसलिए हम खेल खेल में उसको पढ़ाई के लिए तैयार कर रहे हैं। तो ये जब उनके पास जवाब जायेगा तब तो ये जब उनके पास जवाब जायेगा तो उनको लगेगा, अच्छा खेलता जो सड़क पर है और सीखता है वो उसका एक्सटेंशन है क्लास में लेकिन क्लास में जो करा रहे हैं टीचर वो पढ़ाई की तरफ ले कर जा रहा है अब अगर पेरेंट्स को ये पता लगे कि ये जो गतिविधियां खेल-खेल में दिखती हैं मुझे ये पढ़ाई की तरफ लेके जा रही हैं और पढ़ाई के लिए तैयार कर रही हैं। तो वो आपके साथ हाथ जोड़कर आपका धन्यवाद करेंगे और आपकी क्रियाओं में सहयोग भी करेंगे। तो इसमें मैं पेरेंट्स का कसूर नहीं इसमें गैप है हमारा और उनकी समझ का। और ये ई.सी.सी.ई. सेंटर की टीचर को उसका काम है की ये सही मैसेज दें और तब ये उनकी सपोर्ट लें। तब ये क्रियाएँ और भी मजबूत होंगी।

विशेषज्ञ 1 : और इससे अभिभावकों की समझ भी बढ़ेगी, शिक्षा के महत्व को भी वो समझ पाएंगे और शिक्षा की जो परिभाषा हमारी पारम्परिक है जैसा अपने कहा पढ़ना, लिखना, अक्षर लिखना उससे भी हटकर के उनकी समझ बनेगी।

विशेषज्ञ 2 : बिलकुल

विशेषज्ञ 1 : है न। इसी के साथ अक्सर अभिभावक और शिक्षक मुझसे पूछते हैं और आपसे भी पूछते होंगे कि एक बच्चा ऐसा है या एक बच्ची ऐसी है जो सरल निर्देशों का भी ऐसे सरल निर्देशों का भी पालन नहीं कर पाती जिसमें सिर्फ एक ही काम करना हो, तो ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए?

विशेषज्ञ 2 : देखिये सबसे पहले है ये जरूरी है समझना, मुझे लगता है मैंने इंस्ट्रक्शन सही दी और बच्चे को लगता है वही चीज मैंने अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल करके तीन बार एक ही बात को बोल दिया अब बच्चे को समझ नहीं आता पहले ये शब्द यूज़ करके इंस्ट्रक्शन दी अब ये बोल रही है

अब ये बोल रही हैं इनमें से कोनसा सही है? तो सबसे पहले टीचर को ये जरूरी है कि क्लियर इंस्ट्रक्शन छोटा इंस्ट्रक्शन, हँसी मुँह पर रखें, खौफनाक रख कर इंस्ट्रक्शन न दें। जैसे बच्चे ने देखा खौफ भरी टीचर तो उसकी आधे से ज्यादा जान तो…

विशेषज्ञ 1 : बच्चा बहुत छोटा है अभी

विशेषज्ञ 2 : और पहली बार घर से निकला है।

विशेषज्ञ 1 : जी

विशेषज्ञ 2 : और हो सकता है, उसको आपका तरीका बोलने का, आपकी लम्बी इंस्ट्रक्शन जैसे मैंने अभी कहा अलग-अलग शब्द यूज़ करके वो सब नहीं अच्छा लगता। तो पहले समझिये अपने आप का वीडियो बनाइए और एनलाइज करिए कि मैं इंस्ट्रक्शन कैसे दे रही हूँ। तो फिर उसमें भिन्नता लाइए। पपेट के साथ इंस्ट्रक्शन दीजिये। किसी और बच्चे को कहिये, यही जो मैंने बोला, क्या बोलै बेटे। दोहरा दीजिये। तो क्या होगा वो एक बच्चे को अनंत तरीके से इंस्ट्रक्शन मिली। खेल-खेल में गोल दायरे में बच्चे बैठे हैं। अपने कुछ शुरू किया, अगले बच्चे ने इंस्ट्रक्शन ख़तम किया। तो बच्चे को अच्छा लगेगा। तो ये विधियाँ आपको खुद ढूंढनी हैं, हम आपको सब विद्या नहीं बता सकते लेकिन ये जरूर कह सकते हैं कि एक ही तरीका इंस्ट्रक्शन देने का कई बार नहीं बच्चों को भाता। अलग-अलग शब्द यूज़ करके वही बात कहना बच्चों को नहीं भाता। तो आपको ढूँढना है बच्चे को किस तरह इंस्ट्रक्शन लेना अच्छा लगता है तो यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग हमें कहता है मल्टीप्ल वेज़ आप यूज़ करिये अलग अलग तरीके यूज़ करिये और देखिये क्या बच्चे को अच्छा लगता है। इसको बड़ा सा दिमाग में मत ले कर बैठिये कि बच्चा नहीं समझता। हिट एंड ट्रायल से भी आपको पता लगेगा कि किस तरह बच्चा समझता है।

विशेषज्ञ 1 : तो करना हमें ये है बार-बार लगातार कोशिश करनी है। अपने तौर-तरीकों में थोड़ा बदलाव करना है। अभिभावकों को साथ लेना है। साथ ही शिक्षकों को भी साथ लेना है और जो हमउम्र साथी समूह है बच्चे का उसको भी साथ में लेकर अपनी बात बच्चे तक पहुंचानी है

विशेषज्ञ 2 : बिल्कुल

विशेषज्ञ 1 : और बच्चे तक बात पहुँचाने के लिए खाली मौखिक भाषा ही एकमात्र साधन नहीं है।

विशेषज्ञ 2 : बिल्कुल

विशेषज्ञ 1 : बहुत अलग अलग जैसे आपने यू. डी. एल. की बात की तो अलग अलग तरीके से भी हम अपनी बात कह/ पहुँचा सकते हैं।

विशेषज्ञ 2 : बिल्कुल। और वो आप जब एक्सपेरिमेंट करेंगे तो आपको पता लगेगा बच्चों को क्या ज्यादा अच्छा लगता है।

विशेषज्ञ 1 : बिल्कुल। तो आज हमने जाना कि एक पूर्व प्राथमिक विद्यालय में काम करते हुए या ई.सी.सी.ई. सेंटर में काम करते हुए मुझे किन चीजों का ध्यान रखना है? अभिभावकों से कैसे बात करनी है? एक शिक्षक होने के नाते और एक ऐसा शिक्षक होने के नाते जो बच्चे के संपर्क में पहली बार आ रहे हैं। क्या गुण होने चाहिए? बातचीत का क्या तरीका होना चाहिए? क्या नई-नई विधि मुझे अपनानी है? तो इसके साथ ही हम विदा लेते हैं।

थैंक यू।

सारांश

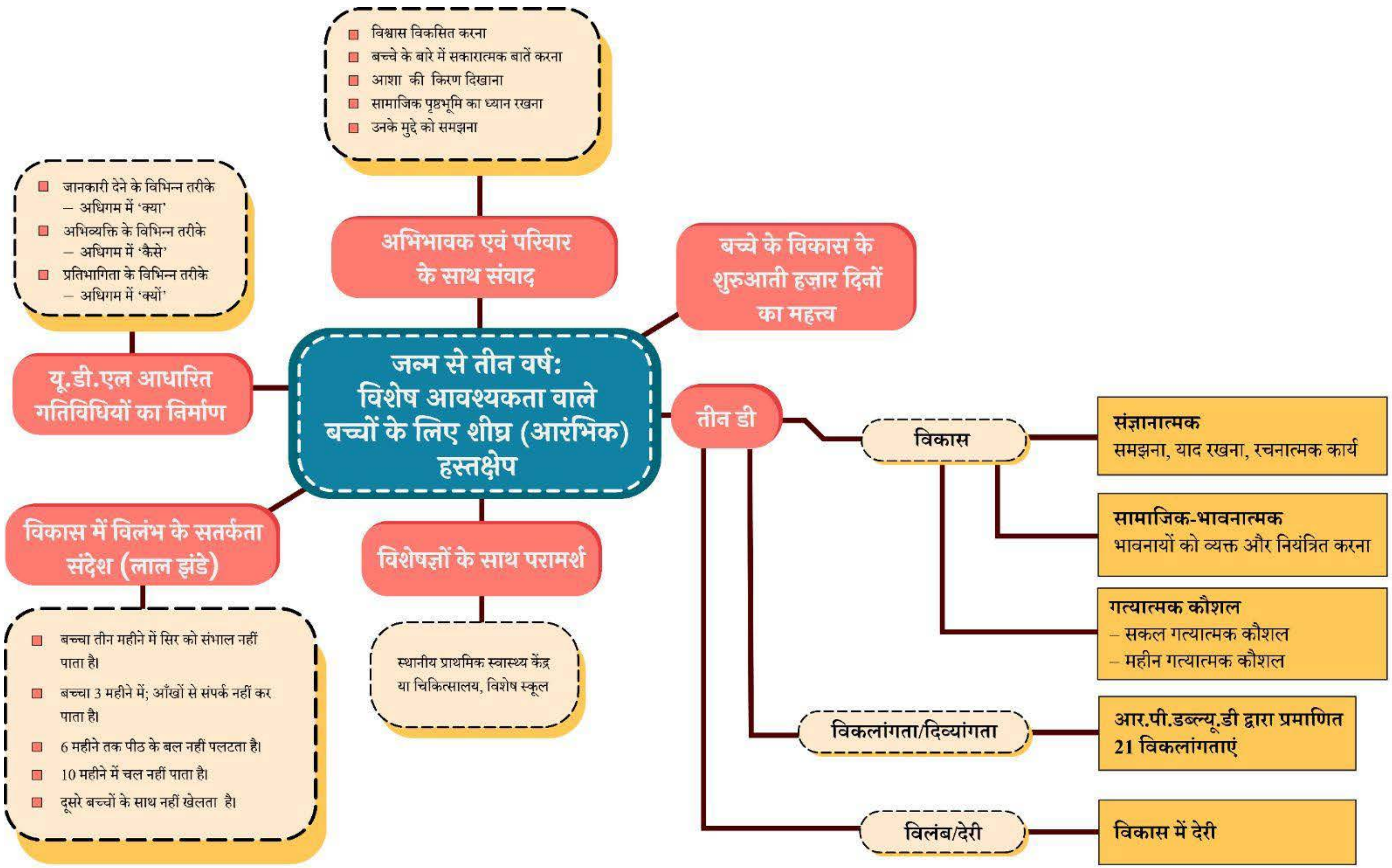

जन्म से तीन वर्ष: विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए शीघ्र (आरंभिक) हस्तक्षेप
अभिभावक एवं परिवार के साथ संवाद
विश्वास विकसित करना
बच्चे के बारे में सकारात्मक बातें करना
आशा की किरण दिखाना
सामाजिक पृष्ठभूमि का ध्यान रखना
उनके मुद्दे को समझना
यू.डी.एल आधारित गतिविधियों का निर्माण
जानकारी देने के विभिन्न तरीके
– अधिगम में 'क्या'
अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीके
– अधिगम में 'कैसे'
प्रतिभागिता के विभिन्न तरीके
– अधिगम में 'क्यों'
विकास में विलंभ के सतर्कता संदेश (लाल झंडे)
बच्चा तीन महीने में सिर को संभाल नहीं पाता है।
बच्चा 3 महीने में; आँखों से संपर्क नहीं कर पाता है।
6 महीने तक पीठ के बल नहीं पलटता है।
10 महीने में चल नहीं पाता है।
दूसरे बच्चों के साथ नहीं खेलता है।
विशेषज्ञों के साथ परामर्श
स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र या चिकित्सालय, विशेष स्कूल
बच्चे के विकास के शुरुआती हज़ार दिनों का महत्त्व
तीन डी
विकास
संज्ञानात्मक
समझना, याद रखना, रचनात्मक कार्य
सामाजिक-भावनात्मक
भावनायों को व्यक्त और नियंत्रित करना
गत्यात्मक कौशल
– सकल गत्यात्मक कौशल
– महीन गत्यात्मक कौशल
विकलांगता/दिव्यांगता
आर.पी.डब्ल्यू.डी द्वारा प्रमाणित 21 विकलांगताएं
विलंब/देरी
विकास में देरी

पोर्टफोलियो गतिविधि

असाइनमेंट

पूर्व प्राथमिक विद्यालय/आंगनवाड़ी केंद्र को समावेशी और समतामूलक बनाने के लिए एक हस्तक्षेप योजना तैयार करें। हस्तक्षेप योजना तैयार करते समय, निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखें -

- बाधा मुक्त भवन और कक्षा
- सुगम्य शिक्षण एवं शिक्षण सामग्री
- गतिविधियों में हर बच्चे को शामिल करना
- विशेषज्ञ हस्तक्षेप के लिए संदर्भ

अतिरिक्त संसाधन

संदर्भ

- राष्ट्रीय जन सहयोग और बाल विकास संस्थान, (2018), आई.सी.डी.एस. के तहत आंगनवाड़ी सेवा योजना में सर्वोत्तम प्रथाएं - एक संकलन

  https://www.nipccd.nic.in/file/reports/bestprac.pdf

  एन.सी.ई.आर.टी. (2014) प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा में ट्रेनर की हैंडबुक https://ncert.nic.in/dee/pdf/trainerhadnbook.pdf

- एन.सी.ई.आर.टी. (2015), एवरी चाइल्ड मैटर्स - गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बचपन शिक्षा पर एक पुस्तिका, नई दिल्ली

  https://ncert.nic.in/dee/pdf/trainerhadnbook.pdf

- सीआईडी (2012), पाठ्यक्रम में दिव्यांगता को देखने के नए तरीके
- यूनेस्को (2001), समावेशी कक्षाओं में बच्चों की जरूरतों को समझना और उनका जवाब देना
- एन.सी.ई.आर.टी. (2012) छोटे कदम : लेखन और संख्या कार्यों को पढ़ने के लिए तत्परता

  https://ncert.nic.in/dee/pdf/littlesteps.pdf

- एन.सी.ई.आर.टी. (2021) प्रारंभिक बचपन : एक परिचय

  https://ncert.nic.in/dee/pdf/Earlychildhood.pdf

- एशिया में भागीदारी अनुसंधान के लिए सोसायटी, (1987), सामुदायिक भागीदारी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल

  https://pria.org/knowledge_resource/Community_Participation_-_A_Training_Module_for_Anganwadi_Workers.pdf

- आंगनवाड़ी केंद्रों में पूर्व प्राथमिक विद्यालय शिक्षा गतिविधियों की योजना और संगठन के लिए गाइडबुक

  https://www.nipccd.nic.in/file/cmu/ECCE/pse.pdf 5 जुलाई 2022 को एक्सेस किया गया

- सामुदायिक भागीदारी - आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल

  https://priorg/knowledge_resource/Community_Participation_-_A_Training_Module_for_Anganwadi_Workers.pdf 2 जुलाई 2022 को एक्सेस किया गया

- आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए ई.सी.सी.ई. प्रशिक्षण मॉड्यूल
  https://wcd.niin/sites/default/files/EEC%20Training%20Module%20for%20 Anganwadi%20Workers.pdf 5 जुलाई 2022 को एक्सेस किया गया
- शारीरिक दिव्यांगता: चिंता के संकेत
  https://childcare.extension.org/physical-disabilities-signs-of-concern/
  https://www.cd जीओवी/एनसीबीडीडी/डेवलपमेंटलडिसेबिलिटीज/लैंगुआगई-डिसऑर्डर. html

वेब लिंक

- दिव्यांग बच्चों के लिए अनुकूलन -
  https://diksha.gov.in/resources/play/content/do_3136088483101982721250
- प्री-स्कूल/आंगनवाड़ी में बच्चों के खेल और कार्य का अवलोकन -
  https://diksha.gov.in/resources/play/content/do_31360885934770585611O
- प्रारंभिक पहचान, प्रारंभिक उत्तेजना और हर बच्चे के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप -
  https://youtu.be/SN0eb0c_-d0
- प्रारंभिक पहचान और हस्तक्षेप -
  https://youtu.be/19hDLutGoqo
- प्रारंभिक हस्तक्षेप कार्यक्रम -
  https://youtu.be/ZXwFnCmfa3I
- उत्सव की चुनौती-
  https://youtu.be/0k9whWa_Z7A

Central Institute of Educational Technology
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurbindo Marg, New Delhi-110016